जाओ
और
परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो

परमेश्वर के राज्य का स्वरूप

द्वारा
डोटा

नियमावली 9
समूह के अगुवों के लिए
(चौथा संशोधित संस्करण 2016)

प्रस्तावना

राज्य का सुसमाचार, परमेश्वर के राज्य की खुशखबरी है। सामान्य तौर पर यदि देखें तो परमेश्वर के राज्य का अर्थ अनन्तता से अनन्तता तक हर एक सजीव और निर्जीव वस्तु पर परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (भजन 24:1; 145:13)। खास तौर पर कहें तो, परमेश्वर का राज्य, यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (मत्ती 28:18)। यह राज्य मसीह के उद्धार के सम्पूर्ण कार्यों (प्रेरितों 2:36) और पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों के जीवन में उन कार्यों के प्रयोग पर आधरित होता है (रोमियों 14:17)। इस राज्य को विश्वासियों द्वारा मन में स्वीकार किया जाता (लूका 17:20-21) और उनके जीवन में इस्तेमाल किया जाता है। परमेश्वर का राज्य हमारे जीवन में चार प्रत्यक्ष क्षेत्रों में प्रगट हुआ हैः प्रारम्भ से लेकर अन्त तक विश्वासियों के सम्पूर्ण उद्धार में (मरकुस 10:25-26), एक कलीसिया के रूप में इस धरती पर पाये जाने वाले विश्वासियों के संविधान में (मत्ती 16:18-19), विश्वासियों के भले कामों (प्रभाव) के द्वारा मानवीय समाज के हर क्षेत्रा में (मत्ती 25:34-40), और अन्त में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर मुक्त जगत या नये स्वर्ग और नयी धरती पर (1कुरिन्थियों 15:24-26)।

राज्य का सुसमाचार कब प्रचार किया गया?

उसके प्रथम आगमन पर, यीशु मसीह ने राज्य का सुसमाचार प्रचार किया (मरकुस 1:14-15; मत्ती 4:23)। यीशु ने करीब पचास दृष्टान्त कहे और वे सभी प्रभु के राज्य से सम्बन्धित थे। इन दृष्टान्तों में, यीशु हमें उनकी विशेषताओं के बारे में बताते हैं और खास तौर पर यह कि परमेश्वर के राज्य की रीतियों के अनुसार हम कैसे उसके राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और उसमें किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए। अन्त में, यीशु ने कहा, "राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा" (मत्ती 24:14)। इस तरह से, धेरती पर मसीही कलीसिया की स्थापना करने के बाद, मसीही लोग राज्य का सुसमाचार प्रचार करते हैं (प्रेरितों 8:12; 19:8; 20:24-25; 28:23,31)। सारे मसीहियों का लक्ष्य यीशु मसीह की प्रभुता का प्रचार करना, प्रचार की हुई शिक्षाओं का अभ्यास करना (मत्ती 23:3) और उनके तौर तरीकों को परमेश्वर के राज्य के तौर तरीकों से बदल देना है।

तैयार अगुवों और मज़दूरों को बढ़ाना

यीशु के अनुसार परमेश्वर के राज्य में "समय की मांग" तैयार अगुवे व मज़दूरों की संख्या है। एक तरफः "इसलिए खेत के स्वामी से *विनती करो* कि वह अपने खेत काटने के लिए मज़दूर भेज दे" (मत्ती 9:38)। और दूसरी तरफे "ज्यादा से ज्यादा मसीहियों को *तैयार करो* ताकि वे मसीह की कलीसिया में सेवक बन सकें" (मत्ती 4:19; मत्ती 10:7; इपिफसियों 4:12)। उन्हें शिष्यता के समूह के अगुवे रूप में, घरेलू कलीसिया के अगुवे, कलीसिया के प्राचीन के रूप में, दूतों (नयी कलीसिया के रोपणकर्ता के रूप में) ठहरा दें।

डोटा पाठ्यक्रम समूह के अगुवों को निम्नलिखित घटक उपलब्ध कराने के द्वारा मसीह की कलीसिया को व्यवहारिक बनाता हैः

1. प्रत्येक मैनुएल में 12 अध्याय दिये गये हैं जिन्हें 3 महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति सप्ताह) या छः महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति 14 दिनों में) माप्त किया जा सकता है। गहन अध्ययन कार्यक्रम में पाठ्यक्रम को छः दिनों में भी समाप्त किया जा सकता है।
2. महत्वपूर्ण बाइबल के पद विद्यार्थी की मसीह, उसकी कलीसिया और बाइबल को जानने में मदद करते हैं।
3. गहरे शब्दों में लिखे निर्देश जैसे "पढ़ें" "खोजें व चर्चा करें" समूह के अगुवें को अगुवाई करने में सहायता प्रदान करते हैं।
4. "नोट्स" प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का सारांश बताते हैं। यह समूह अगुवे के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में काम करता है।
5. यह पाठ्यक्रम हमें मण्डली का निर्माण करने के लिए व्यवहारिक तरीके व अकेले या छोटे समूह के साथ यूहन्ना की पुस्तक का अध्ययन करने में सहायता करता है।
6. हर एक अध्याय में घर पर तैयारी करने का काम होता है, जिसे अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों को दिया जा सकता है।
7. प्रशिक्षण पाठेयक्रम दूसरों को देने के लिए सहज है। प्रत्येक पाठ्यक्रम के 12 अध्यायों को पूरा करने के बाद, जो विद्याथी किसी समूह में दूसरे लोगों को यह शिक्षा देना चाहते हैं वे समूह के अगुवे के लिए एक प्रति या कॉपी प्राप्त कर सकते हैं।

हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्रा में तेजी से मण्डलियों की ;घरेलू कलीसियाद्ध संख्या को बढ़ाये और ज्यादा से ज्यादा लोग परमेश्वर पर विश्वास करने में आज्ञाकारी बन जाएं;प्रेरितों 6ः7द्ध। यीशु ने कहा,फ्मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा और अधेलोक के पफाटक उसमें प्रबल नहीं होगें!य;मत्ती 16ः18द्ध! परमेश्वर को महिमा मिले! फ्क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहेः आमीन!य;रोमियों 11ः36द्ध

डोटा (इस नाम की उत्पत्ति 05–10–1993 में हुआ जब यह पाठ्यक्रम पहली विशेष तौर पर रेडियो में प्रसारित किया गया, **"Discipleship training On The Air",** अर्थात चीन पर रोडियो पर प्रसारण व प्रशिक्षण)**1996** में (प्रथम संस्करण)। **2016** में (चौथा संशोधित संस्करण)।

सर्वाधिकार
मसीह की कलीसिया बनाने पर समूह के अगुवों के लिए तैयार किये गये 4 मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए निःशुल्क नकल किया जा सकता है। लेकिन उन्हें बेचा नहीं जा सकता। उन्हें बिना लिखित अनुमति के दूसरी भाषा में अुनवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश
इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने और एक आशीष बनने के लिए तैयार किया गया है। लेकिन मसीह की कलीसिया बनाने के 4 मैनुएल का उददेश्य समूह के अगुवों या मसीहियों को तैयार करना है इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि केवल समूह के अगुवे ही मैनुएल 4 की नकल या कॉपी करें। एक विद्यार्थी को ठीक मूल पाठ्यक्रम की नकल केवल तभी दी जाये जब उनसे सभी 12 अध्यायों की शिक्षा प्राप्त कर ली हो और वह किसी समूह या किसी व्यक्ति को शिक्षा देने की कामना करता हो।

विषय सूची

समूह के अगुवों के लिए नियमावली 9

परमेश्वर के राज्य का स्वरूप

परिचय व सर्वाधिकार

प्रशिक्षण कार्यक्रम 1

3 माह के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम। सप्ताह में डेढ़ से लेकर 2 घण्टे के लिए। समूह ज्यादा से ज़्यादा 8 लोगों तक का ही हो।

प्रत्येक कार्यक्रम प्रार्थना के साथ शुरू होकर गृहकार्य देते हुए प्रार्थना के साथ ही समाप्त होता है।

अध्याय 1 शान्त समय को साझा करना (उत्पत्ति 22,24,27,28)
याद करना (1. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंः यूहन्ना 3:3,5)
शिक्षा देना (*राज्य का स्वरूपः* **परमेश्वर के राज्य की स्थापना करने से जुड़ा दृष्टान्त**)
बलवन्त का बांधा जाना (मत्ती 12:22-37; मरकुस 3:22-30; लूका 11:14-23)

अध्याय 2 शान्त समय को साझा करना (उत्पत्ति 32.37,39,45)
याद करना (2. बच्चों का परमेश्वर के राज्य में स्वागत करेंः लूका 18:16-17)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*। अध्याय 1:1-17)

अध्याय 3 शान्त समय को साझा करना (निर्गमन 1,2,3,4)
याद करना (3. परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करेंः मत्ती 24:14)
शिक्षा देना (*राज्य का स्वरूपः* **परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन से जुड़ा दृष्टान्त**) **बीज बोने वाला**; मत्ती 13:3-23; मरकुस 4:3-20; लूका 8:4-15)

अध्याय 4 शान्त समय को साझा करना (निर्गमन 18,20,32,33)
याद करना (4. परमेश्वर की सेवा करने से कभी पीछे न हटेंः लूका 9:62)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*। रोमियों 1:18-32)

अध्याय 5 शान्त समय को साझा करना (व्यवस्था विवरण 4,5,6,7)
याद करना (5. राज्य का विजयोत्सव : दानिय्येल 2:44)
शिक्षा देना (*राज्य का स्वरूप :* **परमेश्वर के राज्य के संदेशवाहक से जुड़ा एक दृष्टान्त**)
दुष्ट किसान (मत्ती 21:33-41; मरकुस 12:1-9; लूका 20:9-16)

अध्याय 6 शान्त समय को साझा करना (व्यवस्थाविवरण 8,9,10,11)
याद करना (श्रृंखला "झ" "परमेश्वर का राज्य" का पुनरावलोकन)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*। रोमियों 2:1-16)

अध्याय 7 शान्त समय को साझा करना (यहोशू 1,6; न्यायियों 2,7)
याद करना (रोमियों 1:16)
शिक्षा देना (*राज्य का स्वरूपः* **परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोगों से जुड़ा दृष्टान्त)**

अनाज के बीच में जंगली पौधे (मत्ती 13:24-30, 36-43)

अध्याय 8 शान्त समय को साझा करना (न्यायियों 13,14,15,16)
याद करना (1. रोमियों1:17)
बाइबल का अध्ययन (*रोमियों की पत्री*/ रोमियों 2: 17-29)

अध्याय 9 शान्त समय को साझा करना (1शमूएल 2,3,7,8)
याद करना (3. रोमियों 2:5)
शिक्षा देना (*राज्य का स्वरूपः* **परमेश्वर के राज्य की बढ़ौतरी से जुड़ा दृष्टान्त**)
बीज का गुप्त में बढ़ना (मरकुस 4:26-29) + खमीर (मत्ती 13:33 लूका 13:20) + राई का दाना (मत्ती 13:31-32; मरकुस 4:30-32; लूका 13:18-19)

अध्याय 10 शान्त समय को साझा करना (1शमूएल 15,16,17,18)
याद करना (4. रोमियों 2:15)
बाइबल का अध्ययन (*रोमियों की पत्री*/ रोमियों 3:1-20)

अध्याय 11 शान्त समय को साझा करना (5. रोमियों 3:28)
याद करना (रोमियों के 5 पदों का पुनरावलोकन)
शिक्षा (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश :* **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की कीमत से जुड़ा दृष्टान्त**)
छुपा खजाना (मत्ती 13:44) + **बहूमूल्य मोती** (मत्ती 13:45-46)

अध्याय 12 शान्त समय को साझा करना (2शमूएल 11,12,13,24)
याद करना (रोमियों के 5 प्रमुख पदों का पुनरावलोकन करें)
बाइबल का अध्ययन (*रोमियों की पत्री*/ रोमियों 3:21-31)

परिशिष्ट 1 *दृष्टान्त*/ **दृष्टान्तों का अर्थ बताना**

परिशिष्ट 2 *दृष्टान्त*/ **यीशु द्वारा बताये गये दृष्टान्तों की सूची**

परिशिष्ट 3 *रोमियों की पत्री*/ **रोमियों की पत्री का परिचय**

परिशिष्ट परमेश्वर के साथ शान्त समय बिताने, बाइबल अध्ययन करने, मनन करने और वचन याद करने का तरीकाः समूह के अगुवों के लिए नियमावली 1 के परिशिष्ट में देखिये।

प्रशिक्षण कार्यक्रम 2

गहन कार्यक्रम का इस्तेमाल सप्ताह में एक बार पूरे दिन या 6 दिन के गहन प्रशिक्षण सेमीनार के दौरान किया जा सकता है। पूरे समूह को प्रशिक्षित समूह अगुवे के साथ छोटे समूहों में बांट दें। समूह को 3-10 लोगों के बीच ही सीमित रखें।

सुझावित कार्यक्रम

09.00-09.30	आराधना (बड़े समूह के साथ)
09.30-11.00	शिक्षा (बड़े समूह के साथ)
	अन्तराल
11.30-13.00	बाइबल अध्ययन (छोटे समूह के साथ)
	अन्तराल
16.00-17.00	शिक्षा या बाइबल अध्ययन को पूरा करने, प्रश्नों के जवाब देने, या अतिरिक्त शिक्षा के लिए(बड़े समूह के साथ)
	अन्तराल
17.30-17:45	मनन ;बड़े समूह के साथद्ध व वचन याद करना ;दो दो के समूह मेंद्ध
17:45-18:30	बाइबल पठन (अकेले)
18:30-19.00	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करना (दो दो के समूह में)
19.00-19:45	बांटना (बड़े समूह के साथ) और प्रार्थना करना (छोटे समूह के साथ)

दिन 1 (अध्याय 1+2)

प्रार्थना

शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य का स्वरूप : **परमेश्वर के राज्य से जुड़ा एक दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री. रोमियों 1:1-17)

याद करना (यूहन्ना 3:3,5+लूका18:16-17)

बाइबल पठन (उत्पत्ति 22,24,27,28,32,39,45)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो दो के जोड़े में: याकूब 4:1-17)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 2 (अध्याय 3+4)

प्रार्थना

शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य का स्वरूप : **परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन से जुड़ा एक दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री. रोमियों 1:18-32)

याद करना (मत्ती 24:14 + लूका 9:62)

बाइबल पठन (निर्गमन 1,2,3,18,20,32,33)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: निर्गमन 18)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 3 (अध्याय 5+4)

प्रार्थना

शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य का स्वरूप : **परमेश्वर के राज्य में सदेशवाहक से जुड़ा एक दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री. रोमियों 2: 1-16)

याद करना (दानिय्येल 2:44 +श्रृंखला झ का पुनरावलोकन)

बाइबल पठन (व्यवस्था विवरण 4,5,6,7,8,,9,10)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: व्यवस्थाविवरण)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 4 (अध्याय 7+8)

प्रार्थना

शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य का स्वरूप : **परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोगों से जुड़ा एक दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री. रोमियों 2:17-29)

याद करना (रोमियों 1:16+रोमियों 1:17)

बाइबल पठन (यहोशू 1+ न्यायियों 2,7,13,14,15,16)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो दो के जोड़े में: न्यायियों 2)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 5 (अध्याय 9+10)

प्रार्थना

शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य का स्वरूप : **परमेश्वर के राज्य में बढ़ोत्तरी से जुड़ा एक दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री. रोमियों 3:1-20)

याद करना (रोमियों 2:5+रोमियों 2:15)

बाइबल पठन (1शमूएल 2,3,8,15,16,17,18)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो दो के जोड़े में: 1शमूएल 8)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 6 (अध्याय 11+12)

प्रार्थना

शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य का स्वरूप : **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की कीमत से जुड़ा एक दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री. रोमियों 3:21-31)

याद करना (रोमियों 3:28+ पुनरावलोकन)

बाइबल पठन ;2 शमूएल 5,6,7,11,12,13, 24द्ध

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो दो के जोड़े में:`2शमूएल 7)

बांटना और प्रार्थना करना

सम्भावित अतिरिक्त शिक्षाएं

परिशिष्ट 1 दृष्टान्त: **दृष्टान्तों को अर्थ बताना**

परिशिष्ट 2 दृष्टान्त: **यीशु द्वारा बताये गये दृष्टान्तों की सूची**

परिशिष्ट 3 रोमियों की पत्री. **रोमियों की पत्री का परिचय**

कलीसिया अध्याय 1

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने के लिए प्रार्थना करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *(शान्त समय)* **उत्पत्ति 22,24,27 और 28**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि आपने दिये गये अनुच्छेद (उत्पत्ति अध्याय 22, 24, 27 और 28) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *(परमेश्वर का राज्य)* **(1) यूहन्ना 3:3,5**

स्मरण वचनों की नवीं श्रृंखला (श्रृंखला झ) "परमेश्वर के राज्य" के सन्दर्भ में है। पांच स्मरण वचनों के शीर्षक हैं:
(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें। यूहन्ना 3:3,5
(2) बच्चों का राज्य में स्वागत करें। लूका 18:16-17।
(3) परमेश्वर के राज्य का प्रचार करें। मत्ती 24:14।
(4) परमेश्वर की सेवा करने से कभी पीछे न हटें। लूका 9:62।
(5) राज्य का विजयोत्सवः दानिय्येल 2:44

***मनन करें,* स्मरण करें और अवलोकन करें।**
(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें। यूहन्ना 3:3,5। "मैं तुझ से सच सच कहता हूं यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। मैं तुम से सच सच कहता हूं जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *(यीशु के दृष्टान्त)* **बलवन्त का बांधा जाना**

मत्ती 12:29 में "बलवन्त के बांधे जाने का दृष्टान्त"
परमेश्वर के राज्य की स्थापना के बारे में बताता है।

"दृष्टान्त" एक स्वर्गीय अर्थ धरण किये हुए एक सांसारिक कहानी है। यह एक रोजमर्रा के जीवन से ली गयी या आत्मिक शिक्षा प्रदान करने लिए गढ़ी गयी कहानी है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य की सच्चाईयों को समझाने तथा लोगों के जीवन की वास्तविकताओं और उनके नये होने की ज़रूरत को पूरा करने के लिए सामान्य स्थल व रोजमर्रा के जीवन की घटनाओं का इस्तेमाल किया।
दृष्टान्तों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाले छः निर्देशों का प्रयोग करते हुए इस दृष्टान्त का अध्ययन करेगें (नियमावली 9 के परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें मत्ती 12:22-37, मरकुस 3:22-30 और लूका 11:14-23। मत्ती 12:28-29 में लिखा है, "परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। और कैसे कोई मनुष्य कियी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है, जब तक कि पहले वह उस बलवन्त को न बांध दे? तब वह उसका घर लूट लेगा।" लूका 11:20-22 में लिखा है, "परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। जब बलवन्त मनुष्य हथियार बांधे हुए अपने घर की रखवाली करता है, तो उसकी संपत्ति बची रहती है। पर जब उससे बढ़कर कोई बलवन्त, चढ़ाई करके उसे जीत लेता है तो, उसके वे हथियार जिन पर उसे भरोसा था, छीन लेता है और उसकी सम्पत्ति लूटकर बांट देता है।"

---

1. दृष्टान्त की प्राकृतिक कथा को समझें।

परिचय। कहानी या दृष्टान्त को प्रतीकात्मक शैली में लिखा गया है और दृष्टान्त का अर्थ इसी पृष्ठभूमी पर आधरित है।
चर्चा करें। अत कहानी में जीवन से जुड़ी सत्य बातें कौन सी है?
ध्यान दें।

यदि किसी राज्य में फूट पड़ी हो तो। वह राज्य नाश हो जाएगा, और इसी प्रकार से जो शहर या घराना आपसे में मतभेद रखता है वह दृढ़ता से खड़ा नहीं हो सकता। यह सत्य स्वयं अपने आप को प्रमाणित करता है और जिसके लिए ज़्यादा उल्लेख की आवश्यकता नहीं है। दुनिया का इतिहास बहुत से घरेलू युद्धों से भरा हुआ है जिसमें बहुत से देशों ने अपने आप बर्बाद हो गये। बहुत सी किताबों में लिखे उल्लेखों से प्रमाणित होता है कि कैसे परिवार आपसी व अन्दरूनी कलह की वजह से नाश हो गये थे।

एक चोर का किसी बलवन्त के घर में घुसना। वह घर में कुछ भी चुराने से पहले घर के मालिक को बांध देता है। यह सारे संसार में होता है और यह अपने आप में एक सच्चाई है। यह दृष्टान्त जीवन से जुड़ी हुए एक सच्ची घटना है जिसमें बहुत से तथ्य सम्मिलित हैं, और जो सारे संसार में कहीं भी घट सकती है।

---

2. दृष्टान्त के सन्दर्भ का मूल्यांकन करें और उसके घटकों या तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी" के सन्दर्भ में एक "परिस्थिति" और दृष्टान्त का "उल्लेख या अनुप्रयोग" शामिल हो सकता है। दृष्टान्त की *परिस्थिति* उस दृष्टान्त को कहे जाने के उपलक्ष्य को बता सकती है, या वह बता सकती है कि उन दृष्टान्तों को बताने के द्वारा किन परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। उपलक्ष्य या परिस्थिति का वर्णन हमेशा दृष्टान्त की कहानी के बताये जाने से पहले मिलता है और कहानी का उल्लेख या उसका अनुप्रयोग सामान्यतः कहानी बताने के बाद में पाया जाता है।
खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उल्लेख या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) मत्ती 12:22-24 में दिये गये दृष्टान्त की परिस्थिती ।

चमत्कार। जैसा कि मत्ती 12:2,10,14 में लिखा है, यह गद्यांश दर्शाता है कि यीशु अभी भी अपने विरोधियों के बीच में घिरे हुए हैं, खास तौर पर यहूदियों के अगुवों के बीच में, जिन्हें "फरीसियों और व्यवस्थापकों के नाम से जाना जाता है। वे एक दुष्टात्मा ग्रसित पुरुष को उसके पास ले आये जो देख और बोल नहीं सकता था। यीशु ने उसे चंगा किया और अब वह दुष्टात्मा ग्रसित व्यक्ति मुक्त हो गया और अब न वह अंध है और न ही गूंगा। यीशु के इस चमत्कार को देखकर दर्शकों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। वे इस घटना को देखकर हैरान हो गये, अर्थात इस अदभुत चमत्कार को देखकर लोग आश्चर्य चकित हुए और उन पर भय छा गया।

मसीह। हालांकि बहुत से लोगों ने इस बात को पूरी तरह से स्वीकार कर लिया था कि यह यीशु पुराने नियम में प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह हो सकता है, लेकिन उनमें खुले आम यह कहने की हिम्मत नहीं थी, क्योंकि वे मसीह के विरोधियों अर्थात फरीसियों से डरे हुए थे। इसलिए उन्होंने यह सवाल खड़ा किया, "क्या यह दाऊद की सन्तान हो सकता है?" मसीह की सेवकाई के दौरान, दाऊद के पुत्र का अर्थ मसीह से था। यह अपेक्षा 2शमूएल 7:12-14 और 1इतिहास 17:11-14 पर आधरित थी, जिसमें नातान नबी ने भविष्यद्वाणी की कि दाऊद का एक वंशज परमेश्वर के राज्य की राजगद्दी पर सदा काल के लिए विराजमान होगा (देखें मत्ती 21:15-16)। लेकिन लोगों को इस बात का बिल्कुल अनुमान नहीं था कि वह मसीह किस प्रकार का होगा। क्या वह मसीह केवल लोगों को सांसारिक समस्याओं से छुटकारा देगा, जैसे की शारीरिक बीमारी और विकलांगता से? या वह मसीह उन्हें रोम के राजनैतिक और सैन्य अत्याचारों से आज़ाद कराएगा, लेकिन पापों से नहीं? बहुत से लोगों के मन में, वरन् यीशु के चेलों के मन में भी एक तस्वीर स्पष्ट नहीं थी कि आने वाला मसीह कैसा होगा। उन्होंने सोचा कि मसीह स्वर्गीय राजा होने के बजाय एक सांसारिक राजा होगा (मत्ती 20:21, लूका 19:41-42, यूहन्ना 6:15,26,30,35, प्रेरितों 1:6)।

आरोप। फिर भी, यह प्रश्न कि यीशु ही लम्बे समय से अपेक्षित मसीह था फरीसियों और व्यवस्थापकों के लिए ज़हर के समान था। यरूशलेम से व्यवस्थापक केवल यीशु की बातों और उसके कामों को परखने के लिए आये थे (मरकुस 3:22)। अतः उन्होंने यीशु पर आक्रमण किया। पहले तो उन्होंने यीशु पर सीधे तौर पर आरोप लगाया और कहा कि वह सबत के दिन उन्हीं कामों को करता है जिन्हें करने की मनाही है (मत्ती 12:2,10)। लेकिन अब वे यीशु के पीठ पीछे बुराई कर रह थे कि वह शैतान की सहायता से दुष्टात्मा को निकालता है।

बालजबूब इकरौन का देवता था (2 राजा 1:1–6) और वह 'कैरियन–(फ्लाई का प्रभु है), जो उसे इस प्रकार की मक्खियों या बरैय्यों से सुरक्षा करने वाला बनाता है। नये नियम में उसे बालजबूब कहा गया है जिसका अर्थ सम्भवतः "गोबर का ईश्वर है", अथार्त् ऐसा नाम हैं जिससे घिन आती है। नये नियम में, यह नाम निश्चित तौर पर दुष्टात्माओं के राजकुमार अर्थात शैतान की ओर इंगित करता है जैसा कि हम मत्ती 12:24–27 और मत्ती 9:34 में तुलना इसे साबित करती है। यीशु की निन्दा करने वाले आरोप बहुत बुरे थे। विरोधियों ने आरोप में यह नहीं कहा कि शैतान एक बुरी आत्मा है और उसने जिसने यीशु पर अपने पापी प्रभाव को डाला है (मरकुस 3:30, यूहन्ना 8:48), लेकिन कहने लगे कि शैतान यीशु की आत्मा में बसा है (मत्ती 10:25)! यीशु के विरोधियों ने यीशु की निन्दा की, क्योंकि वे उसके चरित्रा व पफलदायी सेवकाई से डाह करते हैं। उसने यह बात बर्दाश्त नहीं होती थी कि वे अपने अनुयायियों और समाज पर अपने प्रभाव को खो रहे हैं।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 12:25 और 29 में दी गयी है।

(3) इस दृष्टान्त का उल्लेख व अनुप्रयोग मत्ती 12:29–37 में दिया गया है।
यीशु उन पर लगे हुए आरोपों का जवाब देते हैं।

मत्ती 12:25–26। यीशु पर लगाया गया आरोप निरर्थक था। यीशु ने उनसे कहां कि यह सोचना तो बिल्कुल बेतुका है कि शैतान अपने ही राज्य के खिलाफ चढ़ाई करेगा और अपने ही लोगों को मारेगा। शैतान कभी अपना विरोध नहीं करता, क्योंकि ऐसा करके वह अपने ही काम को नाश करेगा।

मत्ती 12:27। यीशु पर लगाया गया आरोप अनियमित और बेजान था। यीशु ने कहा कि फरीसियों के अनुयायी (जिन्हें फरीसियों की सन्तान कहा जाता है) साबित करते हैं कि पफरीसी गलत हैं। इन यहूदियों ने दावा किया कि उनके पास परमेश्वर के नाम में दुष्टात्माओं को निकालने की ताकत है। मत्ती 7:22 साबित करता है कि यह सम्भव था और इस प्रश्न पर चर्चा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी कि, क्या उन्होंने कभी ऐसा किया था।
इसलिए यदि अब ये वे कहते हैं कि यीशु शैतान की ताकत से दुष्टात्माओं को निकालते हैं तो वह अपने आप पर दोष लगाएंगे। लेकिन अगर वे कहते हैं कि शैतान को केवल परमेश्वर की सामर्थ्य से निकाला जा सकता है तो, वे अपने शिक्षकों अर्थात फरीसियों को दोषी ठहराते। दोनों ही तरह से उनके अनुयासियों द्वारा लगाये गये आरोपों से फरीसियों को शर्मिन्दगी ही होती!

मत्ती 12:28–30। यीशु पर लगाये गये आरोपों ने सत्य को अस्पष्ट करता है। यीशु कहते हैं कि फरीसियों के द्वारा लगाये गये आरोप वास्तविकता को छुपाने का प्रयास है! वास्तविकता तो यह है कि यीशु दुष्टात्माओं को शैतान की ताकत से नहीं, वरन प्रभु की आत्मा (पवित्र आत्मा, मत्ती 12:32) की शक्ति से निकालते हैं। उसकी सेवकाई के प्रारम्भ से ही, यीशु ने बीमारों को चंगा किया, कष्ट रोगियों को शुद्ध किया, मृतकों को जिलाया, पापों को क्षमा किया, विरोधियों के झूठे आरोपों को खण्डन किया और सभी लोगों में सुसमाचार सुनाया। इसी सन्दर्भ में वह दुष्टात्माओं को भी निकालता है। शैतान का प्रतिनिधित्व करने वाली दुष्टात्माएं निकाली जा रही हैं यह वास्तविकता अपने आप में साबित करती है कि, शैतान का राज्य बहुत असुरक्षित है। यीशु सिखाते हैं कि शैतान के राज्य के कांपने की सच्चाई, इस बात को साबित करती है कि उन्हें परमेश्वर के राज्य के आने का एहसास हो रहा है! वह कहता

है, "यदि मैं परमेश्वर की आत्मा के द्वारा दुष्टात्मा को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य में आ चुका है।

"परमेश्वर का राज्य" हमारे सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर की प्रभुता और यीशु मसीह के द्वारा हर एक मनुष्य और हर चीज पर अधिकार है। यह विशेष तौर पर वह प्रभुता है जिसे उसके लोग अपने हृदय में स्वीकार करते हैं और अपने जीवन में कार्य करने का अध्किार देते हैं। परमेश्वर का राज्य सबसे पहले उनके उ(ार के समय में, ध्रती पर एक कलीसिया के रूप में स्थापित होने में और समाज पर उनके द्वारा डाले जाने वाले प्रभाव के द्वारा उन पर प्रगट होता है। अन्त के समय में वह उन पर अपने आपको उनके उ(ार की पूर्णता और नये स्वर्ग और पृथ्वी की स्थापना करने में प्रगट होता है। यीशु कहते हैं कि परमेश्वर का राज्य, शैतान के राज्य में विजय प्राप्त करने की प्रक्रिया में है। परमेश्वर का राज्य वर्तमान वास्तवितकता है आने वाली सच्चाई नहीं है। यह एक प्रगतिशील सच्चाई है जिसकी सम्पूर्ण तस्वीर यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी के रूप में सामने आ जाएगी!

धरती पर अपनी पूर्ण सेवकाई में, यीशु अपने वचनों और कार्यों के द्वारा उन लोगों से शैतान को दूर कर रहा था जिन्हें वह अपनी जागीर समझता और जिन पर वह अपने भयावह नियन्त्रण को बना कर रखता था (दानिय्येल 10:13,20; लूका 4:5-7; 13:16)। अपने देहधारण, जंगल में शैतान की परीक्षाओं पर विजय पाने, उसके अधिकार से भरपूर वचनों के द्वारा जिसके द्वारा उसने दुष्टात्माओं को निकाला और अपनी सारी भौतिक गतिविधियों के द्वारा यीशु ने प्रगट किया कि वह शैतान को बांधने के लिए आया है (1यूहन्ना 3:8)! शैतान की शक्तियों को पूरी तरह से बांधने का काम (कम करने, वश में करने, और सीमित करने) यीशु मसीह की क्रूस पर मृत्यु द्वारा (यूहन्ना 12:32-32; कुलुस्सियों 2:15) और उसके पुनरूत्थान के द्वारा, उसके स्वर्गारोहण के द्वारा और उसके स्वर्गीय सिहांसन पर विराजमान होने के द्वारा पूरा हुआ था (प्रकाशितवाक्य 12:5,9-12)। इसलिए, पहले आगमन से लेकर दूसरे आगमन तक, यीशु मसीह और उसके चेलों ने शैतान को उसके "पात्रों" अर्थात मसीह पर विश्वास न करने वाले लोगों के प्राणों और शरीर से दूर कर दिया! शैतान के "बन्धन" चंगाईयों और सत्य के प्रचार से टूट गये।

मसीह और शैतान के बीच लड़ाई में, उदासीनता के लिए कोई स्थान नहीं है। यहां केवल दो ही महान साम्राज्य विद्यमान हैं: परमेश्वर का राज्य जिस पर यीशु मसीह एक राजा के रूप में राज्य करते हैं और संसार का राज्य जिसमें बुरे लोग रहते हैं और जिस पर शैतान एक राजकुमार के रूप में राज्य करता है (लूका 4:5-8; कुलुस्सियों 1:13; 1यूहन्ना 3:7-10)। इस संसार का हर एक जन इनमें से किसी एक साम्राज्य के सम्बन्ध रखता है। जिसके परिणाम स्वरूप यदि कोई व्यक्ति मसीह के साथ में घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं रखता, वह मसीह के विरोध में है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति मसीह के साथ है, तो वह एक सहकर्मी बन जाता है जो लोगों को मसीह का अनुयायी बनाने के लिए लोगों को इकट्ठा करता है। लेकिन यदि कोई जन मसीह के विरोधी है, तो वह लोगों को उनकी खोयी और बिखरी अवस्था में छोड़ देता है और वे शैतान का आसान शिकार बन जाते हैं।

मत्ती 12:31-32। यीशु के ऊपर लगाया गया आरोप क्षमा नहीं होगा। यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा नहीं की जाएगी। जब यीशु ने यह कहा कि लोगों का "हर एक प्रकार का पाप और निन्दा" क्षमा किया जा सकता है, तो वह 'निन्दा' के हर एक सामान्य भाव को परमेश्वर या

मनुष्य के खिलाफ इस्तेमाल की जाने वाली गुस्ताख भाषा, बदनामी और परमेश्वर के पवित्र नाम की निन्दा करने की बात कर रहे थे। उदाहरण के तौर पर दाऊद के व्यभिचार, बेईमानी और हत्या की क्षमा है (भजन 32 और 51)। लूका 7 में पायी जाने वाली पापिन स्त्री के अनेकों पापों की क्षमा है। उड़ाऊ पुत्र के बलवा करने वाली जीवन शैली की क्षमा है (लूका 15:13) पतरस के तीन बार प्रभु का इनकार करने तथा निन्दा करने की क्षमा है (मरकुस 14:71) और पौलुस द्वारा मसीही बनने से पहले दयारहित तरीके से मसीहियों पर अत्याचार करने की क्षमा है (प्रेरितों 26:9-11)। इन सभी लोगों ने अपने दिल की गहराई से पश्चाताप किया। क्षमा प्राप्त इस बात पर निर्भर करती है कि पापी जन क्षमा के मार्ग पर चलने के लिए इच्छुक हो। जो मनुष्य अपने हृदय को कठोर नहीं करता, वरन् जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा पर ध्यान लगाता है, उसके पाप कितने भी संगीन क्यों न रहे हों, उसे फिर भी क्षमा मिल सकती है।

लेकिन जो जन पवित्र आत्मा के विरूद्ध बोलता है, उसके लिए कोई क्षमा नहीं है। जब यीशु ने कहा कि 'पवित्र आत्मा की निन्दा' क्षमा नहीं की जाएगी, तब उसका इस शब्द 'निन्दा' का अर्थ विद्रोह करते हुए अनादर करना, प्रभु को कोसना, जिन चीजों को पवित्र ठहराया गया है उन्हें तुच्छ या अपवित्र जानना या उन चीजों के लौकिक होने या मनुष्य द्वारा रचे जाने का दावा करते हुए जो आदर परमेश्वर को मिलना चाहिए उसे परमेश्वर को प्रदान करना है। फरीसियों द्वारा की जाने वाली निन्दा का अर्थ यह था कि वे उन कामों को शैतान की शक्ति से किये जाने वाले कार्य बता रहे थे जिन्हें पवित्र आत्मा यीशु मसीह में होकर कर रहा था!

फरीसियों के पाप बढ़ते ही चले जा रहे थेः पहले जो उन्होंने पापियों और चुंगी लेने वालों के साथ मिलकर यीशु से प्रश्न पूछे (मत्ती 9:11) उसके बाद में उन्होंने उस पर यह आरोप लगाया कि वह इन कामों को करके कानून का उल्लंघन करता है (मत्ती 12:2)। उसके बाद में उन्होंने चुपके से उसे मारने की योजना बनायी (मत्ती 12:14)। और अब वे उसके पीठ पीछे सरे आप उसकी बदनामी कर रहे थे कि, वह पवित्र आत्मा की सहायता से नहीं वरन शैतान की आत्मा से यह सारे काम करता है (मत्ती 12:24)। इन फरीसियों में उनके पाप के प्रति उन्हें कोई दुःख नहीं था। धीरज धरने की बजाय, वे अपने हृदय को और अध्कि कठोर कर रहे थे। अपने पापों का अंगीकार करने की बजाय, वे यीशु मसीह को मारने की योजना बनाने लगे थे। इस तरह से अपने ही आपराधिक कामों और कभी क्षमा न की जा सकने वाली हृदय की कठोरता के कारण, वे अपने आप को नाश कर रहे थे। <u>उनके पाप बिल्कुल क्षमा योग्य नहीं थे क्योंकि वे कभी क्षमा की राह पर चलने के लिए तैयार ही नहीं थे।</u> एक चोर, व्यभिचारी और हत्यारे के लिए फिर भी आशा है। लेकिन जो व्यक्ति लगाता अपने मन को कठोर बनाएं रखता है उसके लिए कोई आशा नहीं है। उसके लिए आशा इसलिए नहीं है क्योंकि उसने पहले ही यह मन बना लिया है कि वह पवित्र आत्मा की कोई भी बात नहीं सुनेगा। उसने पहले ही निश्चय कर लिया है कि वह पवित्र आत्मा की चेतावनियों और उसके अनुरोध को नहीं सुनेगा। उसने आपको नरक जाने वाले मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया है। उसने ऐसा पाप किया है जिसका अन्त केवल मृत्यु है (1यूहन्ना 5:16)।

एक ओर तो, बाइबल हमें जीवित परमेश्वर से अलग रहने के विरूद्ध आगाह करती है। बाइबल हमें सतर्क कराती है कि यदि कोई व्यक्ति लगातार अविश्वास करता और बुरे काम करता रहता है, तो उसके ऊपर परमेश्वर से दूरे होने का खतरा मण्डराता रहता है (इब्रानियों 3:12-13; 6:4-8)। बाइबल

स्पष्ट तौर पर बताती है कि यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर पाप करता, जो यीशु को अपने पैरों तले रौंदता और परमेश्वर की पवित्र आत्मा के अनुग्रह का अपमान करता है, वह परमेश्वर के भयानक न्याय का सामना करने के खतरे में है(इब्रानियों 10: 26-31)। दूसरी ओर, बाइबल के वचनों को यह कहते हुए बिगाड़ना नहीं चाहिए कि इसका मतलब यह है कि बपतिस्मे के बाद किये गये पापों का पश्चाताप सम्भव नहीं है।

क्योंकि जो कोई मन से पश्चाताप करता है, चाहे उसके अपराध कितने भी ज़्यादा शर्मिन्दा करने वाले क्यों न हो, उसे किसी भी स्थिति में निराश होने की ज़रूरत नहीं है (यशायाह 1:18; 1यूहन्ना 1:9)। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के साथ अच्छा सम्बन्ध बनाना चाहता है, तो वह परमेश्वर की ओर फिरे। परमेश्वर उस व्यक्ति से कभी मुंह नहीं फेरते जो क्षमा के मार्ग पर चलता है और जो पवित्र आत्मा की आवाज़ पर ध्यान लगाता है (यूहन्ना 6:37)।

लेकिन मसीहियों को उदासीन होने से बचने के लिए कहा गया है। पवित्र आत्मा की निन्दा करना पाप की धीमी प्रक्रिया का परिणाम होता है। पाप की धीमी प्रक्रिया पवित्र आत्मा को शोकित करने से प्रारम्भ होती है। एक जन पवित्र आत्मा को अपने पापों के कारण शोकित कर सकता है (इफिसियों 4:30)। लगातार पश्चाताप करने से इनकार करने के द्वारा हम पवित्र आत्मा का सामना करते हैं (प्रेरितों 7:51)। और लगातार पवित्र आत्मा के कामों का सामना करने से पवित्र आत्मा को बुझाने (1थिस्लुनिकियों 5:19) या पवित्र आत्मा की निन्दा करने की ओर कदम बढ़ते हैं (मत्ती 12:31-32)। मसीही लोग इब्रानियों 3:7-8 पर ध्यान लगाकर क्षमा ने किये जाने पाप से दूर रहते हैं, "पवित्र आत्मा कहता है 'यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मन को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय में किया था'।"

मत्ती 12:33-37। यीशु पर लगे आरोप , आरोप लगाने वालों की दुष्टता को प्रदर्शित करता है। यीशु दिखाते हैं कि उसके खिलाफ फरीसियों द्वारा लगाये गये गम्भीर आरोप फरीसियों के असली चरित्रा को प्रगट करते हैं। जब यीशु ने कहा कि, यदि पेड़ को अच्छा 'कहो' तो उसके पफल को भी अच्छा कहो, या पेड़ को निकम्मा 'कहो' तो उसके फल को भी निकम्मा कहो, तो उसका अर्थ यह था कि केवल एक अच्छा पेड़ ही अच्छा फल ला सकता है लेकिन बुरा पेड़ कभी अच्छा फल नहीं ला सकता। इसलिए, जैसा व्यक्ति मन में सोचता है वही बाहर भी प्रगट होता है। यीशु कहते हैं कि जिस प्रकार से एक पेड़ उसके फलों से पहिचाना जाता है, वैसे ही, एक व्यक्ति का हृदय और उसका वास्तविक स्वभाव उसकी बातों और उसके कार्यों से पहिचाना जाता है। फल और पेड़ एक दूसरे से जुड़े हैं। यह कहना कि यीशु की सेवकाई, उदाहरण के लिए दुष्टात्माओं को निकालने की सेवकाई, अच्छी है, लेकिन वह बुरा और दुष्टात्मा ग्रसित है, आपस में विरोधात्मक है। यह असम्भव है। यीशु आत्मा से परिपूर्ण है और वह भले ही पफल लाता है। ठीक इसके विपरीत बात फरीसियों के लिए सत्य हैः वे बुरे पफल, उदाहरण के लिए, दूसरों की निन्दा करना, उत्पन्न करते हैं। इससे यह साबित होता है कि उनके हृदय बुरे हैं (मत्ती 7:15-20)।

एक मनुष्य के हृदय को भण्डार-गृह कहा गया है। जो कुछ वह अपने भण्डार-गृह से बाहर निकालता है, चाहे वह भला हो या बुरा, बहुमूल्य हो या तुच्छ, इस बात पर निर्भर करता है कि उसके भण्डार-गृह में क्या भरा हुआ है! यीशु हर एक व्यक्ति को उसके विचारों, उसकी बातों और उसके कामों के लिए जिम्मेदार व उत्तरदायी ठहराते हैं (देखें. गलातियों 6:5)! हालांकि यह पूरी तरह से सत्य

है कि कोई भी व्यक्ति अपने हृदय को स्वयं नहीं बदल सकता, तो यह भी उतना ही सत्य है कि प्रभु के अनुग्रह से एक व्यक्ति परमेश्वर के पास जा सकता है, जो कि हमारे हृदय और जीवन को नया बना सकता है। वह हमेशा लोगों को वे चीजें देने के लिए इच्छुक रहता है जो लोग उससे मांगते हैं। अगर उन्हें कुछ नहीं मिलता है तो यह उनकी अपनी गलती है (मत्ती 7:7; 11:28-30)। एक व्यक्ति केवल विश्वास द्वारा प्रभु के अनुग्रह से ही उद्धार पाता है। लेकिन उसके उद्धार के बाद, उसका विश्वास उसके शब्दों और उसके कामों द्वारा प्रगट होता है। लोगों के काम व उनकी बातें ही निर्धारित करेगीं कि भविष्य में उद्धार पाने वालों को किस स्तर की महिमा मिलेगी या नाश होने वालों को किस स्तर का दण्ड मिलेगा।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने कभी नहीं चाहा कि बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग को कोई न कोई आत्मिक अर्थ हों। प्रासंगिक विवरण वे विवरण हैं जो किसी दृष्टान्त की कहानी के मुख्य विषय, शिक्षा या उसके मुख्य बिन्दू पर ज़ोर डालते हैं। इसलिए हमें ऐसा नहीं समझना चाहिए कि कहानी में कही गयी हर बात का कोई न कोई आत्मिक मतलब होता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में बतायी गयी कौन सी बात वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

विभाजित राज्य अवश्य ही नाश हो जाएगा। अपने आप में विभाजित कोई भी शहर या घर कभी स्थिर नहीं रह सकता। यह विवरण प्रासंगिक है, क्योंकि वह यह कहते हुए कहानी की मुख्य शिक्षा पर जोर देता है कि परमेश्वर का राज्य कभी आपस में बंटा नहीं हो सकता। वरन परमेश्वर का राज्य शैतान के राज्य और उसके कामों का विरोध करता है। जिस प्रकार से शैतान अपने ही राज्य का विरोध नहीं करता, वरन परमेश्वर के राज्य का विरोध करता है, उसी प्रकार से मसीह शैतान के राज्य का विरोध करता और शैतान के राज्य पर विजय प्राप्त करता है।

बलवन्त के घर में घुसकर बलवन्त को बांध देना। यह विवरण भी प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु ने बताया कि उसके प्रथम आगमन का एक उद्देश्य बलवन्त को बांध्ना था (इब्रानियों 2:14; 1यूहन्ना 3:8)! यीशु मसीह शैतान को इस तरह से बांध देते हैं कि वे जाति जाति के लोगों को फिर कभी न तो धेखा दे सकते हैं और न ही उन्हें सुसमाचार सुनने और विश्वास करने से रोक सकते हैं; देखें, यूहन्ना 12:31-32; प्रकाशितवाक्य 12:5,7-11; 20:1-3)।

बलवन्त के घर में घुसकर चोरी करना। यह उल्लेख न्यायोच्चित है, क्योंकि यूहन्ना 12:30-33 और कुलुस्सियों 1:13 हमें शिक्षा देते हैं कि प्रभु यीशु मसीह शैतान के राज्य में से बहुत से लोगों को बहुत से देशों में से चुराने और उन्हें निकाल कर अपने राज्य में लाने की प्रक्रिया में हैं।

---

4. इस दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश कहानी के उल्लेख या अनुप्रयोग या खुद कहानी में ही पाया जाता है। जिस तरह से स्वयं यीशु ने दुष्टान्त का अर्थ बताया और उसका इस्तेमाल किया ठीक उसी प्रकार से, उसी को उदारहण के तौर पर सामने रखते हुए हम सीखते हैं कि हमें दृष्टान्तों का किस प्रकार अर्थ निकालना चाहिए। दुष्टान्त का प्रायः एक मुख्य संदेश होता है, अर्थात उसमें किसी एक बिन्दू पर ज़ोर दिया गया होता है।

इसलिए हमें कहानी ही हर पंक्ति का अर्थ ढूंढ़ने का प्रयास नहीं करना चाहिए, वरन हमें यह देखना चाहिए कि उस कहानी का मुख्य निचोड़ क्या है।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 12:29 में बांधे बलवन्त मनुष्य का दृष्टान्त ''परमेश्वर के राज्य की स्थापना करने वाला दृष्टान्त है।"

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश इस प्रकार से है। "शैतान के ऊपर यीशु की विजय यह प्रगट करती है कि परमेश्वर का राज्य यीशु के पहले आगमन के साथ साथ आ चुका हैं। परमेश्वर के राज्य ने अपनी उपस्थिति का महसूस करवाया है और वह शैतान के राज्य पर विजय प्राप्त करने की प्रक्रिया में है।"

मत्ती 6:10 में यीशु मसीह ने मसीहियों को प्रार्थना करना सिखायाः "तेरा राज्य आये।" परमेश्वर के राज्य का निश्चित तौर पर आना परमेश्वर के राज्य की एक बुनियादी विशेषता है। परमेश्वर के राज्य के असली लोग इस बोध के साथ जीवन व्यतीत करते हैं कि परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के पहली आगमन के साथ इस संसार में आ चुका है और अब यीशु मसीह सारे जगत के सिंहासन पर विराजमान हैं। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का राज्य उसके दूसरे आगमन तक बना रहेगा, अर्थात जब परमेश्वर के राज्य का सिद्ध स्वरूप सबके सामने प्रगट होगा।

पुराने नियम की एक बुनियादी शिक्षा भविष्य में आने वाला परमेश्वर का राज्य भी है (उदाहरण दानिय्येल अध्याय 2 पद 7)। दानिय्येल 2:44 में लिखा है, "उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा, जो अनन्तकाल तक न टूटेगा और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन वह उन सब राज्यों को चूरचूर करेगा और उनका अन्त कर डालेगा, और वह सदा स्थिर रहेगा।"

दानिय्येल 7:13–14 में लिखा है "मैं ने रात में स्वपन देखा और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता महिमा और राज्य दिया गया, कि देश देश और जाति जाति के लोग भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।"

नये नियम की एक मूलभूत शिक्षा यह है कि परमेश्वर का राज्य आ चुका है और वर्तमान काल की वास्तविकता है। यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन पर यह कहते हुए अपनी सेवकाई का प्रारम्भ किया था कि, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और

सुसमाचार पर विश्वास करो!" (मरकुस 1:15)। उसके प्रथम आगमन पर शैतान और शैतान के अन्धकार के राज्य से लौकिक लड़ाई जीत ली गयी (यूहन्ना 12:31-32; कुलुस्सियों 2:15)।

मसीह का प्रथम आगमन परमेश्व के राज्य की स्थापना की शुरूआत थी। मसीह के प्रथम आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन तक, एक आत्मिक युद्ध चल रहा है। शैतान (प्रकाशितवाक्य 2) और उसके सहायक; राजनैतिक मसीही विरोधी, एक धार्मिक झूठा भविष्यद्वक्ता (प्रकाशितवाक्य 13), वैश्याएं (प्रकाशितवाक्य 17) और उनके सभी मानवीय सहायक (प्रकाशितवाक्य 19:19) मिलकर मसीह के खिलाफ युद्ध करते हैं। लेकिन मसीह उन पर विजय प्राप्त करेगा, क्योंकि वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है (प्रकाशितवाक्य 17:14)। केवल गैर मसीही लोग ही जाने अनजाने में आत्मिक युद्ध में शामिल नहीं हैं बल्कि सारे मसीही जन भी आत्मिक युद्ध में शामिल हैं। मसीह के पश्चाताप के लिए किये गये आत्म बलिदान और उनके सुसमाचार प्रचार करने के कारण मसीही लोग भी शैतान और उसके सहायकों पर विजय प्राप्त करते हैं (इफिसियों 6:10-13; प्रकाशितवाक्य 12:10-11)। वर्तमान काल में यीशु मसीह परमेश्वर के राज्य के राजा है (मत्ती 28:18; इफिसियों 1:20-22; फिलिप्पियों 2:9-11; प्रकाशितवाक्य 1:5; 19:16)! परमेश्वर के राज्य के सच्चे नागरिक वे लोग हैं जिन्होंने प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया है और अब वे यीशु मसीह को अपना प्रभु और राजा मानते हुए समर्पित जीवन व्यतीत करते हैं (कुलुस्सियों 1:13; 1कुरिन्थियों 12:3)। मसीह और मसीहियों ने मिलकर (मत्ती 12:30) शैतान के "सामान" को चुरा लिया है, जो कि अब भी उसके अधिकार में रहने वाले लोग हैं। मसीहियों ने उन्हें अपनी प्रार्थनाओं (लूका 22:31-32), उनके प्रेम (1यूहन्ना 3:16-19) और उनके सुसमाचार की घोषणा करने के द्वारा चुरा लिया है। जिस तरह मसीह का प्रथम आगमन धरती पर परमेश्वर के राज्य की शुरूआत और स्थापना है, उसका दूसरा आगमन परमेश्वर के राज्य की परिपूर्णता है (मत्ती 25:34; इफिसियों 1:10) 1कुरिन्थियों 15:28; प्रकाशितवाक्य 11:15)।

परमेश्वर अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए सारे कामों को करते हैं। और जब उन सभी के पूरा होने का समय आयेगा तो वह स्वर्ग और पृथ्वी की सारी चीजों को एकत्रित करके उन सबको एक के अर्थात मसीह के अधीन कर देगा। (इफिसियों 1:10-11 तथा 1कुरिन्थियों 15:24-26)!

---

5. दृष्टान्त की तुलना दूसरे सामान्तर दृष्टान्तों और बाइबल के तुलनात्मक अनुच्छेदों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान होते हैं जिनकी तुलना आपस में की जा सकती है। इस तरह से, सारे दृष्टान्तों में सिखाई गयी शिक्षा बाइबल के अन्य दृष्टान्तों अनुच्छेदों में सिखाई गयी शिक्षा से मेल खाती है। बाइबल में से ऐसे महत्वपूर्ण पद को ढूंढ़ें जिससे हमें दृष्टान्त के अर्थ को समझने में सहायत मिल सके। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ या व्याख्या की जांच बाइबल में दी गयी सीधी शिक्षा के साथ करें।

पढ़ें। 1यूहन्ना 3:8; लूका 10:18-20; यूहन्ना 12:31-32 ; कुलुस्सियों 1:13; 2:15; कुलुस्सियों 1:13; 2:15 ; प्रकाशितवाक्य 12:5-12 और 20:1-3

खोजें और चर्चा करें। शैतान को बांधने के बारे में नया नियम हमें क्या शिक्षा प्रदान करता है?

ध्यान दें।

(1) पुराने नियम के दौरान अन्धकार की शक्तियों को अधिकार।

सम्पूर्ण पुराने नियम में हम देखते हैं कि ज्यादा यहूदियों ने ही उद्धार प्राप्त किया था जबकि अन्यजातियां अन्धकार की शक्तियों की गुलामी में ही रहीं (दानिय्येल 10:13,20-21) अर्थात परमेश्वर ने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया (प्रेरितों 14:16; रोमियों 5:25; 2कुरिन्थियों 4:4)। इस तरीके से देखा जाएं तो शैतान ने उन जातियों को "धोखा" दिया।

लेकिन पुराने नियम में पहले ही, परमेश्वर ने मसीह से प्रतिज्ञा कर दी थी कि "जाति जाति के लोग उसकी सम्पत्ति हो जाएगें और दूर दूर के देश उसकी निम भूमि बन जाएंगे(उत्प. 12:3 भजन 2:8 72: 8-11,17)। भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की कि मसीह "जाति जाति के लिए ज्योति ठहराऊंगा कि उसका उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए।" (यशायाह 49:6)। शैतान द्वारा लोगों को बहकाने के कारण, जो अन्धकार जाति जाति पर छाया रहा वह लगातार बना न रहेगा।

(2) पुराने नियम के दौरान अन्धकार की शक्तियों को अधिकार।

मसीह के प्रथम आगमन के दौरान, मसीह से नियत उद्देश्य "शैतान के कामों को नाश करने" के साथ आये थे। (इब्रानियों 2:14; 1 यूहन्ना 3:8)। वह शैतान को "बांधने" के लिए आया (मत्ती 12:29 और प्रकाशितवाक्य 20:1-3)। मत्ती 12:29 में वह कहता है कि "कैसे कोई किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है, जब तक कि वह पहले उसे बलवन्त को बांध न ले ?तब वह उसका माल लूट लेगा।" यही शब्द "बांधने" का इस्तेमाल मत्ती 12:29 और प्रकाशितवाक्य 20:2 में मूल भाषा में भी किया गया है।

इसका अर्थ उसकी बुरी शक्तियों को "वश में करना" और "सीमित करना" है ताकि वह उन कामों को आगे न कर सके जो वह पहले करता थाः अर्थात संसार भर में जाति जाति के लोगों को बाइबल के परमेश्वर के बारे में सुनने और परमेश्वर के राज्य का नागरिक बनने से दूर रखता है (लूका 8:12)।

मसीह ने जंगल में शैतान की परीक्षाओं पर विजय पाकर शैतान को बांध लिया (मत्ती 4:1-11)।

मसीह ने दुष्टाआत्मा ग्रसित लोगों में से आत्मा दुष्टात्मा निकालने के द्वारा शैतान को बांध दिया। उसने अपने चेलों व सेवकों को भी शैतान को बांधने का अधिकार दिया और उन्होंने भी दुष्टात्मा को निकाला। यीशु ने शैतान की इस पराजय का लूका 10:18 में कुछ इस तरह से उल्लेख किया, "मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। देखो मैं ने तुम्हें.....शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कभी हानि न होगी। तौभी इससे आनन्दित मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।" यीशु के कहने का अर्थ था कि जब चेले लोगों में से दुष्टात्माओं को निकाल रहे थे, तो मसीह ने उनके स्वामी शैतान को अधिकार अर्थात अपने सिंहासन से गिरते हुए देखा। शैतान का गिरना बिल्कुल चमकती हुई बिजली के समान था, क्योंकि चेलों ने इस विजय की अपेक्षा नहीं की थी और न ही शैतान को इस तरह हार जाने की आशा थी। जो काम यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर प्रारम्भ हो गया था वही काम प्रभु यीशु के दूसरे आगमन तक भी जारी रहेगा। उसके बाद शैतान को नरक में डाल दिया जाएगा।

मसीह ने शैतान को उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होने के द्वारा बन्दी बना लिया। यूहन्ना 12:31-32में, यीशु ने कहा " अब इस संसार का न्याय होता है, अब

इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा; और यदि मैं पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींच लूंगा।" यीशु यहां पर अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होने के बारे में बताते हैं। उद्धार के इतिहास में घटित ये घटनाएं "इस दुष्ट संसार का न्याय है"। दुष्ट संसार में वे लोग आते हैं जो यीशु का विरोध किया, उन्हें अस्विकार किया, धोखा दिया और उन पर दोष लगाया। "संसार" के अन्तर्गत समाज के सारे बुरे लोग, मानवीय सरकारें, वे दुष्टआत्माएं आती हैं जो बाइबल के परमेश्वर, उसके अभिषिक्त लोगों, और उसके लोगों अर्थात मसीहियों की विरोधी हो गयी हैं, आते हैं।

मृत्यु और पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होने के परिणाम स्वरूप दो समकालिक घटनाएं सामने आयीः शैतान का निकाला या भगाया जाना तथा लोगों का मसीह की ओर आकर्षित होना। एक तरफ तो, यीशु मसीह ने शैतान को उसके अधिकार से अर्थात इस संसार में रहने वाले बुरे लोगों पर हुकुमत करने के अधिकार से बेदखल कर दिया। शैतान इस संसार का राजा कभी था ही नहीं, और मत्ती 4:5-6 में किया गया उसका दावा (हम यूहन्ना 8:44 भी देखें) बिल्कुल झूठा है। शैतान ज्यादा से ज्यादा इस संसार में रहने वाले बुरे लोगों का राजकुमार था। यह राजकुमार और उसकी बुराई का क्षेत्र यीशु मसीह के सारे जगत पर राजकीय अधिकार से बहुत नीचे है(मत्ती 28:18)!

लेकिन दूसरी ओर, यीशु मसीह सारे लोगों को अपनी ओर खीच रहा है। उसके बलिदान और प्रायश्चित से, उसने बहुत से लोगों को अपने पास "खींच" लिया। "खींचने" का अर्थ है उनके भीतरी मनुष्य को खींचना, आकर्षित करना, उन्हें जीतना और उन्हें इकट्ठा करना (यूहन्ना 6:44; 12:32)। ये दो घटनाएं सामकालिक तौर पर होने ही रहती हैं। जाति जाति के लोगों को अपने ओर खींचकर, उन देशों के लोगों को शैतान के चंगुल से छुड़ाता है! सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा, मसीह हर देश के लोगों को अपनी ओर खींच रहा है। क्रूस पर मृत्यु के द्वारा मसीह ने अपने शत्रु को निहत्था बनाकर उसके अधिकार को छीन लिया और उस पर विजय प्राप्त कर ली (कुलुस्सियों 2:15)। उसके पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होने के परिणाम स्वरूप शैतान और उसके साथी दुष्ट स्वर्गदूतों को, स्वर्ग से निकाल कर धरती पर फेंक दिया था (प्रकाशितवाक्य 12:5-12)।

इस तरह से, शैतान का *बांधा जाना* (प्रकाशितवाक्य 20:2), उसे *निहत्था किया जाना* (कुलुस्सियों 2:15), उसका *गिरना* (लूका 10:18) या उसका स्वर्ग से निकाला जाना (प्रकाशितवाक्य 9:1) ये सब मसीह के प्रथम आगमन से जुड़ी घटनाएं हैं। उसकी प्रथम आगमन के दौरान, यीशु मसीह ने उस बलवन्त पर आक्रमण किया और उसके हथियारों को छीन लिया और उसकी सम्पत्ति को बांट दिया है। नये नियम से लेकर उसके दूसरे आगमन तक धरती पर शैतान की शक्ति (उसका प्रभाव) "कैद" (सीमित, कम करना, वश में करना) जिससे कि वह सुसमाचार प्रचार को रोकने में, देश के असंख्य लोगों के मन परिवर्तन करने, सारे देशों में कलीसियाओं का निर्माण करने और परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने से रोकने में असमर्थ है। इसी कारण प्रकाशितवाक्य 20:2-3 में लिखा है, कि शैतान को 1000 वर्षों (यह पूरे नये नियम का काल है अर्थात मसीह के प्रथम आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन तक) के लिए कैद कर दिया गया है ताकि वह लोगों को भरमा न सके। लेकिन वह इस तरीके से बन्दी नहीं है कि वह सारे संसार पर अपना कोई प्रभाव न डाल सके, या इसका अर्थ यह नहीं है कि वर्तमान बुरा संसार मसीही बन जाएगा, या फिर यह दुष्ट संसार एक सिद्ध समाज में

तबदील हो जाएगा। वह केवल इस तरह से बन्दी हुआ है कि वह देशों को भरमा नहीं सकता है। संसार के लोग सुसमाचार के प्रति प्रतिउत्तर देने के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं।

हालांकि शैतान पहले से ही हारा हुआ शत्रु है, लेकिन यह बात स्पष्ट है कि परमेश्वर ने अभी उसे धरती से दूर नहीं किया है। यीशु मसीह अपने दूसरे आगमन पर ही अर्थात जब न्याय का दिन आयेगा, यीशु मसीह शैतान और उसके साथियों को नरक में डालेगें (प्रकाशितवाक्य 20:7–15)।

---

6. दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षाओं को मूल्यांकन।

चर्चा करें। दृष्टांन्तों की मुख्य शिक्षाएं या संदेश क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या समझाने के लिये या विश्वाश करने की शिक्षा दी और उसने हमसे क्या बनने या करने के लिए कहा?
ध्यान दें।

(1) परमेश्वर का राज्य मसीह के प्रथम आगमन पर ही स्थापित हो गया था।

पुराने नियम का काल जिसमें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता शामिल थे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ समाप्त हो जाता है और नये नियम का दौर यीशु मसीह के प्रथम आगमन के साथ प्रारम्भ होता है(मत्ती 11:13)। उस दिन से आज तक स्वर्ग के राज्य पर ज़ोर हुआ जाता है और बल्वन्त उसमें प्रवेश करते हैं (मत्ती 11:12)।

परमेश्वर के राज्य ने अपनी उपस्थिति यीशु, प्रेरितों और मसीहियों के चमत्कार(प्रेम) और प्रचार (सत्य)के द्वारा दर्ज की। परमेश्वर के राज्य की प्रगति निम्नलिखित तथ्यों में प्रमाणित हैः

- परमेश्वर के राज्य का सुसमाचान सारे जगत में प्रचार किया जाएगा (मत्ती 24:14)।
- मसीही लोग ससांर के हर समुदाय में " बड़े बड़े काम" (यूहन्ना 14:12) कर रहे हैं।
- आज सारे संसार भर में लाखों लोग शैतान और उसकी दुष्टात्माओं की कैद से छुड़ाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर रहें हैं।
- इन परिवर्तित मसीहीयों का जीवन प्रगट करते हैं कि यीशु मसीह वास्तव में इस दुनिया का राजा है!

नये नियम में प्रभु यीशु मसीह द्वारा अनगिनत संदेश परमेश्वर के राज्य के विषय में दिये गये हैं। परमेश्वर का राज्यः

- वर्तमान वास्तविकता है
- प्रगतिशील वास्तविकता है
- भविष्यसम्बन्धी सिद्ध वास्तविकता है!

यीशु मसीह ने परमेश्वर के राज्य के बारे में लगभग पचास से ज्यादा दृष्टान्त बताएं हैं।(नियमावली 9, परिशिष्ट 2 देखें)

(2) यीशु मसीह के प्रथम आगमन से ही शैतान को बांध दिया गया है।

उसकी मृत्यु, पुनरूत्थान और उठाये जाने तथा स्वर्ग के सिंहासन पर विराजमान होने के द्वारा, यीशु मसीह ने शैतान को "बांध" दिया है, अर्थात उसकी सामर्थ को *सीमित* कर दिया है, ताकि वह भविष्य में लोगों को धोखा न दे सके। शैतान संसार के किसी भी देश और जाति में मसीही कलीसिया का निर्माण होने से नहीं रोक सकता है। लेकिन,मसीह ने अभी शैतान को इस ससांर से बाहर नहीं निकाला है। शैतान और उसकी दुष्टात्माएं अभी भी दुनिया के लोगों को अच्छा खासा नुकसान पहुंचा सकते हैं! मसीह पर पूरी तरह से निर्भर होने के लिए, मसीहीयों को संसार में रहते हुए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मसीही की जीत का लगातार करना होगा।

हर एक मसीही मसीह उद्धार के निमित्त द्वारा पूरे किये गये कामों के आधार पर शैतान पर विजय प्राप्त करता है (प्रकाशित वाक्य 12:11), जिसके कारण शैतान के हाथ से वे लोग निकल जाते हैं जो कभी उसके कब्जे में हुआ करते थे। अपनी प्रार्थनाओं, प्रचार और वचन की शिक्षाओं और समाज में अपने बड़े बड़े कामों के द्वारा, मसीही लोग शैतान को बांध रहे और उससे उन लोगों को छुड़ा रहे हैं जिन पर पहले वह अधिकार किया करता था।

मसीह और शैतान के बीच इस लडाई में उदासीन होना असम्भव है। जो कोई यीशु के "साथ" नहीं है वह मसीह के "विरूद्ध" है (मत्ती 12:30)! सारे लोग या तो इकट्ठा होते हैं या तितर बितर होते हैं। जितने लोग परमेश्वर के राज्य में मसीह कामों के द्वारा लोगों को इकट्ठा करते हैं वे *मसीह के साथ* है। और जितने लोग जो लोगों को उनकी खोयी हुई दशा में शैतान का शिकार होने के लिए छोड़ देते हैं, वे *मसीह के विरूद्ध* हैं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रिया)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*** या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "बलवन्त जन के बांधे जाने का दृष्टान्त" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को –प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। उत्पत्ति 32,37,39, और 45** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें। (2) "परमेश्वर के राज्य में बच्चों"** । रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।

5. **<u>बाइबल अध्ययन।</u> रोमियों 1:1–17** के आधर पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
   ध्यान दें।
6. **<u>प्रार्थना।</u>** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का <u>अद्यपन करें।</u> जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

राज्य अध्याय 2

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज़ सुनने और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।***

अपने समूह और परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित इस अध्याय को प्रभु के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **उत्पत्ति 32,37,39 और 45**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (उत्पत्ति 32,37,39 और 45) से शान्त समय में क्या सीखा है।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(2) लूका 18:16-17**

दो-दो करके ***समीक्षा करें।***

(2) परमेश्वर के राज्य में बच्चों का स्वागत करें। लूका 18:16-17। बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करोः क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुस से सच कहता हूँ कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करेगा वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 1:1-17**

एक दल के रूप में बाइबल अध्ययन करने का उद्देश्य यीशु मसीह और एक दूसरे के साथ अपने संबंध में उन्नति करना है। यह एक दूसरे की सहायता के लिए है कि हम बाइबल का ज्ञान प्राप्त करें उसे समझें और उसकी शिक्षाओं का अभ्यास करें। इस कारण से यह आवश्यक है कि दल के सदस्य एक दूसरे को बाइबल अध्ययन में भाग लेने के लिए उत्साहित करें। दल के हर एक सदस्य की भागिदारी आवश्यक है। यदि कोई कुछ कह रहा है और वह पूर्ण रूप से सही न भी हो तो उसे वह बंद नहीं करना चाहिए (धार्मिक रूप से)। दल के अगुवे और सदस्यों को एक साथ मिलकर सीखने के

लिए उत्साहित करना चाहिए कि वे बाइबल के शिक्षाओं को खोजें और उन पर विचार करें। दल के हर एक सदस्य को यह महसूस होना चाहिए कि जब वह बोल रहा है तो बाकि के सदस्य उसे *सुनते उसे गम्भीरता से लेते* और *स्वीकार करते हैं।* दल के सदस्य एक दूसरे के साथ बाइबल के ज्ञान में प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहें, लेकिन एक दूसरे को बढ़ाने के लिए और विश्वास के साथ साझा करने के लिए उत्साहित करने के द्वारा एक दूसरे से प्रेम कर रहे हैं।

नीचे दिये गये बाइबल अध्ययन के उदाहरणों में अच्छी तरह से दल के अगुवे की सहायता के लिए सोचा गया है जिससे उसे बाइबल अध्यय की तैयारी करने या किसी कठिन प्रश्न के विषय में दल की सहायता करने में मदद मिले जिस पर दल चर्चा कर रहा हो। आपके बाइबल अध्ययन में दल के सदस्यों द्वारा खोजी गई चीजों से अलग चीज़ें और पूछे गए प्रश्नों की अपेक्षा अलग प्रश्न हो सकते हैं।

रोमियों 1:1–17 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का प्रयोग करें।

परिचय। रोमियों की पत्री प्रेरित पौलुस द्वारा 57 ई. में कुरिन्थ से रोम में रहने वाले मसीहियों को लिखी गयी थी। रोमियों 1:1–7 में लेखक, प्रेरित पौलुस की बुलाहट और कार्य शामिल हैं। और रोमियों 1:8–17 में रोम के लोगों को लिखे गए इस पत्र के विषय का परिचय मिलता है। रोमियों 1:16 कहता है, "क्योंकि मैं सुसमाचर से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।" रोमियों को लिखा गया पौलुस का पत्र सुसमाचार की सामर्थ के बारे में सिखाता है! यह सिखाता है कि <u>सुसमाचार लोगों को धर्मी ठहराने और शुद्ध करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ है। सुसमाचार लोगों के लिए परमेश्वर का संदेश है कि कैसे वे उद्धार पा सकते और एक नए मनुष्य में बदल सकते हैं!</u>

<u>चरण 1. पढ़ें।</u> **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइए हम एक साथ रोमियों 1:1–17 पढ़ें।

आइए हम बारी–बारी एक–एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम इन आयतों को पूरा न पढ़ लें पढ़ना पूरा न कर लें।

<u>चरण 2. खोज करें।</u> **अवलोकन**

विचार करें। इस गद्याशं में आपके लिए कौन सा सत्य महत्वपूर्ण है?

या इस पद में से कौन सा सत्य आपके दिमाग या दिल को छूता है?

लिख लें। एक या दो सत्यों की खोज करें जिन्हें आप समझते हैं। उनके विषय में सोचें और अपने विचारों को अपनी नोट–बुक में लिखें।

साझा करें। (समूह के सदस्यों के सोचने और लिखने के दो मिनट बाद, एक एक करके उन विचारों को एक दूसरे के साथ बाटें)

आइए हम एक दूसरे के साथ उन बातों को साझा करें, जिन्हें हमने खोजा है।

(स्मरण रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग–अलग चीजें साझा करेंगे)

1:1–7

खोज 1. **प्रेरित पौलुस अपना परिचय किस प्रकार देता है।**

रोमियों को लिखा यह पत्र किसी भी व्यक्ति का अविष्कार नहीं था, लेकिन यह सुसमाचार का एक प्रेरणात्मक प्रकाशन था जो एक विशेष व्यक्ति अर्थात प्रेरित पौलुस को प्राप्त हुआ। प्रेरित पौलुस अपना परिचय ''यीशु मसीह के दास'' के रूप में देते हैं, जो यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिए और परमेश्वर के सुसमाचार (अच्छी खबर) का प्रचार करने के लिए अलग किये गये थे। सुसमाचार का संदेश सब बातों के ऊपर है, यह नहीं कि मनुष्यों को उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए, लेकिन यह कि परमेश्वर ने यीशु मसीह में लोगों के उद्धार के लिए क्या किया (रोमियों 1:1)। नए नियम में सुसमाचार का संदेश पुराने नियम में प्रकट की गई प्रतिज्ञा का भाग है जिसके बारे में भविष्यद्वक्ताओं ने सिखाया (रोमियों 1:2; प्रेरितों 24:14; 26:22)। सुसमाचार का विषय यीशु मसीह, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान है। उसका पुनरुत्थान स्वर्ग में उसकी वर्तमान स्थिति को दर्शाता है (रोमियों 1:3–4)। अपने प्रेरित होने के काम को पौलुस ने इस अलौकिक व्यक्ति अर्थात यीशु मसीह से प्राप्त किया। उसका सेवा करने का स्थान केवल उसका अपना नगर नहीं था, लेकिन दूसरे राष्ट्र भी थे (रोमियों 1:5) और इसमें वे लोग भी शामिल थे जो रोम में रहते हैं (रोमियों 1:6)। पौलुस ने अक्सर अपने पत्र की शुरूआत मसीहियों के लिए परमेश्वर के अनुग्रह और परमेश्वर की शांति की कामना करते हुए की (रोमियों 1:7)।

1:8–17

खोज 2. **प्रेरित पौलुस ने रोमियों को अपने पत्र के विषय का परिचय किस प्रकार दिया।**

रोमियों के पत्र का विषय ''यहूदियों और अन्यजातियों (गैर–यहूदी) दोनों के लिए विश्वास से उद्धार है।'' पौलुस सबसे बड़े विषय का परिचय प्रचार करते हुए बड़े सम्मानजनक तरीके से देते हैं। वह रोम में रहने वाले मसीहियों के प्रति अपना आदर और प्रेम प्रकट करते हैं। वह उनके विश्वास के लिए परमेश्वर का धन्यवाद देते हैं कि उनका विश्वास सारे जगत को प्रभावित कर रहा है (रोमियों 1:8)। वह उनके विषय में अपनी चिंता को उनके लिए लगातार प्रार्थना करने के द्वारा प्रकट करते हैं (रोमियों 1:9) और उनसे मिलने की अपनी इच्छा को प्रकट करते हैं (रोमियों 1:10) ताकि वह उन्हें स्थिर कर सकें (रोमियों 1:11) एक दूसरे को उत्साहित कर सकें (रोमियों 1:12) और उन में फल आते देख सकें (रोमियों 1:13)। पौलुस सुसमाचार प्रचार करने के लिए बाधित है इसलिए वह रोम में भी सुसमाचार का प्रचार करना चाहता है (रोमियों 1:14–15)। सुसमाचार प्रचार करने की उसकी उमंग उसकी सुसमाचार की स्पष्ट समझ से शुरू होती है। वह महसूस करता है कि यहूदियों ने सुसमाचार को नहीं समझा और अन्य जातियों ने सुसमाचार नहीं सुना। सुसमाचार केवल एक मात्र संदेश नहीं है, परन्तु एक सामर्थी माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर उन लोगों को उद्धार (धर्मी) देते हैं, जो लोग जाति और संस्कृति के भेद के बिना विश्वास करते हैं (रोमियों 1:16)। सुसमाचार बहुत सामर्थी और प्रभावशाली है, क्योंकि यह धर्मी ठहरने के तरीके को सिखाता है, जो उद्धार पाने का सच्चा मार्ग है। उद्धार (धर्मी) का एक मात्र मार्ग विश्वास (प्रभु यीशु मसीह में विश्वास) है (रोमियों 1:17)।

इस प्रकार, पौलुस रोमियों को लिखे गए इस पत्र में दो विषयों का परिचय देता है। पहला उद्धार का तरीका है और दूसरा वे लोग हैं जिनके लिए उद्धार की पेशकश की जानी चाहिए। उद्धार केवल विश्वास के द्वारा है और उद्धार की पेशकश संसार के सभी लोगों के लिए है यहूदी और अन्यजाति दोनों के लिए।

चरण 3. प्रश्न। व्याख्या

विचार करें। इस गद्यांश में कौन सा प्रश्न आप अपने इस दल से पूछना चाहेंगे?

आइए रोमियों 1:1-17 में सभी सत्यों को समझने की कोशिश करें और जो बातें हमें समझ नहीं आई उनके बारे में प्रश्न पूछें।

लिख लें। अपने प्रश्न को यथा संभव स्पष्ट रूप से तैयार करें। फिर अपनी नोटबुक में अपना प्रश्न लिखें।

साझा करें। (दल के सदस्यों को सोचने और लिखने के लगभग दो मिनट बाद, प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रश्न साझा करनें दें।)

चर्चा करें। (फिर इनमे से कुछ प्रश्नों को चुनें और उन्हें अपने दल में एक साथ चर्चा करके उत्तर देने का प्रयास करें।)

(निम्नलिखित प्रश्न उन प्रश्नों के उदाहरण हैं जो कुछ छात्र पूछ सकते हैं और कुछ नोट्स प्रश्नों की चर्चा के बारे में हैं।)

1:3-4

प्रश्न 1. **यीशु मसीह के पुनरुत्थान का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। पौलुस कहता है कि "परमेश्वर का सुसमाचार उसके पुत्र के विषय में है जो अपने मानव स्वभाव के अनुसार दाऊद का वंशज था, और जो पवित्रता की आत्मा के भाव से मुर्दों में से जी उठने के कारण परमेश्वर का पुत्र ठहरा।" बिना पुनरुत्थान के यीशु मसीह की मृत्यु का कोई अर्थ नहीं।

(1) यीशु मसीह का पुनरुत्थान परमेश्वर द्वारा मसीह के उद्धार के पूर्ण कार्य की स्वीकृति को सिद्ध करता है।

कोई भी अन्य भविष्यद्वक्ता जो इस पृथ्वी पर रहा या जिसने इतिहास में भविष्यद्वक्ता होने का दावा किया, मुर्दों में से *जीवित* नहीं हुआ (देखें, मरकुस 8:31)! संसार के इतिहास के सभी भविष्यद्वक्ता (दूसरे धर्मों के भविष्यद्वक्ताओं को मिलाकर) अभी भी अपनी कब्रों मे पड़ें हैं। यीशु मसीह एक मात्र ऐसा व्यक्ति है जो मुर्दों में से जी उठा और आज भी जीवित है! यह तथ्य साबित करता है कि यीशु मसीह सब से बड़ा भविष्यद्वक्ता है और वह भविष्यद्वक्ता से कहीं बढ़कर है! उसका पुनरुत्थान साबित करता है कि परमेश्वर ने हमें बचने के लिए उसकी प्रतिस्थापन मृत्यु (हमारे स्थान पर) को स्वीकार कर लिया है।

(2) यीशु मसीह का पुनरुत्थान यीशु मसीह की वर्तमान स्थिति को प्रकट करता है।

यीशु मसीह ने संसार के उद्धारकर्ता और इस जगत का स्वामी होने का दावा किया। मुर्दों में से उनका पुनरुत्थान उनके सभी दावों की वैधता का निर्णायक प्रमाण है। और यह उनकी सभी शिक्षाओं के सत्य का शक्तिशाली प्रदर्शन है।

रोमियों 1:3-4 में हम पढ़ते हैं कि मुर्दों में से उनके पुनरुत्थान के द्वारा, यीशु मसीह "सामर्थ के साथ परमेश्वर के पुत्र ठहरे (आदेश दिया, घोषित किया)"। वचन 3 और वचन 4 के बीच में अंतर यीशु मसीह के मानवीय और अलौकिक स्वभाव में अंतर नहीं है लेकिन मसीह के मानवीय स्वभाव के दो तत्वों के बीच है। वचन 3 बताता है कि वह अपने पुनरुत्थान से पहले क्या थे और वचन 4 बताता है कि वह अपने पुनरुत्थान के बाद क्या *बन गए।* अतंर मसीह के मानवीय रूप में निन्दा की स्थिति और उनकी मानवीय स्थिति की बुलंदी के बीच है! यीशु मसीह हमेशा से ही "परमेश्वर के पुत्र" थे, उनके पास हमेशा से ही वह *अलौकिक स्वभाव* था *(अलौकिक स्थिति)।* लेकिन उनके पुनरुत्थान से पहले उनके *मानवीय स्वभाव* को "शरीर" के रूप में वर्णित किया गया जो पाप और मृत्यु के कारण "कमज़ोर" है। उनका मानवीय स्वभाव संसार के पापों के कारण कमज़ोर था जिन्हें उन्होंने अपने ऊपर ले लिया और इसका कारण यह था कि उन्हें अभी भी इन पापों के लिए मरना था। लेकिन अपनी मृत्यु में उन्होंने मानवीय स्वभाव की सभी करमज़ोरियों को दूर कर दिया और पाप और मृत्यु के साथ हर एक संबंध को काट डाला। उनके पुनरुत्थान में उनका मानवीय स्वभाव (उसका शरीर) बदल (रूपांतरित हो गया) गया था इसलिए उन्हें रोमियों 1:4 में "पवित्रता की आत्मा और 1कुरिन्थियों 15:45 में "जीवन दायक आत्म" के रूप में संबोधित किया गया। उनका पुनरुत्थित मानवीय स्वभाव शक्तिशाली है और पवित्र आत्मा से इतना पूर्ण और सामर्थ पाया हुआ और पवित्र आत्मा के इतने नियंत्रण में है कि 2कुरिन्थियों 3:17-8 में उन्हें "प्रभु जो आत्मा है" और "प्रभु की आत्मा" कहा गया है। <u>यीशु मसीह का पुनरुत्थान उन्हें "प्रभुता के एक ऐसे स्तर पर ले आया है जो पूर्ण रूप से पवित्र आत्मा के नियंत्रण में है"!</u>

1:5

***<u>प्रश्न 2</u>*. <u>"सभी जातियों में से लोगों को बुला कर विश्वास के द्वारा आज्ञाकारिता के लिए प्रेरिताई मिली" इस अभिव्यक्ति का क्या अर्थ है?</u>**

ध्यान दें। मूल पाठ में कहा गया है कि पौलुस को अनुग्रह और प्रेरिताई मिली की उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें। हमें कैसे "विश्वास की आज्ञाकारिता" इस शब्द को समझें? हाँलाकि संभव है कि हम इसकी व्याख्या एक सामान्य संबंधकारक के रूप में करें: "विश्वास (मसीही) का पालन" लेकिन यह बेहतर होगा कि हम इसकी व्याख्या एक व्यक्तिपरक के रूप में करें: "आज्ञाकारिता जो (व्यक्तिगत) विश्वास में शामिल है"। वास्तविक मसीही आज्ञाकारिता में यीशु मसीह पर विश्वास करने की विशेषता शामिल है (यूहन्ना 6:28-29) और वास्तविक मसीही विश्वास में मसीह की आज्ञाकारिता की विशेषता है (यूहन्ना 14:21,23)। इसका अर्थ बहुत बड़ा है। जिस "विश्वास" का प्रचार पौलुस ने किया उसका अर्थ केवल यीशु मसीह को एक बार अपने उद्धार कर्ता के रूप में स्वीकार करना ही नहीं है। पौलुस ने जिस तरह के विश्वास को बढ़ावा देना चाहता

था, वह उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में मसीह पर विश्वास की आजीवन प्रतिबद्धता और मसीह की आज्ञाकारिता थी। सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा प्रेरित पौलुस ने लोगों को यीशु मसीह और उनकी शिक्षाओं के प्रति सम्पूर्ण हृदय से समर्पित जीवन जीने के लिए बुलाया।

1:6-7

प्रश्न 3. **"मसीह के होने के लिए बुलाए गए", "संत होने के लिए बुलाए गए" इन शब्दों का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। "बुलाए गए" शब्द के दो अलग अगल अर्थ हो सकते हैं।

(1) बाहरी बुलाहट।

यूहन्ना बपत्स्मा देने वाले ने कहा कि "वह जंगल में *पुकारने वाले* का शब्द है।" यूहन्ना का अर्थ था कि, उसके प्रचार के द्वारा वह इस्राएलियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार होने के लिए बुला रहा है (यूहन्ना 1:23)। इस संदर्भ में "बुलाहट" शब्द परमेश्वर की *बाहरी बुलाहट* को प्रकट करता है, जिसमें वह लोगों को विश्वास करने के लिए यीशु मसीह के सुसमाचार प्रचार के माध्यम से आमंत्रित करता है। हाँलाकि, अक्सर इस बाहरी बुलाहट की अपेक्षा की जाती है (1कुरिन्थियों 1:23)।

(2) आंतरिक बुलाहट।

"बुलाहट" शब्द का प्रयोग बाइबल में विशेष रूप से अर्थात परमेश्वर की *आंतरिक बुलाहट* के रूप में किया गया है, जिसमें वह उन लोगों को आकर्षित करता है जिन्हें उसने जगत की उत्पत्ति के पहले से मसीह में प्रबलता से चुन लिया। "परमेश्वर ने आदि से आपको चुन लिया है, कि आत्मा के द्वारा पवित्र बन कर, और सत्य की प्रतीती करके उद्धार पाओ। जिस के लिए उस ने तुम्हें हमारे सुसमाचार के माध्यम से *बुलाया* है" (2थिस्सलुनीकियों 2:13)।

सदैव ऐसे लोग होते हैं जो सुसमाचार प्रचार के द्वारा अपनी बाहरी बुलाहट प्राप्त करते हैं, लेकिन वह उसके साथ सहमत नहीं होते जो अविश्वासी ही बने रहते हैं (मत्ती 22:14)। लेकिन जो कोई भी पवित्र आत्मा के द्वारा अपने हृदय में आंतरिक बुलाहट प्राप्त करता है वह प्रबलता से यीशु मसीह के समीप आता है (यूहन्ना 6:44, 37)। रोमियों 1:6-7 में पौलुस यह शब्द परमेश्वर की आंतरिक बुलाहट के विषय में प्रयोग करता है। रोमियों के लोग मसीह के थे और अपने सदाचार के कारण संत थे और अपने हृदयों में पवित्र आत्मा के काम के द्वारा परमेश्वर की ओर से बुलाये गए थे। वे मसीह बन गए लेकिन इसलिए नहीं कि उनमें कोई बात थी, लेकिन सिर्फ परमेश्वर की प्रबल और प्रभावशाली बुलाहट के कारण। वे लोग जो "मेरे नाम के कहलाते हैं (शाब्दिक रूप से: "जिन पर प्रभु का नाम पुकारा गया है") (प्रेरितों 15:17) परमेश्वर के चुने हुए लोगों को प्रदर्शित करता है। परिणाम स्वरूप वे उसी के हैं। इस प्रकार, जिन लोगों को परमेश्वर *बुलाता* है वे परमेश्वर के *चुने* हुए लोग होते हैं (1कुरिन्थियों 1:24-30)। जिन लोगों को परमेश्वर *बुलाता* ये वह लोग होते हैं जिन्हें परमेश्वर उद्धार पाने और मसीह के स्वरूप में होने के लिए *चुनता* है (रोमियों 8:28-43)। "बुलाहट" का अर्थ लगभग "चुने हुए" के समान है। यह वास्तविक विश्वासियों का पद है (प्रकाशितवाक्य 17:14; यहूदा 1:1)। इस प्रभावशाली बुलाहट के आधार पर रोम के विश्वासी मसीह के थे और उन्हें संत बनाया

गया था (लोग जो परमेश्वर की सेवा और उसके लिए *समर्पित* जीवन जीने के लिए संसार *से अलग किए* थे)। ध्यान दें: "कलीसिया" शब्द यूनानी में "इकलीसिया" है, जिसका अर्थ है "परमेश्वर के बुलाए हुए लोग"।

1:14–16

प्रश्न 4. **सुसमाचार किस प्रकार परमेश्वर की सामर्थ्य है?**

ध्यान दें। पौलुस स्वयं को यूनानी भाषा बोलने वाले और संसार में रहने वाले अन्य सभी विदेशी लोगों का कर्ज़दार मानता है। वह अपनी सेवाकाई को विद्वान और सामान्य लोगों से जोड़ता है। और इसी कारण वह रोम में भी सेवकाई करने की इच्छा रखता है।

रोमियों 1:16 में पौलुस कहता है, "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।" सुसमाचार सामर्थी है क्योंकि परमेश्वर इसके द्वारा कार्य करता है और इसका परिणाम सभी राष्ट्र के लोगों का उद्धार होता है।

(1) सुसमाचार परमेश्वर की सामर्थ्य है।

सुसमाचार परमेश्वर की सामर्थ्य है क्योंकि यह वह संदेश है जिसके द्वारा परमेश्वर कार्य करते हैं और जिसके द्वारा वह लोगों को उद्धार (धर्मी ठहराता) देते हैं। परमेश्वर लोगों को मनुष्य की बुद्धि या सामर्थ्य के द्वारा उद्धार नहीं देते लेकिन सुसमाचार के द्वारा देते हैं (1कुरिन्थियों 1:20–25)। सुसमाचार में परमेश्वर की सामर्थ्य "एक परमेश्वर" के संदेश द्वारा नहीं प्रकट हुई (यहूदी धर्म का एक ईश्वरवाद) या एक "सिद्ध नैतिक संहिता" (यूनानी धर्म का नैतिक जीवन) द्वारा नहीं, बल्कि "क्रूस पर चढ़ाए गए उद्धारकर्ता" और "केवल उस पर विश्वास द्वारा धर्मी ठहरने" के द्वारा प्रकट हुई। परमेश्वर की सामर्थ्य उस व्यक्ति को धर्मी (उद्धार) ठहराती है जो क्रूस पर चढ़ाए यीशु मसीह पर विश्वास करता है। "यीशु मसीह और उनका क्रूस पर चढ़ाया जाना" (1कुरिन्थियों 2:2)। वह सुसमाचार के संदेश का आदि (अल्फा) और अंत (ओमेगा) है (1कुरिन्थियों 1:18; 2:2; गलातियों 5:11; 6:14)।

(2) सुसमाचार का अलग अलग विश्वासियों पर एक शक्तिशाली प्रभाव है।

यीशु मसीह में प्रत्येक विश्वासी को बचाकर एक निश्चित स्थिति से एक दूसरी स्थिति में पहुंचाया जाता है। यीशु मसीह में प्रत्येक विश्वासी को कुछ निश्चित बुराईयों से बचाकर कुछ निश्चित आशीषों का आनंद लेने के लिए उद्धार दिया जाता है। यीशु मसीह में प्रत्येक विश्वासी को निम्न बुराईयों से बचाया जाता है:

- वह पापों की *दोष भावना* से बचाया जाता है क्योंकि उसके पाप क्षमा किए जाते हैं।
- वह पापों की *शर्म* से बचाया जाता है, क्योंकि उसका नाम और सम्मान फिर से पुर्नस्थापित किया जाता है।
- वह पापों की *भ्रष्टता* से बचाया जाता है, क्योंकि क्रूस पर बहा यीशु का लहू उसे पापों से शुद्ध करता है।
- वह पापों की *गुलामी* से बचाया जाता है, क्योंकि मसीह ने उसे पापों की सामर्थ्य से स्वत्रंत किया है।

- वह पापों के अनंत *दण्ड* से बचाया जाता है, जिसमें परमेश्वर से अलगाव और परमेश्वर का क्रोध और अनंत मृत्यु शामिल है, क्योंकि यीशु मसीह ने वह दण्ड उसके स्थान पर अपने ऊपर ले लिया!

मसीह में प्रत्येक विश्वासी निम्नलिखित आशीषों का आनंद उठाने के लिए बचाया जाता है।

- वह परमेश्वर की दृष्टि में एक आदर्श पवित्र *स्थिति* प्राप्त करता है।
- वह पवित्रता में *बढ़ने की क्षमता* प्राप्त करता है।
- वह *एक परिवर्तित और फलवंत जीवन जीने की क्षमता* प्राप्त करता है।
- वह *परमेश्वर की आशीषों का आनंद लेने के लिए* बचाया जाता है, जिसमें परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संगति, परमेश्वर का प्रेम और अनंत जीवन शामिल है।

(3) सुसमाचार का राष्ट्रों पर एक शक्तिशाली प्रभाव है।

सुसमाचार संसार के सभी राष्ट्रों के लोगों का उद्धार करता है! इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसी व्यक्ति की पिछली नागरिकता या धर्म क्या था, जब वह यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह निश्चित रूप से उद्धार पाता है! बाइबल कहती है, "पहले यहूदी, फिर यूनानी (गैर-यहूदी)"। यहाँ पर "पहले" शब्द का अर्थ "विशेष रूप से" नहीं है, क्योंकि सुसमाचार विशेष रूप से यहूदियों के लिए नहीं बनाया गया (रोमियों 3:9,22,29; 10:12)। इसका अर्थ है "समय में पहले" क्योंकि सुसमाचार पहले यहूदियों को प्रचार किया गया (मत्ती 10:5-6; प्रेरितों 13:46-47) फिर उसके बाद अन्यजातियों को प्रचार किया गया (मत्ती 28:19)।

"यूनानी", यूनानी भाषा बोलने वाले अन्यजाति थे, जिनके साथ यहूदी उस समय सबसे अधिक परिचित थे। वे पृथ्वी पर रहने वाले सभी गैर-यहूदी राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1:17 क

प्रश्न 5. **परमेश्वर की ओर से वह कौन सी धार्मिकता है जो सुसमाचार में प्रकट की गई?**

ध्यान दें। पौलुस कहता है, "क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रकट होती है; (शाब्दिक रूप से: विश्वास से विश्वास के लिए), जैसा लिखा है कि, 'धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा'।" यहाँ परमेश्वर की ओर से धार्मिकता को परमेश्वर की विशेषता या चरित्रगुण नहीं समझा जा सकता, क्योंकि यह विश्वास से प्राप्त होती है। "धार्मिकता" शब्द को विभिन्न लोगों द्वारा अलग अलग रूप से परिभाषित किया गया है।

(1) धार्मिकता वह चीज़ नहीं जो मनुष्य के द्वारा अर्जित या स्थापित की जाती।

धार्मिक यहूदी पूरे प्रयास के साथ व्यवस्था को ताक पर रखकर अपनी धार्मिकता स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे। वे "धार्मिकता" को व्यवस्था का पालन करने वाले व्यक्ति की नैतिक और धर्म सम्बन्धित धार्मिकता के रूप में मानते थे।

लेकिन यहूदी (और उनके जैसे अन्य धर्म) यह नहीं समझ पाए कि धार्मिकता को अर्जित या लोगों द्वारा स्थापित नहीं किया जा सकता। धार्मिकता केवल परमेश्वर की ओर से मिलती है: यह यीशु मसीह के (मारे जाने, गाड़े जाने और पुनरुत्थान) के द्वारा अर्जित की गई और परमेश्वर की ओर से उन

लोगों को सेंत मेंत (मुफ्त में) दी जाती है जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं (रोमियों 10:3-4; फिलिप्पियों 3:9)। लोगों को यह जानना आवश्यक है कि ''एक व्यक्ति व्यवस्था का पालन करने से धर्मी नहीं, लेकिन यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है'' (गलातियों 2:16)।

संसार में आज मसीही लोगों का एक समूह यह सोचता है कि परमेश्वर पहले बच्चों को पानी से बपतिस्मा देकर फिर लोगों के भले कामों के द्वारा उन्हें धर्मी ठहराता है। वे ऐसा विश्वास करते है कि पानी के बपतिस्में में परमेश्वर का अनुग्रह उन पर उडेंला जाता है ताकि वे सहज रूप से धर्मी बनें और उसके बाद भले काम करें। इसलिए वे ''धार्मिकता'' को एक व्यक्ति की नैतिक और धर्म सम्बन्धित धार्मिकता के रूप में समझते हैं जिसे कलीसिया द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है और वह भले काम करता है।

संसार में आज मसीही लोगों का एक और समूह भी है जो यह भी सोचता है कि परमेश्वर लोगों को सुसमाचार पर विश्वास के उनके स्वयं के कार्य और व्यवस्था का पालन और इसके बाद यीशु मसीह की शिक्षाओं का पालन करने के द्वारा धर्मी ठहराते हैं। वे विश्वास और सुसमाचार पालन को व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा के व्यक्तिगत कार्य के रूप में देखते है। साथ ही वे ''धार्मिकता'' को किसी व्यक्ति की नैतिक और धर्म सम्बन्धी धार्मिकता के रूप में मानते हैं जो अपनी स्वत्रंत इच्छा से यीशु पर विश्वास करता और उनकी शिक्षाओं का पालन करता है।

हालाँकि, धार्मिकता कुछ ऐसा नहीं है जो किसी व्यक्ति के द्वारा अर्जित या स्थापित की गई है।

(2) धार्मिकता कुछ ऐसी चीज है जिसे यीशु मसीह ने विश्वासी के लिए प्राप्त (अर्जित और स्थापित) किया गया है।

कोई भी मनुष्य अपनी धार्मिकता स्थापित नहीं कर सकता क्योंकि धार्मिकता परमेश्वर से आती है (रोमियों 3:21; गलातियों 2:16; फिलिप्पियों 3:9)! रोमियों के पूरे पत्र में धार्मिकता कुछ ऐसा नहीं है, जो स्वयं विश्वासी के द्वारा प्राप्त किया गया! धार्मिकता कलीसिया में कुछ करने या विश्वासी के के द्वारा स्वयं कुछ करने से प्राप्त नहीं होती और साथ ही।

धार्मिकता केवल परमेश्वर की ओर से और मसीह द्वारा दो हजार साल पहले विश्वासी के लिए किये गये उन कामों (उसने आवश्यक धार्मिकता को प्राप्त) द्वारा और जो वह वर्तमान समय में विश्वासी के लिए कर रहा है (वह इस धार्मिकता को उस में अनुग्रह के द्वारा विश्वासी को देता है), द्वारा दी जाती है। यीशु मसीह ने एक विश्वासी के स्थान पर स्वयं अपने जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा इस धार्मिकता को विश्वासी के लिए *अर्जित* किया। इस पृथ्वी पर अपने पूर्ण और सिद्ध जीवन और क्रूस पर अपने प्रायश्चित बलिदान के द्वारा, यीशु ने पाप के प्रति परमेश्वर के पवित्र और धार्मिक क्रोध (कोप) को अपने ऊपर लिया (और इस प्रकार विश्वासी से दूर किया) (1पतरस 2:24)। इस प्रकार उन्होंने विश्वासी के लिए आवश्यक धार्मिकता को अर्जित किया और उस विश्वासी को दान किया। पूर्ण और सिद्ध रूप से धर्मी यीशु अधर्मी मनुष्य के पापों के लिए मरे, केवल उसके पापों के प्रायश्चित के लिए नहीं[1] (प्रायश्चित करने के लिए, आवश्यकता प्रायश्चित बलिदान करने के लिए) वरन विश्वासी का परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कराने के लिए[2] भी (टूटे हुए संबंध को फिर से स्थापित करने के लिए)(1पतरस 3:18; 2कुरिन्थियों 5:21)। उसने पापी के स्थान पर सभी पापियों के लिए पाप का सम्पूर्ण दण्ड चुकाया जो उस पर विश्वास करते हैं (मरकुस 10:45; यूहन्ना 10:11)।

धार्मिकता हैः

- पाप के विरोध में परमेश्वर के पवित्र और धार्मिक क्रोध के प्रति पूर्ण संतुष्टि।
- सभी पापों की सिद्ध क्षमा के संबंध में परमेश्वर की न्यायिक घोषणा।
- परमेश्वर के परिवार में सभी विश्वासियों की उचित स्वीकृति।

इसलिए धार्मिकता परमेश्वर की *न्यायिक धार्मिकता* है।

(3) धार्मिकता कुछ ऐसी है जो परमेश्वर के द्वारा विश्वासी को दिया (प्रदान) गया है।

परमेश्वर हर एक विश्वास करने वाले व्यक्ति को यीशु मसीह की धार्मिकता (जो यीशु मसीह ने प्राप्त की) प्रदान करते हैं। न्यायधीश के रूप में परमेश्वर उसे पूरी तरह से (100प्रतिशत) धर्मी *घोषित* करते है और अपनी दृष्टि में उससे पूरी तरह से (100प्रतिशत) धर्मी के *समान व्यवहार करते* हैं! इसलिए धार्मिकता किसी व्यक्ति की नैतिक और धर्म सम्बन्धी धार्मिकता नहीं है, बल्कि परमेश्वर की न्यायिक धार्मिकता हैं।

यीशु मसीह विश्वासी के लिए वह करते हैं जो विश्वासी स्वयं के लिए नहीं कर सकताः उन्होंने परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता को निम्न बातों के द्वारा प्राप्त कियाः

- विश्वासी के स्थान पर उसके लिए पूर्ण रूप से पवित्र और धर्मी जीवन व्यतीत किया।
- विश्वासी के स्थान पर उसके लिए मरे (दण्ड चुकाया)
- विश्वासी के स्थान पर फिर से जी उठे!

इस प्रकार जो धार्मिकता यीशु मसीह ने अर्जित की वह विश्वासी के खाते में (स्थाई रूप से, जोड़ दी गई, प्रदान की गई है) दे दी गई है। परमेश्वर विश्वासी को पूर्ण रूप से धर्मी *ठहराते* हैं और हमेशा के लिए उसके साथ पूर्ण रूप से धर्मी के *समान व्यवहार करते* हैं!

परमेश्वर अब विश्वासी को मसीह में एक ''दोषी व्यक्ति'' के रूप में नहीं मानते लेकिन, हमेशा एक ''धर्मी व्यक्ति'' मानते हैं, चाहे अभी भी उसका स्वभाव पापमय हो या उसने कई बार पाप भी किया हो। उसके पापों के लिए उसके स्थान पर प्रायश्चित बलिदान, *एक ही बार हमेशा के लिए* क्रूस पर चढ़ाया गया है। यह अविश्वसनीय है! इसके बाद परमेश्वर कभी भी उनके पापों या व्यवस्थाहीन कामों को याद नहीं करते (इब्रानियों 10:17-18)!

(4) धार्मिकता विश्वासी द्वारा प्राप्त की जने वाली कोई चीज़ है।

विश्वासी यीशु मसीह की धार्मिकता को विश्वास के द्वारा प्राप्त करते हैं! केवल यीशु मसीह की धार्मिकता ही विश्वासी को धर्मी (उद्धार) ठहरा सकती है। विश्वासी केवल विश्वास से ही इस धार्मिकता को ग्रहण कर सकते हैं।

---

[1] प्रायश्चित करने के लिए, मसीह स्वयं उनके पापों के लिए प्रायश्चित के बलिदान के रूप में संसार में आये। उन्होंने पापी के विरोध में परमेश्वर के पवित्र और धर्मी क्रोध (कोप) को अपने ऊपर लेकर उन्हें संतुष्ट किया। उन्होंने समस्या को हटाया।

[2] मेलमिलाप के लिए, मसीह ने समस्या के परिणामों को (परमेश्वर से अलगाव) हटा दिया और इस प्रकार परमेश्वर के साथ टूटे हुए रिश्ते को फिर से स्थापित किया।

1:17 ख

प्रश्न 6. **मनुष्य को किस प्रकार के विश्वास से धर्मी बनाया जाता है?**

ध्यान दें। विश्वास, जिसके द्वारा परमेश्वर किसी व्यक्ति को धर्मी ठहराता या उद्धार देता है (यह किसी व्यक्ति को परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी बनाना है), उसके तीन पहलू हैः

(1) विश्वास का पहला पहलू ज्ञान है।

किसी चीज़ पर विश्वास करने के लिए हमें यह *पता* होना चाहिए की हम क्या विश्वास करें। इस प्रकार, विश्वास सत्य को जानना और समझना है जैसा की वह बाइबल में प्रकट किया गया है। रोमियों 10:14-17 कहता है, "विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है"। इसलिए विश्वास यीशु मसीह के सुसमाचार सत्य पर आधारित है। ज्ञान में यीशु मसीह का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान शामिल है। यह ज्ञान हमें दूसरों के द्वारा किए गए प्रचार और उन शब्दों (यूनानीः रिमाटा) से *प्राप्त* होता है जो यीशु मसीह ने उनके मन, विवेक और हृदय से कहे हैं (रोमियों 10:17)। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विश्वास सत्य के ज्ञान के रूप में परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है।

(2) विश्वास का दूसरा पहलू भरोसा है।

सत्य को सुनने और समझने के बाद भी, हमें यह *विश्वास या भरोसा* करना पड़ता है कि यह सत्य व्यक्तिगत रूप से हमारे लिए सत्य है। अपने मन और हृदय से हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने मसीह की धार्मिकता को हमारे लेखे में जोड़ दिया है, इसलिए जब वह हमारी ओर देखते हैं तो वह केवल यीशु मसीह की धार्मिकता को देखते हैं! हम इस तथ्य पर भरोसा करते या *निर्भर* रहते हैं कि परमेश्वर हमें यीशु मसीह द्वारा हमारे बदले किये गये कामों के कारण पूर्ण रूप से धर्मी (क्षमा किया हुआ) घोषित करते हैं। प्रेरितों 16:14 कहता है कि परमेश्वर हमारे हृदय को खोलता है कि हम विश्वास से सुसमाचार के संदेश का प्रतिउत्तर दें। परमेश्वर ने यह विश्वास हमें दिया है (प्रेरितों 13:48; 18:27; इफिसियों 2:8; फिलिप्पियों 1:29; 2पतरस 1:1)। जिस प्रकार का विश्वास हमें उद्धार दिलाता है वह बुद्धिमान दृष्टिकोण, गम्भीर स्वीकृति और उस सत्य पर भरोसा (आसरा) होता है जो सुसमाचार के संदेश में प्रकट होता है। इस प्रकार, विश्वास एक व्यक्तिगत समझ, निरुत्तर मन और भरोसे के रूप में परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है।

(3) विश्वास का तीसरा पहलू कार्य है।

जब हम वास्तव में सुसमाचर की सच्चाई पर विश्वास करते हैं तो हम इसका जवाब अपने मन, हृदय, व्यवहार और कार्य से देते हैं। यदि हम वास्तव में सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, तो हम *सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया देगें : हम सत्य को स्वीकार करते और उसका अंगीकार करते हैं।* हमारे हृदय और मन में यह विश्वास होता है कि मसीह ही उद्धारकर्ता है और उसने हम से पूर्ण और सिद्ध उद्धार का वायदा किया है, हम इसे यीशु मसीह को उसके छुटकारे के पूर्ण किए गए कार्य के साथ अपने मन, हृदय और जीवन में *स्वीकार करने* के द्वारा (यूहन्ना 1:12) और अपने मुहँ से खुले तौर पर *अंगीकार* करने के द्वारा प्रकट करते हैं। हमारे दिलों में जो विश्वास है और हम अपने मुहँ से जो अंगीकार करते हैं उसके बीच पूर्ण सहमति होती है। रोमियों 10:9-10 में लिखा है, "यदि तू यीशु को प्रभु जानकर अपने मुँह से अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिलाया, तो तू निश्चय ही उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है और उद्धार के लिए मुँह से अंगीकार किया जाता है।"

विश्वास जो उद्धार कराता है उसकी तुलना *पापी व्यक्ति के खाली हाथों* से की जा सकती है जो उद्धार के अनुग्रहपूर्ण उपहार को पाने के लिए दाता परमेश्वर के सामने फैले हुए हैं। विश्वास जो उद्धार कराता या धर्मी ठहराता है वह उस *कड़ी* के समान है जो मनुष्य की रेलगाड़ी (जीवन) को परमेश्वर के इंजन (अनुग्रह) से जोड़ती है। धर्मी ठहराने वाला विश्वास उद्धार कराता है, वह उस *पेड़ के तने* के समान है, जिसकी जड़ें परमेश्वर के अनुग्रह को दर्शाती हैं और जिसके फल धन्यवादी जीवन और अच्छे कामों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1:17 ग

प्रश्न 7. **सुसमाचार में "धार्मिकता विश्वास से विश्वास के लिए" प्रकट होती है, इस शब्द का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। अनुवाद. "सुसमाचार में परमेश्वर की धार्मिकता (यूनानीः एक पिस्टिऑस) विश्वास *से* विश्वास (ईस पिस्टिन) के लिए प्रकट हुई है।" इस वाक्यांश की व्याख्या एक प्रगतिशील वाक्यांश के रूप में की गई हैः "एक कमजोर विश्वास से निरंतर एक मजबूत और पूर्ण विश्वास की ओर बढ़ना" या एक गहन वाक्यांश के रूप मेंः "केवल विश्वास के द्वारा", या "शुरूआत से अंत तक विश्वास के द्वारा।"
हालाँकि, रोमियों 3:21-22 में इसी प्रकार के वाक्यांश का प्रयोग किया गया है। परमेश्वर की ओर से एक धार्मिकता पुराने नियम में प्रकट कि गई, अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता (यूनानीः डिआ पिस्टिऑस) (माध्यम) जो "यीशु मसीह पर विश्वास *करने से* सब विश्वास करने वालों के लिए है।" (यूनानीः ईस पैंटॉस टूस पिस्टेओन्टॉस) (प्राप्तकर्ता)।
इसी तरह का एक और वाक्यांश गलातियों 3:22-23 में प्रयोग किया गया है। विश्वास प्रकट होने के बाद, "*विश्वास के द्वारा* (यूनानीः एक पिस्टिऑस) *सब विश्वास करने वालों को*" (यूनानीः टॉइस पिस्तोउसिन) (प्राप्तकर्ता) प्रतिज्ञा (जिसमें धार्मिकता शामिल है) दी गई।
इसी प्रकार रोमियों 1:17 (विश्वास के द्वारा विश्वास के लिए) परमेश्वर की धार्मिकता के *प्राप्तकर्ता* (विश्वासियों) दोनों *माध्यमों* पर जोर देता है।
इस प्रकार, रोमियों 1:17 का सर्वोत्तम अनुवाद हैः "सुसमाचार ऐसी धार्मिकता को प्रकट करता है जो परमेश्वर की ओर से आती है। यह धार्मिकता केवल *विश्वास के द्वारा* है (व्यवस्था के कामों से नहीं)। और यह धार्मिकता *सभी को दी जाती है जो विश्वास करते हैं* (जाति, संस्कृति या विश्वास की डिग्री के बिना) (प्राप्तकर्ता)!"
धार्मिकता यीशु मसीह के द्वारा अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान (धार्मिकता का *आधार*) के द्वारा अर्जित की गई है। धार्मिकता परमेश्वर के द्वारा उनकी असीम दया और अनुग्रह (प्रेम) (धार्मिकता का *स्रोत*) के द्वारा उन लोगों को दी गई है जो विश्वास करते हैं (धार्मिकता के *प्राप्त करने वाले*)। धार्मिकता को विश्वासी के द्वारा विश्वास के लिए प्राप्त किया जाता है (उसके व्यवस्था के धार्मिक कामों से नहीं) (इस धार्मिकता को प्राप्त करने का *माध्यम*)।

1:17 घ

प्रश्न 8. **इन शब्दों का क्या अर्थ हैः "धर्मीजन विश्वास से जीवित रहेगा"?**

ध्यान दें। अनुवाद। "जैसा की लिखा हैः धर्मी जन (व्यक्ति) विश्वास से (यूनानीः एक पिस्टिऑस) जीवित

रहेगा'।" यह वाक्यांश "धार्मिकता" की बात नहीं करता बल्कि "धर्मी व्यक्ति" की बात करता है। कुछ लोग इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैः "धर्मी (व्यक्ति) विश्वास के द्वारा (अर्थातः स्वयं के विश्वास के काम से) जीवित (अर्थता, होगा/ अनंत जीवन प्राप्त करेगा) रहेगा"। तब उसके "विश्वास" को अनंत जीवन का *आधार* माना जाता है। <u>लेकिन विश्वास कभी उद्धार पाने का *आधार* नहीं होता; बल्कि उद्धार प्राप्त करने का *माध्यम* होता है</u>।

रोमियों 1:17 का प्रश्न हबक्कूक 2:4 से लिया गया है और इसका अनुवाद केवल इस प्रकार किया जा सकता हैः "धर्मी व्यक्ति विश्वास से (परमेश्वर के लिए या परमेश्वर की उपस्थिति में) जीवित रहेगा।"

रोमियों 1:16 विश्वास को उस *साधन* के रूप में महत्व देता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति धर्मी *ठहरता* है। रोमियों 1:17 पहले विश्वास पर एक *माध्यम* के रूप में बल देता है जिसके द्वारा एक विश्वासी मसीह की धार्मिकता को प्राप्त करता है और फिर (हबक्कूक 2:4 के हवाले से) एक ऐसे *माध्यम* के रूप में जिसके द्वारा *एक धर्मी व्यक्ति अपना जीवन* (इस पृथ्वी पर) जीता है (वह मसीह की प्राप्त धार्मिकता को अपनी जीवन शैली के रूप में व्यक्त करता है)।

इस प्रकार, पुराने नियम और नए नियम दोनों में इस तथ्य पर ज़ोर दिया गया है कि प्रभु में विश्वासी केवल विश्वास के द्वारा धर्मी (उद्धार) ठहराए जाते हैं और उसके बाद विश्वास ही से अपने जीवन को जीना (धर्मी लोगों के रूप में) जारी रखते हैं।

<u>चरण 4. लागू करना।</u> **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-विमर्श करें और रोमियों 1:1-17 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी नोटबुक अर्थात स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची निम्नलिखित है।)

(याद रखेंः प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. <u>रोमियों 1:1-17 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।</u>

1:1 जब परमेश्वर आपको एक प्राचीन की सेवा सौंपत हैं (चाहे एक चरवाहे या एक प्रचारक या शिक्षक के रूप में) तो आपको अभी भी *एक दास* ही होना चाहिए स्वामी नहीं (अधिकारवादी अगुवा)।

1:1 परमेश्वर कुछ लोगों को कुछ विशेष कार्यों में उनकी सेवा करने के लिए अलग करते हैं।

1:2 पुराने नियम में सुसमाचार पहले से ही घोषित है। आपको बाइबल को एकता के रूप में मानना चाहिए।

1:5 परमेश्वर के प्रति खुले रहें ताकि वह आपको अनुग्रह और गैर-मसीहियों को आज्ञाकारिता में बुलाने का काम दें जिसमें विश्वास शामिल है।

1:7 सभी मसीही परमेश्वर के द्वारा "संत" होने के लिए बुलाए गए हैं, अर्थात, बुराई से अलग होकर परमेश्वर के लिए समर्पित लोग।

1:8 एक सच्चा मसीही दूसरों का अभिनंदन परमेश्वर के अनुग्रह और शांति से करता है।

1:8 परमेश्वर का धन्यवाद हो जो वह विश्वासियों के जीवन में कर रहें हैं जिन्हें आप जानते हैं।

1:9-10 दूसरे लोगों के लिए प्रार्थना करें।

1:11 आत्मिक वरदान जो दूसरे मसीहियों को मजबूत बनाते हैं, उदाहरण के लिए चंगाई, शिक्षा, ज्ञान, अगुवाई आदि।

1:12 अपने अगुवों को प्रोत्साहित करने से न डरें।

1:13 निम्नलिखत बातों को अपने जीवन का लक्ष्य मानकर विचार करें: दूसरे लोगों के जीवन में स्थाई प्रभाव डालनें के बारे में सोचें।

1:14 मसीहियों पर सभी जाति और श्रेणीं के लोगों के प्रति एक ज़िम्मेदारी है।

1:15 दूसरे शहरों में सुसमाचार प्रचार करने की योजना बनाएँ।

1:16 एक मसीही होने में शर्म न करें, क्योंकि आपका संदेश ससांर में सबसे शक्तिशाली संदेश है!

1:17 परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए कभी धर्म के कामों, अच्छे कामों और व्यवस्था का पालन करने पर निर्भर न रहें।

2 . रोमियों 1:1-17 के व्यक्तिगत लागूकरण के उदाहरण।

मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि मेरा विश्वास मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में *स्वीकार करने का केवल एक बार का कार्य* नहीं है, बल्कि *जीवनभर उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में मसीह के प्रति विश्वास और आज्ञापालन की प्रतिबद्धता* है। मुझे अब एहसास हुआ कि बाइबल में 'विश्वास' पूरे दिल से मसीह और उनकी शिक्षाओं के प्रति समर्पित जीवन है।

जब में उद्धार का सुसमाचार प्रचार करता हूँ, तो मैं दोनों *बुराईयों* पर जोर देना चाहता हूँ, *जिनसे* मसीह में विश्वासियों को बचाया गया, और *आशीषें जिन* के लिए उन्हें बचाया जा रहा है। मैं यह प्रचार करना चाहता हूँ कि मसीह में प्रत्येक विश्वासी को दोष और शर्म की स्थिति से बचा कर पूर्ण धार्मिकता: पूर्ण क्षमा और आदर के साथ स्वीकृति की स्थिति में लाया जाता है। मसीह में प्रत्येक विश्वासी को *दोष भावना, दासत्व (सामर्थ्य), भ्रष्टता* और पाप के *अंतिम दण्ड(सजा)* से बचाया गया है। वह पूर्ण रूप से क्षमा किया गया है, वह पाप के बंधनों से स्वतंत्र किया गया है, वह पवित्र जीवन जीने में समर्थ है और उसे कभी भी नरक में नहीं धकेला जाएगा।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए एक एक करके उस एक सत्य के लिए जिसे परमेश्वर ने हमें रोमियों 1:1-17 में सिखाया है, प्रार्थना करें। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)***
	दूसरों के लिए प्रार्थना	

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)***
	अगले अध्याय के लिए	

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी नकल करने को कहें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर **रोमियों 1:1-17** का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **निर्गमन 1,2,3,4** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करें। **(3) राज्य के सुसमाचार का प्रचार करें: मत्ती 24:14** ।
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों को रोज दोहराएं।
5. शिक्षा देना। मत्ती 13:1-23; मरकुस 4:1-20 और लूका 8:1-15 में वर्णित **बीज बोने वाले के दृष्टांत** की तैयारी करें।
   दृष्टांतों की व्याख्या के लिए छः दिशानिर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 3

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करे। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **निर्गमन 1–4**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (निर्गमन अध्याय 1, 2, 3 और 4) से शान्त समय में क्या सीखा है।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(3) मत्ती 24:14**

दो–दो करके ***समीक्षा*** करें:
(3) राज्य के सुसमाचार का प्रचार करो। मत्ती 24:14 और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टांत)*** **बीज बोनेवाला**

मत्ती 13:3–23 में "बोने वाले का दृष्टान्त" निम्न के विषय में है

परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर का वचन।

"एक दृष्टान्त" एक स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी है। यह एक सत्य–जीवन की कहानी या चित्रण है जो एक आध्यात्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया गया है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और उनके नवीकरण की आवश्यकता के साथ सामना करने के लिए सामान्य स्थानों और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया।

हम दृष्टान्तों के अध्ययन के लिए छह दिशानिर्देशों का उपयोग करके इस दृष्टान्त का अध्ययन

करेंगे (देखें नियम-पुस्तक 9, अनुपूरक 1)।

पढ़िए मत्ती 13:1-23, मरकुस 4:1-20 और लूका 8:1-15।

---

1. दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय दें। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और उसी पर दृष्टान्त का आध्यात्मिक अर्थ आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

बुवाई। गेहूं और जौ को हाथ से बोया जाने का रिवाज था।

मार्ग। हाथ से बुवाई करने से यह अपरिहार्य हो गया कि बीज का एक हिस्सा उस मार्ग के किनारे गिर गया, जिस पर से बोने वाला व्यक्ति खेत से होकर जा रहा था। मार्ग की जुताई नहीं की गई थी और कई पाँव उसके ऊपर चले थे, जिससे कि मिट्टी उसके अंदर तक कुछ भी गिरने के लिए अति कठोर थी।

चिड़ियाँ। पक्षियों को नई खेतों में आना पसंद है जिनमें हाल ही में बीज बोया गया हो, क्योंकि वहाँ खाने के लिए भोजन होता है। मत्ती एक शब्द का उपयोग करता है जो कहता है कि पक्षियों ने 'बीज को चुग लिया'।

पथरीली भूमि। कुछ बीज पथरीली भूमि पर गिरे। यह फिलिस्तीन और आसपास के देशों की विशेषता है कि इसकी कृषि योग्य मिट्टी का काफी भाग चट्टान की परतों के ऊपर पाया जाता है। मिट्टी की केवल एक पतली परत पथरीली भूमि को ढाँपती है। इस प्रकार पौधों को मजबूती नहीं मिल सकती है। तेज धूप में वे जल्दी झुलस जाते हैं।

काँटे। कुछ बीज काँटों के बीच गिर गए। गेहूँ की तुलना में काँटें और जंगली घास आमतौर पर तेजी से बढ़ते हैं। वे पानी और धूप को लूट लेते हैं कि पौधे का दम घुट जाए।

अच्छी मिट्टी। कुछ बीज अच्छी मिट्टी पर गिर गए। ''अच्छी मिट्टी'' मार्ग जितनी कठोर नहीं होती हैय चट्टान की परत पर उथली मिट्टी जैसी नहीं होती है और काँटों और जँगली घास से भरी मिट्टी जैसी बिगड़ी नहीं होती है। अच्छी मिट्टी उपजाऊ होती है और फल पैदा करती है।

सौ, साठ और तीस गुणा। यहाँ तक कि विभिन्न प्रकार की अच्छी और उपजाऊ मिट्टी विभिन्न प्रकार के फलों का उत्पादन करती है। दुनिया के अधिकांश भागों में भूमि के एक ही टुकड़े पर भी पैदावार एक समान नहीं होती है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय दें। *दृष्टान्त* की "कहानी" के संदर्भ में "अस्त" और *दृष्टान्त* का "स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग" हो सकता है। दृष्टान्त का अस्त दृष्टान्त को बताने के *अवसर* को बता सकता है, या दृष्टान्त को बताने के समय *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकता है। अस्त आमतौर पर *दृ*

ष्टान्त की कहानी से *पहले* पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर *दृष्टान्त* की कहानी के *पश्चात* पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस *दृष्टान्त* का अस्त, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त का अस्त मत्ती 13:1-2, 10-17 में निहित है।

एक नाव। यीशु ने विभिन्न परिस्थितियों में उपदेश दिया और सिखायाः आराधनालय में (मरकुस 1:29), मंदिर में (यूहन्ना 18:20), एक पहाड़ पर (मत्ती 5:1), एक घर में (मरकुस 2:1), समुद्र के किनारे (मरकुस 4:1), रेगिस्तान में (मरकुस 8:1) और यहाँ तक कि एक कब्रिस्तान में भी (यूहन्ना 11:38)। यीशु ने इस दृष्टान्त को एक नाव में बैठे हुए बताया (मत्ती 13:2)।

दृष्टान्त। यीशु ने अपनी शिक्षाओं में विभिन्न प्रकार की आलंकारिक भाषा का उपयोग किया, उदाहरण के लिएः नीतिवचन, उपमा और रूपक। मत्ती अध्याय 13 में उन्होंने सात (या आठ, मत्ती 13:52-53) दृष्टान्तों को बताया!

इस समय तक, यीशु के अनुयायियों में से वे थे जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, उसे समझा और उसकी अधिक शिक्षाओं को स्वीकार करने के लिए तैयार थे। लेकिन कुछ अन्य लोग भी थे, जिन्होंने लगातार उसका विरोध किया, उसकी शिक्षाओं के प्रति अपने दिल को कठोर किया और जो कुछ भी उसने कहा, उसे अस्वीकार करने के लिए हमेशा तैयार थे। "एक दृष्टान्त" एक *स्वर्गीय* अर्थ के साथ एक *सांसारिक* कहानी है। दृष्टान्त को समझने के लिए, व्यक्ति को न केवल सांसारिक कहानी को, बल्कि स्वर्गीय अर्थ को भी समझना चाहिए! जो लोग यीशु के प्रति *उत्तरदायी* थे, उन्होंने स्वर्गीय अर्थ को समझा, लेकिन जो लोग यीशु के प्रति अनुत्तरदायी थे, उन्होंने स्वर्गीय अर्थ को नहीं समझा। इस प्रकार, दृष्टान्तों को बताकर, यीशु ने *आगे* उन लोगों के लिए सच्चाई का *खुलासा* किया जिन्होंने उसे और उसकी शिक्षाओं को स्वीकार किया, जबकि उसने *आगे* उन लोगों से सच्चाई *छिपाई,* जिन्होंने लगातार उन्हें और उनकी शिक्षाओं को स्वीकार करने से मना कर दिया था।

परमेश्वर का राज्य। सामान्य तौर पर परमेश्वर का राज्य अनंत काल से अनंत काल तक (भजन संहिता 24:1; 145:13), प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक चीज पर ईश्वरीय राज या प्रभुत्व है। विशेष रूप से, परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के माध्यम से ईश्वरीय राज या प्रभुत्व है (मत्ती 28:18)। राज्य मसीह के उद्धार के पूर्ण किए कार्य (प्रेरितों के काम 2:36) और पवित्र आत्मा के माध्यम से विश्वासियों में उस कार्य के अनुप्रयोग पर आधारित है (रोमियों 14:17)। राज्य विश्वासियों के दिलों में पहचाना जाता है (लूका 17:20-21) और उनके जीवन में क्रियात्मक है। परमेश्वर का राज्य चार दृश्य क्षेत्रों में प्रकट होता हैः आरम्भ से अंत तक विश्वासियों के पूर्ण उद्धार में (मरकुस 10:25-26), पृथ्वी पर एक कलीसिया के रूप में विश्वासियों के संविधान में (मत्ती 16:18-19), मानव समाज के प्रत्येक पहलू में विश्वासियों के अच्छे कार्यों (प्रभाव) में (मत्ती 25:34-40), और अंत में छुड़ाए हुए ब्रह्मांड या यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में (1 कुरिन्थियों 15:24-26)।

परमेश्वर के राज्य के रहस्यों का ज्ञान। शब्द "गुप्त" या "रहस्य" (मत्ती 13:10-11; रोमियों

16:25-26; इफिसियों 3:2-12; कुलुस्सियों 2:2-3) का आम तौर पर अर्थ होता है, कुछ ऐसा जिसे हर कोई नहीं जानता या जानने की आवश्यकता नहीं है। जब तक कोई रहस्य *प्रकट* नहीं होता है, उसे जाना नहीं जा सकता है। यीशु अपने लोगों पर परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को प्रकट करता है और इसलिए वे उन्हें जानते और समझते हैं। "परमेश्वर के राज्य के रहस्य" वे संदेश हैं जो परमेश्वर यीशु मसीह के प्रथम आगमन और विशेष रूप से राज्य के दृष्टान्तों के उसके प्रचार के माध्यम से प्रकट करता है। रहस्य बताते हैं कि परमेश्वर कौन है, परमेश्वर की योजना क्या है और कैसे परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसके शासन के अधीन होकर रहें। मुख्य संदेश यह है कि यीशु मसीह लोगों के पापों के लिए मर गया, ताकि जो कोई भी यीशु मसीह पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

परमेश्वर के राज्य के रहस्यों का ज्ञान केवल शिष्यों को ही क्यों दिया गया है और अन्यों को नहीं? क्या यह बहुत अनुचित नहीं है? यीशु राज्य के इन रहस्यों को प्रकट नहीं करता है, अर्थात्, नए नियम के संदेश का अर्थ, हर किसी पर। न केवल संदेश की सामग्री महत्वपूर्ण है, परन्तु मन और हृदय की स्थिति और व्यवहार भी है। हालाँकि बहुत से लोग सुसमाचार और नए नियम के संदेश को सुनते हैं, वे उसे मानना नहीं चाहते हैं और वे परमेश्वर की ओर मुड़ना नहीं चाहते हैं। कारण यह है कि कुछ लोगों ने परमेश्वर और उसके वचन के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर कर दिया है! ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अपने हृदयों को इतने लंबे समय से कठोर किया हुआ है कि वे अब समझ नहीं सकते, पश्चाताप और विश्वास नहीं कर सकते हैं (इब्रानियों 6:4-8; 10:26-31)!

यीशु मत्ती 13:13-15 के शब्दों को भविष्यद्वक्ता यशायाहए पुराने नियम से उद्धृत करता है। यशायाह 1:2-4 में लिखा है कि इस्राएल के वंश ने परमेश्वर का विरोध किया। वे अपने मालिक को नहीं जानते थे और उन्होंने परमेश्वर के वचनों को नहीं माना। वे कुकर्मी थे भ्रष्ट थे और उन्होंने परमेश्वर से मुँह मोड़ लिया था। फिर इसके पश्चात परमेश्वर का न्याय आ गया। यशायाह 6:9-10 में परमेश्वर कहता है "इन लोगों का हृदय निर्दयी कर; इनके कानों को बहरा कर और इनकी आँखें बंद कर दे। अन्यथा वे अपनी आँखों से देख सकते हैं, अपने कानों से सुन सकते हैं, अपने हृदय से समझ सकते हैं, और मुड़ सकते और चंगे हो सकते हैं।" परमेश्वर के ये शब्द *न्याय के शब्द* हैं। अपनी पसंद से इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर बना लिया था। पुराने नियम के समय के इस्राएलियों ने मिस्र से अपने निर्गमन के दौरान बहुत सारे चमत्कार *देखे थे*। और नए नियम के काल के इस्राएलियों ने अपनी आँखों से यीशु के बहुत सारे चमत्कार देखे। और फिर भी परमेश्वर में विश्वास नहीं किया!

इसलिए <u>परमेश्वर ने उन्हें वही बनने दिया जो वे बनना चाहते थे</u>। परमेश्वर ने उनकी आँखों को और भी कस कर बंद कर दिया! इस्राएलियों ने परमेश्वर के शब्दों को सुना -उन्होंने दस आज्ञाओं और भविष्यद्वक्ताओं के सभी शब्दों को अपने कानों से सुना और फिर भी वे परमेश्वर के आज्ञाकारी नहीं हुए! इसलिए परमेश्वर ने उन्हें वही बनने दिया जो उन्होंने बनना चुना था। परमेश्वर ने उनके कान और भी कस कर बंद कर दिए! परमेश्वर ने उन्हें अपने हि तरीके चलाने द्वारा दंडित किया। जो उन्होंने बोया, वह काटा (गलातियों 6:7-8)! उन्होंने

परमेश्वर के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर कर लिया और फिर परमेश्वर ने उनके हृदयों को इतना कठोर होने दिया कि वे अब न तो और पश्चाताप कर सकते थे और न ही परमेश्वर की ओर मुड़ सकते थे! यह एक भयानक न्याय था! इसीलिए बाइबल में कई बार परमेश्वर ने चेतावनी दी है, "यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय किया था।" (इब्रानियों 3:15)। परमेश्वर की कृपा और धैर्य की ईश्वरीय सीमाएँ हैं। एक व्यक्ति परमेश्वर के विरुद्ध अपने हृदय को इतनी दृढ़ता से और इतने लंबे समय तक कठोर कर सकता है कि वह एक ऐसे बिंदु पर पहुंच जाता है जहाँ से कोई वापसी नहीं होती। इस धमकी का उद्देश्य लोगों को उनके पश्चाताप और विश्वास को स्थगित न करने के लिए चेतावनी देना है। हर कोई जो गंभीरता से पश्चाताप करता और विश्वास करता है उसे डरने की आवश्यकता नहीं है कि उसका हृदय कठोर हो जाएगा।

यीशु नए नियम में लोगों का न्याय उसी प्रकार क्यों करता है जैसे कि पुराने नियम में परमेश्वर?

इससे पहले कि यीशु ने बीज बोनेवाले के दृष्टांत को बताया, कई फरीसियों ने भी यीशु के चमत्कारों को देखा, परन्तु उन्होंने यीशु पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। उन्होंने सुसमाचार *सुना,* परन्तु अपने पाप से परमेश्वर की ओर मुड़ने से इनकार कर दिया। इसके बजाय, उन्होंने यीशु की आलोचना की और आरोप लगाया। तब उन्होंने यीशु को मारने की साजिश रची और उसके काम को शैतान का काम बताया। इन फरीसियों का यीशु के प्रति गलत रवैया था। उन्होंने यीशु के विरुद्ध अपने हृदयों को बार-बार कठोर किया। और इसलिए वही न्याय उन पर आ पड़ा। उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध लगातार अपने हृदयों को कठोर किया था और अब परमेश्वर ने उनके हृदयों को इतना कठोर होने दिया कि वे अब न तो समझ सकते थे, न पश्चाताप या परमेश्वर की ओर मुड़ सकते थे! उन्हें अब बचाया नहीं जा सकता था (मत्ती 11:19,20; 12:2,10,14,24,31,39! वे परमेश्वर की कृपा और धैर्य की सीमा का उल्लंघन कर चूके थे (सीएफ. उत्पत्ति 6:3)!

क्या आज यीशु हम मसीहियों का उसी प्रकार से न्याय करेंगे? हाँ। इसीलिए यीशु बीज बोनेवाले के दृष्टांत को बताता है! प्रत्येक व्यक्ति जिम्मेदार है कि वह परमेश्वर के वचन के प्रति क्या प्रतिक्रिया देता है। यदि हमारा रवैया फरीसियों के समान है और हम लगातार यीशु की आलोचना करते हैं या बार-बार वह मानने से इनकार करते हैं जो वह कहता है, तो हमारे हृदय भी कठोर कर दिए जाएंगे। तब हम अंततः परमेश्वर के राज्य को नहीं देख पाएँगे और न ही परमेश्वर के शब्दों को और समझ पाएँगे।

हालाँकि, हम में से हर एक जो परमेश्वर के वचन को गंभीरता से सुनना और समझना चाहता है, उसे कुछ भी भय रखने की आवश्यकता नहीं है। हर अच्छा और साफ हृदय परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देगा, बढ़ेगा और फल देगा! हर कोई जो यीशु का अनुसरण करना जारी रखता है, वह परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को भी जानेगा (अर्थात, नए नियम के संदेश को समझेगा)! हर कोई जो परमेश्वर और परमेश्वर के वचन के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर करता है, वह अंततः इतना कठोर हो जाएगा कि वह परमेश्वर के वचन को और अधिक नहीं सुन सकेगा। परन्तु हर कोई, जो यीशु मसीह को अपना हृदय देता है और परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देना जारी रखता है, परमेश्वर के वचन को समझेगा, बढ़ेगा

और फल देगा! (नीतिवचन 1:22-33; 4:23; 23:26; मत्ती 7:24-27)। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति जो परमेश्वर और परमेश्वर के वचन के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर करता है, अंततः इतना कठोर हो जाता है कि वह परमेश्वर के वचन को सुन या समझ सकता है।

(1) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 13:3-9 में निहित है।

(2) दृष्टांत का स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग मत्ती 13:18-23 में निहित है। देखें बिंदु 6।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय दें। यीशु ने कोई भी आध्यात्मिक महत्व रखने के लिए दृष्टान्त की कहानी में प्रत्येक विवरण देने का आशय नहीं किया था। दृष्टांत की कहानी में प्रासंगिक विवरण वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वाधीन आध्यात्मिक महत्व का वर्णन नहीं करना चाहिए।

खोज और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी के विवरणों में से कौन से वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

क्या मत्ती 13:3-23 एक ऐतिहासिक घटना है, एक रूपक है या एक दृष्टांत है? प्रासंगिक विवरणों की पहचान करने के लिए उत्तर के महत्वपूर्ण परिणाम होंगे। ये वचन किसी ऐतिहासिक घटना का वर्णन नहीं करते हैं। परन्तु क्या यह रूपक है या दृष्टांत है?

"एक रूपक" एक विस्तारित तुलना है, जिसमें रूपक के कई तत्व कई सत्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं (उदाहरण के लिए यूहन्ना 10:1-16; यूहन्ना 15:1-17)। "एक दृष्टांत" एक सच्ची कहानी है, जबकि एक रूपक को ऐसा होने की आवश्यकता नहीं है। हालांकि दोनों का मुख्य विषय हो सकता है, दृष्टांत एक सैद्धांतिक बात बनाने के लिए बनाया जाता है, जबकि एक रूपक को कई संबंधित या असंबद्ध सत्यों को सिखाने के लिए भी बनाया जा सकता है।

मत्ती 13:3-23 में ऐसा लगता है कि कहानी दृष्टांत के बजाय एक रूपक है, क्योंकि चार प्रकार की मिट्टी के विषय में मसीह की व्याख्या में, वह कहानी में लगभग प्रत्येक बिंदु का आध्यात्मिक अनुप्रयोग करता है: "बीज" बाइबल के संदेश को दर्शाता है। "पक्षी" शैतान को दर्शाते हैं। "कठोर मिट्टी" कठोर हृदय को दर्शाती है, आदि।

फिर भी, बीज बोनेवाले की कहानी एक दृष्टांत है, क्योंकि स्पष्टीकरण स्पष्ट रूप से एक ही विषय को इंगित करता है। विषय है, "एक व्यक्ति के जीवन में परिणाम उसके द्वारा परमेश्वर के वचन को दी गई प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है। और एक व्यक्ति द्वारा परमेश्वर के वचन को दी गई प्रतिक्रिया उसके दिल की स्थिति और रवैये पर निर्भर करती है।" यीशु ने जानबूझकर उस मुख्य संदेश (केवल, एक प्रकार की मिट्टी अच्छी है) को मजबूत करने के लिए दृष्टांत की कहानी में कई विवरण (चार प्रकार की मिट्टी) तैयार किए। यीशु कहानी का निर्माता है और केवल उसके पास अपनी कहानी के कई विवरणों को विशिष्ट अर्थ देने की बुद्धि और अधिकार है। यह तथ्य, हालांकि, मसीहियों को बाइबल में अन्य दृष्टांतों की कहानियों में

विवरणों को एक विशिष्ट अर्थ देने का अधिकार नहीं देता है। यीशु ऐसा नहीं करता है! बाइबल में लगभग प्रत्येक शब्द में आध्यात्मिक अर्थ खोजने और जानने का प्रयास करना "रूपक बनाना" है।

रूपक बनाना। यद्यपि थ०मस एक्विनास (1227–1274) ने अन्य मूल्यवान चीजें लिखी हैं, वह इस दृष्टांत को एक अर्थ देता है जिसे परिणामस्वरूप संदर्भ से नहीं निकाला जा सकता है और इसलिए उसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए। उसने दृष्टांत की व्याख्या इस प्रकार कीरू "दृष्टांत आध्यात्मिक जीवन में तीन गुना पूर्णता का चित्र हैः *तीस* गुना सामान्य और औसत आध्यात्मिक प्राप्ति को दर्शाता है। *साठ* गुना उन लोगों को दर्शाता है जो उससे कहीं अधिक प्राप्त करते हैं। जबकि *सौ* गुना उन लोगों को दर्शाता है जिन्होंने अपने आध्यात्मिक जीवन में बहुत आगे तक की प्रगति की है कि वे परम उद्धार के पूर्वस्वाद का अनुभव लेते हैं।" इस व्याख्या को अस्वीकार किया जाना चाहिए।

बीज। बीज *परमेश्वर के वचन* को दर्शाता है (लूका 8:11; मरकुस 4:14), *राज्य का संदेश* (मत्ती 13:19)। यीशु के स्पष्टीकरण के अनुसार, "बीज" इस दृष्टान्त में एक बहुत ही आवश्यक या प्रासंगिक विवरण है। जब आप प्रचार करते हैं, तो यह आपके शब्दों के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन के प्रति आपकी प्रतिक्रिया है जो कि महत्वपूर्ण है! परमेश्वर के वचन को आपके जीवन में कई अलग–अलग तरीकों से बोया जा सकता हैरू अन्य लोग आपके जीवन में परमेश्वर के वचन को आपको प्रचार द्वारा या उसे पढ़ाने के द्वारा बो सकते हैं। आप स्वयं अपने जीवन में परमेश्वर के वचन को सुनने, पढ़ने, ध्यान करने, स्मरण रखने या अपने आप बाइबल का अध्ययन करने के द्वारा बो सकते हैं।

मिट्टी। मिट्टी *एक व्यक्ति के हृदय को दर्शाती है, चाहे मसीही या गैर–मसीही* (मत्ती 13:19)। विभिन्न प्रकार की मिट्टी *विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों* को या परमेश्वर के वचन के प्रति *मानव हृदय के विभिन्न रवैयों* को दर्शाती हैं। हृदय की स्थिति और रवैया उस प्रभाव को निर्धारित करते हैं जो परमेश्वर के वचन का किसी व्यक्ति पर होगा। दृष्टांत का मुख्य संदेश यह है कि षकिसी के हृदय की स्थिति और रवैया उस प्रतिक्रिया को निर्धारित करते हैं जो वह परमेश्वर के वचन के प्रति देता है। और वह परमेश्वर के वचन के प्रति जो प्रतिक्रिया देता है, वह उसके जीवन में परिणाम निर्धारित करती है"। परमेश्वर के वचन के प्रति आप जो प्रतिक्रिया देते हैं वह निर्धारित करती है कि आप फल लाते हैं या नहीं। वह यह भी निर्धारित करती है कि आप कितना फल लाते हैं! इसलिए *मिट्टी की स्थिति* इस दृष्टान्त में एक बहुत ही आवश्यक या प्रासंगिक विवरण लें

बीज बोनेवाला। बीज बोनेवाले के दृष्टांत में यह नहीं बताया गया है कि किसान या बोनेवाला कौन है। परन्तु गेहूं के बीच जंगली पौधों के दृष्टांत में, बोनेवाला स्वयं यीशु है (मत्ती 13:37)। दिन–प्रतिदिन पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान, यीशु मसीह स्वयं अपनी शिक्षाओं को, विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य के विषय में अपनी शिक्षाओं को बो रहा था।

हालाँकि, किसान या बोनेवाला कोई भी हो सकता है जो अन्य लोगों को यीशु मसीह के संदेश की घोषणा करता या शिक्षा देता है (मत्ती 10:14)। निःसंदेह, सामान्यतः बोलने में, बोनेवाला महत्वपूर्ण है, परन्तु इस दृष्टांत की व्याख्या में, बोनेवाला एक आवश्यक या प्रासंगिक विवरण नहीं है। स्पष्टीकरण जोर देता है कि परिणाम निर्धारित किया जाता है, बोनेवाले के

द्वारा नहीं, परन्तु परमेश्वर के वचन को ग्रहण करनेवाले या सुननेवाले के हृदय की स्थिति और दृष्टिकोण द्वारा! ग्रहण करनेवाला या सुननेवाला उसके साथ क्या करता जो कुछ भी सुनता है, बहुत महत्वपूर्ण है! मत्ती 13:19 कहता है, "जब कोई भी (किसी भी समय) राज्य के विषय में संदेश *सुनता है*.....।" इस प्रकार व्यक्ति जो परमेश्वर का वचन पढ़ता है, उस पर ध्यान लगाता है या उसका अध्ययन करता है, स्वयं अपने हृदय पर बोनेवाला बन जाता है। वह कैसे सुनता है, अर्थात वह परमेश्वर के वचन पर कैसे प्रतिक्रिया देता है, यह सब उसके जीवन में परिणाम (फल) के लिए महत्वपूर्ण है!

सुनना और समझना। स्पष्टीकरण के अनुसार (मत्ती 13:18–23), परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिक्रिया (प्रतिउत्तर) दृष्टान्त में एक बहुत ही आवश्यक या प्रासंगिक विवरण है। तीन सामान्य अवलोकित सुसमाचार सात महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं का उल्लेख करते हैं:

- परमेश्वर का वचन (कोई अन्य आध्यात्मिक पुस्तक नहीं) (मत्ती 13:19; मरकुस 4:13)
- सुनना (मत्ती 13:19,23)
- समझना (मत्ती 13:19,23)
- ग्रहण करना (मरकुस 4:16)
- एक स्वच्छ (कुलीन और अच्छे) हृदय में (लूका 8:15)
- प्रतिधारित करना (लूका 8:15)
- दृढ़ता से फसल का उत्पादन करना (लूका 8:15), तीस गुना, साठ गुना और सौ गुना (मरकुस 4:20)।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय दें। दृष्टान्त का मुख्य संदेश या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस प्रकार से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य सीख होती है, बनाने के लिए एक केंद्रीय बिंदु। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आध्यात्मिक सच्चाई खोजने का प्रयास नहीं करना चाहिए, बल्कि एक मुख्य सीख की खोज करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

यह संसार के सभी लोगों गैर–मसीही और मसीही के लिए सच है। उनके हृदय की स्थिति और रवैया परमेश्वर के वचन के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को निर्धारित करेगा और वह फिर से उनके जीवन में परिणाम का निर्धारण करेगा।

परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग लगातार परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देते हैं, अर्थात, बाइबल के सभी आदेशों और शिक्षाओं का।

यह दृष्टांत यह भी सिखाता है कि परमेश्वर के वचन के उपदेशक या शिक्षक को लोगों के हृदयों की विभिन्न स्थितियों और रवैयों के कारण अलग–अलग परिणामों की अपेक्षा करनी

चाहिए। उपदेशक या शिक्षक होते हुए उसके काम का एक हिस्सा फल नहीं देगा – इसलिए नहीं कि वह गलत स्थान पर बुवाई कर रहा है (जो कि इस दृष्टान्त का उद्देश्य नहीं है), परन्तु इसलिए क्योंकि वचन सुननेवालों की स्थिति, रवैया और प्रतिउत्तर इतने अलग हैं! जबकि उसके काम के एक हिस्से के परिणाम नहीं होंगे, "परमेश्वर का वचन कभी भी परमेश्वर के पास खाली नहीं लौटेगा" (यशायाह 55:10-11)!

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत पदों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

परिचय दें। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य पदों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण प्रति – पदों को खोजने का प्रयास करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में सहायता करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के अन्य पद जो सिखाते हैं, उसकी तुलना उससे कैसे होती है जो बीज बोनेवाले दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें।

मत्ती 7:24-27। बुद्धिमान और मूर्ख निर्माणकारों के दृष्टांत में जोर परमेश्वर के वचन (यीशु मसीह की शिक्षा) को *अभ्यास में* लाने पर है। परन्तु बीज बोनेवाले के दृष्टांत में जोर परमेश्वर के वचन को दी गई *प्रतिक्रिया के प्रकार* पर है।

मत्ती 13:24-30। गेहूं के बीच जंगली पौधों के दृष्टान्त में, शैतान *जंगली पौधों* (अविश्वासियों अपने झूठ के साथ) को गेहूं (विश्वासियों अपनी सच्चाई के साथ) के बीच *बोता है*। परन्तु बीज बोनेवाले के दृष्टांत में, शैतान उस हृदय से परमेश्वर के वचन को *छीन* लेता है जो परमेश्वर के वचन के साथ कुछ भी नहीं करता है, ताकि व्यक्ति न विश्वास करे और न ही बचाया जा सके (लूका 8:12)।

मरकुस 4:26-29। गुप्त रूप से उगने वाले बीज का दृष्टांत परमेश्वर के वचन को परम्श्वर के राज्य को विकसित करने और अधिक फल देने के लिए संभावित शक्ति देने हेतु *परमेश्वर की जिम्मेदारी या कार्रवाई* पर जोर देता है। परन्तु बीज बोनेवाले का दृष्टांत परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देने हेतु *मनुष्य की जिम्मेदारी* पर जोर देता है।

1 कुरिन्थियों 3:6-9। मसीही कार्यकर्ता, चाहे वे खोए हुओं को प्रचार करें या बचाए हुओं को चेला बनाएँ, वे *परमेश्वर के साथी कार्यकर्ता* हैं। *वास्तविक कार्यकर्ता* परमेश्वर है! जबकि मसीही बीज बोते हैं और पौधों की देखभाल करते हैं, यह परमेश्वर है जो विकास और परिणाम देता है!

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *होना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) मुख्य संदेश या केंद्रीय पाठ।

मत्ती 13:3-23 में बीज बोनेवाले का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन" के विषय में दृष्टान्त है।

मुख्य संदेश या केंद्रीय पाठ निम्नलिखित है। "आपके हृदय की स्थिति या रवैया, परमेश्वर के वचन के प्रति आपके प्रतिउत्तर को निर्धारित करते हैं। और आप परमेश्वर के वचन को जो प्रतिउत्तर देते हैं, वह आपके जीवन में परिणाम (फल) निर्धारित करता है।"

या "आपके जीवन में परिणाम (फल) परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिउत्तर पर निर्भर करता है, जो आप देते हैं। और आप परमेश्वर के वचन को जो प्रतिउत्तर देते हैं, वह आपके हृदय की स्थिति या रवैये पर निर्भर करता है।"

अपने जीवन के किसी भी दिन प्रत्येक गैर-मसीही या मसीही के हृदय की चार संभावित स्थितियाँ उस दिन परमेश्वर के वचन को दिए गए चार अलग-अलग प्रत्युत्तरों को निर्धारित करती हैं।

(2) "जिसके साथ (बीज) मार्ग के किनारे बोया जाता है"(पद 19)।

वह ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया में बीज पर मार्ग की कठोर मिट्टी के प्रभाव जैसा दिखता है। बीज मार्ग पर पड़ा रहता है जब तक कि पक्षी नहीं आते और उसे खा नहीं लेते हैं।

यह एक <u>असंवेदनशील और कठोर हृदय</u> का चित्र है <u>जो परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर नहीं देता है</u>। दृष्टांत का यह भाग <u>रवैये और प्रतिउत्तर</u> से संबंधित है। लगातार यह सोचकर कि परमेश्वर के वचन में उसके लिए कुछ महत्वपूर्ण नहीं है, इस व्यक्ति का हृदय अधिक से अधिक विरक्त हो जाता है। संदेश को समझने या पकड़ने का कोई प्रयास न करने से (यशायाह 6:9-10), उसका हृदय कुंठित हो जाता है। लगातार परमेश्वर के वचन पर प्रतिउत्तर नहीं देने से, क्योंकि वह इसे असुविधाजनक मानता है (प्रेरितों के काम 24:25), उसका हृदय और अधिक लापरवाह हो जाता है। परमेश्वर के वचन की लगातार आलोचना करने और उसे अपनी राय में बदलने से (रोमियों 11:7-10; इब्रानियों 3:7-8), उसका हृदय कठोर हो जाता है। संदेशवाहक या संदेश को बार-बार अस्वीकार करने से, क्योंकि वह जो कुछ भी सुनता है उसे पसंद नहीं करता (यूहन्ना 8:37), उसका हृदय शत्रुतापूर्ण हो जाता है। शैतान जानता है कि लोग, जो परमेश्वर के वचन को स्वीकार करते हैं, विश्वास करेंगे और बच जाएँगे (लूका 8:12)। और क्योंकि शैतान लोगों के हृदयों पर परमेश्वर के वचन की सामर्थ और प्रभाव से डरता है, वह हमेशा वह छीनने के लिए तैयार रहता है जो अस्वीकार्य है!

मत्ती 13:3-23 में बीज बोनेवाले का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन (बाइबल)" के विषय में दृष्टान्त है।
दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "आपके हृदय की स्थिति और रवैया परमेश्वर के वचन के प्रति उस प्रतिउत्तर को निर्धारित करता है जो आप देते हैं। और आप परमेश्वर के वचन को जो प्रतिक्रिया देते हैं, वह आपके जीवन में परिणाम निर्धारित करती है"।

मुख्य शिक्षा परमेश्वर के वचन (बाइबल के संदेश) को समझने के लिए हर संभव प्रयास करना है (मत्ती 13:23ग) और फिर जब भी आप इसे सुनते हैं, पढ़ते हैं या इसका अध्ययन करते हैं, तो इसे स्वीकार करना है (मरकुस 4:20ख)! आपको तुरंत विरक्तता, शिथिलता या शत्रुता के अपने रवैये से निपटना चाहिए!

(3) "वह जिसके साथ (बीज) पथरीली भूमि में बोया जाता है" (पद 20)।

यह वह व्यक्ति है जिसका परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर बीज पर पथरीली भूमि के प्रभाव जैसा दिखता है। बीज (पौधा) गहरी जड़ों को विकसित नहीं कर सकता है और जल्द ही सूरज से झुलस जाता है और मुरझा जाता है।

यह आवेगशील और उथले हृदय का एक चित्र है जिसमें परमेश्वर का वचन जड़ नहीं ले सकता है। दृष्टान्त का यह भाग गहराई और अवधि से संबंधित है। यह एक ऐसा व्यक्ति है, जो जल्दी में और परिणामों पर विचार किए बिना और लागत को गिने बिना, क्षण के उत्साहन पर कार्य करता है। जब वह परमेश्वर के वचन को सुनता है, तो वह रोमांचित होता है या उत्साही होता है। परन्तु इस व्यक्ति के पास "कोई जड़ नहीं" है, अर्थात, उसके पास दृढ़ता का अभाव है, सभी परिस्थितियों में परमेश्वर के वचन में बने रहने की क्षमता। वह परमेश्वर के वचन के कारण आने वाली परेशानी और सताव को सहन करने के लिए इच्छुक नहीं है। उसके पास यीशु मसीह के लिए दुःख उठाने हेतु प्रेम का अभाव है (1कुरिन्थियों 13:3)। हालाँकि वह आरम्भ में मसीह का बाहरी रूप से अनुसरण करता है, वह कभी भी मसीह का वास्तविक अनुयायी नहीं है। मसीही धर्म के विषय में उसका अंगीकार उसकी आंतरिक कायलता से बाहर नहीं आता है। वह परमेश्वर के वचन को स्वीकार करने के परिणामों पर विचार करने में विफल रहता है। वह इस तथ्य पर विचार नहीं करता है कि "सच्चा शिष्यत्व" का तात्पर्य आत्म-समर्पण, आत्म-त्याग, बलिदान, सेवा और दुख है। जब परेशानी या सताव आता है, तो वह जल्दी से पतित हो जाता है। मूल शब्द का अर्थ है कि वह जल्दी से पाप में फंस जाता है या प्रलोभित हो जाता है या वह जल्दी से परमेश्वर के वचन से कुपित हो जाता है और इसके परिणामस्वरूप वह उससे ठोकर खा जाता है और गिर जाता है। ऐसे लोगों के उदाहरण हैंरू वह व्यक्ति जो लागत की गणना किए बिना यीशु का शिष्य बनना चाहता है (मत्ती 8:19-20); अमीर युवक जो अपनी दौलत जाने नहीं देना चाहता था (मत्ती 19:16-22); यहूदा इस्करियोती जिसने यीशु को पैसे के लिए धोखा दिया था (मत्ती 26:14-16) और दिमास जो वर्तमान दुनिया से प्यार करता था (2 तीमुथियुस 4:10)।

मुख्य शिक्षा परमेश्वर के शब्द को बनाए रखना है (लूका 8:15ग) और सभी परिस्थितियों में उसकी प्रतीति करना और उसके आज्ञाकारी होना है! परमेश्वर के वचन सुनते ही आपको अपनी प्रवृत्ति से भावनात्मक होने हेतु तुरंत निपटना होगा!

(4) "जिसके साथ (बीज) काँटों में बोया जाता है" (पद22)।

यह वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में बीज पर जंगली पौधों और कांटों के साथ संक्रमित मिट्टी के प्रभाव जैसा दिखता है। बीज (पौधा) दबा दिया जाता है और फलहीन रहता है।

यह विभाजित और पूर्व-व्याप्त हृदय का एक चित्र है जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध पक्षपाती है। दृष्टांत का यह भाग तैयारी और प्राथमिकता से संबंधित है। यह एक व्यक्ति है, जिसने तैयारी नहीं की है और जानबूझकर गलत प्राथमिकताओं को चुनता है। परिणामस्वरूप, उसके हृदय में परमेश्वर के वचन के शांत और गंभीर ध्यान और अनुप्रयोग के लिए कोई जगह या समय नहीं है। वह न केवल परमेश्वर के वचन के लिए अपने हृदय को खोलता है, बल्कि जीवन की चिंताओं, धन की कपटपूर्णता और अन्य चीजों की इच्छाएं के लिए भी अपना हृदय खोलता है जो परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करती हैं (लूका 8:14)। चिंताएँ शारीरिक स्वास्थ्य को नष्ट कर सकती हैं और परमेश्वर पर एकाग्रता को रोक सकती हैं (मत्ती 6:25-34)। धन-संपत्ति सभी प्रकार की बुराई की जड़ बन सकती है, जैसे कि निम्नलिखित उदाहरण दिखाते हैंरू अमीर मूर्ख (लूका 12:13-21), अमीर दिखावा और भिखारी लाजर (लूका 16:19-31), अमीर युवा शासक (मरकुस 10:17-23)। "अन्य इच्छाएं या सुख" आपके प्राण को बर्बाद करने वाली उलझनें बन सकते हैंः सुख जो स्वयं में गलत हैंः पियकड़पन, नशा, जुआ, लौटरी, भाग्य वाले खेल, यौन अनैतिकता, आदि। ऐसे सुख जो गलत हो जाते हैं जब व्यक्ति उनका अति-भोग करता है, वे हैंः खाना, पीना, सोना, खेल, मनोरंजन, टीवी देखना, उपन्यास पढ़ना, इंटरनेट या यहाँ तक कि काम भी जब आप हमेशा काम करने की आदत में होते हैं। वह व्यक्ति, जिसका हृदय अन्य चीजों के साथ पहले से ही व्याप्त होता है, कि उसके पास परमेश्वर के वचन के लिए कोई समय या स्थान नहीं होता, वह कभी आध्यात्मिक परिपक्वता के लिए नहीं बढ़ता है और इसलिए वह कभी भी अपने जीवन में "अनन्त जीवन के लिए फल" या "स्थायी फल" नहीं ला सकता है (यूहन्ना 4:36; 15:16)। हृदय की पापी इच्छाएँ, आँखों की वासना और मुँह द्वारा बड़ा-चढ़ा कर बोली बातें कि उसके पास क्या है या क्या करता है या क्या पूरा किया है, ऐसी चीजें हैं जो परमेश्वर से नहीं, बल्कि दुनिया से आती हैं। यह सभी चीजें जाती रहेंगी (1 यूहन्ना 2रू15-17)!

मुख्य शिक्षा अपने हृदय को स्वच्छ, ईमानदार और अच्छा रखना है (लूका 8:15क)। आपको इसे जीवन की चिंताओं, धन के धोखे, दुनिया के सुख और गलत इच्छाओं से मुक्त रखना होगा। आपको अपनी चिंताओं, भौतिकवादी होने की प्रवृत्ति और अपनी गलत इच्छाओं और गलत प्राथमिकताओं से तुरंत निपटना चाहिए।

(5) "वह जिसके साथ (बीज) अच्छी भूमि में बोया जाता है" (पद 23)।

यह वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में बीज पर अच्छी (स्वच्छ और गहरी) मिट्टी के प्रभाव को दर्शाता है। बीज (पौधा) बढ़ता है और बहुत फल देता है।

यह एक अच्छे प्रकार से तैयार किए गए हृदय का चित्र है जो परमेश्वर के वचन का सही तरीके से प्रतिउत्तर देता है और फल लाता है। दृष्टांत का यह भाग प्रेरणा और गुणवत्ता से संबंधित है। यह दृष्टांत का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश है।

पहले हृदय के विपरीत, यह व्यक्तिः

- सुनता है
- परमेश्वर का वचन
- उसे समझता है जो वह सुनता है (मत्ती 13:23) और

- उसे स्वीकार करता है (मरकुस 4:20)। वह ऐसा करता है ताकि परमेश्वर का वचन उसे बचा सके और उसे रूपांतरित कर सके (लूका 8:12)।

दूसरे हृदय के विपरीत, जब भी यह व्यक्ति परमेश्वर के वचन को सुनता है, तो वह सबसे पहले इन शब्दों पर विश्वास करने और उनकी आज्ञा मानने की लागत पर विचार करता है। वह लागत को गिनता है, क्योंकि वह विश्वासी बना रहना चाहता है, तब भी जब वह कठिनाइयों या सताव का सामना करता है। वह

- परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में गहराई से बनाए रखता है और सभी कठिन परिस्थितियों में उसे पकड़े रहता है (लूका 8:15)।

तीसरे हृदय के विपरीत, यह व्यक्तिः

- अपने हृदय को तैयार और स्वच्छ रखता है और जो कुछ भी परमेश्वर के वचन को दबा सकता है, उससे मुक्त रखता है (लूका 8:15)। उदाहरण के लिए, वह उसे चिंताओं, धन और सांसारिक सुखों से स्वच्छ रखता है।

चौथा हृदय उस व्यक्ति को दर्शाता है, जो अच्छे और वैभवपूर्ण हृदय के साथ परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देता हैः सुनता है, समझता है, स्वीकार करता है, कायलता के साथ परमेश्वर के वचन को पकडे रहता है और

- प्रयास और दृढ़ता के साथ फल लाता है (लूका 8:15)। फल जीवन परिवर्तन और आध्यात्मिक विकास हो सकता है (कुलुस्सियों 1:6)। फल अच्छे काम हो सकते हैं (लूका 3:8-14)। फल आध्यात्मिक चरित्र में वृद्धि हो सकती है (गलातियों 5:22-23)। या फल अन्य लोगों के जीवन में एक फलदायक सेवकाई हो सकती है (शिष्य बनाना) (यूहन्ना 15:16)। फलदायकता के स्तर में अंतर (तीस, साठ या सौ गुना) (मत्ती 13:23; मरकुस 4:20) इस तथ्य के कारण है कि सभी मसीही समान रूप से अनुतापी, विश्वसनीय, निष्ठावान, साहसी, नम्र या आज्ञाकारी नहीं हैं।

(6) अन्य सभी दृष्टान्तों को समझने की कुंजी।

मरकुस 4:13 कहता है, "क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों को क्योंकर समझोगे?" यीशु सिखाता है कि बीज बोनेवाले का दृष्टान्त यीशु मसीह के अन्य दृष्टान्तों को और पूरी बाइबल को भी समझने की कुंजी है! क्यों? क्योंकि "आपके हृदय की स्थिति या रवैया परमेश्वर के वचन के प्रति आपके प्रतिउत्तर को निर्धारित करता है। और बाइबल में दिए शब्दों को जो प्रतिउत्तर आप देते हैं, वह आपके जीवन में परिणाम निर्धारित करता है!"

इसीलिए नीतिवचन 4:23 कहता है, "सब से अधिक अपने हृदय की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है।" व्यक्ति कैसे अपने हृदय की रक्षा कर सकता है? नीतिवचन 23:26 कहता है, "हे मेरे पुत्र, अपना हृदय मेरी ओर लगा, और तेरी दृष्टि मेरे चाल चलन पर लगी रहे।" केवल जब आपने अपना हृदय और जीवन यीशु मसीह को दिया हुआ हो, तो आप अपने हृदय की रक्षा कर पाएँगे और परमेश्वर के वचन के प्रति सबसे अच्छे प्रतिउत्तर दे पाएँगे!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***
या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(सौंपा गया कार्य)* **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **निर्गमन 18, 20, 32 और 33** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(4) राज्य में सेवा करते हुए कभी पीछे न देखें: लूका 9:62।**
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 1:18-32।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 4

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश करने के विषय में इस पाठ को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **निर्गमन 18, 20, 32, 33**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (निर्गमन अध्याय 18, 20, 32, 33) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(परमेश्वर का राज्य)* **(4) लूका 9:62**

दो-दो करकर ***समीक्षा करें।***

(4) राज्य में सेवा करते हुए कभी पीछे न देखें। लूका 9:62। जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *(रोमियों के नाम पत्री)* **रोमियों 1:18-32**

परिचय दें। **रोमियों 1:18-32** का एक साथ अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 1:1-17 में पौलुस ने सुसमाचार प्रस्तुत किया। लोगों को बचाने के लिए सुसमाचार परमेश्वर का शक्तिशाली साधन है। यह परमेश्वर का अच्छा समाचार है कि वह मसीह पर विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर मसीह की धार्मिकता अभ्यारोपित करता है (सम्मिलित करना, सम्बंधित करना)।

रोमियों 1:18-32 में, पौलुस का उद्देश्य शिक्षा को साबित करना है कि "धार्मिकता केवल विश्वास द्वारा (अभ्यारोपित) होती है और (धार्मिक या अच्छे) व्यवस्था कामों के द्वारा नहीं।" ऐसा करने के लिए पहले यह दिखाना जरूरी था कि किसी भी व्यक्ति के पास आवश्यक धार्मिकता नहीं होती है जिसकी परमेश्वर माँग करता है (जो उसे बचाएगी)। और क्योंकि सभी लोग अपनी किसी भी स्वयं धार्मिकता के बिना हैं, वे परमेश्वर के दोष और विनाश के प्रति अनावृत हैं। वह रोमियों 1:18-32 में अन्यजातियों के संदर्भ में और रोमियों 2:1 से 3:8 में यहूदियों के संदर्भ में ऐसा करता है।

चरण 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइए एक साथ पढ़े रोमियों 1:18-32।

आइए हम बारी-बारी एक-एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम पढ़ना पूरा न कर लें।

चरण 2. खोज **अवलोकन**

विचार करें। इस पद में आपके लिए कौन-सा सत्य महत्वपूर्ण है?

या इस पद में से कौनसा सत्य आपके दिमाग या दिल को छूता है?

अभिलेखित करें। एक या दो सत्यों की खोज करें जिन्हें आप समझते हैं। उनके विषय में सोचें और अपने विचारों को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट का समय मिल गया हो, तब साझा करने के लिए बारियाँ लें)।

आइए हम एक दूसरे के साथ साझा करने के लिए बारियाँ लें, जो कुछ भी हमने खोजा है।

(स्मरण रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1:18-23

खोज 1. **ईश्वरविहीन चरित्र के परिणाम।**

परमेश्वर अपने अलौकिक अस्तित्व, चरित्र और व्यवहार में पवित्र और धर्मी है। इसलिए परमेश्वर पूर्ण रीति से न्यायपूर्ण और निष्पक्ष होता है जब वह ऐसे लोगों को दोषी ठहराता है जो चरित्र में अपवित्र और व्यवहार में अधर्मी होते हैं। एक व्यक्ति जिसे ईश्वरविहीन या दुष्ट होने के लिए आरोपित किया जा सके, उसे न्यायपूर्वक परमेश्व के धर्मी आक्रोश के प्रति अनावृत किया जाता है। वह अपने मानव वंश, अपने स्वयं के चरित्र या धार्मिक मान्यता और व्यवहार के आधार पर परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह का दावा नहीं कर सकता है!

रोमियों 1:18-32 में पौलुस सबसे पहले यह साबित करता है कि अन्यजाति पूर्ण रीति से अधर्मी हैं। वास्तव में, वे ईश्वरविहीन और दुष्ट हैं (रोमियों 1:18)। इसलिए, यदि गैर-मसीही बचना चाहते हैं, तो उन्हें बाइबल के परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता होगी। परमेश्वर की धार्मिकता के बिना, लोग निश्चित रूप से नष्ट हो जाएंगे! रोमियों 1:18-23 में पौलुस अन्यजातियों के *ईश्वरविहीन चरित्र* का वर्णन करता है और रोमियों 1:24-32 में वह उनके *दुष्ट व्यवहार* का वर्णन करता है।

परमेश्वर ने अपने अलौकिक अस्तित्व, चरित्र और शक्तिशाली आचरण को स्पष्ट रूप से सृष्टि में अपने कार्यों के माध्यम से प्रकट किया है। अन्यजाती हमेशा परमेश्वर के अलौकिक अस्तित्व, चरित्र और कर्मों के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त करने में सक्षम हुए हैं। वे हमेशा यह जानने में सक्षम हुए हैं कि एक अलौकिक अस्तित्व है और यह कि वह अति शक्तिशाली है। इसलिए अन्यजातियों का ईश्वरविहीन चरित्र और दुष्ट व्यवहार पूर्ण रीति से अक्षम्य है (रोमियों 1:19-20)!

हालाँकि अन्यजातियों के पास परमेश्वर को जानने का अवसर है, वे परमेश्वर की उपासना या सेवा नहीं करते हैं। इसके बजाय वे न केवल जीवित परमेश्वर के विषय में *सच्चाई को दबाते हैं* (रोमियों 1:18), बल्कि अपने स्वयं के आविष्कृत झूठ (दार्शनिक, धार्मिक और तथाकथित वैज्ञानिक झूठ) के लिए जीवित परमेश्वर के विषय में *सच्चाई का भी आदान-प्रदान करते हैं* (रोमियों 1:25)! परिणामस्वरूप, वे स्वयं को सभी प्रकार की मूर्तिपूजा के लिए देते हैं ("मूर्तिपूजा" बाइबल के परमेश्वर की बजाय किसी

अन्य "देवता" की उपासना करना है)! अशिक्षित अन्यजाती पत्थर की मूर्तियाँ बनाते हैं। वे अविनाशी परमेश्वर की महिमा के साथ नाशमान मनुष्य और जानवरों की छवियों का आदान-प्रदान करते हैं (रोमियों 1:21-23)। परन्तु शिक्षित अन्यजाती "परमेश्वर के विषय में अपने विचार, अपने स्वयं के धर्म और अपनी धार्मिक पुस्तक" का आविष्कार करते हैं। वे अपने स्वयं की (पापी) समानता में "एक ईश्वर" का निर्माण करते हैं, क्योंकि तब वे अपने चरित्र या दुष्ट व्यवहार को बदलने की आवश्यकता के बिना अपने ईश्वर की उपासना कर सकते हैं![1] हालांकि, यदि कोई भी जीवित परमेश्वर, बाइबल के परमेश्वर की उपासना करने की इच्छा रखता है, तो उसके स्वभाव, चरित्र और व्यवहार को बदलना होगा! तब उसे परिवर्तित होना होगा! तब उसे नया जन्म लेना होगा! यीशु कहता है, "अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहाय कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है" (यूहन्ना 3:7)!

एक ईश्वरविहीन चरित्र के परिणाम भयानक हैं! अपने दिमाग से जो कुछ भी वे सोचते हैं वह व्यर्थ हो जाता है, परमेश्वर की दृष्टि में बिल्कुल बेकार। और उनके हृदय से जो कुछ भी निकलता है वह केवल अंधकार है (रोमियों 1:21)। "उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है" (उत्पत्ति 6:5)। "उनके हृदय से केवल बुरे विचार निकलते हैं" (मत्ती 15:19)। अन्यजाती दिखाते हैं कि उनके भीतरी मनुष्यत्व और उनके धर्म में वे अंधकारमय हो गए हैं और बाइबल के पवित्र और धर्मी परमेश्वर की आराधना करने में सक्षम नहीं हैं और बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में जो सही है वह करने में भी सक्षम नहीं हैं!

1:24-32

खोज 2. **दुष्ट व्यवहार के परिणाम।**

पौलुस अन्यजातियों के दुष्ट व्यवहार और उसके भयानक परिणामों का वर्णन करता है। अन्यजाती परमेश्वर के ज्ञान को बनाए रखना सार्थक नहीं समझते, जो वे या तो परमेश्वर की सृष्टि के कार्यों में से या परमेश्वर के नैतिक नियमों में से प्राप्त करते हैं, जो उनके हृदयों पर लिखे गए हैं (रोमियों 1:19-20,28; 2:14-15)। वे न केवल हर प्रकार की दुष्टता को स्वयं *करना* जारी रखते हैं, परन्तु दूसरों के द्वारा की जाने वाली हर प्रकार की दुष्टता को भी *अनुमोदित* करते हैं (रोमियों 1:32)।

एक दुष्ट व्यवहार के परिणाम भयानक हैं! परमेश्वर दुष्ट लोगों को उनकी अपनी ही दुष्टता को सौंप देता है! वे ठीक वही काटते हैं जो वे बोते हैं (गलतियों 6:7)! वे कामोद्दीपक जैसी पापी इच्छाओं को बढ़ावा देते हैं और सभी प्रकार के अनैतिक यौन कार्य करते हैं। इसलिए परमेश्वर *उन्हें* शर्मनाक कामोद्दीपक और अपमानजनक यौन अनैतिकता के जीवन को *सौंप देता है* (रोमियों 1:24)। वह उन्हें शर्मनाक और घृणित वासनाओं (रोमियों 1:26) और भ्रष्ट दिमाग (रोमियों 1:28) को सौंप देता है। परमेश्वर उन लोगों को *त्याग* देता है जो दुष्टता का आविष्कार करते हैं, दुष्टता करते हैं या जीवन में दुष्टता जारी रखने के लिए बढ़ावा देते हैं। वे आगे से और आगे भ्रष्टता और अपराधों में और विशेष रूप से यौन अनैतिकता में डूबते जाते हैं। इस प्रकार के नैतिक भ्रष्टाचार का प्रमाण पुरुषों और महिलाओं दोनों के बीच व्यापक यौन संकीर्णता, सकल समलैंगिकता और परिणामस्वरूप भयानक यौन रोग हैं (रोमियों 1:26-27)। अन्यजाती दुनिया में हर प्रकार की दुष्टता करके साबित करते हैं कि वे

---

[1] उदाहरण के लिए, एक आतंकवादी ऐसे ईश्वर को ढूंढ निकालता है जो "पवित्र युद्धों" की माँग करता है। एक यौन अनैतिक व्यक्ति मानता है कि उसका ईश्वर स्वयं कई देवियों को रखता है या आधिकारिक तौर पर बहुविवाह करता है। एक ईश्वरविहीन व्यक्ति के पास ऐसा ईश्वर होता है जो ऐसे प्रकाशन देता है जो उसके दुष्ट जीवन से मेल रखते हैं। इस प्रकार, वह अवैध रूप से किसी महिला को लेने के लिए, बीमार लोगों को चंगा घोषित करने के लिए, जागृति का वादा करने के लिए, स्वयं को आत्मिक अगुवा (भविष्यवक्ता, प्रेरित, धर्माध्यक्ष), आदि घोषित करने के लिए एक प्रकाशन प्राप्त करता है। भजन 115:8 कहता है, "वे जो मूर्तियाँ बनाते या जो मूर्तियों पर भरोसा करते हैं, अपनी मूर्ति के समान बन जाते हैं!"

पूर्ण रीति से अधर्मी हैं (रोमियों 1:29-31)। *अपने बाहरी व्यवहार में,* अन्यजातियों ने अपनी भयानक भ्रष्टता का प्रदर्शन किया है और कुछ भी ऐसा करने की क्षमता खो दी है जो धार्मिक है!

चरण 3. प्रश्न।	व्याख्या

विचार करें। इस पद में से किसी भी चीज के विषय में कौनसा प्रश्न आप इस समूह से पूछना पसंद करेंगे? आइए हम रोमियों 1:18-32 के सभी सत्यों को समझने का प्रयास करें और उन चीजों के विषय में प्रश्न पूछें जिन्हें हम अभी भी नहीं समझते हैं।

अभिलेखित करें। अपने प्रश्न को यथासंभव स्पष्ट रूप से तैयार करें। फिर अपनी स्मरण-पुस्तक में अपना प्रश्न लिखें।

साझा करें। (समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट मिलने के पश्चात, पहले प्रत्येक व्यक्ति को अपना प्रश्न साझा करने दें।)

चर्चा करें। (फिर, इनमें से कुछ प्रश्नों को चुनें और उन्हें अपने समूह में एक साथ चर्चा करके उत्तर देने का प्रयास करें।) (प्रश्नों के उदाहरण जो छात्र पूछ सकते हैं और प्रश्नों की चर्चा के विषय में कुछ नोट्स निम्नलिखित हैं।)

1:18

प्रश्न 1. **परमेश्वर लोगों से गुस्सा क्यों है?**

ध्यान दें। परमेश्वर न केवल *प्रेम करने वाला* परमेश्वर है, परन्तु *पवित्र और धार्मिकता* का परमेश्वर भी है!

(1) परमेश्वर का क्रोध उसके पवित्र और धार्मिकता के स्वभाव की अभिव्यक्ति है।

परमेश्वर का दण्डात्मक न्याय परमेश्वर के अलौकिक स्वभाव का एक अनिवार्य गुण है। परमेश्वर की पवित्र धार्मिकता पाप का आवश्यक दण्ड प्रदान करती है। यदि परमेश्वर न्याय नहीं करता और दण्ड नहीं देता, तो वह पवित्र और धर्मी नहीं होता! परमेश्वर की पवित्र धार्मिकता मनुष्य को उसके पापों को क्षमा करने के लिए एक विकट प्रायश्चित की आवश्यकता का आधार भी है। यह सिद्धांत पौलुस की *औचित्य की शिक्षा* की व्याख्या का आधार है। "परमेश्वर का क्रोध" लोगों के पाप के विरुद्ध परमेश्वर का धार्मिक और पवित्र क्रोध है और पाप को दंडित करने के लिए उसका धार्मिक संकल्प है। परमेश्वर का क्रोध *स्वर्ग से* प्रकट होता है, क्योंकि वही वह स्थान है जहाँ परमेश्वर रहता है। परमेश्वर का क्रोध कई तरीकों से पाप के वास्तविक दण्ड के द्वारा *प्रकट* या व्यक्त होता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने जलप्रलय के माध्यम से पाप को दंडित किया, सदोम और अमोरा का विनाश और मिस्र में दस विपत्तियाँ (सीएफ. यहेजकेल 14:21)।

(2) परमेश्वर का क्रोध उसकी उचित और न्यायपूर्ण दण्ड की अभिव्यक्ति है।

"ईश्वरविहीनता" का अर्थ बाइबल के परमेश्वर के प्रति गलत या अनुचित रवैया। ष्दुष्टताष का अर्थ है अन्य लोगों के प्रति गलत या अनुचित रवैया। परमेश्वर का क्रोध उन लोगों के विरुद्ध है जो सच्चाई को *दबाते हैं* (दूर करते हैं, अस्वीकार करते हैं) और जो सच का *आदान-प्रदान* करते हैं (झूठ के लिए)! "सत्य" वो है जो कुछ भी सही, पवित्र और सच्चा है, हमारी मानवीय दृष्टि में नहीं, परन्तु परमेश्वर की अलौकिक दृष्टि में। सच्चाई विशेष रूप से धार्मिक और नैतिक सत्य है जिसे परमेश्वर ने बाइबल में प्रकट किया है (यूहन्ना 3:21; 8:32; 17:17; 2 कुरिन्थियों 4:2; 2 थिस्सलुनीकियों 2:12)। बाइबल में परमेश्वर की सच्चाई दुनिया में *एकमात्र सच्चे धर्म* और दुनिया में *एकमात्र सच्ची नैतिकता*

को प्रकट करती है! लोग अपनी दुष्टता के माध्यम से परमेश्वर की सच्चाई को दबाते हैं या बाधा डालते हैं।

लेग सच्चाई को कैसे दबाते हैं? हालाँकि उनके पास पर्याप्त ज्ञान या जागरूकता है कि परमेश्वर एक पवित्र, धर्मी और एक शक्तिशाली परमेश्वर है (रोमियों 1:19-20; 2:14-15), वे स्वयं परमेश्वर के लिए और परमेश्वर के नियमों के प्रति श्रद्धा का अभाव रखते हैं, जो लोगों के जीवन को परमेश्वर और अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध में नियंत्रित करता है। वे सच्चाई जानते हैं, परन्तु उसे अपने विचारों, चेतना और व्यावहारिक जीवन से दूर धकेल देते हैं। इसलिए, परमेश्वर लोगों को उसके और उसके कानूनों के प्रति श्रद्धा के अभाव के लिए दंडित करता है।

लोग सच्चाई का आदान-प्रदान कैसे करते हैं? वे न केवल परमेश्वर के सत्य को अपने जीवन से बाहर धकेलते हैं, परन्तु परमेश्वर के सत्य को अपने स्वयं के (दार्शनिक, धार्मिक या वैज्ञानिक) बनाए झूठ के साथ प्रतिस्थापित करते हैं। वे जीवित परमेश्वर को स्वयं तैयार किए या बनाए हुए "ईश्वर" के साथ प्रतिस्थापित करते हैं। गैर-मसीही धर्मों और पंथों के शिक्षक अपने विकृत मानव-निर्मित शिक्षाओं के साथ बाइबल की शिक्षाओं का आदान-प्रदान करते हैं और स्वयं की "पवित्र पुस्तक" का उत्पादन करते हैं। परमेश्वर निश्चित रूप से उन लोगों को दंडित करेगा जो सभी प्रकार के झूठे धर्मों को मानते हैं और अपने झूठ का अभ्यास करते हैं। गैर-मसीही धर्म सत्य नहीं हैं, क्योंकि वे बाइबल की सच्चाई को दबाते हैं और अपने झूठ के लिए इसका आदान-प्रदान करते हैं!

1:19-20

प्रश्न 2. **परमेश्वर स्वयं को गैर-यहूदियों (अन्यजातियों) पर कैसे प्रकट करता है?**

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को परमेश्वर से एक सामान्य प्रकाशन प्राप्त हुआ है।

बाइबल के परमेश्वर ने कभी भी पृथ्वी पर अपने तर्कसंगत प्राणियों के बीच स्वयं को गवाही के बिना नहीं छोड़ा है। उसने इस विषय में पर्याप्त प्रकाश दिया है कि वह कौन है और सृष्टि में अपने कार्यों के माध्यम से (रोमियों 1:19-20) और लोगों के हृदय पर लिखे गए उसके नैतिक कानूनों के माध्यम से (रोमियों 2:14-15) अपने प्राणियों से क्या माँग करता है। परमेश्वर ने सभी लोगों को परमेश्वर का कुछ ज्ञान रखने की क्षमता के साथ बनाया है। पौलुस यह नहीं कहता कि परमेश्वर के विषय में शायद जो कुछ भी ज्ञात हुआ है वह अन्यजातियों पर प्रकट हुआ था। वह बस इतना कहता है कि अन्यजातियों के पास ईश्वरहीनता और दुष्टता को अक्षम्य करने के लिए बाइबल के परमेश्वर के विषय में पर्याप्त जानकारी है! यह केवल ज्ञान नहीं है कि परमेश्वर का अस्तित्व है (कि एक परमेश्वर है), परन्तु परमेश्वर की प्रकृति और विशेषताओं का ज्ञान, जैसे कि उसकी अनन्त शक्ति, अलौकिकता (रोमियों 1:20) और न्याय (रोमियों 1:32)। बाइबल में दिए अन्य वचनों के अनुसार, अन्यजातियों के पास परमेश्वर के अदृश्य गुणों का ज्ञान है, जैसे कि उसकी अच्छाई, बुद्धि, उसके कार्यों में व्यक्त की गई शक्ति और महिमा है (भजन संहिता 8; भजन संहिता 19; यशायाह 40:21-26; प्रेरितों के काम 14:17; 17:24-27)।

परमेश्वर के विषय में यह ज्ञान उनके लिए सादा या बेहतर बनाया गया था, उन्हें (ग्रीकः एन) में सादा बनाया गया था (रोमियों 1:19)। यह उनके दिमाग में और उनके हृदयों में एक प्रकाशन है। परमेश्वर ने उन्हें अपने स्वरुप में बनाया है ताकि उनका मनुष्य अस्तित्व इस बात का पर्याप्त प्रमाण हो कि परमेश्वर का अस्तित्व है। और उसकी विशेषताएं सिद्ध हैं। मनुष्य अपनी मानवीय भावना के साथ

परमेश्वर की बनाई रचना में उसके प्रगटीकरण को देखने में सक्षम है। परमेश्वर ने स्वयं को बिना गवाह के कभी नहीं छोड़ा। उसका अस्तित्व और सिद्ध विशेषताएँ हमेशा इतनी स्पष्ट रही हैं, कि उसके तर्कसंगत प्राणी उसे सच्चे और एकमात्र परमेश्वर के रूप में स्वीकार करने और उसकी आराधना करने के लिए बाध्य हैं! यही कारण है कि परमेश्वर के तर्कसंगत प्राणी केवल भौतिक प्राणी नहीं हैं, परन्तु आध्यात्मिक और नैतिक प्राणी भी हैं। तर्कसंगत और नैतिक प्राणियों के रूप में, लोगों के पास उनकी ईश्वरहीनता और दुष्टता के लिए कोई बहाना नहीं है (रोमियों 3:19-20)।

हालाँकि, परमेश्वर के विषय में यह ज्ञान दबाया गया और आदान-प्रदान किया गया था (रोमियों 1:18,25)। यद्यपि सभी मनुष्यों में यह जानने की क्षमता है कि परमेश्वर का अस्तित्व है और उसके चरित्र के भाग को भी जानते हैं, वे परमेश्वर को "न तो महिमा देते हैं और न ही धन्यवाद देते हैं" (रोमियों 1:21)। इसमें कोई बहाना नहीं बनाया जा सकता है, क्योंकि लोग अपने सत्य के ज्ञान के अनुसार कार्य नहीं करते हैं! इसके बजाय, वे जानबूझकर और दुष्टता से सच्चाई को दबाते और उसका आदान-प्रदान करते हैं।

परमेश्वर के प्रति उनका पाप (विशेषकर उनकी मूर्तिपूजा) उनकी *अज्ञानता* का परिणाम नहीं है, बल्कि उनकी *स्वेच्छापूर्वक भ्रष्ट ईश्वरविहीनता* का फल है! वे जानते हैं कि परमेश्वर के प्रति क्या सही है (रोमियों 1:32), परन्तु फिर भी वह करते हैं जो परमेश्वर के प्रति गलत है। वे बाइबल के जीवित परमेश्वर की आराधना अपने परमेश्वर के रूप में नहीं करते हैं और वे उसे अपने जीवन और आशीषों के स्रोत के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं।

इसी प्रकार लोगों के विरुद्ध उनके पापों के सभी रूप (अपने पूर्ण भ्रष्ट प्रकटीकरणों में यौन अनैतिकता सहित) उनकी *अज्ञानता या तथाकथित अंतर्निहित मानव स्वभाव* [2] का परिणाम नहीं हैं, परन्तु उनकी *स्वैच्छिक भ्रष्टता* का फल है। वे जानते हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में सही क्या है (रोमियों 1:32), परन्तु फिर भी अपने पड़ोसी के प्रति वह करते हैं जो गलत है। वे एक-दूसरे के प्रति प्रत्येक प्रकार की दुष्टता करते हैं (रोमियों 1:29-31)।

यहाँ तक कि सबसे अधिक प्रतिशोधी पापी भी अपने भीतर जानता है कि वह सच्चाई को दबाने या झूठ के लिए सच्चाई का आदान-प्रदान करने का दोषी है। वह जानता है कि वह न्यायपूर्वक परमेश्वर के क्रोध के सामने खुला है। रोमियों 1:32 में कहा गया है कि यद्यपि वे तो परमेश्वर की यह विधि *जानते* हैं, कि ऐसे ऐसे काम करने वाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, वरन करने वालों से प्रसन्न भी होते हैं। मनुष्य का विवेक कभी भी पूर्ण रीति से शाँत नहीं हो सकता है!

(2) सभी लोगों को परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की आवश्यकता है।

यद्यपि परमेश्वर के सृष्टि के कार्यों में परमेश्वर का प्रकाशन लोगों को परमेश्वर के *न्याय* के संबंध में अक्षम्य प्रदान करने के लिए पर्याप्त है, वह इस बात का पालन नहीं करता है कि यह सामान्य प्रकाशन उन्हें *उद्धार* तक ले जाने के लिए पर्याप्त है। बजाए जाने के लिए, लोगों को परमेश्वर के एक

[2] सभी लोगों के पाप में पतन के पश्चात एक *पापी स्वभाव* है और वे बुराई करने के लिए प्रवृत्त हैं। नए जन्म (2 कुरिन्थियों 5:17) के पश्चात सभी मसीहियों के पास एक *नया स्वभाव* है। मसीहियों को आगे से अपने नश्वर शरीर में पाप को शासन न करने देने के लिए कहा जाता है, ताकि वे उसकी बुरी इच्छाओं का पालन न कर सकें (रोमियों 6:11-14; रोमियों 8:11-14)। एकमात्र अक्षम्य पाप परमेश्वर को प्रतिद्वंद्वी (शैतान) के रूप में मानना (मत्ती 12:31-32) और पाप जारी रखना है (वर्तमान निरंतर काल) (1 यूहन्ना 3:6-8; 5:16-18)।

सामान्य प्रकाशन से अधिक की आवश्यकता है। उन्हें परमेश्वर के एक विशेष प्रकाशन की आवश्यकता है। प्राकृतिक धार्मिक ज्ञान और लोगों की भावनाएं उन्हें कभी नहीं बचा सकती हैं! पूर्ण संसार के लोगों के अनुभव, सभी प्रकार की परिस्थितियों में जिनमें वे रहे हैं, यह साबित करता है कि परमेश्वर का ज्ञान जो उन्होंने प्रकृति में परमेश्वर के कार्यों से प्राप्त किया है और उनके हृदय पर परमेश्वर के नैतिक कानून उन्हें यीशु पर विश्वास करने की ओर नहीं लेकर गए हैं। ज्ञान, जो परमेश्वर के विषय में अन्यजातियों के पास उसके सृष्टि के कार्यों से, उनके हृदयों में और साथ-साथ उनकी अस्पष्ट परंपराओं के माध्यम से है, उन्हें बाइबल के जीवित परमेश्वर की ओर नहीं ले जाता है। यह उन्हें परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता और पवित्रता की ओर भी नहीं ले जाता है। बचाए जाने के लिए, संसार में लोगों को परमेश्वर के एक विशेष प्रकाशन की आवश्यकता है (रोमियों 1:21-23)। वह विशेष प्रकाशन सुसमाचार में दिया गया है (रोमियों 1:17; 3:21)।

1:21-25

प्रश्न 3. **परमेश्वर लोगों को उनकी पापी इच्छाओं और जीवन के पतित तरीके को क्यों दे देता है?**

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर ने धर्म और नैतिकता के बीच एक निश्चित संबंध स्थापित किया है।

ईश्वरविहीनता दुष्टता की ओर ले जाती है। धार्मिक त्रुटि (आध्यात्मिक भ्रष्टाचार) नैतिक भ्रष्टता की ओर ले जाती है। लोग, जो यह स्वीकार नहीं करना चाहते हैं कि बाइबल के जीवित परमेश्वर ने स्वयं के विषय में क्या बताया है, वे परमेश्वर के अपने ज्ञान में अधिक से अधिक भ्रष्ट हो जाएँगे। एक व्यक्ति बाइबल के परमेश्वर से जितना कम संबंध रखता है, वह अपने दिमाग और व्यवहार में, उतना ही अनैतिक और भ्रष्ट हो जाता है। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति परमेश्वर का धन्यवाद नहीं करता या उसकी महिमा नहीं करता है, तो वह अपनी (तर्कसंगत, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक) सोच में एक मूर्ख बन जाता है।

जब कोई व्यक्ति झूठे ईश्वर या झूठी (बाइबल के विपरीत) धार्मिक शिक्षाओं पर विश्वास करता है, तो वह एक यौन अनैतिक जीवन जीने लगता है। इसका उल्टा भी सही है। जब कोई व्यक्ति यौन अनैतिकता में जी रहा होता है, तो आप यह मान सकते हैं कि वह शायद झूठी धार्मिक शिक्षाओं में विश्वास करता है। वह या तो उस परमेश्वर में विश्वास नहीं करता है जिसने बाइबल में स्वयं को प्रकट किया है, परन्तु एक झूठे ईश्वर (दूसरे धर्म से) में विश्वास रखता है या स्वयं को ईश्वर के रूप में मानता है। परमेश्वर ने ईश्वरहीनता और यौन अनैतिकता के बीच एक अविभाज्य संबंध स्थापित किया है!

सौभाग्य से, इसके विपरीत भी सच है। एक व्यक्ति जो पश्चाताप करता है और यौन अनैतिकता से दूर हो जाता है, वह फिर से बाइबल में सच्चाई को संजोएगा। एक व्यक्ति जो बाइबल के जीवित परमेश्वर के साथ चलता है, वह बाइबल की सच्चाइयों को पकड़े रहेगा और एक शुद्ध नैतिकता बनाए रखेगा!

(2) परमेश्वर अक्सर पापी को अधिक पाप को सौंपकर मानव पाप को दण्ड देता है।

वह परमेश्वर ठीक ही उस व्यक्ति को त्यागता है जो पाप करने में लगा रहता है, परमेश्वर की पवित्रता के साथ और मनुष्य के अनैतिक कार्य के साथ निरन्तर बने रहता है। परमेश्वर लोगों को बुराई करने या पाप जारी रखने के लिए लुभाता या प्रेरित नहीं करता है (याकूब 1:13)। वह लोगों को उनकी बुराई के लिए त्याग देता है। जब परमेश्वर अपमानजनक यौन अशुद्धता और एक दूसरे के बीच

शर्मनाक अभद्र कार्यों में *लोगों को दे देता है* (1:24,26), तो वह बस उनके बुरे कार्यों को रोकने से हट जाता है। जब परमेश्वर लोगों को एक भ्रष्ट दिमाग को देता है जो केवल प्रत्येक प्रकार की दुष्टता का आविष्कार कर सकता है (रोमियों 1:28-31), *वह बस उन्हें उनके पापों के लिए त्याग देता है*। परमेश्वर उन्हें वह काटने की अनुमति दे देता है जो कुछ उन्होंने स्वयं बोया था (गलातियों 6:7)। और जब इस प्रकार की ईश्वरहीनता और दुष्टता बनी रहती है, तो परमेश्वर न केवल *अपनी दया और अनुग्रह को उनसे दूर रखता है,* बल्कि उनके अविश्वास द्वारा *स्वयं को निरन्तर कठोर करने* और अनाज्ञाकारिता के साथ स्थायी कठोर होने हेतु *वास्तव में दण्ड देता है* (सीएफ. रोमियों 1:18,24-28; 9:18; 11:7-10; यशायाह 6:9-10; मत्ती 13:11-15)।

(3) परमेश्वर पृथ्वी पर ईश्वरहीन और दुष्ट लोगों के साथ अति धैर्य दिखाता है।

परमेश्वर किसी को भी इससे पहले कि उसकी पापपूर्ण इच्छाओं और जीवन के अपमानजनक तरीके को सौंप दे, अति धैर्य दिखाता है। उदाहरण के लिए, कैन के अपने भाई की हत्या करने से पहले, परमेश्वर ने कैन के साथ कोमलता से व्यवहार किया। उसने कैन को वह करने के लिए आमंत्रित किया जो सही था। तब परमेश्वर उसे स्वीकार करेगा (उत्पत्ति 4:6-7)।

जलप्रलय से पहले, परमेश्वर ने इस आशा में लंबे समय तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की कि पृथ्वी पर दुष्ट लोग पश्चाताप कर लेंगे और नाश नहीं होंगे (उत्पत्ति 6:5; 1 पतरस 3:20; 2 पतरस 3:9)।

ईजेबेल को परमेश्वर ने दिया, जिसने थियातिरा की कलीसिया में मूर्तिपूजा और यौन अनैतिकता को बढ़ावा दिया, उसके आध्यात्मिक और यौन अनैतिकता से पश्चाताप करने का समय। परन्तु क्योंकि वह और उसके साथी अनिच्छुक थे, परमेश्वर उनके लिए गहन पीड़ा लेकर आए (प्रकाशितवाक्य 2:20-22)।

(4) परमेश्वर नरक में के अनन्त न्याय से बचाने के लिए पृथ्वी पर लोगों पर वर्तमान न्याय लाता है।

इस जीवन में परमेश्वर के वर्तमान न्याय इस दुनिया के अंत में परमेश्वर के अंतिम न्याय से पहले आते हैं। परमेश्वर के वर्तमान न्यायों में कुछ न्याय होने देने की अनुमति होती है, जब लोग आध्यात्मिक और नैतिक कानूनों को तोड़ते हैं जो उसने सृष्टि में बनाए थे। वे जो बोते हैं उसे काटते हैं (गलातियों 6:7-8)। भौतिक विज्ञान में गुरुत्वाकर्षण के नियम के समान, इसलिए आलस्य को बोनेवाला व्यक्ति गरीबी की उपज काटेगा। एक व्यक्ति जो घृणा बोता है, वह टूटे हुए रिश्तों को काटेगा। अत्याचार बोनेवाला आदमी युद्धों को काटेगा। ड्रग्स बोनेवाला व्यक्ति नशे की लत को काटता है।

जब लोग बाइबल के परमेश्वर की ओर अपना मुँह फेरने में लगे रहते हैं, तो परमेश्वर के वर्तमान न्यायों में कुछ विशेष न्याय भी होते हैं। परमेश्वर उनसे अपनी दी गई देखभाल और सुरक्षा वापस ले लेता है और उन पर अपने वर्तमान अस्थायी न्यायों को लाता है। उदाहरण के लिए, उनकी कटाई विफल हो जाती है, युद्ध उनके देश को फाड़ देते हैं, उनके लोगों को बहुत नुकसान होता है और पृथ्वी पर किसी भी चीज से संतुष्टि नहीं होती है, आदि (लैव्यव्यवस्था 26:14-25; आमोस 4:6-12; हाग्गै 1:3-11; मत्ती 24:4-14; प्रकाशितवाक्य 9:20-21; 16:9)। परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्य के इतिहास में मानव जाति को यह दिखाने के लिए कि वह उनके पापों से अप्रसन्न है और उन्हें पश्चाताप करने और उसकी ओर वापस मुड़ने के लिए चेतावनी देने हेतु भूकंप, बाढ़, अकाल, भूख और महामारी जैसी सभी प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं का उपयोग करता आया है (यहेजकेल 14:21)।

परमेश्वर अपने *वर्तमान लौकिक* न्यायों को लोगों पर लाता है ताकि उन्हें अपने *भविष्य के अनन्त*

न्याय (नरकदण्ड) से बचा सके! "जब हमारा प्रभु द्वारा न्याय होता है, तो हमें अनुशासित किया जाता है ताकि हम दुनिया के साथ दोषी न ठहराए जाएँ" (1 कुरिन्थियों 11:32)। परमेश्वर के वर्तमान न्यायों का उद्देश्य लोगों को अनुशासित करना है, अर्थात, लोगों को चेतावनी देना, उनके पापों को उजागर करना, उन्हें उनके पापों के विषय में जागरूक करना, उन्हें उनके पापों के लिए फटकारना और पश्चाताप करने के लिए उनको पुकारना।

परमेश्वर का लक्ष्य वह कार्य करना है जो अब लोगों के लिए सबसे अच्छा है। "जब किसी अपराध के लिए दिया दण्ड जल्दी नहीं होता है, तो लोगों के हृदय गलत करने के लिए योजनाओं से भरे होते हैं" (सभोपदेशक 8:11; सीएफ. व्यवस्थाविवरण 13:11; भजन संहिता 119:126; यशायाह 26:9; आमोस 4:6-12; हाग्गै 1:5-11)। परमेश्वर पश्चाताप करने की चेतावनी के रूप में अपनी न्याय की तुरहियाँ बजाता है (प्रकाशितवाक्य 9:20-21)।

यदि परमेश्वर बिना चुनौती दिए बस उनकी ईश्वरहीनता और दुष्टता को सहन करता रहेगा, तो वे अपने पापों के गुलाम बन जाएँगे और परमेश्वर को इसके फलस्वरूप उन्हें अनन्त मृत्यु (नरक) के साथ दंडित करना पड़ेगा। (प्रकाशितवाक्य 21:8)। परमेश्वर के वर्तमान न्यायों का उद्देश्य लोगों को उनकी ईश्वरहीनता और दुष्टता से मोड़ना है और उनके बजाय परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता में साझा करना है (इब्रानियों 12:4-13)। परमेश्वर चंगा करने के लिए दण्ड देता है (यशायाह 19:22)। हालाँकि, यदि परमेश्वर के धैर्य का उत्तर पश्चाताप द्वारा नहीं दिया जाता है, तो धार्मिक और पवित्र आक्रोश में परमेश्वर अंततः उन्हें एक ऐसी स्थिति में छोड़ देगा, जिसमें वे परमेश्वर की प्रेममय उपस्थिति और देखभाल से सदा के लिए अलग हो जाते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9)।

1:26-27

***प्रश्न 4.* बाइबल समलैंगिकता को कैसे देखती है?**

ध्यान दें।

(1) विवाह संबंध।

बाइबल की शादी शिक्षा के अनुसार, संभोग का संबंध एक पुरुष और एक महिला के बीच एक विवाह संबंध के भीतर अभिप्रेत है और किसी अन्य रिश्ते में नहीं (उत्पत्ति 2:24; 1 थिस्सलुनीकियों 4:4-5; इब्रानियों 13:4)! एक आदमी और उसकी पत्नी के बीच ऐसा यौन प्रेम सुन्दर और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है (नीतिवचन 5:15-21)। पुरुष और महिला शरीर को परमेश्वर द्वारा अभिकल्पित और बनाया गया है, और विवाह संबंध एक पुरुष और एक महिला के बीच एक रिश्ते के रूप में होना आरम्भ से परमेश्वर का विचार, समन्वय और आशीष है और यह कभी भी मनुष्य या मनुष्य के किसी भी समाज का आविष्कार नहीं है (उत्पत्ति 1:27; 2:24; मत्ती 19:5; इफिसियों 5:31)।

वेश्यावृत्ति, समलैंगिकता, पशुगमन, कौटुम्बिक व्यभिचार, बहुविवाह या बहुपत्नी और व्यभिचार जैसे अवैध यौन संबंध बाइबल में कभी भी स्वीकृत नहीं हैं और इन्हें कभी "विवाह संबंध" नहीं माना गया है। इसके विपरीत, बाइबल यौन के इन अवैध रूपों को अस्वीकार करती है और अपराधियों को गंभीर परिणामों के साथ धमकी देती है (लैव्यव्यवस्था 18:6,20,22,23; लैव्यव्यवस्था 20:10,13,15,19; प्रकाशितवाक्य 21:8)। जब एक पुरुष और एक महिला विवाह करते हैं, तो वे स्वीकार करते हैं कि यह परमेश्वर है (और एक या अन्य सामाजिक संस्था नहीं) जो उन्हें जीवन भर के लिए एकजुट करता है (मत्ती 19:6)। वे परमेश्वर और एक दूसरे के साथ एक-दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य होने की वाचा

बाँधते हैं (मलाकी 2:14-15)। परमेश्वर द्वारा यह आवश्यकता है कि सभी संस्कृतियों में और इतिहास में हर समय सभी लोगों को बाइबल के विवाह संबंध का सम्मान करना चाहिए और इस बाइबल के विवाह संबंध के अंदर ही यौनक्रिया को स्थान देना चाहिए। "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह का बिछौना निष्कलंक रहेय क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों [3] और पूर्ण यौन अनैतिकता का न्याय करेगा।" [4] (इब्रानियों 13:4)।

(2) समलैंगिक संबंध।

<u>बाइबल किसी व्यक्ति की यौन अभिविन्यास या प्राकृतिक झुकाव या यौन भावनाओं के विषय में बयान नहीं देती है, चाहे वह विषमलैंगिक हो या समलैंगिक। परन्तु बाइबल इस विषय में बात करती है कि कोई व्यक्ति अपनी यौन अभिविन्यास, झुकाव और भावनाओं को कैसे अभिव्यक्ति देता है</u>।

माता-पिता द्वारा शिक्षा और समाज में जो कुछ होता है, उसका पुरुषों और महिलाओं के यौन विकास और पुरुष या महिला होने की उनकी स्वीकृति पर बहुत प्रभाव पड़ता है। बाइबल विभिन्न संभावित कारणों की व्याख्या नहीं करती है कि क्यों कुछ लोगों का मानना है कि वे समलैंगिक या समलिंगी हैं। परन्तु <u>बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि कोई व्यक्ति अपनी लैंगिकता के साथ क्या कर सकता है या नहीं कर सकता है, अपनी अभिविन्यास या झुकाव के बावजूद</u>!

परमेश्वर ने एक पुरुष और एक महिला के बीच यौन संबंध होने के लिए बनाया है, ताकि पुरुष और महिलाः

- जीवनभर के लिए एकता के रूप में एक-दूसरे से बंधे रहें (उत्पत्ति 2:24)
- यौन संबंध का आनंद लें (श्रेष्ठगीत)
- मानव जाति का पुनः उत्पादन करें (उत्पत्ति 1:28)।

परन्तु परमेश्वर विवाह के सम्बन्ध के अंदर पति और उसकी पत्नी के बीच यौन संबंधों के अलावा प्रत्येक प्रकार के यौन संबंधों को मना करता है। अन्य सभी प्रकार के यौन संबंध परमेश्वर की मंशा और उसकी व्यक्त की गई इच्छा के विपरीत हैं।

पुराने नियम में, परमेश्वर कौटुम्बिक व्यभिचार, व्यभिचार, समलैंगिकता, पशुगमन (लैव्यव्यवस्था 18:6,20,22,23; 20:10,13,15,17), स्वच्छंद संभोग, बेवफाई, बलात्कार, वेश्यावृत्ति (व्यवस्थाविवरण 22:20-30; 23:17; 27:21) और बाल यौन शोषण जैसे यौन पापों की घोर निंदा करता है। परमेश्वर की इच्छा के बाहर "यौन या कामुक प्रेम" (ग्रीकः एरोस) की अभिव्यक्ति "मसीही प्रेम" (ग्रीकः अगापे) नहीं है और इसे "प्रेम" के रूप में नहीं माना जा सकता है। जो लोग यौन प्रेम के इन भावों में लिप्त होते हैं, उन्हें अपनी भ्रष्टता और घिनौनी प्रथाओं का परिणाम भुगतना पड़ेगा (सीएफ. यहेजकेल 16:15-58)। परमेश्वर यौन प्रेम के इन भावों को दण्ड देगा (सीएफ. होशे 2:13; 4:12-14; 8:9)।

नए नियम में, परमेश्वर ऐसे यौन अपराधियों की कड़ी निंदा करता है, जो लोग कामोद्दीपक चीजों में लिप्त रहते हैं, जो लोग व्यभिचार करके अपने विवाह तोड़ते हैं, ऐसे लोग जो पुरुष वेश्या के रूप में दिखते हैं और जो लोग समलैंगिक अपराध करते हैं (रोमियों 1:26-27; 1 कुरिन्थियों 6:9-10; इफिसियों 5:3-5; 1 पतरस 4:3-5)। परमेश्वर किसी व्यक्ति की यौन अभिविन्यास, झुकाव या

[3] यूनानीः पोर्नोस, वे लोग जो सभी प्रकार की अवैध यौनक्रिया करते हैं (बाइबल अनुसार विवाह के बाहर भी)

[4] यूनानीः मोइचोस, वे लोग जो बाइबल अनुसार विवाह के भीतर ही नियमों को तोड़ते हैं

भावनाओं के विषय में कोई बयान नहीं देता है, ठीक उसी प्रकार जैसे वह उनके गुस्सा होने, चोरी करने या हत्या करने के प्रति झुकाव के विषय में कोई बयान नहीं देता है (निर्गमन 20:12-17)। संसार में सभी लोगों के पास प्राकृतिक रूप से एक *पापपूर्ण अभिविन्यास,* एक पाप की ओर झुकाव और पापपूर्ण भावनाएँ हैं! सभी लोगों को स्वयं को अपने पुराने पापी स्वभाव को न देने या अपने नश्वर शरीर में पाप को शासन न करने देने के लिए कहा जाता है ताकि वे उसकी बुरी इच्छाओं का पालन न करें (रोमियों 6:12-14; रोमियों 8:11-14; याकूब 1:13-14)। परमेश्वर की सहायता से सभी विश्वासी अपने को अपने झुकाव में देने के इन प्रलोभनों का विरोध कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 10:13)। परमेश्वर उसकी निंदा करता है जब लोग झूठ बोलने, चोरी करने, लालच देने या हत्या करने और वास्तव में उपर्युक्त यौन पाप करने के द्वारा अपने पुराने पापी स्वभाव की अभिव्यक्ति देते हैं। जो लोग स्वयं को यौन अनैतिकता और विकृति के लिए दे देते हैं, वे अनन्त अग्नि का दण्ड भुगतेंगे (यहूदा 1:7; प्रकाशितवाक्य 21:8)। परमेश्वर उन्हें नष्ट कर देगा, जो अपने शरीर को नष्ट करते हैं (1 कुरिन्थियों 3:16-17)।

मसीहियों को मसीही विवाह को "परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाला" और "परमेश्वर की दृष्टि में सामान्य" और यौन प्रेम की इन अभिव्यक्तियों को "परमेश्वर के प्रति घृणास्पद" और "परमेश्वर की दृष्टि में असामान्य" मानना चाहिए। मसीहियों को बाइबल की शिक्षाओं/सिद्धांतों को पकड़े रहना चाहिए और उन्हें "मंज-वेदी" से खुले तौर पर बढ़ावा देना चाहिए, परन्तु निजी "अंगीकार" में उनको पासबान वाली देखभाल (निंदा नहीं) देनी चाहिए जो अवैध यौन क्रिया से जूझते हैं और इन यौन क्रियाओं को सार्वजनिक चर्चा का विषय नहीं बनाना चाहिए!

फिर भी, 1कुरिन्थियों 6:11 सिखाता है कि जिसने भी इस प्रकार की यौन क्रियाएँ ("परमेश्वर के उद्देश्य को खोने" के रूप में "पाप") की हैं, उनको बचाया जा सकता है, यदि वह क्षमा (न्यायोचना) के लिए यीशु मसीह की ओर मुड़ जाता है और स्वयं को पवित्र जीवन जीने (पवित्रता) के लिए पवित्र आत्मा के काम को सौंप देता है। परमेश्वर समलैंगिक क्रियाओं की निंदा करता है, परन्तु जिन लोगों ने समलैंगिक क्रियाएँ की हैं, वे भी बच सकते हैं जब वे इन क्रियाओं से यीशु मसीह की ओर मुड़ते हैं। सभी लोगों को, चाहे उनकी कोई भी यौन अभिविन्यास, झुकाव या भावनाएँ हों, बाइबल में प्रकट परमेश्वर की इच्छा को खोजना चाहिए और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना चाहिए।

1:28-32

प्रश्न 5. परमेश्वर उन लोगों को कैसे दंडित करता है जो जान-बूझकर परमेश्वर के ज्ञान को त्याग देते हैं और बुराई करने वाले लोगों का अनुमोदन करते हैं?

ध्यान दें। परमेश्वर उन्हें एक भ्रष्ट दिमाग को दे देगा, वह करने के लिए आज नहीं किया जाना चाहिए। वे अंततः प्रत्येक प्रकार की दुष्टता और भ्रष्टता से भर जाएँगे। यद्यपि वे जानते हैं कि जो लोग इन चीजों को करते हैं वे (अनन्त) मृत्यु के योग्य हैं, वे न केवल इन चीजों को करना जारी रखते हैं, बल्कि उन लोगों का भी अनुमोदन करते हैं जो उनका अभ्यास करते हैं।

चरण 4. लागू करना **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौनसे सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 1:18-32 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 1:18-32 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

1:18. सच को कभी मत दबाओ! बाइबल सच्चाई सिखाती है (यूहन्ना 17रू17)।

1:19-20. प्रकृति में परमेश्वर कार्यों में उसके अदृश्य गुणों पर ध्यान देने का प्रयास करें।

1:20. जीवित परमेश्वर के विरुद्ध बहाने बनाने का प्रयास कभी मत करें। कोई भी पूर्ण अज्ञानता और इस प्रकार निर्दोषता का अनुरोध नहीं कर सकता है!

1:21. अपनी सभी आशीषों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें और जो कुछ भी आप हैं और करते हैं उसमें परमेश्वर को महिमा दें।

1:23,25. कभी भी झूठ के लिए सच का आदान-प्रदान न करें!

1:23-24. सावधान रहें! झूठा धर्म अनिवार्य रूप से अनैतिक यौन व्यवहार की ओर ले जाता है। और यौन अनैतिकता अनिवार्य रूप से झूठी बातों में विश्वास की ओर ले जाती है!

1:24,26,28. सावधान रहें कि यदि आप अपनी पापी आदतों से पश्चाताप नहीं करते हैं, तो परमेश्वर आपको उन्हीं में दे सकता है।

1:27. सावधान हो जाओ! समलैंगिक अपराध (क्रियाएँ, अभिविन्यास नहीं) भयानक बीमारियों की ओर ले जाते हैं।

1:28. बाइबल से प्राप्त जीवित परमेश्वर के ज्ञान को बनाए रखना बिल्कुल सार्थक है।

1:28-29. ईश्वरहीनता अनिवार्य रूप से दुष्टता के प्रत्येक रूप की ओर ले जाती है।

1:29-31. यह उन चीजों की एक व्यावहारिक सूची है जिन्हें परमेश्वर पापों के रूप में मानते हैं।

1:32. कोई भी उसके अंतःकरण को पूर्ण रीति से चुप नहीं कर सकता!

2. रोमियों 1:18-32 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं स्वीकार करता हूँ कि जब मैं एक गैर-मसीही (या अविश्वासी) था, तो मैं ईश्वरहीन और दुष्ट था। मेरे जीवन में, परमेश्वर के लिए कोई सम्मान नहीं दिखाने और कई प्रकार के बुरे काम करने के उदाहरण थे। मैंने पश्चाताप किया और परमेश्वर की धार्मिकता की ओर मुड़ गया, उसके पश्चात् ही मुझे एहसास हुआ कि मुझमें कोई धार्मिकता नहीं थी, जो परमेश्वर की धार्मिकता की माँग को पूरा कर सके। परमेश्वर की धार्मिकता मुझे दी गई थी जब मैंने विश्वास किया कि यीशु मसीह मेरे पापों के लिए मरा और यह साबित करने के लिए पुनर्जीवित हो गया कि परमेश्वर ने मेरे पापों के प्रायश्चित बलिदान को स्वीकार कर लिया है!

मैं इस बात से पूरा परिचित हूँ कि व्यक्ति के धार्मिक विश्वास और उसके नैतिक जीवन के बीच एक अटूट संबंध है। जो कोई ईश्वरहीन है वह दुष्टता करना आरम्भ कर देगा। जो कोई भी झूठे धर्म में विश्वास करता है, वह अंततः मूर्तिपूजा, हत्या, चोरी, यौन अनैतिकता, झूठ और स्वार्थी इच्छाओं की क्रियाएँ करेगा। इसलिए, लोगों को सुसमाचार की सच्चाई सिखाना मेरे लिए बहुत आवश्यक है, ताकि वे भी सच्चे नैतिक जीवन को जीने में सक्षम हो सकें। मैं इसे मसीही विश्वास (शिक्षा) और मसीही आध्यात्मिक और नैतिक आचरण (नीतिशास्त्र) दोनों में लोगों को सिखाने और प्रशिक्षित करने का अपना उद्देश्य बनाता हूँ। "शिक्षा" बाइबल की सच्चाई है जिस पर मुझे विश्वास करना चाहिए। "नीतिशास्त्र" बाइबल की सच्चाई है जिसे मुझे लागू करना चाहिए।

चरण 5. **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 1:18-32 में सिखाया है। (इस बाईबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5 प्रार्थना (8 मिनट) *(मध्यस्थता)*

दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6 तैयारी (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)*

अगले अध्याय के लिए

(समूह नेता। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी दें या उन्हें इसे नकल करने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, चर्च बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर " रोमियों 1:18-32" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रत्येक दिन **व्यवस्थाविवरण 4, 5, 6 और 7** के आधे अध्याय से एक शांत समय लें। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना । **(5) राज्य की विजयः दानिय्येल 2:44।**
   रोजाना पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 21:33-39, मरकुस 12:1-12 और लुका 20:9-19 में निहित **"दुष्ट मजदूरों" के दृष्टांत** को तैयार करें। दृष्टान्तों की व्याख्या के लिए छह दिशानिर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल

करें

राज्य अध्याय 5

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन पाने के लिए ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बन्धित इस पाठ को प्रभु के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **व्यवस्थाविवरण 4–7**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (व्यवस्थाविवरण4,5,6 और 7) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(5) दानिय्येल 2:44**

दो–दो करके

(5) परमेश्वर के राज्य की जीत। दानिय्येल 2:44। उन राजाओं के समय में स्वर्ग का परमेश्वर ऐसा राज्य स्थापित करेगा जो कभी नाश नहीं किया जायेगा न ही दूसरे लोगों के लिए छोड़ा जाएगा। वह उन सब राज्यों को कुचल देगा और उन्हें समापन की तरफ ले आयेगा, परन्तु वह स्वयं सदा बना रहेगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट)***(यीशु का दृष्टान्त)*** **दुष्ट किसान**

"दुष्ट किसान का दृष्टान्त" मत्ती 21:33–39

<u>परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के सन्देशवाहक</u> के बारे में है।

"दृष्टान्त" एक स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सासांरिक कहानी है। यह एक आत्मिक सच्चाई को सिखाने के लिए तैयार की गई जीवन से जुड़ी कहानी या उदाहरण है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के भेदों को उजागर करने के लिए दैनिक जीवन से जुड़ी घटनाओं और साधारण स्थानों का इस्तेमाल किया ताकि वह लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और नवीनीकरण की आवश्यकता को समझा सकें।

हम दृष्टान्त का अध्ययन करने के लिए छः दिशा निर्देशों का उपयोग करके दृष्टान्तों का अध्ययन करेंगे (मैनुएल 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें। मत्ती 21:33-46, मरकुस 12:1-12, लूका 20:9-19।

---

1. दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी को समझें।

परिचय दें। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का और कहानी की पृष्ठभूमि का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तत्व क्या हैं?
ध्यान दें।

जमींदार और उसकी जमीन। जमींदार ने एक नयी दाख की बारी लगाई। उसमें कुछ भी नहीं था उस में से लाभ की प्राप्ति की अपेक्षा करने से पहले पूरी सम्पत्ति का निर्माण करना था । उसने दाख बेल को लगाया, दाख की बारी की चारों और दीवार को बनाया, दाखरस निकालने के लिये गढ्हा खोदा और एक चौकीदारी के लिये एक मिनार का निर्माण किया। चोरों और जानवरों से बचाने के लिए दीवार बनाई गई थी। दाखरस निकालने के गढ्ढे में सामान्यतः धरती में दो छेद किये जाते हैं और दो पत्थर या तो आमने सामने होते हैं या फिर एक बड़ी चट्टान को काटकर ही गढ्हा खोदा जाता है। ऊपर का छेद चौड़ा और उथला होता है और उसमें पके अंगूरों को रखा जाता और कुचलेने वालों के पैरों से कुचला जाता है (यशायाह 63:2-3)। पके हुए अंगूरों से अंगूरों का रस निकलता है और एक पाइप के माध्यम से या नीचे की तरफ बनाये गये ढाल से निचले छेद में चला जाता था, यह छेद गहरा और सकरा होता था । बाद में मज़दूर अंगूर के रस को मटकों में भर देते थे(हाग्गै 2:16)। मटकों में ख़मीरण करने से अंगुर का रस दाखरस में बदल जाता है। ऊँची मीनार का निर्माण सम्भवतः कई पत्थरों से किया गया होगा जो पत्थर दाख की बारी को साफ करने के बाद खेत से निकले होंगे (यशायाह 5:2)। चोर, सियार और लोमड़ियों से किसी भी खतरे से आगाह करने के लिए मिनार पर एक चौकीदार तैनात किया गया था (श्रेष्ठगीत 2:15)। मिनार को भण्डारण के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता था। इस प्रकार कहानी यह स्पष्ट करती है कि यह आदमी न केवल दाख की बारी का स्वामी है बल्कि उसने उसे खुद लगाया है और इसे स्वयं अपने लिए बनाया है।

किसानों और स्वामी के बीच समझौता। स्वामी ने अपनी दाख की बारी को किसानों को पट्टे पर दिया जैसा कि दृष्टान्त स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि इन किसानों को किराये के भुगतान के रूप में स्वामी को एक निश्चित राशि देनी थी (मत्ती 21:34, मरकुस 12:2, लूका 20:10)। दाख की बारी किसानों की नहीं हुई वरन उस पर स्वामी का ही कब्ज़ा बना रहा!

दास। जब अंगूरों की कटनी का समय आया, तब स्वामी ने अपने नौकरों को भेजा कि वह फलों का अपना हिस्सा प्राप्त करे। उनको अधिकार के साथ भेजा गया था और उन्होंने अपने स्वामी के नाम पर उन्होंने माँग या उनसे अनुरोध किया।

.

यह कहानी कारणों की सीमाओं से परे चली जाती है। किसान या बटाईदार दुष्ट, बेईमान और क्रूर थे। उन्होंने समझौते पर कायम नहीं रहे। उन्होंने स्वामी के दासों को स्वामी के हिस्से के फल देने

की बजाय उनके साथ दुर्व्यवहार किया। एक दास को पीटा गया, दूसरे को देखते ही मार दिया गया और तीसरे पत्थरवाह करके मौत के घाट उतार दिया गया। स्वामी के दासों के साथ किया गया दुर्व्यवहार खुद मालिक की बेईज्जती और उसे अस्वीकार किया जाता था। सामान्य मानवीय रिश्तों में किसी ने भी यह उम्मीद की होगी कि दाख की बारी के स्वामी में इन दृष्ट किसानों को तुरन्त दण्डित किया होगा। परन्तु , उसने उन्हें अपने कर्तव्य को पूर्ण करने का एक और अवसर देने का फैसला किया। इसलिए उसने अपने और दासों को भेजा। हालांकि इन नौकरों के साथ भी वैसा की व्यवहार किया गया।

फिर कहानी एक नाट्कीय चरम सीमा पर पहुँच जाती हैः स्वामी अपने बेटे को उन दुष्ट किसानों के पास भेजता है। मरकुस 12:6 बताता है "अब एक ही रह गया था, जो उसका प्रिय पुत्र था, अन्त में उसने उसे भी उनके पास यह सोचकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।" यह स्पष्ट है कि स्वामी का एक ही पुत्र था और वह उस बेटे से बहुत प्रेम करता था। उस बेटे के अलावा उसके पास कोई और नहीं था जिसे वह भेज सके। यह किसानों के लिए स्वामी का अन्तिम वचन था। वह जानता था कि वे किसान दुष्ट और क्रूर थे, लेकिन फिर भी उसने अपने इकलौते और प्रिय बेटे को उनके पास भेजा।

बेवजह ही दुष्ट किसानों ने यह पाप किया था लेकिन उसके बावजूद भी उनके लिए स्वामी का प्यार पूरी तरह से समझ से परे था। इस तथ्य को जानने के बावजूद कि किसानों ने स्वामी के अधिकारों पर इतनी बेरहमी से हमला किया, फिर भी उसने उन्हें एक और अवसर दिया। इस तथ्य को जानने के बावजूद कि दुष्ट किसानों ने उसके दासों को मार दिया है उसने उनके पास अपने एकमात्र प्रिय बेटे को भेज दिया। यह कहानी तर्क की सीमाओं से परे जा सकती है, क्योंकि यह एक दृष्टान्त की कहानी है।

दुष्ट किसानों ने स्वामी के बेटे के साथ जो कुछ किया वह आवेग में किया गया काम नहीं था। इसके विपरीत, यह जानबूझकर किया गया काम था और यह हत्या पूर्व निर्धारित थी। उन्होंने बेटे की हत्या करने की साजिश रची कि वे दाख की बारी पर अपना कब्जा कर सकें। उनका अपने बारे में यह सोचना कितना मूर्खता से भरा था कि वे उस दाख की बारी को अपने कब्जे में ले सकते हैं। क्योंकि स्वामी अभी तक जीवित था और वह आकर उन सबको गम्भीर रूप से दण्डित कर सकता था। भजन 2:1–4 के साथ तुलना करें, जहाँ पृथ्वी पर राजाओं ने परमेश्वर और उसके अभिषिक्त के खिलाफ साजिश रची, लेकिन परमेश्वर स्वर्ग का परमेश्वर स्वर्ग से उन पर हँसता है।

2. तत्कालीन सन्दर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी" के सन्दर्भ में कहानी की "संरचना" और दृष्टान्त की "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकती है। दृष्टान्त की संरचना दृष्टान्त को बताने के उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है, या दृष्टान्त बताने के समय की *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकती है। संरचना आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी से *पहले* पाई जाती है और व्याख्या या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी के बाद पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। कहानी और इस दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग की संरचना क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त की संरचना मत्ती 21:1–32 में निहित है।

यह "पवित्र सप्ताह" ("Week of the Passion") का एक हिस्सा है, जो कि यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाए जाने से पूर्व अन्तिम सप्ताह था।

मन्दिर की सफाई (मत्ती 21:12–17)। यह रविवार को यरूशलेम में यीशु के विजयी प्रवेश के साथ लोगों की बड़ी भीड़ की उपस्थिति में शुरू हुआ, जिसमें लोगों ने चिल्लाकर कहा कि वह मसीह था (मत्ती 21:1–11)। तब यीशु ने दूसरी बार मन्दिर को साफ किया (तुलनाः यूहन्ना 2:13–16 में मन्दिर की पहली सफाई की गई)। उसने उन सभी लोगों को मन्दिर से बाहर भगा दिया जिन्होंने मन्दिर को बाज़ार बना रखा था और पैसे की लेन–देन करने वालों और सर्राफों की मेजों को पलट दिया। महायाजक, व्यवस्था के शिक्षक और यहूदियों के बीच राजनेता नाराज़ थे और यीशु को मारने के लिए रास्ता तलाशने लगे। तौभी उन्हें ऐसा करने का कोई तरीका नहीं मिला, क्योंकि सभी लोग उसके उपदेशों से चकित थे (मरकुस 11:18, लूका 19:47–48)। उसने उन सभी अन्धों और लंगड़ों को ठीक किया जो मन्दिर के परिसर में उसके पास आये। मन्दिर परिसर में उपस्थित बच्चे चिल्लाने लगे कि यीशु "दाऊद का पुत्र " अर्थात् "मसीह", लेकिन महायाजक और व्यवस्था के शिक्षक क्रोधिक थे और उन्होंने यीशु को डाँटा कि वह स्वयं मसीह होने से इंकार नहीं कर रहा है!

अंजीर के पेड़ को शाप देना (मत्ती 21:18–20)। सोमवार को, यीशु भूखा था और वह एक अंजीर के पेड़ की तरफ फल की तलाश में गया था जो थोड़ी दूरी पर ही था। उसे पत्तियों के अलावा इस पर कुछ भी नहीं मिला, कोई फल नहीं मिलने के कारण, उसने उसे शाप दिया। जब वे मंगलवार को उसी पेड़ के सामने से गुजरे, तो पेड़ अपनी जड़ों से पूरी तरह से ऊपर की ओर सूख चुका था (मरकुस 11:20)! यीशु पेड़ पर क्रोधित नहीं थे। इस घटना का गहरा अर्थ है। दुष्ट किसानों का दृष्टान्त इस प्रश्न का उत्तर देता है।

दो पुत्रों का दृष्टान्त (मत्ती 21:28–32)। उस दिन यीशु ने फिर से मन्दिर के आंगन में लोगों को सिखाया और सुसमाचार का प्रचार किया (लूका 20:1)। महायाजक और व्यवस्था के शिक्षक, यहूदी प्राचीनों के साथ यह सवाल उठाने लगे कि उसे मन्दिर में आकर राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने और सिखाने का अधिकार किसने दिया है। क्योंकि उन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के अधिकार को मानने से इंकार कर दिया, उसने भी उन्हें यह बताने से मना कर दिया कि वह किस अधिकार से प्रचार करता है। तब उसने उन्हें दो बेटों के दृष्टान्त को बताया, जो इस्राएल के राजनेताओं द्वारा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के अधिकार को न मानने पर बल देते हैं।

इस्राएल के नेताओं और उनके अनुयायियों का विरोध। इसलिए यह स्पष्ट है कि दुष्ट किसानों के दृष्टान्त की संरचना यीशु मसीह के प्रति महायाजक, व्यवस्था के शिक्षक और यीशु मसीह के खिलाफ यहूदी प्राचीनों का विरोध था। इस्राएल देश में यीशु मसीह को लेकर आपसी मतभेद स्पष्ट था। इस्राएल के आम लोगों में से कई उसकी शिक्षाओं पर आश्चर्यचकित थे। लेकिन इस्राएल के लोगों और उनके नेताओं ने यीशु मसीह को मसीह के रूप में अस्वीकार कर दिया। उन्होंने उसके द्वारा किये गये आश्चर्यकर्मों को शैतान के कार्यों की उपमा दी, और उन्होंने उसे प्रचारक और सुसमाचार के शिक्षक के रूप में अस्विकृत कर दिया। असल बात तो यह है कि वे पहले ही उसे मारने की साजिश रच चुके थे (यूहन्ना 11:53)।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 21:33-41 में निहित है।
दो बातों पर विशेष रूप से ध्यान देने की ज़रूरत हैः

"दाख की बारी से बाहर निकाले जाने" का अर्थ। जबकि मत्ती और लूका का कहना है कि स्वामी के बेटे को पहले दाख की बारी से बाहर फेंका गया और फिर मार दिया गया, मरकुस का कहना है कि पहले उसे मारा गया और फिर उसे दाख की बारी से बाहर फेंका गया। इन दोनों में कोई खास अंतर नहीं है। मत्ती और लूका ऐतिहासिक अनुक्रम पर ज़ोर देते हैं, कि यीशु को यरूशलेम के द्वार के बाहर ले जाया गया और फिर क्रूस पर चढ़ाया गया (इब्रानियों 13:12)। और मरकुस ने इस तथ्य पर ज़ोर दिया कि जिन्होंने *उसे सबसे अधिक शर्मनाक तरीके से मार डाला,* अर्थात एक शापित व्यक्ति के रूप में उन्होंने उसे दाख की बारी से बाहर निकाला। तीनों प्रचारक इस अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं ("दाख की बारी से बाहर फेंक देना") जो इस्राएल (प्राकृतिक) राष्ट्र द्वारा यीशु मसीह की अस्वीकृति का प्रतीक है।

सुनने वालों की आरम्भिक प्रतिक्रिया। यहूदियों के बीच, शिक्षक अकसर सुननेवालों के ध्यान को आक्रषित करने के लिए से प्रश्न पूछते हैं ताकि जिस विषय पर चर्चा की जा रही है उसमें उनकी रूची बढ़ती जाए। जब यीशु अपनी कहानी बता चुके थे कि कैसे दुष्ट किसानों ने दाख की बारी के स्वामी के इकलौते और प्रिय पुत्र को मार डाला, उसने अपने सुननेवालों से प्रश्न पूछा, जिससे उन्हें एक आरम्भिक प्रतिक्रिया मिली। उसने पूछा "इसलिए, तब दाख की बारी का स्वामी आयेगा, वह उन किसानों के साथ क्या करेगा?" उसके सुननेवालों ने, जिनमें कई महायाजक, व्यवस्थापक और यहूदी प्राचीन शामिल थे उन्हें उत्तर दिया, "वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नष्ट करेगा, और वह दाख की बारी का ठेका दूसरे किसानों को दे देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेगें।" इस उत्तर के साथ प्रभु यीशु मसीह के दुश्मनों ने खुद को दोषी ठहराया! इस तरह से प्रभु यीशु ने सही उत्तर देने वाले लोगों पर दोष लगाया।

इसकी तुलना 2शमूएल 12:1-12 में नातान द्वारा राजा दाऊद के व्यभिचार के पाप का सामना करने से करेंः पहले नातान का दृष्टान्त (पद 1 से 4), फिर दाऊद ने आक्रोश से भरी आरम्भिक प्रतिक्रिया दी (पद 5-6) और अंत में नातान का स्पष्टीकरण और अनुप्रयोग जो राजा दाऊद पर आया "तू ही वह व्यक्ति है " (पद 7-12) जब नातान बोल रहा था, दाऊद इस बात से अनजान था कि नातान गुप्त रीति से उसी के बारे में बोल रहा है। इसी तरह, इस्राएल के अगुवे और उनके अनुयायी इस बात से अनजान थे कि यीशु मसीहयह दृष्टान्त उनके बारे में बोल रहे थे।

(3) दृष्टान्त की व्याख्यां या अनुप्रयोग मत्ती 21:42-44 में निहित है।
यीशु उन लोगों की निंदा करता है जिन्होंने सिर्फ यह कहकर सही उत्तर दिया है कि "क्या तुमने कभी पवित्रशास्त्र में नहीं पढ़ा (भजन. 118:22-23): 'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया; यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारी दृष्टि में अद्भुत है।' इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जायेगा जो और जो ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।" लूका रचित सुसमाचार जोड़ता है "जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा; और जिस पर वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा" (लूका 20:18, दानिय्येल 2:44-45)।

यह "पत्थर" पुराने और नये नियम में अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग सन्दर्भ में देखा गया है।

पुराने नियम में पत्थर। भजन संहिता 118:22-23 यहाँ पत्थर इस्राएल के सन्दर्भ में आया है। इस्राएल के आसपास के राष्ट्रों के अगुवों और प्रमुख लोगों ने इसका तिरस्कार और इसे अस्विकार कर दिया। फिर भी इस्राएल इस मायने में राष्ट्रों में प्रमुख बन गया क्योंकि यहोवा ने याकूब के साथ अपनी वाचा बांधी और इस्राएल को उसकी व्यवस्था दी उन्होंने किसी और राष्ट्र के लिए ऐसा नहीं किया था। दूसरे राष्ट्र परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं जानते थे (भजन संहिता 147:19-20)।

नये नियम में पत्थर। यीशु अब दिखाते हैं कि भजन संहिता 118:22-23 की भविष्यद्वाणी स्वामी के पुत्र में अपनी पूर्णता तक कैसे पहुंचती है। यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र और सच्चा इस्राएली है। (यशायाह 41:8-14 और 43:1-7 की तुलना यशायाह 42:1-7 और 49:17 के साथ करें)! इस्राएल राष्ट्र का प्राकृतिक महत्व केवल यीशु मसीह में और उसके माध्यम से ही है (तुलना करें यूहन्ना 4:22; प्रेरितों. 13:23; प्रकाशितवाक्य 12:1,2,5)। जो कोई भी यीशु मसीह का तिरस्कार करता है, वह सच्चा इस्राएली नहीं और जो यीशु मसीह को स्वीकार करता है, वह सच्चा इस्राएली है(अर्थात् परमेश्वर के सच्चे लोगों में से है)! यीशु मसीह स्वयं "पत्थर" हैं जिसे महायाजाकों, व्यवस्था के शिक्षकों और इस्राएल के प्राचीनों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था। कुछ दिनों के बाद, वे यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए इस्राएल की भीड़ का नेतृत्व करते हैं। यूहन्ना 1:11 सचमुच उसकी पूर्णता को प्रगट करता है, "वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया!"

"तिरस्कृत पत्थर" "कोने के सिरे का पत्थर" बन गया। क्रूस पर चढ़ाया गया यीशु पुनः जीवित होकर सम्पूर्ण जगत में और संसार के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बन जाएंगे!

और इस्राएल के पुराने राष्ट्र का क्या होगा, इस्राएल के अविश्वासियों का क्या होगा जिन्होंने मसीह का तिरस्कार किया? यीशु ने कहा कि परमेश्वर के राज्य को इस्राएल से ले लिया जाएगा और उन लोगों को दे दिया जाएगा जो इसके योग्य फल लाएँगे। यहाँ "परमेश्वर का राज्य" का अर्थ विशेषाधिकार पाये हुए लोगों से और "परमेश्वर के लोगों" का खिताब पाये हुए लोगों से है, जिन्होंने इस्राएल में पुराने नियम के समय के दौरान आनन्द लिया था (रोमियों 9:4-5, इफिसियों 2:11-12)। इसका अर्थ धन्य वचन और उद्धार का वह कार्य भी है, जो यीशु मसीह ने मसीह के रूप में पूर्ण किया था और नये नियम के समय के शुरूआत में इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र को दिया था। परमेश्वर का स्वाभाविक राज्य इस्राएल से दूर कर दिया जायेगा, क्योंकि इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र ने अपने दायित्वों के अनुरुप जीवन व्यतीत नहीं किया। अब से, परमेश्वर का राज्य इस्राएल के भौगोलिक सीमाओं तक ही सीमित नहीं, बल्कि संसार के अन्य सभी राष्ट्रों के लोगों को शामिल करने के लिए राज्य का विस्तार होगा।

पुराने नियम का प्राकृतिक इस्राएल राष्ट्र, उनके आत्मिक अगुवों के द्वारा उन दुष्ट किसानों की तरह प्रस्तुत किया गया (तुलना रोमियों 5:12)। परमेश्वर के राज्य और उसके विशेषाधिकारों सहित संसार की हर वस्तु का स्वामी परमेश्वर पिता है। उसने अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को संसार में, इस्राएल में अपने लोगों के पास भेजा, और उन्होंने उसे वह देने से इनकार कर दिया जो उसका हक था। "दाख की बारी" उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें परमेश्वर विशेषाधिकार और "परमेश्वर के लोगों" के रूप में दर्जा देते हैं। इसलिए परमेश्वर पिता उन लोगों को राज्य देगें जो "परमेश्वर के दान को स्वीकार करेंगे"(रोमियों 5:17) और जो परमेश्वर के राज्य के योग्य फल लायेगें (मत्तर 22:43)। अर्थात्, वह अपने सभी विशेषाधिकारों, लाभ और अवसरों को अपने लोगों

को देगा,जिसमें संसार के हर राष्ट्र के सभी मसीही विश्वासी लोग शामिल होगें। इस्राएल के पुराने नियम के स्थान पर "परमेश्वर के लोगों" रूप में, मसीह की कलीसिया में "परमेश्वर के नए लोगों" का उदय होगा जिनमें ऐसे लोग शामिल होंगे जो यहूदियों और गैर-यहूदियों (अन्यजातियों) के बीच से यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे (1पतरस 2:4-10)। इस दृष्टान्त के अनुप्रयोग में (मत्ती 21:43) यीशु मसीह ने *दूसरे व्यक्ति के लिये बहुवचन* का उपयोग किया और अपने उस समय के दर्शकों (सुनने वाले लोगों) पर अपने अनुप्रयोग का निर्देशन किया!

यीशु द्वारा दृष्टान्त के अनुप्रयोग के तुरन्त बाद, उनके सुननेवालों की दूसरी प्रतिक्रिया भी आ गयी (21:45-46)। मुख्य याजक, व्यवस्थापक और इस्राएल के प्राचीनों(मत्ती 21:15,23,45) को अब एहसास हो गया था कि यीशु उनके बारे में बोल रहे थे। वे अच्छी तरह से जानते थे कि उन्होंने और उसके अनुयायियों ने यीशु मसीह को अस्वीकार किया है। हालांकि वे यीशु को बन्धी बनाने और उसे नष्ट करने के लिए गिरफ्तार करना चाहते थे, लेकिन उन्हें डर था क्योंकि लोगों का मानना था कि वह एक भविष्यद्वक्ता है। कुछ दिनों पहले, आम लोगों की भीड़ ने उनका दाऊद के पुत्र (मसीह) के रूप में यरूशलेम में स्वागत किया था और बच्चों ने मन्दिर में दाऊद के पुत्र के रूप में उनकी स्तुति की थी।

अभी तक भी लोगों ने यीशु को वह सम्मान नहीं दिया था जिसके लिए वह वास्तव में आया थाः अर्थात मसीह जो पाप के लिये प्रायश्चित के बलिदान के रूप में अपना जीवन देने आए थे (यशायाह 53)। भीड़ ने उन्हें "भविष्यद्वक्ता" या "राजा" के रूप में माना (यशायाह 9:6), अर्थात राजनीतिक मसीह के रूप में जो रोमी साम्राज्य के जूए से इस्राएल को मुक्त करेगा (लूका 23:2, यूहन्ना 6:14-15, 18:36-37, 19:12 तुलना प्रेरितों के काम 1:6)।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय दें। यीशु ने दृष्टान्त की कहानी में हर विवरण को कुछ न कुछ आध्यात्मिक अर्थ नहीं दिया। प्रासंगिक विवरण दृष्टान्त की कहानी में वे विवरण हैं जो दृष्टान्त के केन्द्रिय बिन्दु या मुख्य विषय या दृष्टान्त के अध्याय को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टान्त की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिये अपने दिमाग से कोई आध्यात्मिक अर्थ नहीं निकालना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन-सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

दाख की बारी। दाख की बारी की तस्वीर हमें उस समय के इस्राएल देश की याद दिलाती है। दृष्टान्त स्पष्ट रूप से भजन संहिता 80 और यशायाह 5 पर आधारित है।

भजन संहिता 80:8-16 में वर्णन किया गया है कि जिस प्रकार परमेश्वर मिस्र से दाख को बाहर लाते हैं ठीक उसी प्रकार वह अपने लोगों को निर्गमन करते हैं और परमेश्वर रहित राष्ट्रों को फिलिस्तीन से बाहर निकालने के बाद वह वहाँ दाख की बेल लगाते हैं। वह बेल बड़ी होकर भूमध्य सागर से होकर फरात नदी तक फैल गई। बेल स्पष्ट रूप से इस्राएल के राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है, विशेष रूप से राजा दाऊद और राजा सुलैमान के समय के दौरान (1000 ई0 पू0)(1राजा

4:20-21)।

यशायाह 5:1-7 में "दाख की बारी" के रोपण का वर्णन किया गया है। इसके चारों और एक दिवार बनाई गई है, और चौकीदारी के लिए गुम्मट बनाए गये और इसके अन्दर दाखरस निकालने के लिए कोल्हू बनाए। परमेश्वर ने इस दाख की बारी से अच्छे फल की उम्मीद की थी। लेकिन क्योंकि इस्राएल राष्ट्र केवल खराब फल ही देता था, परमेश्वर ने भविष्यद्वाणी की कि वह इस को तोड़ देगा, दाख की बारी को रौंदने देगा और उसे बंजर भूमि बना देगा। "दाख की बारी" स्पष्ट रूप से इस्राएल के राष्ट्र का प्रस्तुतिकरण करती है विशेष रूप से यशायाह भविष्यद्वक्ता (700 ई0 पू0) के समय दौरान। इस प्रकार, बाद में, जब इस्राएल परमेश्वर से दूर हो गया, तो परमेश्वर ने दीवार को तोड़ने की अनुमति दी, अगूंर को चोरी करने दिया, और बेल को काट दिया गया और आग से जला दिया गया। यह काल इस्राएल के असीरिया में बंधुआई में जाने से *आरम्भ* हो गया था (722/721 ई0 पू0) और बेबीलोन (587/586 ई0 पू0) और मसीह के आगमन में *पूरा* हुआ। इस्राएल की ऐसी ही तस्वीर बेल के रूप में यशायाह 27:2-3, यिर्मयाह 2:21, यहेजकेल 15:1-6, 19:10-14, होशे 10:1-2।

दाख की बेल की तस्वीर यीशु मसीह में अपनी अंतिम पूर्णता तक पहुंचती है। यूहन्ना 15:1-6 में वह कहता है "मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उसे बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं"(11:20-23 भी देखें)। यीशु मसीह स्वयं ही सच्ची दाखलता है! यीशु मसीह के द्वारा और उसके माध्यम से केवल इस्राएल के राष्ट्र में महत्व है। जो कोई भी यीशु मसीह को अस्वीकार करता है वह अब सच्चा इस्राएली नहीं है (होशे 1:9) और जो कोई भी यीशु मसीह को स्वीकार करता है वह सच्चा इस्राएली है (देखें. गलातियों 6:12-16)!

परमेश्वर ने *न तो* इस्राएल के भौतिक राष्ट्र को *समाप्त* किया और *न हीं* उसने कलीसिया के साथ (इस्राएल के भीतर सच्चे विश्वासी) उसका *स्थानापन्न* किया, बल्कि पुराने नियम के इस्राएली लोगों (इस्राएल के भौतिक राष्ट्र के भीतर विश्वासियों) को एक उच्च योजना में लगातार वही स्थान दिया (जिसमें भविष्यद्वाणियाँ) पूरी हुई और छाया वास्तविकता बन गई)(लूका 4:21)(और छाया वास्तविकता बन गई)(कुलुस्सियों 2:17) और संसार में सभी देशों के विश्वासियों को शामिल करने के लिए इस राज्य को बढ़ाया! जबकि इस्राएल का भौतिक या राष्ट्रीय(जातियाँ) राष्ट्र एक राष्ट्र के रूप में बना रहेगा, लेकिन इस्राएल राष्ट्र को अब परमेश्वर की निज प्रजा के रूप में अब नहीं देखा जाएगा। रोमियों 9:6 कहता है "परन्तु यह नहीं कि परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिये कि जो इस्राएल के वंश हैं (अर्थात इस्राएल में पैदा हुए सभी लोग) वे सब इस्राएली (परमेश्वर के चुने हुए और उस पर विश्वास करने वाले लोगे) नहीं।"

फिर भी, दुष्ट किसानों के दृष्टान्त में दाख की बारी इस्राएल के भौतिक या भौगौलिक राष्ट्र का उल्लेख नहीं करती है। "दाख की बारी" परमेश्वर के चुने हुए लोगों की स्थिति के विशेषाधिकार का उल्लेख करती है। यह परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विशेष विशेषाधिकार लाभ, अवसर और स्थिति का उल्लेखित करती है। जिसे पुराने नियम के समय के दौरान इस्राएल राष्ट्र को दिया गया था। यह चीजें इस्राएल के राष्ट्र को एक चुने हुए बीज़ के रूप (उत्पत्ति 12:3) और उनको उसके गुणों के साथ

परमेश्वर की वाचा के आधार पर दिया गया था(उत्पत्ति 22:17-18)।

विशेष रूप से (मत्ती 21:43) में दी गयी व्याख्या या अनुप्रयोग, यीशु स्पष्ट करते हैं कि वह परमेश्वर की पुरानी वाचा के लोगों(इस्राएल) के बारे में नहीं, परन्तु "परमेश्वर के राज्य" के बारे में बात कर रहे थे। यीशु ने यह नहीं कहा कि वह "दाख की बारी" (इस्राएल का राष्ट्र) दूसरे लोगों को दे देगें, परन्तु उन्होंने कहा कि वह "दाख की बारी" (सभी विशेषाधिकारों के साथ परमेश्वर का राज्य) को इस्राएल से लेकर दूसरे लोगों के दे देगें। वह कहते हैं कि वह उस विशेष विशेषाधिकारों लाभ, अवसरों और परमेश्वर के चुने हुए लोग कहलाने के अधिकार को इस्राएल के भौतिक और भौगोलिक राष्ट्र से वापस ले लेगें और अन्य लोगों को दे देगें (कलीसिया में यहूदी मसीही और गैर-यहूदी मसीही) जो परमेश्वर के राज्य में फल लाएगें। इस प्रकार, "दाख की बारी" दृष्टान्त में एक आवश्यक या प्रासंगिक विवरण है।

दाख की बारी का स्वामी। सम्पूर्णः दृष्टान्त में, यह बात ता स्पष्ट है कि "दाख की बारी" (परमेश्वर के राज्य के विशेष विशेषाधिकार) कभी भी इस्राएल की भौतिक सम्पत्ति नहीं थी, वरन वह हमेशा अपने स्वामी की थी, जो स्वयं परमेश्वर को प्रतिनिधित्व करती है! परमेश्वर के राज्य के विशेषाधिकार इस्राएल के लोगों का संचालन करने के लिए एक समय की अवधि (पुराने नियम की अवधि) के लिए *सौंपे गये* थे। परन्तु अब, संसार में अपने पहले आगमन पर, यीशु मसीह इन विशेषाधिकारों को इस्राएल के भौतिक राष्ट्र से वापस ले लेकर इसे परमेश्वर के नए नियम के लोगों को देने पर था। (इसमें सभी मसीही शामिल हैं, चाहे वे मूल रूप से यहूदी हो या गैर यहूदी हों) (गलातियों 3:26-29; इफिसियों 3:4-6)। इसलिये, "दाख की बारी के स्वामी" दृष्टान्त में एक आवश्यक या प्रासंगिक विवरण है।

दुष्ट किसान। दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग में यीशु बिल्कुल स्पष्ट करते हैं कि "परमेश्वर के राज्य का विशेषाधिकार" भौतिक यहूदियों के राष्ट्र से वापिस ले लिया गया है जो उनके अगुवों (महायाजक, व्यवस्था के शिक्षक और इस्राएल के प्राचीनों) को दर्शाता है। "दुष्ट किसानों" में वे सभी यहूदियों के साथ धार्मिक अगुवे, व्यवस्थापक और इस्राएल के प्राचीन तथा उनका अनुकरण करने वाले वहां के सारे लोग (जो कि इस्राएल राष्ट्र में रहने वाले सभी अविश्वासी हैं) आते हैं। इस तरह से दुष्ट किसान इस्राएल के सम्पूर्ण भौतिक (आध्यात्मिक नहीं) राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है। प्रचारक मत्ती मरकुस और लूका भी स्पष्ट रूप से कहते हैं कि ये लोग जानते थे कि यीशु मसीह उनके बारे में बात कर रहे थे। इस प्रकार, "दुष्ट किसान" दृष्टान्त में एक आवश्यक प्रासंगिक विवरण है।

अन्य किसान, जो फसल के समय में मालिक का हिस्सा उसे देगें। यीशु के अनुसार "अन्य किसानों" के विषय में उसकी व्याख्या और अनुप्रयोग उन अन्य राष्ट्रों का उल्लेख करती है जो राज्य के लिये फल लाएंगे (मत्ती 21:43)। राज्य (विशेष विशेषाधिकार और परमेश्वर के चुने हुए लोगों की स्थिति) इस्राएल के भौतिक राष्ट्र के हाथों से छीनकर दूसरे लोगों को अर्थात एक आत्मिक जाति को दे दिया जाएगा। यीशु मसीह ने इस्राएल में रहने वाले अपने चेलों और अन्य विश्वासियों (उनके छोटे झुण्ड) राज्य दे कर ऐसा करना शुरू किया (लूका 12:32)। यीशु मसीह के पहले आगमन के बाद से ही संसार के सभी राष्ट्रों के मसीही मिलकर परमेश्वर के आत्मिक रूप से चुने हुए लोगों का गठन करते हैं। पुराने नियम में परमेश्वर ने जो इस्राएल देश के बारे में क्या कहा था (निर्गमन 19:6), वह अब नये नियम के समय के दौरान मसीहियों को कहता है (1पतरस 2:-10)। "पर तुम एक चुना हुआ

वंश और राज–पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा... तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो।"

अभी तक इन मसीहियों का अधिकांश भाग अन्यजाति राष्ट्र से ही आया था। मसीह के पहले आगमन से लेकर दूसरे आगमन तक परमेश्वर के राष्ट्र या परमेश्वर के लोग संसार के हर राष्ट्र से आये मसीही लोगों से मिलकर बने हैं। (प्रेरितों. 15:14–18; रोमियों 9:25; 2कुरिन्थियों 6:16; गलातियों 3:26–29; इफिसियों 2:11–22; 3:4–6; कुलुस्सियों 3:11; 1पतरस 2:4–10; तीतुस 2:14; प्रकाशितवाक्य 21:3)। इस्राएल में पैदा हुए प्राकृतिक बच्चे नहीं, बल्कि केवल नया जन्म पाये हुए मसीही जो परमेश्वर के राज्य का फल पैदा करते हैं, वे ही मिलकर परमेश्वर का राष्ट्र या परमेश्वर के लोग कहलाते हैं। (रोमियों 9:6–16,24–29; मत्ती 3:7–10; प्रेरितों. 26:17–20)। इस प्रकार, "अन्य किसानों" दृष्टान्त में एक आवश्यक और प्रासंगित विवरण दिया गया है।

दास। दृष्टान्त इस बात की व्याख्या नहीं करता की कि ये दास कौन थे, परन्तु यीशु स्पष्ट रूप से पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के बारे में ज़िक्र कर रहे थे। एलिय्याह भविष्यद्वक्ता को ईजेबेल से अपने जीवन को बचाने के लिये भागना पड़ा (1राजाओं 19:1–3)। मीका भविष्यद्वक्ता को जेल में डाल दिया गया और उसे केवल रोटी और पीने को पानी दिया जाता था (1राजाओं 22:27)। कलीसिया के फादर जस्टिन शहीद ने अपनी पुस्तक "ट्रायफो से बातचीत" में यहूदियों पर आरोप लगाया की उन्होंने यशायाह को आरी से दो भागों में चीर दिया (इब्रानियों 11:37)। यहूदियों ने बार–बार भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के साथ बुरा व्यवहार किया।

यहूदियों ने उसे मारने की साजिश रची (यिर्मयाह 11)। उनके अपने परिवार ने उसे धोखा दिया (यिर्मयाह 12)। यहूदियों ने उनकी कही गई बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया (यिर्मयाह 18)। उन्होंने उसे पीटा और शहर के फाटक के पास काठ में जकड़ दिया (यिर्मयाह 20)। सभी झूठे याजक और दुष्ट अधिकारी और राजा उसे मौत की सजा देना चाहते थे, क्योंकि वह सच बोलता था (यिर्मयाह 26)। उन्होंने उसे बन्धी बनाया और पीटा और एक कालकोठरी में कैद कर दिया, जहाँ वह लम्बे समय तक रहा (यिर्मयाह 37)। उन्होंने उसे मिट्टी से भरे एक कुण्ड में फेंक दिया (यिर्मयाह 38)। आरम्भिक मसीही परंपरा कहती है कि भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को उन यहूदियों द्वारा मौत के घाट उतार दिया गया था, जिन्होंने उसे अपने साथ मिस्र जाने के लिये मजबूर किया था (यिर्मयाह 43)। यहेजकेल भविष्यद्वक्ता ने काँटों की चुभन और बिच्छु के डंक के रूप में यहूदियों के उत्पीड़न का अनुभव किया (यहेजकेल 2:6)। उसे पता चला कि पुराने नियम में परमेश्वर की वाचा के लोगों ने उसकी बातें तो सुनी लेकिन उन बातों की अमल नहीं लिया (यहेजकेल 20:43, 33:31–32)। आमोस भविष्यद्वक्ता को कहा गया था कि वह अपनी भविष्यद्वाणियों को कहीं और जाकर करे (आमोस 7:10–15)।

यीशु उस व्यवहार का सार बताते हैं जो इस्राएलियों ने प्रभु के दासों के साथ किया था। मत्ती 5:11-12 में वह कहता है "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएँ और झूट बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें.... उसी प्रकार उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था।" लूका 6:22-23 में वह कहते हैं "धन्य हो तुम जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से बैर करेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निन्दा करेंगे, और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे।... उनके बाप-दादे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी वैसा ही किया करते थे।" और मत्ती 23:29-32,37 में कहता है, "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! कि यदि हम अपने बापदादों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उनके साझी न होते..... हे यरूशलेम तू जो भविष्यद्वक्ताओं को पत्थराव करते, जो तेरे पास भेजे गए" (लूका 11:47-51, 13:33-35; यूहन्ना 12:36-43 भी देखें) इस प्रकार, स्वामी के "सेवक" दृष्टान्त में एक आवश्यक या प्रासंगिक विवरण है।

इकलौता बेटा और वारिस। दृष्टान्त की व्याख्या और अनुप्रयोग में, यीशु ने यह स्पष्ट किया कि "स्वामी का इकलौता और प्यारा बेटा" खुद यीशु मसीह का प्रतीनिधित्व करता है। वह पत्थर है, जिसे इस्राएल के बनाने वाले ने अस्वीकार कर दिया और जो सबसे महत्वपूर्ण कोने के सिरे का पत्थर बन गया, कोने के सिरे के संदर्भ में भजन संहिता 118:22-23, यशायाह 28:16, मत्ती 21:42, प्रेरितों. 4:11, रोमियों 9:33, इफिसियों 2:20 और 1पतरस 2:6 में लिखा गया है। एक इमारत के कोने के सिरे का पत्थर नींव का एक हिस्सा होता है और इस तरह श्रेष्ठ ढाँचें की संरचना करने में सहायता करता है। लेकिन यह नींव के पत्थर से बढ़कर होता हैः जो की पूरी इमारत को निर्णायक रूप प्रदान करता है। दो दीवारों को एक स्थान पर जोड़ने के कारण यह इमारक को मजबूती प्रदान करता है। बाकि के सारे पत्थरों को इस कोने के सिरे के पत्थर के साथ सामंजस्य बनाना पड़ता है।

कलीसिया के साथ यीशु मसीह का सम्बन्ध एक कोने के सिरे के पत्थर के समान है। उसके महिमामय पुनरुत्थान स्वर्गारोहण और सिंहासन से वह अत्यधिक ऊंचा हो गया है। स्वर्ग से और पवित्र आत्मा के द्वारा, वह विश्वासियों के ह्रदयों में वास करता है, और कलीसिया के हित में पूरे संसार में उनके जीवनों को निर्देशित करता है (तुलना करें इफिसियों 1:22)। लूका 20:18 आगे कहता है कि "जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस पर वह गिरेगा, उसे वह पीस डालेगा" जो लोग अभी यीशु मसीह और उसके वचनों से ठोकर खाते हैं, वे नाश हो जाएंगे और न्याय के दिन उन्हें पूरी तरह से कुचल दिया जाएगा। लूका 2:34 में लिखा है कि, " यह बालक बहुत से लोगों के उठने और बहुत से लोगों के ठोकर खाने के कारण के रूप में ठहराया गया है।" यीशु मसीह को अस्वीकार करने वाले सभी लोग (यहूदियों सहित) हमेशा के लिये नाश हो जाएंगे और सभी लोग (यहूदियों सहित) जो यीशु पर विश्वास करते हैं, अनन्तकाल के लिये बच जाएंगे। यह स्पष्ट है कि "एकमात्र पुत्र" का दृष्टान्त आवश्यक और प्रासंगिक विवरण है।

---

*Notes.***4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहचानें।**

परिचय दें। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश (केन्द्रीय सन्देश या विषय) या तो व्याख्या या अनुप्रयोग में या कहानी में ही मिल जाता है। जिस प्रकार से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टान्त को समझाया या उसे लागू किया, उससे हममें पता चलता है कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। *एक दृष्टान्त सामान्य तौर पर केवल एक मुख्य विषय एक महत्वपूर्ण सन्देश एक केन्द्रिय बिन्दु बनाने के लिये*

होता है। इसलिये, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, इसके बजाय हमें एक मुख्य विषय की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?
ध्यान दें।

मत्ती 21:33-39 में दुष्ट किसानों का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य के सन्देश वाहकों" और इस्राएल के भौतिक राष्ट्र की प्रतिक्रिया के बारे में है।
दृष्टान्त का मुख्य सन्देश निम्नलिखित है, "उसके प्रिय पुत्र यीशु मसीह में व्यक्त किये गए परमेश्वर के अगम्य प्रेम के प्रति इस्राएल के भौतिक राष्ट्र के सबसे अनुचित पाप के बावजूद, यीशु मसीह अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करेगा और भजन. 118:22-22 के अनुसार की गई भविष्यद्वाणी के अनुरूप अपना राज्य स्थापित करेगा।" सबसे बड़े विरोध और परमेश्वर के सन्देश वाहकों को अस्वीकृति देने के बावजूद, संसार पर अपना राज्य स्थापित करने का परमेश्वर का उद्देश्य असफल नहीं हो सकता है।

परमेश्वर के सन्देशवाहक का प्रतिउत्तर देना परमेश्वर के राज्य की बुनियादी विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग उत्तरदायी और सिखाने योग्य होते हैं। वे नये नियम के समय के प्रचारकों और शिक्षकों को परमेश्वर के दूतों को स्वीकार करते हैं; जो बाइबल का सही अनुवाद करते और जो बाइबल का सन्देश उन तक विश्वासयोग्यता के साथ पहुंचाते हैं, इन सबसे ऊपर वे यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और राजा के रूप में अपने ह्रदयों ओर जीवनों में स्वीकार करते हैं।

"दुष्ट किसान" जिन्होंने स्वामी को दाख की पैदावार का हिस्सा देने से इंकार कर दिया, उसके दासों के साथ दुर्व्यवहार किया और उसके इकलौते प्रिय पुत्र को मार डाला, वे इस्राएल के भौतिक राष्ट्र का उनके अविश्वासी अगुवों और उनके अनुयायियों प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके द्वारा मसीह को स्वीकार न करने का परिणाम उनके स्वयं का भयानक विनाश हुआ अर्थात इस्राएल के भौतिक राष्ट्र का विनाश जिन्हें संसार में परमेश्वर के लोगों के रूप में हुए देखा जाता है। परमेश्वर ने <u>"दाख की बारी" (अर्थात संसार में परमेश्वर के लोग होने का विशेषाधिकार)</u> उनके हाथ में सौंप दिया था लेकिन उन्होंने परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं के साथ दुर्व्यवहार किया और उन्हें मार डाला और अंत में उन्होंने मसीह अर्थात यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ा दिया। इसलिए परमेश्वर ने अन्य लोगों को "दाख की बारी" दे दी, जो इसके योग्य फल लाते हैं। "अन्य लोगों" में सभी यहूदियों को *बाहर* नहीं किया गया है, ठीक जैसे कि इसमें सभी अन्यजातियों को भी *शामिल* नहीं किया गया है। उसी प्रकार इसमें इस्राएल के भी मसीही शामिल हैं।

दो बातों का ध्यान रखना होगाः

प्रथम। परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र से सम्बन्धित सभी यहूदियों के प्रति अपने मन को कठोर या अस्वीकार नहीं किया। रोमियों 9 से 11 अध्याय के अनुसार परमेश्वर ने स्वयं को "एक छुटकारे के लिये आरक्षित किया है। वे सुसमाचार सुनते हैं और वे बचाए जाएंगे (रोमियों 10:17-18; 9-27)। सभी यहूदी जो अपने अविश्वास में कायम नहीं बने रहेंगे, वे निश्चित रूप से "जैतुन के पेड़" के हिस्सा जरूर बनेंगे, जो "परमेश्वर के लोगों" का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच सभी विश्वासी शामिल होंगे(रोमियों 11:23)।

द्वितीय। यदि परमेश्वर के अविश्वासी यहूदियों को अस्विकार करेगें तो निश्चित रूप से वह अविश्वासी अन्यजातियों को भी अस्विकार करेगें। इसलिये कोई भी गैर यहूदी, यहूदियों के खिलाफ घमण्ड न करें, और न ही यहूदियों को सताएं, बल्कि उन्हें यहूदियों के परिवर्तन के लिये प्रार्थना करनी चाहिए और उन्हें सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए। केवल परमेश्वर को यहूदियों और अन्यजातियों का न्याय करने और बचाने का अधिकार है! पुराने और नये नियम दोनों का सम्बन्ध "नस्लवाद" से नहीं वरन "परमेश्वर के लोगों" से है, चाहे वे केवल इस्राएल देश हों या संसार के सभी राष्ट्रों से आए हों, जिसमें इस्राएली भी शामिल हैं।

---

5. बाइबल में समानांतर और विषम खण्डों के साथ दृष्टान्त की तुलना करें।

परिचय दें। कुछ दृष्टान्त एक-दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालांकि, सभी दृष्टान्तों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जिन्हें बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ा जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण प्रासंगिक पदों को खोजनें की कोशिश करें जो हमें दृष्टान्त की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्यां की जाँच करें।

(1) अंजीर के पेड़ को शाप दिया जाना।

मत्ती 21:18-19। यीशु द्वारा दुष्ट किसानों का दृष्टान्त बताने से ठीक पहले, उसे भूख लगी थी और वह थोड़ी दूरी पर लगे अंजीर के पेड़ के पास फल की तलाश में गया। लेकिन उसे पत्तियों के अलावा इस पर कुछ नहीं मिला। क्योंकि उसे उस पर कोई फल नहीं मिला, तो उसने उसे शाप दिया (मरकुस 11:20)! यीशु पेड़ से गुस्सा नहीं था। इस घटना का बहुत गहरा अर्थ था और दुष्ट किसानों के दृष्टान्त ने इस गहरे अर्थ को समझा दिया।

अंजीर के पेड़ पर बहुत पत्ते तो थे लेकिन कोई फल नहीं था। लूका 13:6-9 इस प्रकार कहता है "अंजीर का पेड़" इस्राएल के अत्यधिक विशेषाधिकार प्राप्त राष्ट्र का प्रतीक था। अंजीर के पेड़ की तरह इस्राएल राष्ट्र ने मन्दिर में कई बलिदान चढ़ाने के द्वारा स्वयं को एक धार्मिक और पवित्र व्यक्ति होने का नाट्क किया। लेकिन इस्राएलियों ने मन्दिर को एक बाज़ार में बदल दिया था, जहाँ वे जानवरों को बेचते थे और वहां के अगुवे यीशु को मारने की साज़िश रच रहे थे। इसके अलावा मन्दिर के बलिदानों का कोई मतलब नहीं था। इस्राएल राष्ट्र धार्मिक गतिविधियों से भरा हुआ था, लेकिन उनमें कोई ईमानदारी या सच्चाई नहीं थी। अंजीर के पेड़ को शाप देकर, जो अगले दिन तक सूख गया था, यीशु ने इस्राएल के अविश्वासयोग्य देश को परमेश्वर के लोगों के पतन की भविष्यद्वाणी की थी।" यीशु मसीह ने यहूदियों को अस्वीकार नहीं किया था, लेकिन यह भविष्यद्वाणी की थी कि परमेश्वर का राज्य अब इस्राएल देश में स्थापित नहीं होगा। मसीह के प्रथम आगमन से ही परमेश्वर

की नये नियम की वाचा में परमेश्वर का राज्य स्थापित है जिसमें यहूदियों में से और गैर-यहूदियों में से (अन्यजातियों के लोग) विश्वास करने वाले लोग शामिल थे। केवल "पत्तियों" के बजाय वे परमेश्वर के राज्य के फल में लाएँगे (मत्ती 8:11-12, 1पतरस 2:4-10)। परमेश्वर के लोगों की उपस्थिति परमेश्वर की लोगों के लिए मार्ग तैयार करती है।

(2) दो पुत्रों का दृष्टान्त।

मत्ती 21:28-32। दो बेटों के दृष्टान्त और दुष्ट किसानों के दृष्टान्त के बीच समानांतर और कुछ भिन्नताएं हैं। समानता के रूप में दोनों एक दाख की बारी की देखभाल करते हैं और दोनों दृष्टान्तों में यीशु ने यहूदियों के अगुवों और अनुयायियों को ध्यान में रखा, जिनकी उन्होंने निन्दा की थी। अन्तर के रूप में, दूसरा दृष्टान्त अधिक लम्बा है और इसमें अधिक विवरण है। हालांकि, दोनों के पास केवल एक मुख्य शिक्षा है, जो मत्ती 21:40-43 में स्पष्ट रूप से सामने आती है। दृष्टान्त के दृष्टिकोण और रूपक पहले दृष्टान्त की तुलना में कहीं अधिक निकट है। पहले दृष्टान्त में इस्राएल के अगुवों द्वारा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के तिरस्कार पर ज़ोर दिया है, जबकि दूसरा दृष्टान्त इस्राएल के पूरे लोगों द्वारा पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और मसीह अर्थात यीशु मसीह के तिरस्कार पर बल देता है। यही कारण है कि परमेश्वर के राज्य को उनसे वापिस ले लिया जाएगा और अन्य लोगों को दे दिया जाएगा।

(3) विवाह के भोज का दृष्टान्त।

मत्ती 22:1-14। दुष्ट किसानों के दृष्टान्त और विवाह के भोज के दृष्टान्त के बीच समानता और कुछ भिन्नता है। समानता के तौर पर, दोनों दृष्टान्त परमेश्वर के धैर्य और यहूदियों की विरासत के साथ उनकी संभावित देखभाल को चित्रित करते हैं। भिन्नताओं पर बात करें तो, विवाह के भोज का दृष्टान्त उन लोगों की सख़्त सजा पर ज़ोर देता है जो परमेश्वर के साथ अपनी सहभागिता में लापरवाह हैं और विवाह के भोज में उपयुक्त कपड़ों को पहने बिना विवाह के भोज में चले जाते हैं। दुष्ट किसानों के दुष्टान्त में अविश्वासी यहूदियों की अस्वीकृति और विश्वास करने वाले अन्यजातियों को बुलाने और स्वीकार करने पर ज़ोर दिया गया है।

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षाओं को सारांशित करें।

चर्चा करें। दृष्टान्त की मुख्य शिक्षाएं या सन्देश क्या है? यीशु मसीह ने हमें क्या सिखाया कि हम क्या *जाने* और *विश्वास करें* और उसने हमें क्या *होने* के और क्या *करने की शिक्षा दी?*

ध्यान दें।

(1) अध्याय का मुख्य सन्देश।

मत्ती 21:33-39 में दिया गया दुष्ट किसानों का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य के सन्देशवाहकों" और इस्राएल के भौतिक राष्ट्र की प्रतिक्रिया के बारे में दृष्टान्त है।

मुख्य सन्देश निम्नलिखित है, "उसके प्रिय पुत्र यीशु मसीह में व्यक्त परमेश्वर के अगम्य प्रेम के प्रति इस्राएल के भौतिक राष्ट्र के अनुचित पाप के बावजूद, यीशु मसीह अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करेंगे और भजन संहिता 118:22-23 में भविष्यद्वाणी के अनुसार अपने राज्य को स्थापित करेगा।" सबसे बड़े विरोध और परमेश्वर के सन्देशवाहकों के तिरस्कार के बावजूद, परमेश्वर का संसार में अपना राज्य स्थापित करने का उद्देश्य असफल नहीं हो सकता। परमेश्वर के राज्य का विशेषाधिकार लोगों को

दिया गया है, जो संसार के हर देश में परमेश्वर के राज्य के योग्य फल उत्पन्न करते हैं।

(2) इस्राएल राष्ट्र और मसीही कलीसिया।

यीशु मसीह के संसार में आने के दौरान, परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों के रूप में इस्राएल के राष्ट्र ने यीशु मसीह को अस्विकार किया था । इस प्रकार उन्होंने अपने आप को दोषी ठहराया और परमेश्वर द्वारा उन्हें उसकी वाचा के लोगों के रूप में तिरस्कृत किया गया (मत्ती 8:11-12)। तब से, सभी लोग जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, यहूदियों और अन्यजातियाँ दोनों परमेश्वर के नये वाचा के लोग हैं (यूहन्ना 10:16; रोमियों 10:12-13; 2कुरिन्थियों 6:16; गलातियों 3:26-28; इफिसियों 2:11-22; कुलुस्सियों 3:11-12; 1पतरस 2:9-10; 1यूहन्ना 3:4-10)। वे पूरे संसार में मसीही कलीसिया को गठित करते हैं। परमेश्वर के राज्य के सभी विशेषाधिकार उनके हैं!

(3) राज्य के लिये फल लाने का अर्थ।

मत्ती 3:7-12 में, जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने परमेश्वर के राज्य के बारे में सन्देश दिया, तो उसने कहा, "मन फिराव के योग्य फल लाओ!... इसलिए जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका दिया जाता है।" केवल उन लोगों को जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला है (अर्थात्, पवित्र आत्मा द्वारा पुनः जन्म मिला है) उनको गेहूँ की तरह परमेश्वर के खलिहान में इकट्ठा किया जाएगा। बाकि सभी को कभी भी न बुझने वाली आग में भूसे की तरह जलाया जाएगा।

फल लाना धार्मिक कार्यों (हर दिन कई बार प्रार्थना करने, निश्चित समय पर उपवास करने, एक निश्चित धनराशी को देने या तीर्थ यात्रा करने आदि) या लोगों द्वारा अपनी शक्ति सामर्थ्य द्वारा किये गए अच्छे कार्यों को दर्शाना नहीं वरन उन कार्यों से हैं जो पवित्र आत्मा उनमें उत्पन्न करता है (मत्ती 3:8; यूहन्ना 15:16; गलातियों 5:22-23; कुलुस्सियों 1:6)।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ आपने सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में बारी बारी परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हो।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "दुष्ट किसानों का दृष्टान्त" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **व्यवस्थाविवरण 8,9,10 और 11** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **समीक्षा श्रृखंला 1, "परमेश्वर का राज्य"** (1) राज्य में प्रवेश करना। यूहन्ना 3:3,5, (2) राज्य में सेवा करने बाद आपका वापस स्वागत है। लूका 9:62, (5) साम्राज्य की विजय। दानिय्येल 2:44।
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 2:1-16।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 6

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश करने के विषय में इस पाठ को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **व्यवस्थाविवरण 8-11**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (व्यवस्थाविवरण 8,9,10 और 11)) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **श्रृंखला 1 का पुनरावलोकन**

श्रृंखला 1 का *पुनरावलोकन करें।* "परमेश्वर का राज्य"।

(1) **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें। यूहन्ना 3:3,5।** मैं तुम से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। मैं तुम से सच सच कता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

(2) **परमेश्वर के राज्य में बच्चों का स्वागत करें। लूका 18:16-17।** बालकों को मरे पास आने दो और उन्हें मना न करोः क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करेगा वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।

(3) **परमेश्वर के राज्य का प्रचार करें। मत्ती 24:14।** और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।

(4) **परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते समय कभी मुड़कर न देखें। लूका 9:62।** जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है।

(5) **परमेश्वर के राज्य की जीत। दानिय्येल 2:44।** उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्त काल तक न टूटेगा, और वह न किसी दूसरी जाति के हाथों में किया जाएगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 1:1-16**

परिचय दें। बाइबल अध्ययन करने के पांच कदमों का इस्तेमाल करते हुए, एक साथ मिलकर **रोमियों 2:1-16** तक का अध्ययन करें।

रोमियों अध्याय 1 में, पौलुस दर्शाता है कि अन्यजातियों को *परमेश्वर के क्रोध का सामना* और परमेश्वर की धार्मिकता (उद्धार) को प्राप्त करना ज़रूरी था। रोम में रहने वाले यहूदी पूरी तरह से सहमत हो गयेः ईश्वररहित और दुष्ट अन्यजातियां परमेश्वर के क्रोध की हकदार है और वे अपने कामों से कभी परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त नहीं कर सकते। लेकिन यहूदी लोग आज भी विश्वास करते हैं कि परमेश्वर यहूदियों और अन्यजातियों को न्याय अलग तरीके से करेगें, क्योंकि वे मानते हैं कि यहूदी परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं और उन्हें विशेष अवसर प्रदान किया गया है। वे मानते हैं कि यहूदी अगर व्यवस्था में बने रहे तो वे परमेश्वर के क्रोध से बच जाएगें। इसीलिए रोमियों 2:1-16 में दर्शाता है कि, यहूदी भी अपने लिए परमेश्वर का क्रोध कमा रहे हैं और अन्यजातियों के समान उन्हें भी परमेश्वर की धार्मिकता (उद्धार) की ज़रूरत है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 2:1-16 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखेंः हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

2:1-4

खोज 1. **यहूदियों के भी दोषी ठहरने का कारण।**

(1) यहूदी कपटी थे (रोमियों 2:1)।

यहूदी लोग पूरी तरह से भ्रष्ट थे। वे अधर्म के काम करते थे (रोमियों 1:18) और ऐसे ही काम करने वाले लोगों से प्रसन्न भी रहते थे(रोमियों 1:32)।

यहूदी ऐसा दिखावा करते थे कि वे धर्मी और भले काम करने वाले हैं। वे अन्यजातिों पर दुष्टता करने का दोष लगाते थे, जबकि खुद भी वैसे ही काम किया करते थे(रोमियों 2:21-22)!

अन्यजातियों पर उनकी धार्मिक रीतियों व नैतिक भ्रष्टता को लेकर दोष लगाना तो पूरे यहूदी समाज की राष्ट्रीय विशेषता थी। पौलुस इस वाक्य के द्वारा यहूदियों की इस खासियत को दर्शाता हैः "हे दोष लगाने वालों"। यहूदियों का दूसरों पर दोष लगाना यह साबित करता है कि यहूदी परमेश्वर की धार्मिक व्यवस्था को जानते थे कि जो कोई बुरे काम करेगा वह मृत्यु के दण्ड के योग्य होगा(रोमियों 1:32)। इसलिए अन्यजातियों की दुष्टता के लिए कोई क्षमा नहीं है (रोमियों 1:20), वैसे ही यहूदियों की दुष्टता की कोई क्षमा नहीं है (रोमियों 2:1)। यहूदियों का अंधापन और कपट इतना था कि वे जिन दुष्ट कामों के लिए अन्यजातियों पर दोष लगाया करते थे उन्हें वे खुद अपने जीवन में किया करते थे। वे वास्तव में इस बात से अनजान थे कि जिन बातों के लिए वे अन्यजातियों को दोषी ठहरा रहे थे, उनसे वे अपने आपको ही दोषी ठहरा रहे थे।

(2) यहूदी पूर्वानुमान लगाने वाले थे (रोमियों 2:2-3)।

यहूदियों का मानना था कि यहूदियों का न्याय *सत्य* अर्थात व्यवस्था के आधार पर नहीं वरन् किसी अन्य पैमाने से होगा। उन्हें इस बात की अपेक्षा थी कि परमेश्वर यहूदियों का न्याय, उनके व्यवहार के आधार पर नहीं, वरन् उनके चुने जाने अर्थात देश और परमेश्वर के साथ धार्मिक सम्बन्ध के अनुसार होगा। वे निम्न तथ्यों के आधार पर विश्वास करते थे कि वे विशेष लोग है और वे दण्ड से बच जाएंगेः

- वे एक ही ईश्वर पर विश्वास करते थे (व्यवस्थाविवरण 6:1)
- वे दिन में तीन बार प्रार्थना किया करते थे(दानिय्येल 6:10)
- वे प्रतिवर्ष चौथे महीने में (जकर्याह 8:19) और सप्ताह में दो दिन उपवास किया करे थे (लूका 18)।
- वे प्रति माह अपनी कमाई का दशमांश (मलाकी 3:10; लूका 18:12), वरन् वे धार्मिक कामों के लिए अपनी कमाई का तीसवां हिस्सा दिया करते थे(लैव्यवस्था 27:30; व्यवस्थाविवरण 14:22-29)।
- वे हर वर्ष तीन बार यरूशलेम में तीर्थ यात्रा पर जाया करते थे (व्यवस्थाविवरण 16:16)
- वे अब्राहम के वंशज थे (मत्ती 3:7-12; 8:10-12; यूहन्ना 8:30-44)।
- उनका शारीरिक तौर पर खतना हुआ था (प्रेरितों 15:1,7-11) और वे सोचते थे कि वे व्यवस्था (तोरह और शिरिया) का पालन करने वाले हैं।

हालांकि, परमेश्वर का न्याय उनके "यहूदी" होने के दावे पर आधारित नहीं होगा वरन् उनके वास्तविक जीवन और कामों पर आधारित होगा। परमेश्वर का न्याय या अपराधियों (रोमियों 5:16, 13:2) पर दोष आज्ञा "सत्य" अर्थात "सच्चे तथ्यों पर" आधारित होगा। इसीलिए परमेश्वर के न्याय को पक्षपात रहित कहा जाता है। "परमेश्वर पक्षपात नहीं करता"। यहूदियों को अन्यजातियों से बढ़कर कोई विशेष दर्जा नहीं दिया गया है। यहूदियों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे परमेश्वर के न्याय से बच जाएगें।

(3) यहूदी तुच्छ जानते थे (रोमियों 2:4)।

यहूदियों को सम्पूर्ण इतिहास में, परमेश्वर ने यहूदियों पर अपनी भलाई का प्रगट कि, सहनशीलता दिखाई और धीरज धरा है। परमेश्वर ने एक छोटे से देश को अपने निज प्रजा के रूप में चुनकर उन पर अपनी कृपा को प्रगट किया(व्यवस्थाविवरण 7:7-9)। परमेश्वर ने बार उन अपने क्रोध को प्रगट करने से रोककर उन पर अपनी सहनशीलता का परिचय दिया। और परमेश्वर ने लगातार रीस दिलाये जाने पर भी यहूदियों के प्रति धीरज धरा।

यद्यपि, सम्पूर्ण इतिहास काल में और विशेष तौर पर प्रेरित पौलुस के समय में, यहूदियों ने अपने जीवन में परमेश्वर को तुच्छ जाना (प्रेरितों 13:42-52; 17:13; 28:23-28)। उन्होंने अपनी धार्मिकता पर इतना भरोसा था कि उन्होंने यीशु मसीह में होकर प्रगट किये गये परमेश्वर के अनुग्रह को ही अस्वीकार कर दिया। उन्होंने अपने अंधेपन और अपने कठोर *पूर्वानुमानों* के चलते परमश्वेर की कृपा, सहनशीलता और धीरज का बिल्कुल गलत मतलब निकाला और सोचा कि परमेश्वर उनके व्यक्तिगत पापों को नजरअन्दाज करके उन्हें पापें से मुक्त करेगा और उन्हें उनका दण्ड नहीं देगा। यहूदियों को पता था कि अन्यजातियों को मन फिराने की ज़रूरत है। लेकिन वह यह भी मानते थे कि यहूदियों को किसी प्रकार से मन फिराने या पश्चाताप करने की ज़रूरत नहीं है। यहूदी इस बात को नहीं समझ पाये कि उनके साथ परमेश्वर की कृपा, सहनशीलता और धीरज का का मुख्य उद्देश्य उनकी मन फिराव में अगुवाई करना है (2पतरस 3:9)। इसलिए यहूदी हमेशा मन फिराने से इनकार करते रहे (रोमियों 10:21)। अतः पौलुस किसी *विशेष अनुग्रह* की बात नहीं कर रहा है जो लोगों को मन फिराव सिखाता है, (रोमियों 8:29-30), वरन् वह एक *सामान्य अनुग्रह* के बारे में बोलता है जो लोगों की मन फिराव में अगुवाई करने के लिए तैयार की गयी है (प्रेरितों 14:17; 17:24-27)।

2:5-16

खोज 2. **निर्णायक न्याय के दिन परमेश्वर के आदेश की उद्घोषणा।**

(1) वह न्याय का दिन निश्चित तौर पर आ रहा है।

मन फिराने से इन्कार करने के कारण, यहूदी लोग हमेशा परमेश्वर के क्रोध को भड़काते हैं (देखें, अन्यजातियों के प्रति परमेश्वर के क्रोध को) (रोमियों 1:18)। "परमेश्वर का क्रोध" यहूदियों के पाप के प्रति परमेश्वर का न्याय और सत्य का भाव और उसकी प्रगट प्रतिक्रिया है।

पौलुस के समय में भी परमेश्वर यहूदियों के साथ धीरज धरे हुए थे (देखें: अन्यजातियों के साथ परमेश्वर का धीरज)(2 कुरिन्थियों 6:1-2; 2 पतरस 3:9), क्योंकि उसने उन पर तुरन्त गुस्सा नहीं किया, वरन् उसे न्याय के दिन रख दिया। लेकिन अन्तिम न्याय के दिन परमेश्वर उन यहूदियों पर अपना क्रोध प्रगट करेगा जिन्होंने मन नहीं फिराया है।

(2) न्याय के दिन परमेश्वर के न्याय के पांच मानक (रोमियों 2:6-12)।

पहला। परमेश्वर का अन्तिम न्याय *सार्वभौमिक* होगा। परमेश्वर सारी गैरयहूदियों और यहूदियों का न्याय करेगें। कोई भी देश नहीं छूटेगा। मसीह पर विश्वास करने वाले विश्वासियों को अनन्त मृत्यु अर्थात नरक में नहीं डाला जाएगा (यूहन्ना 5:24), लेकिन उनका न्याय उनके जीवन जीने के तरीके के लिए होगा (2 कुरिन्थियों 5:10)।

दूसरा। परमेश्वर का अन्तिम न्याय *धर्मी होगा।* परमेश्वर हर एक जन का न्याय उसके कामों आधार पर करेगें। अन्तिम न्याय के दिन संसार में सभी जन्म लिए प्राणी न्याय के लिए यीशु मसीह के सिंहासन के सामने आकर खड़े होगें। जीवन की पुस्तक खोली जाएगी और यदि किसी का नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं पाया गया, तो उसे आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:12ख, 15; 21:27)। जीवन की पुस्तक में सारे सच्चे मसीहियों के नाम लिखे होगें (यूहन्ना 5:24;6:37; 10:28-30;17:12)। इसके अलावा एक और पुस्तक खोली जाएगी और लोगों का उनके उन कामों के हिसाब से न्याय होगा जो उसमें लिखे हैं (प्रकाशितवाक्य 20:12; मत्ती 16:27)। लोगों का न्याय दूसरे के पापों के लिए नहीं किया जाएगा (यहेजकेल 18:20)। लेकिन लोगों का न्याय उनके कामों की *गुणवत्ता* के लिए होगा (1कुरिन्थियों 3:12-15)।

तीसरा। परमेश्वर का अन्तिम न्याय *निष्पक्ष* होगा। परमेश्वर या तो पुरुस्कार देते हैं या दण्ड। अन्तिम न्याय के दिन में, परमेश्वर धर्मियों को(मसीह में विश्वासियों को) को अनन्त जीवन देगें। लेकिन वह दुष्टों को (जिन्होंने मसीह पर विश्वास नहीं किया) अनन्त दण्ड देगें (मत्ती 25:31-46)। यह कहना सही नहीं होगा कि यह अनुच्छेद केवल *व्यवस्था* के बारे में बात करता है *सुसमाचार* के बारे में नहीं, क्योंकि अन्तिम न्याय के संबंध में पौलुस की शिक्षा सुसमाचार का ही एक भाग है!(रोमियों 2:16)! यह कहना भी गलत होगा कि अन्तिम न्याय के दिन विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों के लिए मूसा की व्यवस्था को ही न्याय के लिए परमेश्वर का मानक माना जाएगा। व्यवस्था नहीं, <u>वरन् परमेश्वर के प्रकाशन में मनुष्य के काम (जिसमें परमेश्वर का सामान्य प्रकाशन भी शामिल है) अन्तिम न्याय के मानक होगें।</u>

चौथा। परमेश्वर के अन्तिम न्याय में को कोई *पक्षपात* नहीं होगा। परमेश्वर यहूदियों का भी उसी मानक से न्याय करेगें जिससे वे गैर यहूदियों का न्याय करेगें। जब कहा गया, "पहले यहूदी और फिर अन्यजातियां" (रोमियों 2:10) तो उसका मतलब यह नहीं था कि परमेश्वर यहूदियों के साथ अन्यजातियों की तुलना में अधिक उदारता के साथ व्यवहार करेगें। परमेश्वर यहूदियों और यूनानियों दोनों का ही परमेश्वर है (रोमियों 3:29)। परमेश्वर कोई पक्षपात नहीं करते (रोमियों 2:11)। और परमेश्वर निश्चय तौर पर यहूदियों का उसी पैमाने या मानक द्वारा न्याय करेगा जिससे वह गैर यहूदियों का न्याय करेगा। क्योंकि ऐतिहासिक क्रम को देखा जाए तो यहूदियों के पास पहले सुसमाचार पहुंचा था इसलिए, न्याय की शुरूआत भी यहूदियों से ही होगी। यहूदियों का न्याय पहले होगा। यदि वे मसीह पर विश्वास करने वाले हुए तो उन्हें सबसे पहले धर्मी ठहराया व पुरुस्कार दिया जाएगा (रोमियों 1:16; 2:10)। लेकिन अगर वे अविश्वासी हैं तो, तो उन्हें ही सबसे पहले दोषी ठहराकर दण्ड दिया जाएगा (रोमियों 2:9)।

पाँचवा। परमेश्वर का न्याय *पूरी तरह से उचित* होगा। <u>परमेश्वर लोगों का न्याय इस आधार पर होगा कि वे परमेश्वर और उसकी इच्छा को कितना जानते हैं।</u> संसार में दो प्रकार के लोग होते हैं: "वे लोग जो <u>व्यवस्था से मुक्त</u> हैं" और वे लोग "जो <u>व्यवस्था के अधीन</u> हैं" (रोमियों 3:19)। लेकिन क्योंकि "परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था" अन्यजातियों के हृदय में भी लिखी गयी है (रोमियों 2:14-15), इन दोनों समूह में से एक उन लोगों को दर्शाता है जो *परमेश्वर के विशेष प्रकाशन से बाहर हैं* और दूसरा समूह उसके अनुग्रह के अधीन रहने वाले लोगों को दर्शाता है।

परमेश्वर के अन्तिम न्याय के पांच मानक प्रमाणित करते हैं कि परमेश्वर यहूदियों के साथ किसी अन्य जाति की तुलना में पक्षपात नहीं करते! यहूदियों में कोई प्रतिरक्षा नहीं पायी जाती। यहूदियों को कुछ सौभाग्य प्राप्त हैं (रोमियों 9:4-5), लेकिन वे किसी भी तरह से अन्तिम न्याय से बचे हुए नहीं हैं।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियो 2:1-16 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

2:6

प्रश्न1. **सारे लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा न्याय करने का मानक क्या है, जिसमें सारे धर्मी लोग भी शामिल हैं?**

ध्यान दें। संसार की सारी जातियों के लोगों को यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि कोई भी जन अपने धार्मिक कामों की वजह से उद्धार नहीं पाएगा, लेकिन हर एक जन का न्याय उसके कामों के अनुसार होगा! वास्तव में देखा जाए तो सारे लोग दोषी हैं (यूहन्ना 3:18)। वरन् दूसरे धर्मों का अनुसरण करने वाले लोग भी दोषी हैं! क्योंकि वे परमेश्वर की नज़रों में धर्मी नहीं हैं, इसलिए वे पहले ही अनन्त मृत्यु के लिए दोषी ठहराये जा चुके हैं।

2:7-11

प्रश्न 2. **भले और बुरे काम करने वाले लोगों के लिए परमेश्वर के न्याय का मानक क्या है?**

ध्यान दें।

(1) कोई भी जन अपने भले कामों की वजह से धर्मी नहीं ठहराया जाएगा।

आप रोमियों 2:6-8 को रोमियों 3:22,24 के साथ किस प्रकार मिला कर देखते हैं? रोमियों 3:20,22-24 कहता है: कोई भी जन अपने कामों के आधार पर धर्मी नहीं ठहरेगा। धार्मिकता निम्न चिजों के द्वारा प्राप्त होती है:

- परमेश्वर के अनुग्रह से

- उद्धार के निमित्त मसीह द्वारा पूरा किये गये काम से
- मसीह में किसी भी जन के विश्वास के द्वारा।

लेकिन कई लोग विश्वास करते हैं कि रोमियों 2:6-8 इसका उल्टा कह रहा हैः "परमेश्वर हर एक जन को उसके कामों के हिसाब से प्रतिफल देगाः जिन लोगों ने भलाई की है उनके लिए अनन्त जीवन और गुस्सा और क्रोध उन लोगों के लिए जिन्होंने दुष्टता की है।"

इस अनुच्छेद में पौलुस दो बातें कहता हैः

पहला। व्यवस्था उद्धार(धर्मी ठहराये जाने के लिए) के निमित्त परमेश्वर की धार्मिक मांग है। परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता मांग करती है कि संसार के सारे लोग परमेश्वर के समान पूरी तरह से पवित्र और धार्मिक हों और उनके सारे पापों को दण्ड उन्हें दिया जाए। रोमियों 2:6-8 में पौलुस धर्मी ठहराये जाने के तरीके के बारे में नहीं, वरन् धार्मिकता के मानक के बारे में शिक्षा देता है जो सारे लोगों पर लागू होगा जो धर्मी ठहराये जाने के लिए व्यवस्था पर भरोसा रखते हैं। यदि लोगों को अपने धर्मी ठहराये जाने के लिए अपने कामों (व्यवस्था के पालन करने) पर भरोसा है, तो उन्हें कुछ अंश को नहीं वरन् व्यवस्था की सारी बातों को मानना चाहिए (रोमियों 2:13; लैव्यवस्था 18:5 ;यहेजकेल 20:11)। उन्हें या तो सम्पूर्ण अर्थात शतप्रतिशत व्यवस्था का पालन करना चाहिए या फिर, वे परमेश्वर की ओर से "शापित" ठहरे(गलातियों 3:10-11)। यहां तक कि अगर उनसे किसी एक मांग को पूरा करने में चूक हो जाती है तो वे सम्पूर्ण व्यवस्था को तोड़ने के दोषी ठहरते हैं (याकूब 2:10)।

रोमियों 3:10-24 में पौलुस बताता है कि संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो इस तरह से व्यवस्था का पालन करता हो जो उसे बचा सके अर्थात उसे उद्धार दिला सके। सुसमाचार वह खुशखबरी है कि परमेश्वर ने बिना व्यवस्था के कामों के धर्मी ठहराने अर्थात उद्धार दिलाने की अनन्त योजना तैयार की है। एक तरफ *व्यवस्था* सभी लोगों को परमेश्वर की सिद्ध मांगों में रहित होने के कारण दोषी ठहराती है, *सुसमाचार* बताता है कि यीशु मसीह किस प्रकार पापी लोगों को उद्धार प्रदान करता है। *व्यवस्था* स्पष्ट बताती है कि लोगों को एक उद्धारकर्ता की जरूरत है, *सुसमाचार* उद्धार के बारे में बताता है।

दूसरा। अन्तिम न्याय के लिए व्यवस्था परमेश्वर का धर्मी मानक या पैमाना है। उद्धार के सन्दर्भ में व्यवस्था हर एक जन को केवल दोषी और भटका हुआ ही ठहरा सकती है। लेकिन अन्तिम न्याय के सन्दर्भ में व्यवस्था एक मानक या पैमाने के रूप में काम करती है जिसके द्वारा अविश्वासी और दुष्ट लोग दोषी ठहरेगें और इसी मानक के द्वारा अविश्वासियों को दण्ड तथा विश्वासियों को पुरूस्कार दिया जाएगा। एक व्यक्ति का उद्धार या दण्ड पृथ्वी पर बिताये जाने वाले जीवन में ही निर्धारित हो जाता है, लेकिन उसकी जीवनशैली और कामों हिसाब केवल मानव जाति के इतिहास के अन्त में ही लिया जाएगा। उसके बाद सारे लोगों को न्याय उनके अच्छे और बुरे कामों के आधार पर होगा (सभोपदेशक 12:14; 2कुरिन्थियों 5:10 ; इफिसियों 6:8)।

परमेश्वर खुले आम धर्मियों को सदा काल के लिए उद्धार पाये हुए के रूप में घोषित करेगा और एक मसीही के रूप में किये गये उनके भले कामों के लिए उन्हें प्रतिफल प्रदान करेगा। लेकिन

परमेश्वर अधार्मिक (अविश्वासियों) को उनके अपवित्र, अधार्मिक और सिद्धता रहित कामों उन्हें दण्डाज्ञा देगा। वे निम्न कारणों दे दण्डित किये जाएगेंः

- उसके अविश्वास के कारण– क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 3:18)
- उनकी बुराईयों के कारण– उन्हें सत्य को अस्वीकार किया और बुराई को अपनाया (रोमियों 2:8)
- उनकी धार्मिकता में अभाव के कारण– उन्होने मसीह और अपने भाईयों के साथ ठीक नहीं किया (मत्ती 25:40–41,45)।

उन्हें अपने बुरे कामों का फल जैसा मिलना चाहिए वैसे ही उन्हें मिलेगा(लूका 12:47–48)।

अतः रोमियों 2:8 हमें बताता है कि लोगों का उनके बुरे कामों के द्वारा न्याय होगा और वे दण्डित रहरेगें। लेकिन रोमियों 2:7 हमें ऐसी शिक्षा नहीं देता कुछ लोग ऐसे भी होगें जो अपने भले कामों के कारण धर्मी ठहरेगें और बचाए जाएंगे।

तो फिर पौलुस ऐसा क्यों कहता है कि परमेश्वर उन लोगों को अनन्त जीवन देगा ,"जो प्रयत्न के साथ भलाई करते और अनश्वरता को खोज करते हैं"? मनुष्य और धार्मिक लोगों शायद यह विश्वास करते हों कि उनके भले काम उन्हें बचा सकते हैं!

यह पर पहला प्रश्न यह है किः "परमेश्वर की नज़रों में "अच्छा" क्या है"? 7पद में "अच्छा क्या है" निश्चय तौर पर पद 9 कें "बुरा क्या है" का उल्टा होगा। इसलिए "अच्छा क्या है" को निम्न बातों द्वारा परिभाषित किया जा सकता हैः

- सत्य को स्वीकार करके (ध्यान देः सत्य यीशु मसीह है(यूहन्ना 14:6), बाइबल है(यूहन्ना 17:17), यीशु मसीह की शिक्षा है (यूहन्ना 8:31–32) और उद्धार के कामों को पूरा करने की सच्चाई (यूहन्ना 1:17)
- जो परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा है उसका अनुसरण करकेः बाइबल का परमेश्वर व उसकी धार्मिकता (मरकुस10:18)
- और महिमा(परमेश्वर का स्वभाव), आदर (परमेश्वर की स्वीकृति), अनश्वरता (परमेश्वर का जीवन) और शान्ति (परमेश्वर की परिपूर्णता)।

"बुराई" को "सत्य को अस्वीकार करने", "परमेश्वर की दृष्टि में बुरे गिन जाने वाले कामों को करने" "परमेश्वर का स्वभाव,परमेश्वर के मंजूरी, परमेश्वर का जीवन या परमेश्वर की परिपूर्णता को हासिल न करने के द्वारा परिभाषित किया जा सकता है।

और यहां पर दूसरा प्रश्न यह है:"क्या यीशु के अलावा किसी के लिए भी भलाई करना(बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में) सम्भव है? उत्तर हैः नहीं! "बिना मेरे (यीशु मसीह) तुम कुछ भी नहीं कर सकते (इसकी अनन्त कीमत है) (यूहन्ना15:5)!

(2) जो वास्तव में "सुकर्म" करते हैं वे सुकर्म करने में स्थिर रहते हैं (रोमियों 2:7)

मत्ती 24:13 में लिखा है,"परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।" यह वचन मसीहियों की दृढ़ता और स्थिरता के बारे में बताता है (कुलुस्सियों 1:22-23; इब्रानियों 3:14)। रोमियों2:7 दो विचारों को मिलाता हैः एक मसीही सुकर्म करने में स्थिर रहता है और एक मसीही आशा करता या मज़बूत अपेक्षा करता है, जिसका अर्थ है कि, वह अन्त में प्रगट होने वाली एक सच्चाई की अपेक्षा करता है (जो अनन्त उद्धार है जिसमें महिमा,आदर, अमरता और शान्ति शामिल है)। "सुकर्मों" को "उद्धार" से जोड़ने के द्वारा पौलुस, जोर डालता है कि इन्हें कभी अलग नहीं किया जा सकता। यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त उद्धार के बिना सुकर्म मृतक हैं। बिना सुकर्मों के यीशु द्वार उद्धार पाना एक कल्पना मात्र है।

(3) जो लोग "सुकर्म" करते हैं

वे भविष्य में मसीहियों के साथ होने वाली वास्तविकता पर ध्यान केन्द्रित करते हैं (रोमियों 2:7)।

ये लोग "अनन्त जीवन" की खोज(पाने की चाह, उसके लिए संघर्ष) करते हैं। शब्दावली "महिमा, आदर, अमरता, और शान्ति" स्वभाव, कीमत, भरोसे और अनन्त जीवन की आशीषों को प्रगट करती हैं(रोमियों 2:7,10)।

महिमा। "महिमा" शब्द (ग्रीकः डोक्सा) परमेश्वर के स्वभाव में भागीदार होने को प्रगट करता है (2पतरस 1:14)। "महिमा" मसीहियों की आगामी अपेक्षा को प्रगट करता है, जिसे मसीह के दूसरे आगमन पर सभी चीजों का रुपान्तरण होना कहा जाता है (रोमियों 5:2; 8:17)। जब मसीह में विश्वास करने वाले मरकर यीशु को आमने सामने देखगें (फिलिप्पियों 1:23) तो उनकी आत्मा रुपान्तरित हो जाएगी जिससे उनका पूरा व्यक्तित्व यीशु मसीह की समानता में बदल जाएगा और वे भी परमेश्वर की महिमा प्रगट करने लगेगें(रोमियों 8:17, 18,21,29,30; 9:23; 1कुरिन्थियों 2:7; 2 कुरिन्थियों 4:17; कुलुस्सियों 3:4; 1यूहन्ना 3:1-3)। और यीशु मसीह के आने पर यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले विश्वासियों की अनश्वर देह जी उठेगीं और रुपान्तरित होकर स्वयं यीशु मसीह की महिमित देह के समान हो जाएंगी (1कुरिन्थियों 15:43; फिलिप्पियों 3:21)। उस समय पर सम्पूर्ण धरती हिलाई जाएगी और आग के द्वारा शुद्ध की जाएगी और परिवर्तित होकर नयी धरती बन जाएगी (रोमियों 8:21)।

आदर। "आदर" शब्द (ग्रीकः समय) यीशु मसीह में विश्वास करने वाले विश्वासियों को परमेश्वर की मंजूरी मिलने को दर्शाता है जो विशेष तौर पर मसीह के दूसरे आगमन पर ईश्वरहीन और दुष्ट लोगों को अस्वीकृत और निन्दित किये जाने का विपरीत है। (मत्ती 25:21; इब्रानियों 2:7; 1पतरस1:7; 2पतरस 1:17; प्रकाशितवाक्य 4:9,11; 5:12-13)।

अमरता। "अमरता" शब्द (ग्रीक : अफ्तारसिया) परमेश्वर के जीवन, मृतकों में से जी उठने के बाद के अनश्वर स्वभाव को साझा करने को दर्शाता है (1कुरिन्थियों 15:42)। यह मसीह के आगमन पर मसीहियों के जी उठने की *आशा* को प्रगट करता है(रोमियों 8:23; 1कुरिन्थियों 15:42-54; 2 कुरिन्थियों 5:4 ; 1पतरस 1:4)।

शान्ति। "शान्ति" शब्द (ग्रीक :इयरीनी) <u>परमेश्वर की सम्पूर्णता</u>, परेशानियों और नयी धरती पर दुःख की पूरी तरह अनुपस्थिति को प्रगट करता है(प्रकाशितवाक्य 21:4)। यह केवल धरती पर पाये जाने वाले देशों के बीच शान्ति को ही नहीं, वरन् आन्तरिक शान्ति, अर्थात *परमेश्वर के साथ मेल मिलाप* (यशायाह 26:3-4; रोमियों 5:1), हर एक जाति के मसीहियों के बीच मेल मिलाप (इफिसियों2:14-15), और पूरे आनन्द के साथ परमेश्वर की *अनन्तता में हृदय और मन की शान्ति* को प्रगट करता है (फिलिप्पियों 4:7; प्रकाशितवाक्य 21:4)।

<u>महिमा, आदर, अमरता और शान्ति या मेल मिलाप की आकांक्षाएं मसीहियों की अपेक्षाएं या आकाक्षाएं हैं, गैर-मसीहियों की नहीं!</u> केवल मसीही जन ही इस प्रकार की आकाक्षां और अपेक्षा कर सकता है। केवल मसीही लोग ही ऐसी आशा कर सकते हैं!

लेकिन जो लोग केवल अपनी ही बढ़ाई चाहते, सत्य को अस्वीकार करते और बुराई का अनुसरण करते हैं उनके लिए परमेश्वर का गुस्सा और क्रोध तथा नरक में परेशानी और दुःख रखा हुआ है (रोमियों 2:8-9)। वे नाश हो जाएंगें (रोमियों 2:12)।

दूसरे धर्मो के अविश्वासी और विश्वासियों में ये अपेक्षाएं और आकांक्षाएं नहीं होगीं: वे नये जन्म और रूपान्तरण (यूहन्ना 3:3) या मृतकों में से जी उठने (1कुरिन्थियों 15:19) पर विश्वास नहीं करते। वे बाइबल के परमेश्वर से मंजूरी प्राप्त करनी खोज नहीं करते और नहीं उसके साथ मेल मिलाप करते हैं। परमेश्वर की व्यवस्था की मांग उनमें पूरी नहीं होती है (रोमियों 8:4; यूहन्ना 10:11को देखें)। और वे पवित्र आत्मा के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करते, बल्कि अपने ही पापमय स्वभाव में जीवन व्यतीत करते हैं (रोमियों 8:4; 1कुरिन्थियों 12:3)।

अतः जो लोग लगन के साथ महिमा, आदर, अमरता और शान्ति की खोज करत हैं वे मसीही होते हैं, गैर मसीही नहीं। वे अनन्त जीवन अपने भले कामों से प्राप्त नहीं करते, लेकिन उनके भले काम इस बात का प्रमाण हैं कि परमेश्वर ने उन्हें अनन्त जीवन प्रदान किया है (लूका 3:8; यूहन्ना 15:5,8)। वे अनन्त जीवन के अधिकारी हैं, इसीलिए उनके जीवन में सुकर्म करने की स्थिरता और आशाओं की अपेक्षाएं होती हैं।

(4) जो लोग भलाई करते हैं वे अपने कार्यो को बाइबल के परमेश्वर के अधीन करते हैं(रोमियों)।

किसी भी व्यक्ति के लिए अपनी बढ़ाई खोजने की बजाय परमेश्वर के अधीन होना 'भला' है। गैर मसीहीयों द्वारा कही जाने वाली शिक्षाओं द्वारा बाइबल की शिक्षाओं को अस्वीकार करने, दबाने या बदलने की बजाय उस सत्य पर विश्वास करना और उसे स्वीकार करना "भला" है (रोमियों 1:18,25)।

(5) जो लोग "भले काम" करते हैं उनके काम बाइबल में प्रगट शिक्षाओं पर आधारित होते हैं (रोमियों 2:8)।

हालांकि परमेश्वर के विशेष प्रकाशन अर्थात पुराने नियम में प्रगट किया गया प्रकाशन परमेश्वर की सृष्टि में प्रगट किये गये प्रकाशन से बढ़कर है (रोमियों 1:18),यहूदियों और यूनानियों के बीच दुष्टों में एक ही बात समान है कि वे दोनो ही सत्य को अस्वीकार कर देते हैं। "सत्य" स्वयं प्रभु यीशु मसीह (यूहन्ना 14:6), मसीह यीशु की शिक्षा (यूहन्ना 8:31-32) वास्तविकता अर्थात यीशु मसीह द्वारा स्थापित किया गया उद्धार (बजाय उसकी छाया के) और प्रभु के वचन (बाइबल में) है (यूहन्ना 17:17)।

यह स्पष्ट है कि "7 पद में पाये जाने वाले भले कार्य वे काम नहीं है जो "आम लोगों की नज़रों में अच्छे हैं", परन्तु ये ऐसे काम हैं जो "परमेश्वर की दृष्टि में भले हैं", क्योंकि वे काम पूरी तरह से सत्य पर अर्थात परमेश्वर के प्रगट प्रकाशन पर आधारित है जो मसीह और बाइबल में पाये जाते हैं। सत्य सुसमाचार और वही मसीही विश्वास और अभ्यास की वे शिक्षाएं हैं जो बाइबल में सिखाई जाती हैं। भले कामों में यीशु मसीह में विश्वास शामिल होना चाहिए(यूहन्ना 6:28-29)!

बाइबल स्पष्ट रूप से बताई है कि बिना यीशु मसीह के परमेश्वर की दृष्टि में "भले काम" करना नामुमकिन है। यूहन्ना 14:6 में लिखा है कि सारे संसार या इतिहास में कोई भी जन बिना यीशु मसीह के पिता के पास तक नहीं पहुंच सकता। प्रेरितो ंके काम 4:12 में लिखा है कि आकाश के नीचे और धरती के ऊपर कोई भी ऐसा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा मनुष्य उद्धार पा सके। और यूहन्ना 15:5 हमें सिखाता है कि यीशु मसीह के बिना मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है, इसका अर्थ है कि वह कोई भला कार्य या कोई ऐसा काम नहीं कर सकता है जिसकी परमेश्वर की दृष्टि में कोई कीमत है।

परमेश्वर न्याय के दिन में किसी का पक्षपात नहीं करते हैं। न तो व्यवस्था और न ही सुसमाचार उसके अन्तिम न्याय का मानका होगा, वरन मनुष्य के कामों के अनुसार ही उसका न्याय होगा! मनुष्य का न्याय उसके द्वारा जीवन बिताये गये तरीके, उसके कामों के आधार पर और इस आधार पर होगा कि उसने सुसमाचार के कम या ज्यादा ज्ञान के साथ किन कामों को करने से नज़रअंदाज किया। परमेश्वर यहूदिया का भी न्याय उसी पैमाने से करेगा जिससे वह अन्यजातियों को न्याय करेगा।

निष्कर्ष। 'भलाई' करने वाले लोग ही केवल यीशु मसीह में विश्वास करने वाले हो सकते हैं। केवल मसीही लोग ही वे काम करते हैं जो बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में अच्छे होते हैं। जो भला काम वे करते हैं वह यह है कि वे सबसे ऊपर बाइबल में पाये जाने वाले परमेश्वर के राज्य के बारे में सोचते हैं जो बाइबल के परमेश्वरे की दृष्टि में भला है (मत्ती 6:33)। जो काम वे करते हैं वे मनुष्यों की दृष्टि में या अपनी व्यक्तिगत धार्मिकता के निमित्त भले काम नहीं है, परन्तु वास्तविकता यह है कि उन्होंने यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार किया है और उसके साथ साथ उन्होंने धार्मिकता कमाई है(मत्ती 10:18; यूहन्ना 6:28-29)। इसलिए "अनन्त जीवन" न तो विश्वासी के द्वारा कमाया जाता है और न ही वे उसके हकदार हैं, परन्तु उन्हें वह यीशु मसीह के द्वारा दिया गया है। अन्य धर्मों के अविश्वासी या विश्वासी केवल अपने कामों के आधार पर मुक्ति नहीं पा सकते, क्योंकि उनके भले कामों का आधार बाइबल में पायी जाने वाली शिक्षाओं पर आधारित नहीं है। उनके भले काम उनके अपने विचारों या उनके धार्मिक गुरूओं (बाबाओं, पुजारियों,

स्वामियों, गुरूओं, पासबानों और मुल्लाओं इत्यादि) की बातों पर आधारित होते हैं। मनुष्यों की दृष्टि में दिखने वाले ये भले काम परमेश्वर के मांग या उसकी सिद्धता के सामने कम पड़ते हैं।

2:12क, 14-15

<u>प्रश्न 3. अन्यजातियों का न्यान करने के लिए परमेश्वर का मानक क्या है?</u>

(1) अन्यजातियां परमेश्वर के विशेष प्रकाशन से बाहर हैं,

और उन्होंने सुसमाचार नहीं सुना है।

ध्यान दें। रोमियों 2:12ख में लिखा है, "जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नष्ट भी हो जाएंगे"।

रोमियों 2:14 और 15 में न्याय के दिन अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के न्याय के मानक का विस्तार पूर्वक वर्ण करते हैं। यह वर्णन एक प्रश्न का उत्तर है, " यदि अन्यजातियों ने व्यवस्था को सुना ही नहीं है तो अन्यजातियों को "पापी" कैसे कहा जा सकता है?" जिसका जवाब यह है कि हालांकि अन्यजातियों को पास लिखित व्यवस्था नहीं है(अर्थात पुराने और नये नियम का प्रकाशन),लेकिन वे अपने मन और विवेक में लिखी हुई व्यवस्था के अनुसार काम करते हैं और वह उन्हें दोषी ठहराती है। अन्यजातियां दो बातों से साबित करती हैं कि उनके पास परमेश्वर का नैतिक ज्ञान है।

(2) अन्यजातियां स्वाभाविक तौर पर ही परमेश्वर की व्यवस्था की मांग को पूरा कर देते हैं।

उदारहरण के तौर पर, अन्यजातियां व्यवस्था में ठहरायी गयी रीतियों का पालन करते, विवाह करते और बच्चे जनते हैं, वे लोगों की सहायता करते और स्वभाविक प्रेम दिखात हैं, वे गरीबों और बीमारों की देखभाल करते हैं, और अनेको धार्मिक काम करते जिन्हें परमेश्वर की प्रगट व्यवस्था के आधार पर करना जरूरी है।

वे "स्वभाव से" ही इन बातों को करते हैं, इसका मतलब है कि, उनके भीतर कोई अलग स्वाभाविक रूची उत्पन्न होती है, जो उन्हें कुछ काम करने के लिए मजबूर करती हैं। यह तथ्य कि अन्यजातियां स्वभाव ही से व्यवस्था के कामों को पूरा करते हैं, इस बात को साबित करता है कि, "वे अपने आप के लिए स्वयं व्यवस्था हैं", अर्थात वे खुद ऐसे नियमों की पुस्तक हैं जो अपने लिए परमेश्वर की व्यवस्था को प्रगट करते हैं। उनके कई काम इस बात को प्रगट करते हैं कि परमेश्वर के नैतिक नियमों की मांग उनके मानवीय स्वभाव के विधान में लिखें हुए हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि ये "व्यवस्था"(जिसके अन्तर्गत आदि से ही सारी मांगें उनके स्वाभाविक विधान में लिखी हुई हैं) परमेश्वर की उस व्यवस्था से अलग नहीं है जिन्हें परमेश्वर ने मूसा के द्वारा यहूदियों पर प्रगट किया था।

(3) अन्याजियों का विवेक, व्यवस्था की मांगों के उस ज्ञान के आधार पर कार्य करता है

जो उनके हृदयों पर लिखी हुई है।

"विवेक" मनुष्य की आत्मा का एक काम है और किस भी विषय या वस्तु में भेद परखता और न्याय करता है। विवेक एक भीतरी न्यायी या भीतरी दर्पण के समान कार्य करता है, और वह चाहता है कि मानव उन्हीं कामों को करे जो उनके हृदय पर लिखी व्यवस्था मांग करती है। मनुष्य के विवेक के विचार कई बार दोष लगाते हैं और कई बार वह मनुष्य के आचरण को निर्दोष ठहराते हैं।

(4) अन्यजातियों में के जो लोग बिना व्यवस्था (अर्थात, परमेश्वर के विशेष प्रकाशन) के पाप करते हैं, वे परमेश्वर की व्यवस्था(परमेश्वर के विशेष प्रकाशन) के बिना ही दण्ड पाएगे।

अन्यजातियों, में से जिन लोगों ने परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के बारे में नहीं सुना है, वे निर्दोष होने की गुहार नहीं लगा सकते, क्योंकि परमेश्वर के ज्ञान की सामान्य व्यवस्था अर्थात नियम उनके हृदयों में लिखे हुए हैं। उनका विवेक उनमें एक वकील के समान का करता और व्यवस्था को पूरा न करने पर उन्हें दोषी और व्यवस्था का पालन करने पर उनका बचाव करता है।

इसके अलावा सभी अन्यजातियों में से लोगों ने पाप किया और है और वे परमेश्वर की महिमा से रहित हो गये हैं(रोमियों 3:10-12,23)। उनके पाप के कारण वे परमेश्वर की नज़रों में दोषी हैं और परमेश्वर उनका न्याय करेगें और उन्हें दण्ड भी देगें। लेकिन अन्यातियों के परमेश्वर द्वारा प्रगट विशेष प्रकाशन से अनजान होने के कारण, परमेश्वर उनका न्याय अपने सामान्य प्रकाशन के आधार पर ही करेगेंः अर्थात परमेश्वर के बारे में उनके ज्ञान (जो आदि से ही संचालन करता है) और परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के ज्ञान (जो उनके हृदयों पर लिखी व्यवस्था अनुसार उनका संचालन करता है)। और परमेश्वर उनका न्याय उनके उन कामों का आधार पर करेगें जो उन्होंने परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन के प्रकाश में किये हैं, जो उनमें पाये जाते हैं। उनका न्याय किसी भी ऐसी व्यवस्था के आधार पर नहीं होगा जिससे वे अनजान हों।

सदोम, अमोरा, सिदोन और सोर जैसे दृष्ट और ईश्वर रहित लोगों के पास नए या पुराने नियम का प्रकाशन नहीं थी। इसलिए अंतिम न्याय का दिन उनके लिए यीशु मसीह के समय के यहूदियों की अपेक्षा अधिक सहने के योग्य होगा क्योंकि उनके पास पुराने नियम का प्रकाशन (व्यवस्था) था और उन्होंने नए नियम का सुमाचार भी सुना था (मत्ती 10:15; 11:20-24)।

अन्यजातियों का *न्याय* परमेश्वर के विशेष प्रकाशन (पुराने नियम की व्यवस्था और नए नियम के सुसमाचार) से अलग किया जाएगा, लेकिन वे परमेश्वर के विशेष प्रकाशन से अलग *नाश* भी होंगे! परमेश्वर ने स्वर्ग और नरक के बारे में जो आपने विशेष प्रकाशन में प्रकट किया वह अन्यजातियों पर लागू नहीं किया गया क्योंकि उनके पास परमेश्वर का विशेष प्रकाशन नहीं है। अन्यजतियों के विषय में हम केवल इतना कह सकते हैं कि परमेश्वर उनका न्याय सटिकता और निष्पक्षता के साथ करेगा। ''जो दास अपने स्वामी की इच्छा जानता था और तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, वह बहुत मार खाएगा। परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएगा। इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जाएगा" (लूका 12:47-48)। इस प्रकार, परमेश्वर का अंतिम न्याय (दंड) मनुष्य के पापों से अनुसार होगा!

परमेश्वर मसीहियों से मांग करता है कि उनकी दया उनके बलिदानों से बढ़कर हो। यीशु कहता है, "मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूँ। क्योंकि मैं धार्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।" (मत्ती 9:13)। सभी पापियों को परमेश्वर की दया की आवश्यकता है। इस प्रकार हम परमेश्वर से निम्नलिखत अपेक्षा कर सकते हैं: "परमेश्वर की दया न्याय पर जयवंत होती है" (याकूब 2:13)! कैसे, हम पर प्रकट नहीं किया गया!

2:12ख,13

प्रश्न 4. **यहूदियों का न्याय करने के लिए परमेश्वर का मापदंड क्या है?**

ध्यान दें।

(1) यहूदी परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के *अंतर्गत* थे,

लेकिन उन्होंने उसके विशेष प्रकाशन को अस्वीकार कर दिया।

(2) वे यहूदी जिन्होंने व्यवस्था (परमेश्वर का विशेष प्रकाशन) की अधीनता में

पाप किया उनका न्याय व्यवस्था (परमेश्वर का विशेष प्रकाशन) के

अनुसार किया जाएगा।

रोमियों 2:12ख कहता है, "जिन्होंने व्यवस्था पाकर (शाब्दिक रूप से: व्यवस्था में रह कर) पाप किया, उनका दंड व्यवस्था के अनुसार होगा।" पौलुस के समय में, यहूदी व्यवस्था (शाब्दिक रूप से: व्यवस्था में) के अधीन थे (यह पुराने नियम में परमेश्वर का विशेष प्रकाशन था)। उनमें से अधिकांश ने सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया था (नए नियम में परमेश्वर का विशेष प्रकाशन)। उस समय अन्यजातियों की अधिकता के विपरीत, यहूदियों ने परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की पूर्ण जानकारी होते हुए भी पाप किया। यहूदियों का न्याय परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के अनुसार किया जाएगा और इसका अर्थ है न्याय के निम्नलिखित तीन मापदंडो के अुनुसार:

- उनके काम (जीवन, कर्म, व्यवहार) *परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन* की ज्योति (सृष्ठि में, हृदय और स्वभाविक मनुष्य का विवेक) में उनका न्याय करेंगे।
- उनके काम पुराने नियम में *परमेश्वर के विशेष प्रकाशन* की ज्योति में (व्यवस्था में और भविष्द्धक्ताओं में) उनका न्याय करेंगे। वे पुराने नियम में परमेश्वर की व्यवस्था के अपराध में निश्चित रूप से दोषी ठहराए जाएंगे।
- और यदि उन्होंने सुसमाचार सुना और उसे अस्वीकार किया, उनका न्याय उनके कामों के द्वारा भी किया जाएगा (जीवन, कर्म, व्यवहार) *नए नियम में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन* की ज्योति में (सुसमाचार में जिसे उन्होंने अस्वीकार किया)। निश्चित रूप से वे अपने अविश्वास के लिए दोषी ठहराए जाएंगे (यूहन्ना 3:18,36; 2थिस्सलुनीकियों 1:8-9; इब्रानियों 4:2), परमेश्वर जो चाहता था उसे अनदेखा करने के लिए (मत्ती 25:41-46)

और उनके बहुत से पापों के लिए जो क्षमा नहीं किए गए (मत्ती 6:14; यूहन्ना 9:41; इब्रानियों 4:6)।

यहूदियों के साथ उनके पाप की प्रकृति और उनके दंड के बीच एक सटीक समानता होगी। लेकिन क्योंकि उनके पास अन्यजातियों की अपेक्षा परमेश्वर के ज्ञान और इच्छा की अधिक जानकारी थी, उनका अंतिम न्याय पाप के प्रति उनके आकर्षण के अनुसार होगा (लूका 12:47-48)।

(3) न्याय का मापदंड केवल सत्य का ज्ञान नहीं होगा, लेकिन परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के सत्य की अज्ञाकारिता भी होगा।

बहुत से यहूदियों ने सोचा कि केवल परमेश्वर की पवित्र पुस्तक (पुराने नियम के वचन, थोरा) का ज्ञान और अधिकार उन्हें धर्मी ठहराएगा। पवित्र पुस्तक को उनके बीच चूमा, आदर, संभाला, चर्चा, बहस और प्रचार किया जाता था। हर सब्त के दिन आरधनालय में वह पुस्तक पढ़ी जाती और वे सुनते थे। फिर भी जो उन्होंने सुना उस पर विश्वास नहीं किया (इब्रानियों 4:2) और जो उन्होंने सुना उसके अनुसार नहीं किया (इब्रानियों 4:6)! समान्यत यहूदियों ने पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण पहलू को अनदेखा कर दिया- उन्होंने उसके विषय पर विश्वास नहीं किया न ही उसका पालन किया! वे उसकी शिक्षाओं के अनुसार नहीं जीए! यीशु ने फरीसियों को दोषी ठहराया क्योंकि जो वे प्रचार करते थे उसे वे स्वयं नहीं करते थे (मत्ती 23:3)। यहूदियों का न्याय उनके कामों के अनुसार किया जाएगा (जीवन, कर्म, व्यवहार) केवल उनके ज्ञान के अनुसार नहीं।

जब पौलुस कहता है, ''परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुनने वाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलने वाले धर्मी ठहराए जाएंगे" (रोमियों 2:13), उसका अर्थ यह नहीं कि यहूदियों या किसी और को व्यवस्था का पालन करने के लिए धर्मी ठहराया जाएगा। वह यह नहीं मानता कि अंतिम न्याय के दिन लोगों के कामों को केवल एक पैमाने पर तौला जाएगा और लोगों को व्यवस्था का पालन करने के कारण धर्मी घोषित किया जाएगा। बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है, ''इसलिए की व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी (यूनानीः कोई भी शरीर, कोई भी मनुष्य) धर्मी नहीं ठहरेगा" (गलातियों 2:16; रोमियों 3:28)! पौलुस का अर्थ यह है कि <u>अंतिम न्याय के दिन न्याय का मापदंड यह नहीं होगा कि किसी ने पुराने नियम के विषय में कितना सुना है या जानता है, लेकिन उसने पुराने नियम के अनुसार अपने जीवन को कैसे जीया!</u> व्यवस्था धर्मी ठहराने का माध्यम या मापदंड नहीं है, लेकिन यह न्याय का मापदंड है!

(4) उद्धार (धर्मी ठहरने) के लिए परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता

व्यवस्था का सिद्ध (100प्रतिशत) पालन करने से कम नहीं है।

रोमियों 2:13 कहता है, ''परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुनने वाले नहीं, पर व्यवस्था पर चलने वाले धर्मी ठहराए जाएंगे।" बाइबल यह नहीं सिखाती की परमेश्वर लोगों को व्यवस्था का पालन करने के लिए धर्मी (उद्धार) ठहराएगा, लेकिन यह अवश्य सिखाती है कि परमेश्वर लोगों का न्याय उस व्यवस्था के अनुसार करेगा जो उनके पास है। परमेश्वर की व्यवस्था (विशेष प्रकाशन) लैव्यव्यवस्था 18:5 में कहती है, ''जो मनुष्य उनको मानें (परमेश्वर के नियम और व्यवस्था) वह उनके कारण जीवित रहेगा"। पुरान नियम (लैव्यव्यवस्था18:5; यहेजकेल 20:11) और नया नियम

(रोमियों 2:7; 10:5; गलातियों 3:12) दोनों ही यह सिखाते हैं कि यदि कोई मनुष्य परमेश्वर के नियमों और व्यवस्था को पूर्णरूप से (100प्रतिशत) पालन करे, तब वह परमेश्वर के द्वारा धर्मी (उद्धार) ठहराया जाएगा। हाँलाकि मनुष्य के पाप में गिरने के बाद व्यवस्था का पालन करने के द्वारा धर्मी (उद्धार) ठहरना सम्भव न रहा!

(5) पृथ्वी पर या मानव इतिहास में कोई भी मनुष्य योग्य नहीं ठहरा,

क्योंकि कोई भी व्यवस्था का पालन पूर्ण रूप से (100प्रतिशत) नहीं कर सकता।

पुरान नियम (व्यवस्थाविवरण 27:26) और नया नियम (गलातियों 3:10; याकूब 2:10) दानों ही यह सिखाते हैं कि जो भी लोग व्यवस्था के द्वारा उद्धार पाना या धर्मी ठहरना चाहते हैं, वे व्यवस्था का सिद्धता से (100प्रतिशत) पालन करने के लिए मजबूर हैं। याकूब 2:10 कहता है, "जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है *परन्तु एक ही बात में* चूक जाए तो वह सब बतों में दोषी ठहर चुका।" और गलातियों 3:10 कहता है, "इसलिए जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, 'जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई *बातों के करने में स्थिर* नहीं रहता, वह शापित है'।" जितने भी (मानववादी और धार्मिक) लोग व्यवस्था के कामों से धर्मी (उद्धार) ठरहना चाहते है (बिना इसे महसूस किए) वें सब परमेश्वर के शाप के अधीन हैं क्योंकि एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं (यीशु मसीह को छोड़कर) जिसने व्यवस्था को पूर्ण रूप से (100प्रतिशत) या सिद्धता से पूरा किया हो या पूरा कर सकता हो! रोमियों 3:10 सिखाता है, "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं!" कोई भी व्यवस्था के द्वारा धर्मी नहीं ठहरेगा या स्वर्ग लोक जाएगा![1]

निष्कर्ष। रोमियों 2:13 यह नहीं सिखाता कि कुछ लोगों होंगे जो व्यवस्था के कामों के कारण धर्मी ठहराए जाएंगे या उद्धार प्राप्त करेंगे।

2:12ख,13

प्रश्न 5. **मसीहियों के लिए परमेश्वर के न्याय का मापदंड क्या है?**

ध्यान दें।

(1) मसीही लोग परमेश्र के विशेष प्रकाशन के अनंद हैं

और उन्होंने सुसमाचार को स्वीकार किया है।

(2) जिन मसीही लोगों ने परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की अधीनता में पाप

किया उनका न्याय परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के अनुसार होगा।

मसीही लोगों का न्याय भी परमेश्वर के सामान्य और विशेष प्रकाशन के अनुसार किया जाएगा और इसका अर्थ है अंतिम न्याय के दिन निम्नलिखित दो मापदंडो के अनुसारः

ईमानदार मसीहियों का न्याय उनके यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा किया जाएगा। मसीहियों को पहले ही परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा यीशु मसीह पर विश्वास करने और उसके द्वारा उनके स्थान पर कमाई गई धार्मिकता के कारण धर्मी (उद्धार) ठहराया गया है। मसीही कभी भी नरक की अनंत आग के भागी (नाष) नहीं होंगे (यूहन्ना 5:24, रोमियों 8:1), बल्कि अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर के द्वारा सार्वजनिक रूप से दोषमुक्त ठहराए गाएंगे (मत्ती 25:31-34)।

मसीही लोग मसीह के साथ नई पृथ्वी के वारिस होंगे, क्योंकि उनके नाम मेम्नें की जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं (प्रकाशितवाक्य 10:20; 20:15)। जो लोग यीशु मसीह पर और उसके पूरे किए गए उद्धार के कार्य पर ईमानदारी से विश्वास करते हैं उनके लिए वह (यीशु मसीह) प्रायश्चित बना। वह उनके भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल के पापों के लिए प्रायश्चित बना। इब्रानियों 8:12 में परमेश्वर कहते हैं, ''क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावंत रहूँगा और उनके पापों को फिर स्मरण न करूँगा।"

ईमानदार मसीहियों के कामों (जीवन, कर्म, व्यवहार) को बाइबल में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की ज्योति में परखा जाएगा। यह न्याय उनके उद्धार (धर्मी ठहरने) को नहीं वरन् उनके पुरस्कार को निर्धारित करेगा (1कुरिन्थियों 3:12-15)। मसीहियों का न्याय इस आधार पर किया जाएगा कि उन्होंने अपना धर्मी जीवन (उद्धार पाया हुआ) किसी प्रकार जीया। उनके कामों (जीवन, कर्म, व्यवहार) को बाइबल की नैतिक व्यवस्था और बाइबल में यीशु मसीह की शिक्षा के आधार पर परखा जाएगा। उनके कामों को *उनके विश्वास की गुणवत्ता* और *उद्धार के फल को परखने के लिए जांचा जाएगा।*

नाममात्र मसीही (जो केवल इसलिए ''मसीही" हैं क्योंकि उनकी संस्कृति मसीही है) अपने अविश्वास के लिए (यूहन्ना 3:18,36; 2थिस्सलुनीकियों 1:8-9), परमेश्वर की दृष्टि में जो करना आवश्यक है उसे अनदेखा करने (मत्ती 25:41-46) और उनके बहुत से पापों के लिए जो क्षमा नहीं किए गए (मत्ती 6:14, यूहन्ना 9:41) निश्चित रूप से दोषी (नाष) ठहराए जाएंगे।

(3) मसीहियों को प्रभु यीशु मसीह पर उनके विश्वास और उस धार्मिकता के कारण धर्मी ठहराया गया है जो यीशु मसीह ने उनके स्थान पर उनके लिए प्राप्त की।

कोई भी मसीही व्यवस्था के कमों की आज्ञाकारिता या उसके तथाकथित धार्मिक कामों (सुसमाचारीय आज्ञाकारिता) से धर्मी नहीं ठहराया जाएगा! उद्धार के लिए परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता व्यवस्था को पूर्ण रूप से (100 प्रतिशत) पूरा करने से कुछ कम नहीं है, जैसा कि एक व्यक्ति

---

[1] यहूदियों, मसीहियों और मुसलमानों के लिए इसके दूरगामी परिणाम हैं, जो व्यवस्था (थोरा, दस आज्ञाएँ और शरीयत) को बनाए रखने के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हैं!

(100 प्रतिशत) वैसे ही धर्मी और पवित्र है जैसे की परमेश्वर और उसके सारे पापों को पूर्णरूप से दंडित किया गया है (100 प्रतिशत) प्रायश्चित के सिद्ध बलिदान के द्वारा! यदि ऐसे मसीही होते जो

व्यवस्था का पालन पूर्णरूप से या सिद्धता से करते तो वे परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराए जाते। लेकिन कोई भी इसके योग्य नहीं, क्योंकि कोई भी व्यवस्था का पालन सिद्धता से नहीं कर सकता (रोमियों 3:10, 23; गलातियों 3:10; याकूब 2:10)।

हाँलाकि, मसीहियों को धर्मी (उद्धार) ठहराया गया है, उनके अपने कामों (हमेशा अधूरे) के अनुसार नहीं, लेकिन *परमेश्वर के* द्वारा यीशु मसीह के मारे जाने, गाड़े जाने और फिर से जी उठने के उद्धार के (100 प्रतिशत) काम के *आधार पर।* उनके उद्धार का (धर्मी ठहरने) का आधार उनके काम नहीं है लेकिन वह है जो यीशु मसीह उनके लिए पहले ही कर चुका है! और मसीहियों ने धार्मिकता (उद्धार) को प्राप्त किया है (जो यीशु मसीह की सिद्ध और 100प्रतिशत पूर्ण धार्मिकता है) (1कुरिन्थियों 1:30) यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा। उनका विश्वास उनके उद्धार का आधार नहीं है वरन् वह माध्यम है जिसके द्वारा उन्होंने (100 प्रतिशत) सिद्ध और पूर्ण धार्मिकता प्राप्त की है जिसे मसीह ने कमाया है और परमेश्वर उसकी मांग करता है।

(4) न्याय का मापदण्ड केवल ऐतिहासिक विश्वास नहीं होगा,

लेकिन ऐसा विश्वास जो फलस्वरूप कामों को उत्पन्न करता है।

अंतिम न्याय के दिन मसीहियों के लिए न्याय का मापदंड यह नहीं होगा की उन्होंने नए या पुराने नियम के विषय में कितना अधिक सुना है या कितना अधिकत जानते हैं, लेकिन वे बाइबल के आधार पर किस प्रकार जीए।

(5) मसीहियों को यीशु मसीह की सिद्ध धार्मिकता के आधार पर

धर्मी (उद्धार) ठहराया गया है।

मसीहियों को कभी भी ऐसे विश्वास के आधार पर धर्मी नहीं ठहराया जाएगा जो कि ऐतिहासिक विश्वास है, यह बाइबल के सत्य पर बिना आज्ञाकारिता के विश्वास करना है (विशेष काम जो उद्धार से संबंधित हैं) (याकूब 2:14-26)। परमेश्वर का अंतिम न्याय केवल विश्वास मात्र का सम्मान नहीं करेगा या केवल सारांश पर विश्वास करने वाले धर्मी नहीं ठहरेगें। वह विश्साव और धर्मी का सम्मान करेगा उस विश्वास के द्वारा जो सभी तत्वों के साथ संबंधित है और जिसमें धर्मी (उद्धार पाए) स्थिर हैं। उद्धार में, परमेश्वर का अनुग्रह शायद इस बात पर उस हद तक जोर न देता हो कि व्यवहारिक मसीही जीवन अलग है। <u>विश्वासियों को केवल बुराई और अधार्मिकता *से उद्धार* नहीं मिलता लेकिन हर प्रकार से पवित्र और धर्मी जीवन *के लिए उद्धार* मिलता है। उन्हें केवल एक व्यर्थ और खाली जीवन से उद्धार नहीं मिलता लेकिन एक अर्थपूर्ण और भले कामों में फलवंत जीवन *के लिए उद्धार* मिलता है।</u>

(6) मसीहियों को पुरस्कृत किया जाता है

मसीह की धार्मिकता के आधार पर।

मसीहियों को भी पुरस्कृत किया जाएगा, <u>उनके स्वयं के कामों के आधार पर नहीं</u> (जो हमेशा अधूरे हैं), लेकिन यीशु मसीह के द्वारा पूरे किए गए उद्धार के काम के आधार पर (जो हमेशा से

पूर्णरूप से सिद्ध है)। उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा उनके उन भले कामों के लिए नहीं जो उन्होंने किए, बल्कि केवल इस कारण से कि परमेश्वर यीशु मसीह में उनके प्रति अनुग्रहकारी रहा है।

हाँलाकि, उन्हें अपने स्वयं के कार्यों के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। उनके भले काम इस बात का स्पष्ट प्रमाण होंगे कि वे उन लोगों में से है जिनका उद्धार परमेश्वर ने विश्वास के द्वारा अनुग्रह से किया है (इफिसियों 2:8-10)। उनके काम उनके पुरस्कार का मापदंड होंगे (मत्ती 25:20-21; 1कुरिन्थियों 3:14-15) और इसी प्रकार मसीहियों के मूल्यांकन के लिए परमेश्वर का मापदंड होग।

(7) अच्छे कामों के लिए परमेश्वर का मापदंड नैतिक व्यवस्था है।

कामों के लिए मापदंड दस आज्ञाएँ और बाइबल कि अन्य नैतिक शिक्षाएँ है। मसीहियों के लिए परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था कभी भी रद्द नहीं की गई। यद्पि मसीही "व्यवस्था के अधीन" नहीं रहें (रोमियों 6:14), फिर भी वे परमेश्वर व्यवस्था से स्वतंत्र नहीं, लेकिन "मसीह की व्यवस्था" के अधीन है (जैसे, परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना) (रोमियों 13:8-10; मरकुस 12:30-31; 1कुरिन्थियों 9:21)। बाइबल की नैतिक व्यवस्था धर्मी ठहरने के लिए माध्यम नहीं है, लेकिन यह दिशानिर्देश है कि मसीहियों को धर्मी ठहराए हुए लोग (मसीही) होने के नाते अपने जीवन को कैसे जीना चाहिए (निर्गमन 20:1-2)।

निष्कर्ष। जब पौलुस कहता है, "परमेश्वर सबको उनके कार्यों के अनुसार प्रतिफल देगा" (रोमियों 2:6), उसमें मसीही भी शामिल हैं। इसलिए विश्वास के द्वारा अनुग्रह से मिले उद्धार के *प्रमाण स्वरूप* मसीहियों के भले काम, मसीहियों का अंकलन करने के लिए परमेश्वर का मापदंड होंगे। बाइबल में उद्धार के सिंद्धात में मसीहियों के भले कामों का एक महत्वपूर्ण (अनिवार्य) स्थान है (मत्ती 5:16; गलातियों 6:9-10; इफिसियों 2:8-10; तीतुस 2:14)।

2:16

प्रश्न 6. **अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर लोगों का न्याय कैसे करेगा?**

ध्यान दें।

अंतिम न्याय का दिन सुसमाचार की घोषणा करने का एक अनिवार्य भाग है। अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर हर एक व्यक्ति का न्याय करेंगे जो इस पृथ्वी पर रहे। वह यीशु मसीह के माध्यम से लोगों के रहस्यों का न्याय करेंगे, जैसा की उसका सुसमाचार घोषित करता है।

(1) लोगों का न्याय उनके सभी कार्यों के अनुसार आंका जाएगा।

केवल लोगों के बाहरी कामों के अनुसार नहीं, लेकिन लोगों के छिपे हुए गुप्त रहस्यों का भी न्याय किया जाएगा (सभोपदेशक 12:14)। यह विशेष रूप से उन अविश्वासी यहूदियों की ओर निर्देशित है जो *बाहरी व्यवहार को सुधारने* में विशिष्ट थे। रोमियों 2 अध्याय में, पौलुस बार बार यहूदी धारणा के दोष को उजागर करता है। वह यहूदियों की बाह्य कर्मकांडवाद की मूर्खता को भी उजागर करता है। परमेश्वर का न्याय सत्य के अनुसार होगा, अर्थात लोगों के वास्तविक विचार, उद्देश्य, दृष्टिकोण

और कार्यों के अनुसार। इसमें निश्चित रूप से सभी गुप्त और शर्मनाक कार्य शामिल होंगे (2कुरिन्थियों 4:2; इफिसियों 5:12)।

(2) लोगों का न्याय उस सुसमाचार के अनुसार किया जाएगा जिसकी घोषणा पौलुस ने की।

इसका अर्थ यह नहीं हो सकता की सुसमाचार परमेश्वर के न्याय का सार्वभौमिक मापदंड होगा।

व्यवस्था। पुराने नियम में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के भाग के रूप में व्यवस्था परमेश्वर के सार्वभौमिक न्याय का मापदंड नहीं है (रोमियों 2:12)।

सुसमाचार। साथ ही सुसमाचार नए नियम में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के एक भाग के रूप में परमेश्वर के सर्वभौमिक न्याय का मापदंड नहीं हो सकता।

कार्य। परमेश्वर के न्याय का सर्वभौमिक मापदंड "लोगों के काम" हैं, यह लोगों को प्राप्त परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की ज्योति (व्यवस्था और सुसमाचार) में उन्होंने किस प्रकार अपने जीवन को जीया, उसके अनुसार होगा।

वचन 16 में पौलुस के कहने का अर्थ है कि सुसमाचार केवल यीशु मसीह के द्वारा उद्धार का प्रचार नहीं करता, लेकिन यीशु मसीह के द्वारा अंतिम न्याय के दिन लोगों के सभी भले और बुरे कामों के न्याय का भी प्रचार करता है (मत्ती 25:31-46; यूहन्ना 5:22,27-29)। सभी लोगों और उनके सभी छिपे रहस्यों के बारे में परमेश्वर के धर्मी न्याय की घोषणा सुसमाचार की एक उत्कृष्ट विशेषता है।

परमेश्वर का अनुग्रह परमेश्वर के न्याय से बचने की दवा नहीं है!

परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के सुसमाचार की घोषणा में

परमेश्वर के क्रोध और न्याय की घोषणा भी शामिल होनी चाहिए!

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 2:1-16 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 2:1-16 से संभावित लागूकरणों के उदाहरण।

2:1 जब आप स्वयं वही गलत काम करें तो दूसरो पर फैसला देने से सावधान रहें।

2:3 जब आप गलत करते हैं तो आप परमेश्वर के न्याय से बच नहीं सकते।

2:4 दुष्ट लोगों के प्रति दयालु, सहनशील और धीरजवंत रहें, ताकि उन्हें पश्च्याताप का अवसर मिल सके।

2:5 जब आप पश्च्याताप नहीं करते तो आप अपने खिलाफ परमेश्वर के क्रोध को जमा करते हैं।

2:6 आप जो करते हैं (आप कैसे जीते हैं) उस पर ध्यान दें, क्योंकि परमेश्वर उसी आधार पर आपका न्याय करेंगे।

2:7 भलाई करने में दृढ़ रहें, क्योंकि आप नए भविष्य में आशा रखते हैं।

2:8 बाइबल में सत्य को कभी अस्वीकार न करें।

2:11 कभी पक्षपात न करें!

2:12 मसीह आपका न्याय बाइबल और आपके हृदय में उसके ज्ञान के प्रकाशन के अनुसार करेंगे।

2:13 मसीह आपका न्याय, आप कैसे जीए और आपने उनके प्रकाशन का कैसे पालन किया, इस आधार पर करेंगे।

2. रोमियों 2:1-16 के आधार पर व्यक्तिगत लागूकरण के उदाहरण।

मैं यह याद रखना चाहता हूँ कि परमेश्वर एक मसीही होने के नाते मेरे कार्यों के अनुसार मेरा न्याय करेंगे। वह मेरा न्याय यह पता लगाने के लिए नहीं करेंगे कि क्या उन्हें मुझे धर्मी ठहराना चाहिए, लेकिन मेरे विश्वास की गुणवत्ता और उद्धार के फल को परखने के लिए।

मुझे भलाई करने के लिए दृढ़ रहना चाहिए क्योंकि मेरे पास भविष्य की एक वास्तविक आशा है!

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 2:1-16 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 2:1-16 का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यहोशू 1,6** और **न्यायियों 2,7** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ। याद करना। (1) **रोमियों 1:16।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों को रोज दोहराएं।
4. शिक्षा देना। मत्ती 13:24-30 और 36-43 में निहित **"गेहूं के बीच जंगली बीज"** की तैयारी करें।
5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
6. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 7

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश करने के विषय में इस पाठ को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **यहोशू 1, 6 और न्यायियों 2, 7**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (यहोशू 1, 6 , न्यायियों 2 और 7) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(4) लूका 9:62**

दो-दो करके ***समीक्षा करें।***

(1) **रोमियों 1:16।** क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टान्त)*** **गेहूँ के बीच जँगली पौधे**

मत्ती 13:24-30, 36-43 में "गेहूँ के बीच जँगली पौधे" का दृष्टांत निम्न के विषय बताता है परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोग

"दृष्टांत" एक स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी होती है। यह एक सत्य-जीवन की कहानी या चित्रण होता है जो एक आध्यात्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया जाता है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और उनके नवीकरण की आवश्यकता के साथसामना करने के लिए सामान्य स्थान और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया।

हम दृष्टांतों के अध्ययन के लिए छह दिशानिर्देशों का उपयोग करके इस दृष्टांत का अध्ययन करेंगे (देखें नियम-पुस्तक 9, पूरक 1)।

पढ़ें मत्ती 13:24-30, 36-43।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय दें। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

बीज बोनेवाला एक खेत पर बीज बोता हुआ। संसार में प्रत्येक जगह, लोग समझते हैं कि बाद में एक फसल काटने के विचार के साथ खेत पर बीज कैसे बोया जाता है। वास्तव में किसी को भी अपेक्षा नहीं होती है कि गेहूँ के बीच जँगली पौधों के बीज बोने तक एक शत्रु इतना कपटी हो सकता है! यही कारण है कि नौकरों को

यह जानकर आश्चर्य होता है कि गेहूँ के बीच बहुत सारे जँगली पौधे उग रहे थे!

जँगली पौधे। वनस्पतिशास्त्री हमें बताते हैं कि इस प्रकार के जँगली पौधों को तकनीकी शब्दावली द्वारा "लोलियम टेमुलेंटम" कहा जाता है। यह एक अप्रिय जँगली पौधा है, जो विकास के अपने प्रारंभिक चरण में गेहूँ के समान दिखता है। विकास के प्रारंभिक चरण के दौरान, दोनों जँगली पौधे और गेहूँ अभी फलक में ही होते हैं और वे एक दूसरे के इतने समान दिखते हैं कि उनके बीच अंतर करना कठिन होता है। क्योंकि मजदूर इसके बीच अंतर नहीं कर सकते हैं कि गेहूँ और जँगली पौधे कौनसे हैं, मालिक उन्हें आज्ञा देता है कि वे न जाएँ और जँगली पौधे न उखेड़ें, ताकि ऐसा न हो कि वे जँगली पौधों के साथ गेहूँ भी उखेड़ दें। जँगली पौधे इसके अलावा एक फफूंद को पोषक देते हैं जो आदमी और जानवर दोनों के लिए विषैला है। इसलिए, शत्रु का कार्य एक अवमान्यत अपराध है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जाँच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय दें। दृष्टान्त की "कहानी" के संदर्भ में "अस्त" और दृष्टान्त का "स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग" हो सकता है। दृष्टान्त का अस्त दृष्टान्त को बताने के अवसर को बता सकता है, या दृष्टान्त को बताने के समय परिस्थितियों का वर्णन कर सकता है। अस्त आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी से पहले पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी के पश्चात पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त का अस्त, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का अस्त मत्ती अध्याय 13 में निहित है।

यीशु मत्ती अध्याय 13 में आठ दृष्टान्तों को सिखाता हैः बीज बोनेवाले का दृष्टांत, गेहूँ के बीच जँगली पौधे, राई का दाना, खमीर, छिपा खजाना, बड़े मूल्य का मोती, बड़ा जाल और गृहस्थ। सभी आठ दृष्टांत परमेश्वर के राज्य से संबंधित हैं और प्रत्येक दृष्टांत परमेश्वर के राज्य के दूसरे पहलू पर जोर देता है।

इसके अलावा, बीज बोनेवाले और गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टांत के बीच एक घनिष्ठ संबंध है। उन्हें संभवतः एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध में भीड़ को बताया गया था और बाद में यीशु द्वारा केवल उसके शिष्यों को समझाया गया था।

(2) दृष्टांत की कहानी मत्ती 13:24-30 में निहित है।

(3) दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग मत्ती 13:36-43 में निहित है।

बिंदु 3 देखें: दृष्टांत के प्रासंगिक विवरण। बिंदु 6 देखें: दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं का सारांश।

"मनुष्य का पुत्र" शब्दों की व्याख्या। पृथ्वी पर यीशु के समय के दौरान, "मनुष्य का पुत्र" शब्द यहूदियों के बीच मसीहा के लिए वर्तमान पदनाम नहीं था। ये शब्द दानिय्येल 7:13-14 में उत्पन्न हुए, जो कहता है, "और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था।" उसने पिता परमेश्वर से पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने के लिए अधिकार, महिमा और प्रभु सत्ता प्राप्त की। उस भविष्यद्वाणी के दर्शन में, सभी लोगों, राष्ट्रों और हर भाषा के लोगों को उसकी आराधना करनी थी। उसका राज्य अनंतकाल का राज्य होगा जो कभी नहीं टलेगा और जो कभी नष्ट नहीं होगा, जैसे पृथ्वी पर अन्य राज्यों के साथ होता है। यीशु ने स्वयं को नामित करने हेतु मसीहा के लिए पुराने नियम के इन शब्दों को अपनाया। "मनुष्य का पुत्र" शब्दों का प्रयोग नए नियम में हमेशा यीशु मसीह के लिए किया जाता है और यह उसके अपमान की स्थिति और उसके उत्थान की स्थिति दोनों को इंगित करता है।

यीशु का अपमान। नया नियम बताता है कि "मनुष्य के पुत्र" का पृथ्वी पर कोई स्थायी निवास नहीं था (मत्ती 8:20)। वह कड़वी पीड़ा के अधीन होने वाला था (मत्ती 17:12)। उसे धोखा दिया जाएगा, मौत के घाट उतार दिया जाएगा और दफन किया जाएगा (मत्ती 26:24; 12:40)। परन्तु उसके अपमान के दौरान भी, मनुष्य का पुत्र निश्चित रूप से केवल एक साधारण आदमी नहीं था। वह सब्त का *प्रभु* था (मत्ती 12:8)। उसके पास पापों को क्षमा करने का *अधिकार* था (मत्ती 9:6)। वह एक *निश्चित उद्देश्य* के साथ इस दुनिया में आया, अर्थात् कई लोगों के बदले फिरौती के रूप में अपने जीवन को देने के लिए (मत्ती 20:28) और वह खोए हुए को ढूँढने और बचाने के लिए आया (लूका 19:10)।

यीशु का उत्थान। नया नियम सिखाता है कि "मनुष्य का पुत्र" मृतकों से फिर से जी उठेगा (मत्ती 17:9)। उसके मानव स्वभाव में, महिमा और कई स्वर्गदूतों के साथ, वह पृथ्वी को छोड़ देगा और स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस जाएगा (प्रेरितों के काम 1:9-11; मत्ती 16:27)। वह सभी लोगों के न्यायधीश के रूप में अपनी महिमा के

सिंहासन पर बैठेगा (मत्ती 25:31)।

इस प्रकार, "मनुष्य का पुत्र" एक ही समय में "दुखों का पुरुष" (यशायाह 53:3) और "महिमा का प्रभु" (1 कुरिन्थियों 2:8) है। यहूदियों से बातचीत में इस उपाधि का उपयोग करके, यीशु धीरे-धीरे स्वयं को प्रकट करने में सक्षम था, एकदम से पूरा नहीं। यदि उसने स्वयं को "मसीहा" कहा होता, तो उसकी सेवकाई अचानक रुक सकती थी। इसीलिए लोग धीरे-धीरे पूछने लगे, "यह मनुष्य का पुत्र कौन है?" (यूहन्ना 12:34)। इन शब्दों को अपने स्व-पदनाम के रूप में उपयोग करके, यीशु ने जोर देकर बताया कि वह राष्ट्रवादी मसीहा नहीं था, जिसकी यहूदियों को अपेक्षा थी, परन्तु पूर्ण संसार का उद्धारकर्ता (यूहन्ना 4:42; 1 तीमुथियुस 4:10)।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय दें। यीशु ने कोई भी आध्यात्मिक महत्व रखने के लिए दृष्टान्त की कहानी में प्रत्येक विवरण

देने का आशय नहीं किया था। दृष्टांत की कहानी में प्रासंगिक विवरण वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वाधीन आध्यात्मिक महत्व का वर्णन नहीं करना चाहिए।

खोज और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी के विवरणों में से कौन से वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक हैं ?

ध्यान दें।

स्वामी । वह स्पष्ट रूप से एक धनी किसान है, जो अपने खेत में काम करने के लिए कई नौकरों को काम पर लगाता है, अर्थात् बीज बोने और पौधों की देखभाल करने के लिए जब तक वे फसल के लिए तैयार नहीं हो जाते। प्रत्यक्ष स्पष्ट रूप से स्वामी ने फसल के समय अन्य फसल काटनेवाले विशेषज्ञ लगाए। स्पष्टीकरण हमें सीधा नहीं बताता है कि स्वामी किसको दर्शाता है। इसलिए यह इस दृष्टान्त में एक प्रासंगिक विवरण नहीं है। हालांकि, कहानी में, स्वामी अपने खेत में अच्छा बीज बोता है और फसल काटने के लिए अपने फसल काटनेवालों को भेजता है। और स्पष्टीकरण में, यीशु मसीह बोनेवाला और वह एक है, जो अपने स्वर्गदूतों को फसल काटने के लिए भेजता है। इस प्रकार, स्वामी एक ही समय में बोनेवाला है। खेत उसका राज्य है और वह वर्तमान समय में बुआई का निर्देशन करता है और साथ ही साथ अपने दूसरे आगमन पर फसल कटने का भी (सीएफ. मत्ती 16:18, "मैं अपनी कलीसिया का निर्माण करता हूँ!")।

बीज बोनेवाला। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:37)। अपने स्पष्टीकरण में, यीशु कहता है कि वह स्वयं बोनेवाला है।

शत्रु। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:39)। अपने स्पष्टीकरण में, यीशु कहता है कि शत्रु *शैतान* है। पहले से किए गए काम की परवाह किए बिना, यह शत्रु गेहूँ *के बीच* जँगली पौधे बोता है। यह उन लोगों के बीच विनाश का एक जानबूझकर किया कार्य है जो यीशु मसीह के कार्य में लगे हैं।

दृष्टांत शैतान को रात के समय अपने कार्य करने का वर्णन करता है जब "अन्य सब सो रहे होते हैं"। क्योंकि यीशु इस विस्तार की व्याख्या नहीं करते हैं, यह केवल कहानी का एक हिस्सा है, परन्तु मुख्य संदेश के लिए किसी विशिष्ट महत्व के साथ प्रासंगिक विवरण नहीं है। हालाँकि, यूहन्ना 3:19–21 में बताया गया है कि कैसे सभी लोग, जो मसीह (संसार की ज्योति) के बजाय अन्धकार से प्रेम करते हैं, ज्योति से घृणा करते हैं और इस डर से ज्योति में नहीं आएंगे कि उनके बुरे कर्म उजागर हो जाएँगे।

अच्छा बीज या गेहूँ। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:38)। स्पष्टीकरण में, अच्छा बीज "राज्य के पुत्रों" को दर्शाता है, अर्थात्, सभी वास्तविक मसीहियों का कुल योग। ये वे लोग हैं जिनमें सुसमाचार का बीज अच्छा फल लाता है (मत्ती 13:19,23) और जो यीशु मसीह को अपने जीवन के उद्धारकर्ता और राजा के रूप में मानते हैं। वे "धर्मी" हैं, जिन्हें विश्वास के द्वारा उचित ठहराया गया है (मत्ती 13:43)। मसीह के दूसरे आगमन के पश्चात, वे परमेश्वर के राज्य में सूरज के समान चमकेंगे।

जँगली पौधे। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:38)। स्पष्टीकरण में, अप्रिय जँगली पौधे "बुराई के पुत्रों" को दर्शाते हैं। वे "सभी बुरे और पाप का कारण बनने वाले काम करनेवाले" (मत्ती 13:41) हैं। जँगली पौधों में न केवल दुष्ट लोग, बल्कि दुष्ट आत्माएँ, बुरी योजनाएँ, गतिविधियाँ, कार्यक्रम और

बुरी परियोजनायें शामिल हैं, *जिन्हें वास्तविक मसीहियों के बीच बोया जाता है।* ठीक उसी प्रकार जैसे असली जँगली पौंधों में फफूंद होता है जो मनुष्य और जानवर के लिए जहरीला होता है, इसलिए ये लोग, आत्माएँ, कार्यक्रम और गतिविधियाँ वास्तविक मसीहियों को अति नुकसान और विनाश पहुँचाते हैं। उन्हें और उनकी ठोकरों को नरक में फेंक दिया जाएगा (मत्ती 13:42; सीएफ. मत्ती 25:41)।

स्वामी के नौकर। यीशु यह नहीं समझाता कि सेवक कौन हैं। फिर भी, दृष्टांत की कहानी में वे महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि स्वामी उन्हें कटाई के समय से पहले गेहूँ के बीच से जँगली पौधे उखेड़ने के लिए मना करता है। इसके बजाय, उन्हें कटनी के समय तक जँगली पौधों और गेहूँ को एक साथ बढ़ने देने की आज्ञा दी जाती है (मत्ती 13:28–30)। वे स्पष्ट रूप से पृथ्वी पर परमेश्वर के सेवकों को शामिल करते हैं। गेहूँ के बीच से जँगली पौधों को अलग करना परमेश्वर के सेवकों (जैसेः चेले, सुसमाचार प्रचारक, पासबान, उपदेशक, शिक्षक और अन्य मसीही) का काम नहीं है। उन्हें गेहूँ से जँगली पौधों को अलग करने की अनुमति नहीं है, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से कटनी के समय कटाई करनेवालों का काम है!

खेत। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:38)। स्पष्टीकरण में, खेत "संसार" को दर्शाता है। निम्नलिखित तीन तथ्यों को ध्यान में रखा जाना चाहिएः

- **प्रथम। गेहूँ के बीच जँगली पौधों को बोया जाता है।**

यीशु यह नहीं कहता है कि गेहूँ *के साथ* या *किसी अन्य खेत में* जँगली पौधे बोए गए थे, परन्तु यह कि जँगली पौधे *उसी खेत में गेहूँ के बीच बोए गए थे!* इसलिए, यीशु संसार में गैर–मसीहियों के साथ मसीहियों के मिलन के विषय में नहीं सोच रहा है। परमेश्वर के राज्य के भीतर सच्चे और झूठे मसीहियों के मिलन के विषय में सोचना अधिक स्वाभाविक है, अर्थात्, संसार में कहीं भी पाई जाने वाली मसीही कलीसिया या मसीही संगठनों और संस्थानों के भीतर। इसमें मसीही कलीसिया परिषद्, मण्डलियों, संगठनों और संस्थानों में मसीही योजनाओं, गतिविधियों और कार्यक्रमों में मसीह की सच्चाई के साथ शैतान के झूठ का एक साथ मिलन शामिल है।

- **द्वितीय। परमेश्वर के राज्य के भीतर का यह मिलन एक रहस्य है।**

मत्ती 13:11 के अनुसार, गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत "एक भेद या परमेश्वर के राज्य का" भी है, एक रहस्य (एक वास्तविकता जिसे पहले समझाया नहीं गया है) जिसे यीशु अपने शिष्यों को प्रकट कर रहा है। संसार के भीतर ईश्वरविहीन और अधर्मी गैर–मसीहियों और ईश्वरीय और धर्मी मसीही लोगों के रूप में स्पष्ट रूप से अलग–अलग समूहों के लोगों के साथ मिलने को शायद ही "परमेश्वर के राज्य का रहस्य" कहा जा सकता है (सीएफ. 1 यूहन्ना 3:4–15)। परन्तु "परमेश्वर के राज्य का रहस्य या भेद" यह तथ्य है कि परमेश्वर उन लोगों को जो केवल नाममात्र मसीही (पारंपरिक मसीही या सांस्कृतिक मसीही) हैं, एक ही मसीही मण्डलियों, संगठनों और संस्थाओं के भीतर गंभीर मसीहियों के रूप में होने और काम करने की अनुमति देता है, हम मसीहियों को हमेशा एक स्पष्ट अंतर करने में सक्षम बनाए बिना! सच्चे मसीहियों को परमेश्वर की इस व्यवस्था का सम्मान करना चाहिए, निश्चित रूप से ईश्वरीय स्थापित अनुशासन की उचित सीमाओं का ध्यान रखते हुए। परमेश्वर की यह व्यवस्था अविश्वासियों (नाममात्र मसीहियों और गैर–मसीहियों) को परमेश्वर के राज्य के भीतर मसीही संदेश सुनने और मसीही जीवन का अवलोकन करने का सबसे अच्छा अवसर देती है।

- **तृतीय। केवल अंतिम न्याय पर जँगली पौधों को गेहूँ से अलग किया जाता है।**

केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर नाममात्र मसीही (जँगली पौधे) सच्चे मसीहियों (गेहूँ) से अलग किए जाते हैं। केवल तभी यीशु मसीह बिना किसी गलती के विश्वासियों से अविश्वासियों को अलग करने के लिए अपने स्वर्गदूतों (फसल काटनेवाले) को भेजेगा (सीएफ. मत्ती 24:30-31; 25:31-33)। दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह *अपने राज्य में से* वह प्रत्येक चीज (जँगली पौधे) इकट्ठा करेगा जो लोगों को पाप की ओर आकर्षित करते हैं (ठोकरें देनेवाले) और उन सभी लोगों को जो अराजकता करते हैं। एक विशेष अर्थ में उन्हें "उसकेः राज्य में से" इकट्ठा नहीं किया जा सकता है, यदि वे पहले "उसके राज्य के भीतर" नहीं थे! हालाँकि पूर्ण संसार सभी चीजों और सभी लोगों के साथ जो उस में हैं मसीह के राज्य का एक हिस्सा है, जिस पर वह एक पूर्ण संप्रभु तरीके से शासन करता है (सीएफ. मत्ती 28:18), अविश्वासियों (चाहे नाममात्र मसीही या गैर-मसीही) और कलीसिया के बाहर सभी दुष्ट लोगों के हृदय और जीवन को यीशु मसीह की प्रभुता के अधीन नहीं देखा जाता है। सुसमाचार प्रचार और यीशु मसीह में उनके विश्वास के द्वारा उन्हें मसीह के राज्य में लाया जाता है (सीएफ. कुलुस्सियों 13:13)।

यद्यपि यह लग सकता है कि मसीही कलीसियाओं और संगठनों के भीतर नाममात्र मसीही मसीह के राज्य का हिस्सा हैं, केवल यीशु मसीह देख सकता है कि उनके हृदय और जीवन उसके संप्रभु शासन के अधीन हैं या नहीं (सीएफ. मत्ती 22:10-11,14; यूहन्ना 2:24-25)। इस प्रकार, "गेहूँ के बीच जँगली पौधों" का मिलन मसीही कलीसिया के भीतर (और न केवल संसार के भीतर) वास्तविक विश्वासियों में अविश्वासियों या दिखावटी विश्वासियों के मिलन को दर्शाता है। परमेश्वर के राज्य का वर्तमान रूप नाममात्र मसीहियों का सच्चा मसीहियों के साथ मिलन है।

फसल और फसल काटनेवाले। "फसल" और "फसल काटनेवाले" दोनों प्रासंगिक विवरण हैं (मत्ती 13:39)। स्पष्टीकरण में, फसल अंतिम समय में अंतिम न्याय को दर्शाती है और फसल काटनेवाले स्वर्गदूतों को दर्शाते हैं। कटाई का कार्य केवल यीशु मसीह का है (मत्ती 31:2; प्रकाशितवाक्य 14:14-16)। वह स्वयं अंतिम न्याय का निर्देशन करेगा। परन्तु वह अपने स्वर्गदूतों को यह जिम्मेदारी सौंपेगा (मत्ती 13:41; 24:30-31; 25:31-32)।

यह ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि जबकि "नौकर" (परमेश्वर के राज्य में सेवक) कटनी के समय से *पहले* "जँगली पौधों" और "गेहूँ" के बीच *अंतर नहीं कर सकते,* "फसल काटनेवाले" (स्वर्गदूत) कर सकते हैं! यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि जँगली पौधों और गेहूँ के बीच का अंतर केवल फसल कटनी के समय स्पष्ट होगा, जब जँगली पौधों को गेहूँ से अलग किया जाएगा! केवल फसल कटनी के समय ही मसीह "भेड़ों" से "बकरियों" को अलग कर देगा। केवल मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय में हर कोई यह जानने में सक्षम होगा कि कौन वास्तविक मसीही हैं और कौन नहीं (मत्ती 25:32)! दूसरे आगमन से पहले, मसीही पहले से ही जान सकते हैं कि मण्डलियों के बाहर और संसार के भीतर वास्तविक मसीही कौन हैं और कौन नहीं हैं(1 यूहन्ना 3:4-15), क्योंकि केवल नया जन्म पाए मसीही अपने मुंह से अंगीकार करते हैं (रोमियों 10:9-10) और अपने जीवन से फल लाते हैं (मत्ती 7:16-20)। परन्तु *राज्य के भीतर,* अर्थात्, दिखाई देने वाली मसीही मण्डलियों, संगठनों और संस्थानों के भीतर, यह अंतर निश्चित रूप से स्पष्ट नहीं है (सीएफ. मत्ती 8:11-12; रोमियों 9:6)!

जँगली पौधों को जलाने के लिए पूलों में बाँधा जाता है। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:42)।

अपने स्पष्टीकरण में, यीशु कहता है कि उन्हें आग की भट्ठी में फेंक दिया जाएगा (नरक, सीएफ. प्रकाशितवाक्य 21:8), जहाँ रोना और दाँतों का पीसना होगा। नरक में "रोना" बाइबल में अन्य सभी वर्णित रोने से अलग है। यह एसाव का रोना नहीं है, जब उसने अपनी विरासत खो दी थी (उत्पत्ति 27:38)। यह वह शोक का रोना नहीं है, जब मूसा की मृत्यु हो गई (व्यवस्थाविवरण 34:8)। यह अहाब का रोना नहीं है जब उसे अपना चाहा हुआ नहीं मिला (1 राजा 21:1-6)। यह रोना गमगीन होगाय कभी न समाप्त होने वाली विकटता और अनंतकाल की निराशा। "दाँतों का पीसना" कष्टदायी पीड़ा और उन्मत्त क्रोध को दर्शाता है।

गेहूँ को स्वामी के खलिहान में इकट्ठा किया जाता है। यह एक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:43)। मसीह के पहले आगमन के पश्चात से, नया-जन्म पाए विश्वासियों को वर्तमान रूप राज्य में इकट्ठा किया जा रहा है (मत्ती 3:11-12)। मसीह के दूसरे आगमन पर वे अपने अंतिम और पूर्ण रूप में राज्य में एकत्रित होंगे (मत्ती 25:34)। वहाँ वे "सूर्य के समान चमकेंगे" (दानिय्येल 12:3), अर्थात्, परमेश्वर की महिमा उनमें परिलक्षित होगी (1 यूहन्ना 3:2; 2 कुरिन्थियों 3:18)!

परमेश्वर का राज्य। यह इस दृष्टान्त में सबसे अधिक प्रासंगिक विवरण है (मत्ती 13:43)। इस दृष्टांत में अन्य सभी विवरण मसीह के दूसरे आगमन से पहले संसार में परमेश्वर के राज्य का उसके वर्तमान स्वरूप में वर्णन करते हैं।

इस दृष्टांत में, यीशु ने खुलासा किया कि पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के वर्तमान स्वरूप में दो प्रकार के लोग हैंः दुष्ट लोग (अविश्वासी, नाममात्र मसीही, पारंपरिक मसीही, संस्कृति मसीही) और धर्मी लोग (नया-जन्म पाए मसीही), बिना किसी के पास उनके बीच स्पष्ट रूप से अंतर करने में क्षमता के साथ। इस दृष्टांत में, "अच्छा बीज" परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार को नहीं दर्शाता है (मत्ती 24:14) और "जँगली पौधे" शैतान और उसके सेवकों द्वारा फैलाए गए झूठे सुसमाचार को नहीं दर्शाते हैं (2 कुरिन्थियों 11:1-4)। "अच्छे बीज" और "जँगली पौधे" संदेशों को नहीं परन्तु लोगों को दर्शाते हैं! "खेत" सामान्य रूप से संसार को नहीं दर्शाता, जहाँ इन दोनों संदेशों की घोषणा की जाती है, परन्तु संसार में उस विशिष्ट क्षेत्र को जहाँ लोगों के ये दोनों समूह मिले हुए हैं, बिना कोई स्पष्ट रूप से उनके बीच भेद करने में क्षमता के साथ! "जँगली पौधे" उन लोगों को दर्शाते हैं, जो नया-जन्म पाए मसीहियों के बीच इस प्रकार से बोए जाते हैं, कि नया-जन्म पाए मसीही अपने और दूसरे नाममात्र मसीहियों के बीच स्पष्ट अंतर करने में सक्षम नहीं हैं!

यही कारण है कि "खेत" केवल "पृथ्वी" के अर्थ में "संसार" को नहीं दर्शाता है, वह स्थान जहाँ गैर-मसीही और मसीही एक साथ रहते हैं और वे स्पष्ट रूप से जानते हैं कि वे गैर-मसीही हैं या मसीही हैं। "खेत" अपने वर्तमान चरण में परमेश्वर के राज्य को दर्शाता है जिसमें नाममात्र मसीही (पारंपरिक मसीही, संस्कृति मसीही) और वास्तविक (नया-जन्म पाए) मसीही इस प्रकार से आपस में मिल जाते हैं जिसमें उनके बीच अंतर करना कठिन हो जाता है। गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत मसीह के दूसरे आगमन से पहले अपने वर्तमान चरण में परमेश्वर के राज्य का प्रतीक है और मसीह के दूसरे आगमन (फसल) पर अंतिम न्याय के पश्चात अपने अंतिम और सिद्ध चरण में परमेश्वर के राज्य का प्रतीक नहीं है।

शब्द "कलीसिया" (यूनानीः एक्क्लेसिआ) और "परमेश्वर का राज्य" (यूनानीः बेसिलेआ तू थेऊ) संभवतया कभी सटीक समकक्ष नहीं हैं। "कलीसिया" में ऐसे लोग शामिल हैं, जो यीशु मसीह पर अपने विश्वास का दावा करते हैं, भले ही उनका अंगीकार वास्तविक हो या न हो (लोग एक-दूसरे के

हृदयों में यह देखने के लिए दृष्टि नहीं डाल सकते कि क्या वे नया–जन्म पाए हुए हैं)। परन्तु "परमेश्वर के राज्य" के अपने वर्तमान चरण में दोनों, लोग *और* क्षेत्र शामिल हैं, जैसे संस्थाएँ, संस्थान, संस्कृति आदि, जिसमें मसीह के शासन को खुले तौर पर मान्यता प्राप्त है (मसीहियों द्वारा) और मान्यता प्राप्त नहीं है (गैर–मसीहियों द्वारा)। गैर–मसीही भले ही यीशु मसीह और उसके शासन ध्राज्य को मान्यता नहीं देते हैं, वे फिर भी उसके शासन के अधीन हैं। केवल "गेहूँ के बीच जँगली पौधों" और "बड़े जाल" के दृष्टान्त में "कलीसिया" और "परमेश्वर के राज्य" शब्दों का अर्थ बहुत करीब है। दोनों दृष्टांतों में सच्चे (नया–जन्म पाए) मसीहियों और नाममात्र मसीहियों (पारंपरिक मसीही, संस्कृति मसीही) के बीच अंतर यीशु के दूसरे आगमन (फसल) पर अंतिम न्याय में ही स्पष्ट होता है।

एक दृष्टांत या एक रूपक? क्योंकि इस दृष्टांत में बहुत सारे विवरण कुछ आवश्यक या प्रासंगिक को दर्शाते हैं, यह दृष्टान्त एक रूपक के करीब भी आ जाता है। फिर भी, मत्ती 13:24,36 इसे "दृ ष्टान्त" कहते हैं। इसके अलावा इस दृष्टांत में केवल एक मुख्य संदेश या एक केंद्रीय बिंदु है, अर्थात्, फसल कटनी से पहले वास्तविक मसीहियों (गेहूँ, भेड़) के साथ नाममात्र मसीहियों (जँगली पौधे, बकरियों) के अंतर्मिश्रण के संबंध में धैर्य रखने के लिए यीशु मसीह की अपने सेवकों को आज्ञा, जब तक कि मसीह और उसके स्वर्गदूत उन्हें अंतिम न्याय में अलग नहीं कर देंगे।

दृष्टांतों की व्याख्या करने के लिए एक महत्वपूर्ण नियम। दृष्टांत रूपक नहीं होते हैं और दृष्टांत को रूपक नहीं बनाया जाना चाहिए! अतीत में कुछ मसीहियों ने दृष्टांतों को रूपक बना दिया था। उदाहरण के लिएः

कलीसिया फादर ऑगस्टीन (ई.स. 354–430) ने अच्छे सामरी के दृष्टांत को इस प्रकार से रूपक बनाया। "पुरुष, जो यरूशलेम से यरीहो चला गया था", ने आदम को दर्शाया। "लुटेरों" ने शैतान और उसके दूतों को दर्शाया। "याजक और लेवी" ने व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं को दर्शाया। "अच्छे सामरी" ने मसीह को दर्शाया। "सराय" ने कलीसिया को दर्शाया। और "दो चांदी के सिक्कों" ने वर्तमान और भविष्य में जीवन के वादे को दर्शाया! अ०गस्टीन ने अच्छे सामरी के दृष्टांत की व्याख्या दृष्टान्त के रूप में नहीं, बल्कि रूपक के रूप में की है! उसकी व्याख्या गलत है!

कलीसिया के फादर क्राइसोस्ट०म (ई.स. 347–407) ने गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टांत को इस प्रकार से रूपक बनाया। "जँगली पौधे" विधर्मियों के समाजों को दर्शाते हैं। शैतान की चालाकी सच्चाई और त्रुटि को मिश्रित करने के प्रयास द्वारा वर्गीकृत की जाती है ताकि वह धोखा दे सके और बहका सके। क्राइसोस्ट०म ने इस दृष्टांत को यह कहते हुए सही ढंग से लागू किया, "मसीहियों को विधर्मियों को मारने से मना किया जाता है"। विधर्मियों (विभाजनकारी लोगों) को दो बार चेतावनी दी जानी चाहिए (तीतुस 3:9–10), फिर कलीसिया से निष्कासित कर दिया जाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 5:12–13) और मसीही घरों में कभी भी ग्रहण या स्वागत नहीं किया जाना चाहिए (2 यूहन्ना 10)।

दृष्टान्तों की व्याख्या करने का नियम। यह तथ्य कि यीशु मसीह द्वारा गेहूँ के बीच जँगली पौधों के अपने दृष्टांतों के कई विवरणों को अलग–अलग प्रतीकात्मक अर्थ देना, मसीहियों को अन्य दृष्टांतों की कहानियों के प्रत्येक विवरण के लिए अलग प्रतीकात्मक अर्थ देना, महत्व का वर्णन करने का अधिकार नहीं देता है! दृष्टांत वास्तव में केवल एक मुख्य संदेश देते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय दें। दृष्टांत का मुख्य संदेश या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या स्वयं कहानी से ही मिला है। जिस प्रकार से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांतों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, बनाने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आध्यात्मिक सच्चाई खोजने का प्रयास नहीं करना चाहिए, परन्तु उस एक मुख्य पाठ की खोज करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 13:14-43 में गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोगों" के विषय में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर के सेवकों को परमेश्वर के राज्य के अपने वर्तमान धैर्य का प्रयोग करना चाहिए।" गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत इस बात पर जोर देता है कि मसीहियों के पास "अच्छे" (गंभीर, नया-जन्म पाए) मसीहियों को "बुरे" (पाखंडी, नया-जन्म न पाए) मसीहियों से अलग करने का काम नहीं है। मसीहियों और मसीही अगुवों को उन्हें न्याय के दिन तक एक साथ बढ़ने, रहने और कार्य करने देना चाहिए। तब यीशु मसीह अपने स्वर्गदूतों के साथ उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा।

नाममात्र मसीहियों के संबंध में धैर्य परमेश्वर के राज्य में मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य में सेवकों को अपनी संगती या मण्डली से निम्नलिखित लोगों को बाहर निकालने के लिए उत्सुक नहीं होना चाहिए। उन्हें ऐसे लोगों को निष्कासित नहीं करना चाहिए जो मसीह के नियमित अनुयायियों के नहीं हैं। उन्हें ऐसे लोगों को निष्कासित नहीं करना चाहिए जो अभी तक परिवर्तित नहीं हुए हैं। और उन्हें ऐसे लोगों को निष्कासित नहीं करना चाहिए जिनके पास अभी भी कुछ अजीब अपरिपक्व कायलताएँ और व्यवहार प्रतिमान हैं।

परमेश्वर के राज्य के सेवकों को कलीसिया के अनुशासन और अपने बीच में "असिद्ध" लोगों के प्रति प्रेम और दया दिखाने की आवश्यकता के बीच अंतर करना चाहिए। उन्हें *कलीसिया के अनुशासन का पालन करना चाहिए,* अर्थात, उन्हें चेतावनी देने, डाँटने, सही करने के लिए बाइबल के दिशानिर्देशों का पालन करना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो सदस्यों को मण्डली से बाहर रहने का प्रतिबंध लगाना चाहिए, यदि वे अपने ज्ञात गन्दे पापों के लिए पश्चाताप नहीं करते हैं।

परन्तु परमेश्वर के राज्य के सेवकों को कलीसिया की सभाओं में शामिल नाममात्र मसीहियों (पारंपरिक मसीही, सांस्कृतिक मसीही) के संबंध में *धैर्य का प्रयोग करना चाहिए।* उन्हें यह निर्धारित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए कि मण्डली के भीतर कौन "अच्छा बीज" है और कौन "एक जँगली पौधा" है। इसके बजाय, उन्हें यीशु मसीह में व्यक्तिगत विश्वास बनाने हेतु लोगों को जीतने का प्रयास करना चाहिए। मसीही सेवक अन्य मसीहियों के जीवन में ज्ञात पाप के आधार पर कार्य कर सकते हैं। परन्तु वे ऐसा कार्य नहीं कर *सकते जैसे कि वे परमेश्वर हों और जानते हों* कि वास्तव में नया जन्म पाया हुआ कौन है और कौन नहीं। यह विशेषाधिकार केवल यीशु मसीह का है (यूहन्ना 3:38; मत्ती 25:31-46)।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत वचनों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

परिचय दें। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य वचनों में सिखाए गए हैं। सबसे महत्वपूर्ण प्रति-सन्दर्भों को खोजने का प्रयास करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में सहायता करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोज और चर्चा करें। जो बाइबल के वचन सिखाते हैं, उसकी तुलना उससे कैसे होती है जो गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टांत की तुलना बीज बोनेवाले के दृष्टांत के साथ।

पढ़िए मत्ती 13:36 और लूका 8:9। वचन के इन दो भागों की तुलना करके, यह असंभाव्य है कि इन दो दृष्टांतों को इस कालानुक्रमिक अनुक्रम में बताया गया है और यह कि मत्ती 13:3-9 में बताए दृष्टांत के तुरन्त बाद मत्ती 13:24-30 में बताया दृष्टांत आता है। यीशु के इन दृष्टांतों को लोगों की भीड़ को सुनाने के पश्चात, वह एक घर में गया और वहाँ उसके शिष्यों ने उसे इन दृष्टांतों को समझाने के लिए कहा।

बीज बोनेवाले दृष्टांत और गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टांत के बीच समानताएँ और कुछ अंतर हैं। समानता के अनुसार, दोनों दृष्टांत एक बीज बोनेवाले, एक खेत, बीज और एक फसल के विषय में बोलते हैं। अंतर के रूप में, पहली दृष्टांत में, शैतान अच्छे बीज को छीन लेता है और दूसरे दृष्टांत में, वह गेहूँ के बीच जँगली पौधे बोता है। शैतान कभी-कभी परमेश्वर के वचन का खुलकर विरोध करता है और उसे लोगों से छीन लेता है। परन्तु अन्य समयों में वह परमेश्वर के सच्चे लोगों के मन में विष घोलने के लिए घुसपैठ करता है। पहले दृष्टांत में, सम्पूर्ण बीज अच्छा है, परन्तु दूसरे दृष्टांत में, गेहूँ के बीच जँगली पौधे दिखाई देते हैं। पहले दृष्टांत में, विभिन्न परिस्थितियों और हृदय के रवैयों द्वारा परमेश्वर के वचन के ग्रहण करने पर जोर दिया गया है। दूसरे दृष्टांत में, कलीसिया में वास्तविक मसीहियों और नाममात्र मसीहियों के बीच अंतर करने और उन्हें अलग करने के संबंध में धैर्य रखने पर जोर दिया गया है।

(2) दृष्टांत 1 यूहन्ना 3:4-15 के विपरीत है।

पढ़िए 1 यूहन्ना 3:4-15। 1 यूहन्ना जोर देता है <u>उन लोगों के दो समूहों पर जो सामान्य रूप से संसार में रहते हैं</u>: "परमेश्वर से पैदा हुए बच्चे जो वह करते हैं जो धार्मिकता का कार्य होता है" और "शैतान के बच्चे जो वह करते हैं जो धार्मिकता का कार्य नहीं होता है"। परन्तु गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत जोर देता है <u>दो लोगों के समूह पर जो परमेश्वर के राज्य के भीतर उसके वर्तमान रूप में रहते हैं</u> (कलीसिया में)। 1 यूहन्ना में संसार में लोगों की विशेषताओं को स्पष्ट रूप से विख्यात किया जा सकता है, परन्तु मत्ती 13:24-30 में परमेश्वर के राज्य में (कलीसिया में) लोगों की विशेषताओं को स्पष्ट रूप से विख्यात नहीं किया जा सकता है। मसीहियों के लिए यह संभव नहीं है कि वे सच्चे नया-जन्म पाए मसीहियों और ऐसे मसीहियों के बीच भेद कर सकें जो स्वयं नाम में, परंपरा में और संस्कृति में मसीहियों के रूप में व्यवहार करते हैं। इसलिए गेहूँ के बीच से जँगली पौधे उखाड़ना नौकरों का काम नहीं है। बाइबल में वचन के ये दो भाग परमेश्वर के राज्य के दो अलग-अलग पहलुओं पर जोर देते हैं। 1 यूहन्ना इस बात पर जोर देता है कि संसार में गैर-मसीही लोगों को कलीसिया में नया-जन्म पाए मसीहियों से स्पष्ट रूप से अलग किया जा सकता है, क्योंकि गैर-मसीही लोग पाप में निरन्तर रहते हुए दिखते हैं। परन्तु मत्ती 13:24-30 इस बात पर जोर देता है कि नाममात्र मसीहियों को कलीसिया के भीतर वास्तविक मसीहियों से स्पष्ट रूप से अलग नहीं

किया जा सकता है!

(3) दृष्टांत, बड़े जाल के दृष्टांत के विपरीत है।

पढ़िए मत्ती 13:47-50। "बड़े जाल का दृष्टांत" संसार में परमेश्वर के राज्य को अपने वर्तमान रूप में सभी प्रकार के लोगों को इकट्ठा करने की बात करता है और यह कि वास्तविक मसीही केवल मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय में अन्य सभी लोगों से अलग किए जाएँगे। यह जाल के अंदर की अच्छी मछलियों को अभी भी समुद्र के भीतर खराब मछलियों के विपरीत नहीं करता है, परन्तु इस तथ्य पर जोर देता है कि जाल के भीतर अच्छी मछलियाँ खराब मछलियों के साथ तब तक मिली रहती हैं जब तक कि पकड़े जाने के पश्चात उन्हें अलग-अलग नहीं करते हैं। इस प्रकार बड़े जाल के दृष्टांत में समान केंद्रीय संदेश है जो गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टान्त में हैं। दोनों दृष्टांत यह सिखाते हैं कि मसीही और नाममात्र मसीही धरती पर परमेश्वर के राज्य के अपने वर्तमान रूप में और कलीसिया और मसीही संगठनों और संस्थानों में मिश्रित रहेंगे, जिस दिन तक उन्हें छाँटा नहीं जाएगा और अंतिम न्याय के दिन एक दूसरे से अलग-अलग नहीं किया जाएगा।

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना या मानना सिखाया और उसने हमें क्या होना या करना सिखाया?

ध्यान दें।

(1) मुख्य संदेश।

मत्ती 13:14-43 में गेहूँ के बीच जँगली पौधों का दृष्टांत *"परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोगों"* के विषय में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर के सेवकों (कलीसियाओं के पदवी पाए व्यक्ति या अगुवे) को परमेश्वर के राज्य के अपने वर्तमान सांसारिक प्रकटीकरण (रूप) में वास्तविक मसीहियों और नाममात्र मसीहियों के बीच अंतर्मिश्रण के संबंध में धैर्य का प्रयोग करना चाहिए।" परमेश्वर के सेवकों को परमेश्वर के राज्य में (कलीसिया में) सभी लोगों को परमेश्वर के वचन को सुनने और अंतिम न्याय के दिन तक एक साथ बढ़ने के लिए अनुमति देनी चाहिए, जब यीशु मसीह अपने स्वर्गदूतों के साथ मिलकर उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा और परमेश्वर के राज्य का उसके अंतिम प्रकटीकरण में नई पृथ्वी के रूप में उद्घाटन करेगा।

(2) धैर्य के संबंध में पाठ।

शिष्य कभी-कभी अपनी संगती से कुछ लोगों को निष्कासित करने के लिए उत्सुक थे, जो मसीह के विश्वासयोग्य (नियमित, आधिकारिक) अनुयायियों के नहीं थे (लूका 9:49-50)। वे कभी-कभी शिष्यों के अपने ही समूह के सदस्यों के विरुद्ध क्रोध में भड़कने के लिए अति तैयार थे (लूका 22:24)।

यीशु मसीह सिखाता है कि मसीही अपनी मसीही सभाओं, संगठनों और संस्थानों में से भाग लेने वालों को दूर न करें जब तक कि कोई गंभीर शिक्षा या व्यवहार संबंधी समस्या शामिल न हो। मसीहियों को मसीही कलीसिया (मसीह की देह) के भीतर मसीहियों की महान विविधता को सहन करना चाहिए और "सभी के साथ धैर्य रखना चाहिए" (1 थिस्सलुनीकियों 5:14)।

यह निर्धारित करने का अधिकार है कि "अच्छा बीज" कौन है और "जँगली पौधा" कौन है, इसे यीशु

मसीह, न्यायाधीश पर छोड़ देना चाहिए। ऐसा कहने में, मसीह कलीसिया के अनुशासन को तोड़ता नहीं है (मत्ती 18:15-18), परन्तु मसीहियों में बुद्धिमान धैर्य की भावना उत्पन्न की है। जब मसीही धैर्य से प्रेम रखने का अभ्यास करते हैं, तो कलीसिया का अनुशासन ही मजबूत हो जाएगा, क्योंकि अनुशासन का मुख्य उद्देश्य मानवीय भावना को नष्ट करना नहीं है, परन्तु उसे बचाना है (1 कुरिन्थियों 5:5)।

(3) सुनने का परमार्श।

यीशु ने प्रकाशितवाक्य की किताब 2 और 3 में मण्डलियों को दिए गए अपने सभी सात पत्रों के अंत में परमार्श को दोहराया "जिस के कान हों, वह सुन ले" (मत्ती 13:43)। यह एक बहुत महत्वपूर्ण परमार्श है। यदि किसी व्यक्ति के पास सुनने के लिए कान हैं, परन्तु परमेश्वर (मसीह) के वचनों को नहीं सुनने के लिए अपने कान बंद कर देता है, तो वह अक्षम्य पाप करता है (इब्रानियों 6:4-8; 10:26-31)। जब वह परमेश्वर के वचनों को प्राप्त नहीं करता है और उसके वचनों को अनदेखा करना जारी रखता है, तो वह *अक्षम्य पाप करता है* (इब्रानियों 4:7; 6:4-8; 10:26-31)। "सभी गलत काम करना पाप है। एक पाप है जो मृत्यु की ओर ले जाता है" (1 यूहन्ना 5:16-17)। अक्षम्य पाप तब होता है जब कोई व्यक्ति परमेश्वर से पैदा नहीं हुआ होता और *जानबूझकर पाप करता रहता है* (1 यूहन्ना 3:6-9) (क्रिया *निरंतर वर्तमान काल* में हैं और इसलिए इसका अर्थ यह नहीं है: "वह जो पाप करता है" (सीएफ. 1 यूहन्ना 1:8-10), परन्तु: "वह जो पाप *करता रहता* है" (1 यूहन्ना 3:6-9)। यीशु मसीह अपने सुननेवालों को उसके वचनों को अच्छी रीति से सुनने, उस में विश्वास करने और यह देखने के लिए स्वयं को जाँचने हेतु कहता है कि वह "अच्छा बीज" है (राज्य का बच्चा) या "एक जँगली पौधा" (शैतान का बच्चा) है (मत्ती 13:38)। "अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं; अपने आप को जाँचो, क्या तुम्हें यह एहसास नहीं है कि यीशु मसीह तुम में है-नहीं तो, निश्चित रूप से, तुम इस परीक्षा में विफल रहे हो (2 कुरिन्थियों 13:5)।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**	

आज आपने जो कुछ आपने सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में बारी बारी परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)* **अगले अध्याय के लिए**	

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **न्यायियों 13, 14, 15 और 16** के आधे अध्याय

से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।

4. याद करना। (2) **रोमियों 1:17।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 2:17-29।**
बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 8

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश करने के विषय में इस पाठ को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **न्यायियों 13–16**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (न्यायियों 13,14,15 और 16) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(2) रोमियों 9:62**

दो–दो करके ***समीक्षा करें।***

(1) रोमियों 1:17। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।"

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 2:17–29**

परिचय दें। **रोमियों 2:17–29** का एक साथ अध्यनन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 2:17–20 में, पौलुस यहूदियों को सीधे संबोधित करता है और उन विशेषाधिकारों और विशिष्टाधिकारों की गणना करता है जिन पर यहूदी स्वयं पर गर्व करते थे। रोमियों 2:21–24 में, वह यहूदियों को दिखाता है कि, *यदि वे उन सभी विशेषाधिकारों में शामिल कर्तव्यों या शिक्षाओं को पूरा करने में विफल रहे, जिनमें उन्होंने आनंद लिया था, तो वे विशेषाधिकार केवल उनकी दण्डाज्ञा को बढ़ावा दे रहे थे।* यहूदियों के पाखंड के विरुद्ध पौलुस की घिन और आक्रोश पर ध्यान दें: "तुम दूसरों को सिखाते हो, परन्तु तुम स्वयं को नहीं सिखाते हो"। "तुम गलत कार्य करने के विरुद्ध उपदेश देते हो, परन्तु तुम स्वयं चोरी करते, व्यभिचार करते और मंदिरों को लूटते हो"। "तुम व्यवस्था के विषय में डींग मारते हैं, परन्तु व्यवस्था को तोड़कर परमेश्वर का अनादर करते हो"। "तुम अन्यजातियों द्वारा परमेश्वर को दोष देने का कारण बनते हो!" रोमियों 2:25–27 में, पौलुस खतना होने या बिल्कुल

नहीं होने का मूल्यांकन करता है। और रोमियों 2:28-29 में, पौलुस स्पष्ट रूप से खतने की वास्तविक प्रकृति और उद्देश्य सिखाता है।

चरण 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइए एक साथ पढ़े रोमियों 2:17-29।

आइए हम बारी-बारी एक-एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम पढ़ना पूरा न कर लें।

चरण 2. खोज करें। **अवलोकन**

पढ़ें। आइए एक साथ पढ़े रोमियों 2:17-29।

आइए हम बारी-बारी एक-एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम पढ़ना पूरा न कर लें।

विचार करें। इस पद में आपके लिए कौनसा सत्य महत्वपूर्ण है?

या इस पद में से कौनसा सत्य आपके दिमाग या दिल को छूता है?

अभिलेखित करें। एक या दो सत्यों की खोज करें जिन्हें आप समझते हैं। उनके विषय में सोचें और अपने विचारों को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट का समय मिल गया हो, तब साझा करने के लिए बारियाँ लें)।

आइए हम एक दूसरे के साथ साझा करने के लिए बारियाँ लें, जो कुछ भी हमने खोजा है।

(स्मरण रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

2:17-20

खोज 1. **पौलुस का यहूदी कर्मकाण्डवाद के संबंध में उनके विशेषाधिकार और उनके पद की स्थिति का अनावरण।**

(1) वे विशेषाधिकार जिन से यहूदी स्वयं पर गर्व करते थे (रोमियों 2:17-18)।

"यहूदी" नाम का उल्लेख बाइबल में पहली बार 2 राजाओं 16:6 (586 ई.पू. से पहले) में मिलता है। बाबुल के निर्वासन के दौरान और बाद में (विनाश से मंदिर के पुनर्निर्माण तक, 586 से 516 ई.पू., 70 वर्ष) यह वह नाम था जिसमें यहूदी स्वयं पर गर्व करते थे। नाम का अर्थ है यहूदा राज्य का सदस्य। वे स्वयं को "यहूदी" कहते थे और यहूदी होने पर उन्हें गर्व था।

वे व्यवस्था पर "निर्भर" थे, अर्थात्, उन्होंने व्यवस्था को रखने और व्यवस्था के विषय में बोलने से "आराम और सहारा पाने" के अर्थ में "विश्राम" किया। परन्तु उन्होंने व्यवस्था का अभ्यास नहीं किया।

उन्होंने "परमेश्वर में महिमा" पाई, अर्थात् उन्होंने कहा कि वे एकल और एकमात्र सच्चे परमेश्वर की उपासना करते हैं। वास्तव में वह केवल एक खाली घमंड था!

वे "परमेश्वर की इच्छा को जानते थे", अर्थात्, उनके पास परमेश्वर की इच्छा के प्रकाशन के रूप में पुराना नियम था। उन्होंने "जो उत्कृष्ट है, उसे अनुमोदित किया", अर्थात् उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के विषय में निरन्तर तर्क दिया और इसका परीक्षण किया कि परमेश्वर की इच्छा (व्यवस्था) के अनुसार क्या है, उसको अस्वीकार करके जो उससे अलग है और उसे अनुमोदित करके को उसके अनुरूप है। उन्हें "व्यवस्था में निर्देशित" किया गया था (शाब्दिक अर्थः "व्यवस्था में जिरह प्राप्त किया

था") (यूनानीः कटेचेओ) (नहेम्याह 8:8)।

(2) वह स्थिति जिसमें यहूदियों स्वयं पर गर्व करते थे (रोमियों 2:29-20)।

यहूदी स्वयं को संसार के अन्य सभी राष्ट्रों से अति श्रेष्ठ मानते थे। वे अन्यजाति राष्ट्रों को "आध्यात्मिक रूप से अंधे" मानते थे और उनका मानना था कि केवल यहूदी ही अन्यजातियों को निर्देश देने में सक्षम हैं। इसने यहूदियों को जिम्मेदारी के बजाय श्रेष्ठता का एहसास दिया। उन्होंने कहा कि अन्यजातियों के राष्ट्र अंधेरे में थे, अज्ञानी और अपरिपक्व थे, क्योंकि वे व्यवस्था को नहीं जानते थे! यहूदियों ने व्यवस्था के "अज्ञान" (यूनानीः अफ्रोन) की बराबरी "अपरिपक्वता" (यूनानीः नेपिओस) के साथ की और इस प्रकार व्यवस्था के ज्ञान के साथ परिपक्वता की।

अपने आप में "अंधों का मार्गदर्शक", "उन लोगों के लिए प्रकाश जो अंधेरे में हैं", "मूर्खों के लिए प्रशिक्षक और बच्चों के शिक्षक होना" गुण थे। फिर भी पौलुस ने कहा कि यहूदियों के साथ यही गुण उनकी खोटाई थे, क्योंकि वे उन चीजों के विषय में डींग मारते थे जो वे स्वयं करने में विफल रहे थे! यहूदी डींग मारते थे कि उनके पास पुराने नियम (व्यवस्था) की पुस्तक में "ज्ञान और सत्य का अवतार" है। इसका अर्थ यह है कि वे डींग मारते थे कि उनके पास ज्ञान और सत्य एक सुव्यवस्थित रूप में रखा है (सीएफ. "शिक्षण का रूप" रोमियों 6:17 में और "मजबूत शिक्षण का प्रतिमान" 2 तीमुथियुस 1:13 में। फिर भी, यहूदियों के पास धार्मिकता का केवल एक बाहरी रूप था, परन्तु उस धार्मिकता की आंतरिक वास्तविकता का अभाव था (सीएफ. 2 तीमुथियुस 3:5)!

2:21-24

खोज 2. **जो यहूदियों ने बोला और जो वास्तव में किया, उसके बीच घोर असंगतता।**

यहूदियों के फायदे की विकृत अवधारणा ने उनको आत्मतुष्ट बना दिया और उनकी आत्मतुष्टि ने उन्हें पाखंडी बना दिया। यहूदियों को उनकी आत्मतुष्टि से आघात पहुँचाने के लिए, पौलुस उनके पाखंड को उजागर करता है। वह यहूदियों की शिक्षाओं के तीन दृष्टांत देता है, जिनका वे स्वयं पालन नहीं करते थे। यहूदियों ने *लगातार* (वर्तमान काल) चोरी, व्यभिचार और मूर्तिपूजा की।

मूर्तिपूजा और लैंगिक अनैतिकता ठीक रीति से अन्यजातियों के पाप थे (सीएफ. रोमियों 1:24-25), जिनकी यहूदियों ने सबसे गंभीर रूप से निंदा की, फिर भी स्वयं किए (भजन संहिता 50:16-18; यिर्मयाह 5:30-31; यिर्मयाह 6:13-14)। यहूदी टीका-टिप्पणी[1] में बुद्धिजीवियों के बीच चोरी, रब्बियों के बीच निर्लज्ज व्यभिचार और मंदिरों की लूट के उदाहरणों का उल्लेख है। इसके अलावा, यीशु मसीह इस बात का उदाहरण देता है कि कैसे फरीसियों का जीवन उनके शिक्षण के अनुरूप नहीं था (मत्ती 23, मरकुस 7:9-13; लूका 11:37-52)। अन्यजातियों के मंदिरों के अपवित्रीकरण से अधिक कोई भी चीज उनके आक्रोश को न भड़काती। यहूदियों ने अपने ही मंदिर को "डाकुओं की खोह" (मत्ती 21:13) में बदल दिया और परमेश्वर को उसमें लूटा जो उसका था (सीएफ. मरकुस 7:11)।

यहूदियों ने उनके पास व्यवस्था होने के विषय में डींग मरी, परन्तु व्यवस्था को तोड़कर परमेश्वर का अनादर किया। याकूब 2:10 और याकूब 4:11-12 के अनुसार, व्यवस्था की अनाज्ञाकारिता, स्वयं परमेश्वर, व्यवस्था देनेवाले की महिमा के विरुद्ध अपमान है, और यही कारण है कि अन्यजाति

---

[1] स्ट्रेक एन बिलरबेक प्प् पृ.107-115 के "कोम्मेन्टर जूम न्यूएन टेस्टामेंट अ०स तालमुद अंड मिडरास्च"

के समान होना सिखाया (भजन संहिता 115:8)। और यदि किसी राष्ट्र ने इस प्रकार के अपराध किए हैं, तो उनका "ईश्वर" एक चोर, एक व्यभिचारी और मंदिर का एक लुटेरा होना चाहिए! इस प्रकार यहूदियों ने बाइबल के परमेश्वर का अनादर किया।

चरण 3. प्रश्न। **व्याख्या**

पढ़ें। आइए एक साथ पढ़े रोमियों 2:17-29।

आइए हम बारी-बारी एक-एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम पढ़ना पूरा न कर लें।

विचार करें। इस पद में आपके लिए कौनसा सत्य महत्वपूर्ण है?

या इस पद में से कौनसा सत्य आपके दिमाग या दिल को छूता है?

अभिलेखित करें। एक या दो सत्यों की खोज करें जिन्हें आप समझते हैं। उनके विषय में सोचें और अपने विचारों को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट का समय मिल गया हो, तब साझा करने के लिए बारियाँ लें)।

आइए हम एक दूसरे के साथ साझा करने के लिए बारियाँ लें, जो कुछ भी हमने खोजा है।

(स्मरण रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

2:25-27

प्रश्न 1. **पौलुस कैसे कह सकता है कि शारीरिक खतने का अभी भी मूल्य है?**

ध्यान दें।

(1) यहूदियों के शारीरिक खतने का महत्व केवल तभी होता था जब पुराने नियम की वाचा (अनुग्रह की वाचा) की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता था (रोमियों 2:25)।

रोमियों को लिखी गई पत्री में शब्द "व्यवस्था" के कई अलग-अलग अर्थ हैं और सही अर्थ शब्द के संदर्भ पर निर्भर है। यहाँ, शब्द "व्यवस्था" विभिन्न पुराने नियम के औपचारिक कानूनों का नहीं, बल्कि "पुराने नियम की वाचा" का उल्लेख करता है। इस पुराने नियम की वाचा में, परमेश्वर ने वादा किया था कि वह उसके लोगों इस्राएल का परमेश्वर होगा और यह कि इस्राएल परमेश्वर के लोग होंगे (उत्पत्ति 17:7; लैव्यव्यवस्था 26:12)। यह एक वादे और अनुग्रह के साथ एक वाचा (एक समझौता) थी।

इस वाचा की आवश्यकताएँ (रोमियों 2:26) परमेश्वर के वादे पर *विश्वास* था (सीएफ. उत्पत्ति 15:5-6; सीएफ. यूहन्ना 6:28-29) जो आज्ञाकारिता में दिखाया गया था (उत्पत्ति 22:17-18; इब्रानियों 4:2,6; याकूब 2:17,22)। इस वाचा का चिन्ह और मुहर शारीरिक खतना था (उत्पत्ति 17:9-14)।

पुराने नियम में शारीरिक खतना एक धार्मिक कर्तव्य नहीं था, बल्कि एक धार्मिक कर्तव्य का चिन्ह था! पौलुस ने यह सुनिश्चित किया कि शारीरिक खतने का महत्व केवल यहूदियों के लिए था जब यहूदियों ने विश्वास की आवश्यकता को अपनी आज्ञाकारिता दिखा कर पूरा किया। यदि यहूदियों को कोई विश्वास नहीं था और कोई आज्ञाकारिता नहीं थी, तो परमेश्वर की वाचा के वादों पर उनका दावा मात्र अनुमान (अहंकार) और यहाँ तक कि एक खाली उपहास था!

इस प्रकार, रोमियों 2:25-27 में, "व्यवस्था" (की आवश्यकताओं) को मानना "वाचा" (की

आवश्यकताओं) को मानने के बराबर है जिन्हें परमेश्वर ने आदरणीय वृद्ध पुरुषों के साथ बनाया था। जब परमेश्वर की वाचा की आवश्यकताओं (अर्थात्, आज्ञापालन में दिखाए गए विश्वास) की अवहेलना की जाती है या उन्हें तोड़ा जाता है, तब परमेश्वर द्वारा यहूदियों के खतने को खतना नहीं माना जाता है! तब बाहरी चिन्ह अपना महत्व खो देता है (रोमियों 2:25)!

(2) अन्यजाती जिनका शारीरिक रूप से खतना नहीं हुआ है, यदि वाचा की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, तो वे परमेश्वर की वाचा को रद्द नहीं करते हैं (रोमियों 2:26)।

यहाँ, "व्यवस्था" की आवश्यकताओं को पूरा करना अविश्वासियों को संदर्भित नहीं करता जो रोमियों 2:14 में उल्लेख के समान अपने नैतिक स्वभाव और विवेक का पालन करते हैं। इसके बजाय यह उन अन्यजातियों को संदर्भित करता है जो रोमियों 1:16–17 में उल्लेख के समान मसीही बन गए हैं। अन्यजाति मसीहियों में से अधिकांश शारीरिक रूप से खतनारहित थे। परन्तु क्योंकि मसीहियों ने यीशु मसीह में विश्वास और यीशु मसीह की आज्ञाकारिता के कारण वाचा की आवश्यकताओं को पूरा किया, इसलिए मसीही "परमेश्वर के वास्तविक लोग" बन जाते हैं (2 कुरिन्थियों 6:16; 1 पतरस 2:9–10) और यहाँ तक कि "परमेश्वर का इस्राएल" बोले जाते हैं (गलातियों 6:12–16)[2]। हालाँकि ये अन्यजाति अपने शरीर (देह) में खतनारहित थे, लेकिन अपने हृदयों (आत्माओं) में खतनाप्राप्त थे और परमेश्वर ने इसे ही एक असली खतना माना (रोमियों 2:28–29)! शरीर के खतने के बाहरी संस्कार का उससे हटकर कोई मूल्य नहीं है जो यह दर्शाता है! परन्तु जब वह उपस्थित होता है जो शारीरिक खतने का संस्कार दर्शाता है, तब शरीर में उसके चिन्ह की अनुपस्थिति परमेश्वर की कृपा की वाचा को रद्द नहीं करती है!

(3) शारीरिक रूप से खतना किए गए यहूदियों को शारीरिक रूप से खतनारहित मसीहियों द्वारा दोषी ठहराया जाएगा (रोमियों 2:27)।

अन्यजातियों में से मसीही इस्राएल का न्याय करेंगे (1 कुरिन्थियों 6:2)। मसीही व्यवस्था (वाचा) की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। यहूदियों के पास व्यवस्था (वाचा) की आवश्यकताएँ लिखित रूप में हैं, परन्तु उन्होंने व्यवस्था (वाचा) को तोड़ दिया है। इसलिए जो लोग वास्तविक विश्वासी हैं और अपनी आज्ञाकारिता में इसे दिखाते हैं वे अन्य सभी लोगों का न्याय करेंगे!

पुराने नियम के समय में से नीनवे[3] के विश्वास करनेवाले अन्यजाति अंतिम न्याय के दिन में खड़े होंगे और यीशु के समय में के अविश्वासी यहूदियों को दोषी ठहराएँगे (मत्ती 12:41–42)। शारीरिक

---

[2] पुराने नियम में परमेश्वर के लोग और नए नियम में परमेश्वर के लोगों को एक ही नाम से पुकारा जाता है: परमेश्वर का *पहला पुत्र* (निर्गमन 4:22; यिर्मयाह 31:9; इब्रानियों 12:23); परमेश्वर के *पुत्र और पुत्रियाँ* (यशायाह 43:6–7; 2 कुरिन्थियों 6:18); *परमेश्वर की पत्नी या दुल्हन* (यशायाह 54:1,11–12; प्रकाशितवाक्य 21:9–10); *बारह गोत्र* (उत्पत्ति 49:28; प्रकाशितवाक्य 7:4; 21:12; याकूब 1:1); *याजकों का राज्य* (निर्गमन 19:6; 1 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 1:6); *एक पवित्र राष्ट्र* (निर्गमन 19:6; 1 पतरस 2:9); *परमेश्वर के चुने हुए लोग* (व्यवस्थाविवरण 7:6; 1 पतरस 2:9); *परमेश्वर की वाचा के लोग* (लैव्यव्यवस्था 26:12; 2 कुरिन्थियों 6:16); *फैले हुए/प्रवासी* (व्यवस्थाविवरण 30:1; यहेजकेल 12:15; एस्तेर 3:8; 1पतरस 1:1)य इस्राएल की भेड़शाला से *भेड़ें* और दूसरे देशों की *भेड़ें* (यहेजकेल 34; यूहन्ना 10:16); *इस्राएल* (1 शमूएल 7:23; गलातियों 6:14–16); *यहूदी* (जकर्याह 8:22–23; रोमियों 2:28–29); *सिय्योन* (यशायाह 51:16; 52:7; इब्रानियों 12:22–24); *यरूशलेम* जो नीचे है और यरूशलेम जो ऊपर है (गलातियों 4:25–26); *परमेश्वर का मंदिर* (2 कुरिन्थियों 6:16)।
सुसमाचार के प्रचार द्वारा परमेश्वर *अपनी कलीसिया* को स्वयं अपने पास बुलाते हैं, पुराने नियम की अवधि के दौरान (रोमियों 10:18–21; गलातियों 3:8; इब्रानियों 4:1–3) और नए नियम की अवधि दौरान (प्रेरितों 20:24; सीएफ. 13:44–49)। यहूदियों और अन्यजातियों में से विश्वासियों को एक आत्मा द्वारा मसीह के एक शरीर में बपतिस्मा दिया जाता है और उन्हें पीने के लिए एक आत्मा दिया गया था (1 कुरिन्थियों 12:13); दोनों को एक साथ *कलीसिया* कहा जाता है (इब्रानीः क्वाहलय यूनानीः एक्कलीसिया) (भजन संहिता 107:32; मत्ती 16:18; प्रेरितों के काम 8:2; प्रेरितों के काम 9:1); एक साथ *एक देह के सदस्य* हैं (इफिसियों 3:6); एक साथ *उत्तराधिकारी* (इफिसियों 3:6; गलातियों 3:29) और *परमेश्वर के सभी वादों में एक साथ हिस्सेदार हैं* (इफिसियों 3:6; 2 कुरिन्थियों 1:20)! सीएफ. निर्देश पुस्तक 3, पूरक 12।

[3] नीनवे इराक में आधुनिक मोसुल है।

रूप से खतना किए गए विश्वासियों का विश्वास शारीरिक रूप से खतना किए गए यहूदियों के अविश्वास को दोषी ठहराएगा!

यह सब साबित करता है कि शारीरिक खतना या पानी के साथ बपतिस्मा जैसे बाहरी और शारीरिक संस्कार में बचाने की कोई शक्ति नहीं है क्योंकि परमेश्वर ष्आत्माष है और आंतरिक आध्यात्मिक आज्ञाकारिता की माँग करता है।

2:28-29

प्रश्न 2. **शारीरिक खतने की वास्तविक प्रकृति और लक्ष्य क्या है?**

ध्यान दें।

अब्राहम (2067 ई.पू.) के समय, शारीरिक खतना विश्वास के औचित्य का संकेत था (रोमियों 4:11)। परन्तु मूसा के समय (1407 ई.पू.) के लंबे समय पश्चात, यहाँ तक कि बाबुल निर्वासन (587 ई.पू) के भी पश्चात, यहूदी धार्मिक शिक्षकों और अगुवों ने शारीरिक खतने के अर्थ को व्यवस्था के कार्यों द्वारा औचित्य के संकेत में बदल दिया है (यूहन्ना 7:19, 22; गलातियों 5:1-4)।

(1) शारीरिक खतना मूल रूप से विश्वास द्वारा उचित ठहराने का संकेत था (रोमियों 4:11)।

अब्राहम के समय में शारीरिक खतना (2067 ई.पू.)। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वादों और अनुग्रह की वाचा बाँधी। इस वाचा में, उसने अनुग्रह के तहत अब्राहम से तीन चीजों का वादा कियाः पहला। अब्राहम पृथ्वी पर कई राष्ट्रों का पिता बनेगा। उसके वंशज आकाश के तारे या समुद्र के किनारे की रेत के समान होंगे। और प्रभु उसके वंशजों का परमेश्वर होगा। दूसरा। परमेश्वर अब्राहम के वंशजों को कनान की भूमि देगा। यहोशू के भूमि पर विजय प्राप्त करने के समय तक (1497-1387 ई.पू.) पहले ही दो वादे पूरे कर लिए थे (यहोशू 21:43-45; 23:14-16)। तीसरा। परमेश्वर अब्राहम के वंशजों में से एक के द्वारा पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को आशीष देगा (उत्पत्ति 12:1-3,7; 15:1-6,18-21; 17:1-14; 22:17-18)। तीसरा वादा मसीह के पहले आगमन पर पूरा हुआ (गलातियों 3:16)।

अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर ने उसे धार्मिकता के रूप में माना (उत्पत्ति 15:6)। परमेश्वर ने अब्राहम को परमेश्वर के वादों और परमेश्वर की कृपा की इस वाचा के चिन्ह और मुहर के रूप में शारीरिक खतना दिया। इसलिए शारीरिक खतना *एक स्पष्ट संकेत और मुहर था कि परमेश्वर विश्वास के माध्यम से लोगों को उचित ठहराता है*

(रोमियों 4:11)! जिन लोगों का शारीरिक रूप से खतना किया जाता था, वे परमेश्वर के वादों और परमेश्वर की कृपा की इस वाचा को रखने के लिए बाध्य थे। वे विश्वास के द्वारा उचित ठहराए लोगों के रूप में जीने के लिए बाध्य थे, अर्थात्, इस संसार में परमेश्वर की वाचा के रूप में।

मूसा के समय में शारीरिक खतना (1407 ई.पू.)। पुराने नियम की अवधि के दौरान बाहरी, शारीरिक खतने का एक आंतरिक, आध्यात्मिक अर्थ भी था। वह चमड़ी जिसे काट दिया जाता था वह शरीर की अशुद्धता की प्रतीक थी और शारीरिक खतना हृदय के आध्यात्मिक खतने की ओर इशारा करता था। शरीर की अस्वच्छता (माँस) को काटना हृदय की अस्वच्छता को दूर करने का प्रतीक था (व्यवस्थाविवरण 10:16; 30:6; यिर्मयाह 4:4)। इस प्रकार, पुराने नियम की अवधि के दौरान शरीर का खतना एक उच्च वास्तविकता का *दृश्यमान प्रतीक* था, अर्थात् हृदय का आध्यात्मिक खतना। पुराने नियम की

अवधि के दौरान शरीर का खतना *बाद में* नए नियम की अवधि के दौरान *पवित्र आत्मा द्वारा नए जन्म प्राप्ति* की ओर इशारा करता है (रोमियों 2:28-29)।

अपने आप में शारीरिक खतने का कोई महत्व नहीं है। खतने का कोई महत्व नहीं है जब कोई बाइबल के परमेश्वर (या यीशु मसीह) में विश्वास नहीं करता है, परन्तु फिर भी व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा उचित होने का प्रयास करता है (उदाहरण के लिए, शारीरिक खतने के माध्यम से)। हृदय के आध्यात्मिक खतने के बिना शरीर का शारीरिक खतना बेकार है। धार्मिक संस्कार (जैसे शारीरिक खतना) मनुष्य का काम बना रहता है, परन्तु हृदय का आध्यात्मिक खतना परमेश्वर (परमेश्वर का आत्मा) का काम है!

इसलिए बाइबल में अविश्वासी और अधर्मी लोगों को "हृदय में खतनारहित" कहा जाता है (यिर्मयाह 9:25-26; प्रेरितों के काम 7:51)। परन्तु यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातियों में मसीही, जो परमेश्वर के आत्मा और मसीह में महिमा द्वारा आराधना करते हैं, उन्हें "सच्चा खतना" कहा जाता है (फिलिप्पियों 3:3)! सभी प्राकृतिक यहूदियों को "शरीर के अनुसार इस्राएल" कहा जाता है (यूनानी: इस्राएल काटा सर्क्स) (1 कुरिन्थियों 10:18), परन्तु सभी लोग जिन्होंने क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में अपना भरोसा रखा है और क्रूस पर चढ़ाया गया जीवन जीते हैं, वे परमेश्वर के वास्तविक लोग हैं और "परमेश्वर का इस्राएल" कहलाए जाते हैं (गलातियों 6:12-16; सीएफ. रोमियों 9:6ख)! अब्राहम उन लोगों का "शारीरिक पिता" हो सकता है जो स्वयं को यहूदी कहते हैं, परन्तु वह सभी लोगों का "आध्यात्मिक पिता" है, जो बाइबल के परमेश्वर में विश्वास करते हैं, चाहे वे मूल रूप से यहूदी या अन्यजाति (रोमियों 4:11; यूहन्ना 8:37-44) थे।

व्यवस्था (इस्राएल के नैतिक, औपचारिक और नागरिक कानूनों को ध्यान में रखते हुए) को मानना संसार में किसी भी इंसान को उचित नहीं ठहरा सकता है और न ही ठहराएगा, क्योंकि कोई भी इंसान पूर्ण व्यवस्था को न रख सकता है या न रखा है (गलातियों 3:10; याकूब 2:10)।

(2) शारीरिक खतना बाद में व्यवस्था के कामों को उचित ठहराने का संकेत बन गया (यूहन्ना 7:19, 22)।

बाबुल के निर्वासन (586 ई.पू.) के पश्चात शारीरिक खतना। अब्राहम के लगभग 1500 वर्ष पश्चात, बाबुल के निर्वासन (587 ई.पू.) के दौरान यहूदी धर्म शिक्षकों और अगुवों ने शारीरिक खतने के मूल अर्थ को बदल दिया! शारीरिक खतने का मूल अर्थ: "विश्वास के द्वारा उचित ठहराए जाने का एक चिन्ह *(जैसा परमेश्वर ने कहा और किया है)*" को "*व्यवस्था के कामों द्वारा उचित ठहराने के चिन्ह (जो लोग करते हैं)*" में बदल दिया गया था। यहूदी शरीर के शारीरिक खतने (माँस) को अब विश्वास के द्वारा उचित ठहराए जाने या आध्यात्मिक रूप से हृदय में खतना होने के चिन्ह और मुहर के रूप में नहीं मान रहे थे, परन्तु इसे परमेश्वर की प्रतिज्ञा (परम वादा) के रूप में माना जाता था कि परमेश्वर उन लोगों को अनंत जीवन देगा जो व्यवस्था (नैतिक, औपचारिक और नागरिक) का पालन करेंगे!

लैव्यव्यवस्था 18:5 में कहा गया है, "जो मनुष्य उन को माने (परमेश्वर की राजाज्ञा और व्यवस्था) वह उनके कारण जीवित रहेगा (इस अर्थ में कि वह समृद्ध जीवन जीयेगा)"। परन्तु यहूदियों ने इसकी इस रीति से गलत व्याख्या की: "जो आदमी व्यवस्था का पालन करता है, वह अनन्त जीवन प्राप्त करेगा।" उस समय से यहूदियों का मानना है कि शारीरिक खतना यह संकेत और मुहर है कि

परमेश्वर ने व्यवस्था के कामों के माध्यम से लोगों को उचित ठहराया (या बचाया) है। जबकि परमेश्वर ने शारीरिक खतने को कभी यह अर्थ नहीं दिया!

आठवें दिन एक नवजात बेटे का शारीरिक खतना व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण कार्य बन गया (यूहन्ना 7:19-24)! शारीरिक खतना एक मानवीय धार्मिक संस्कार बन गया जिसने उस व्यक्ति को बचाया (उचित ठहराया) (प्रेरितों के काम 15:1)! शरीर के विषय में मनुष्य के कार्य ने हृदय में परमेश्वर के कार्य को प्रतिस्थापित कर दिया था!

नए नियम की अवधि (50 ई.स.) के दौरान शारीरिक खतना। लगभग 50 ईस्वी सन् में प्रेरित पौलुस ने गलातियों को अपने पत्री में लिखा था कि यदि कोई व्यक्ति स्वयं का शारीरिक रूप से खतना करने देता है, क्योंकि वह मानता है कि व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा उसे उचित ठहराया जाएगा, तो उसे पूर्ण व्यवस्था (सिद्धत्ता से) मानने के लिए बाध्य किया गया था (गलतियों 5:1-4)! पौलुस ने यह भी सिखाया कि संसार में कोई भी पूर्ण व्यवस्था को नहीं रखता या रखने में सक्षम है (रोमियों 3:10-18)। इसलिए परमेश्वर संसार में किसी को भी व्यवस्था मानने के आधार पर उचित नहीं ठहराएँगे (रोमियों 3:19-20, 28)।

यह स्पष्ट है कि नए नियम के समय में यहूदियों ने व्यवस्था (विशेष रूप से शारीरिक खतना) को मानना किसी प्रकार से उनके उचित ठहराए जाने या उद्धार को सुरक्षित रखने के एक साधन के रूप में माना था। उन्होंने सिखाया, "जब तक तुम्हारा मूसा की रीति के अनुसार खतना (शारीरिक) नहीं किया जाता, तब तक तुम बच नहीं सकते" (प्रेरितों के काम 15:1)। अन्य यहूदी रब्बियों ने सिखाया कि "कोई खतना (शारीरिक) प्राप्त आदमी नरक नहीं देखेगा"। और उन्होंने कथित किया कि "परमेश्वर ने अब्राहम से शपथ खाई, कि कोई भी, जिसका (शारीरिक) खतना किया जाएगा, उसे नरक नहीं भेजा जाएगा"। उन्होंने सभी को बताया कि "अब्राहम नरक के द्वार के सामने बैठता है और किसी भी (शारीरिक) खतना प्राप्त इस्राएली को वहाँ प्रवेश होने की अनुमति नहीं देता है।" इस प्रकार, शारीरिक खतना यहूदी राष्ट्रवाद का बाहरी चिन्ह बन गया!

यहूदी रब्बियों की यह शिक्षा निश्चित रूप से बाइबल के तथ्यों पर आधारित नहीं है और इसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए!

(3) नकली यहूदी और बेकार शारीरिक खतना।

शब्द "यहूदी" (इब्रानीः जेहुदी या जुदी) यहूदा (इब्रानीः यहुदाह) के गोत्र से लिया गया है और संभवतः "प्रशंसा करने" (इब्रानीः होदाह) शब्द से लिया गया है (उत्पत्ति 29:35; 49:8)। पौलुस ने कहा कि एक असली यहूदी परमेश्वर से अपनी प्रशंसा प्राप्त करता है (क्योंकि उसने बाइबल के परमेश्वर में विश्वास किया है और उसकी आज्ञा मानी है), जबकि एक नकली यहूदी लोगों से अपनी प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा रखता है (इस तथ्य के कारण कि उसका खतना किया गया है)। यीशु ने यहूदियों को दोषित किया, क्योंकि वे बाहरी दिखावे पर भरोसा करते थे और हमेशा एक दूसरे से प्रशंसा की खोज करते थे (यूहन्ना 5:44)। पौलुस एक मात्र बाहरी शारीरिक यहूदी को नकली यहूदी के रूप में मानता है। याकूब से प्राकृतिक वंशज होना याकूब के वंशज को परमेश्वर की दृष्टि में असली यहूदी नहीं बनाता है!

नए नियम के समय में शारीरिक खतना अब विश्वासियों के साथ परमेश्वर की अनुग्रह की वाचा का संकेत नहीं था, परन्तु मूसा के औपचारिक कानून के आधार पर एक मानव रिवाज बन गया था

(यूहन्ना 7:22)। तथापि, शारीरिक खतने के बाहरी चिन्ह का हृदय के आध्यात्मिक खतने के बिना कोई मूल्य नहीं है!

(4) वास्तविक यहूदी और असली आध्यात्मिक खतना।

एक वास्तविक "यहूदी", अर्थात्, एक विश्वासी जो परमेश्वर से अपनी प्रशंसा प्राप्त करता है, वह बाहरी और शारीरिक रूप से जो कुछ भी है, उससे वर्गीकृत नहीं होता है, परन्तु उससे कि वह आंतरिक और आध्यात्मिक रूप से क्या है! एकमात्र वास्तविक "यहूदी" "एक परदे में यहूदी (बाहरी दिखावट में नहीं)" है और असली खतना "हृदय का खतना है, पवित्र आत्मा द्वारा" और न कि औपचारिक व्यवस्था के अनुसार (रोमियों 2:29क)! नकारात्मक रूप से कहा जाए तो, एक व्यक्ति जिसका हृदय में खतना नहीं हुआ है (नया जन्म प्राप्त नहीं है) उसे परमेश्वर कोई प्रशंसा, स्वीकृति या मान्यता प्राप्त नहीं होगी (रोमियों 2:29ख!)! सकारात्मक रूप से कहा जाए तो, जिस व्यक्ति ने आध्यात्मिक रूप से पवित्र आत्मा के कार्य के माध्यम से हृदय में खतना करवाया है, उसे परमेश्वर से प्रशंसा, स्वीकृति और मान्यता प्राप्त होगी! इस प्रकार, "एकमात्र वास्तविक यहूदी" (अर्थात्, वह व्यक्ति जो परमेश्वर द्वारा स्वीकृत है) एक मसीही है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह मूल रूप से एक प्राकृतिक यहूदी या एक प्राकृतिक अन्यजाति था! केवल ऐसे व्यक्ति को परमेश्वर से प्रशंसा प्राप्त होती है! नकली यहूदियों को अन्य यहूदियों से उनकी प्रशंसा और सम्मान मिलता है जिन्होंने स्वयं का खतना करने की अनुमति दी है। परन्तु वास्तविक यहूदियों को परमेश्वर से प्रशंसा मिलती है।

भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने पहले ही यहूदियों को मानव ज्ञान, शक्ति और धन में घमंड नहीं करने, परन्तु बाइबल के परमेश्वर को जानने और उसके प्रकाशन को समझने के लिए समझाया था। परमेश्वर राष्ट्रों (जैसे मिस्र, यहूदा और अम्मोन) को दंडित करेगा क्योंकि उनका केवल "माँस (शरीर)" में खतना किया गया है और "हृदय में" नहीं (यिर्मयाह 9:23-26)!

प्रेरित ने ऐसे धार्मिक शिक्षकों और अगुवों के विरुद्ध चेतावनी दी है जो लोगों पर शारीरिक खतना लागू करते हैं। उन्हें "शरीर विकृत करनेवाले" कहा जाता है। केवल वे लोग जो आत्मा में परमेश्वर की आराधना करते हैं, जो मसीह यीशु में महिमा करते हैं और जो शरीर में कोई भरोसा नहीं रखते हैं (शारीरिक खतना, बल्कि इस तथ्य पर कि वे अपने हृदय में खतनाध्नया जन्म प्राप्त किए हुए हैं) "(सच्चे) खतना प्राप्त हैं" (फिलिप्पियों 3:2-3)।

नया नियम स्पष्ट रूप से सिखाता है कि औपचारिक कानून (लैव्यव्यवस्था 12:3) के एक भाग के रूप में शारीरिक खतना यीशु मसीह द्वारा *पूरा किया गया* है (मत्ती 5:17) और विश्वासियों के लिए यीशु मसीह में उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ एकजुटता में *पूरा किया गया* है (कुलुस्सियों 2:11-12)। परिणामस्वरूप शारीरिक खतना *रद्द* (कुलुस्सियों 2:14) और *निरस्त* (इफिसियों 2:15) कर दिया गया है। "मसीह यीशु में, (शारीरिक) खतना होने और खतना न होने का कोई मूल्य है। केवल एक चीज जो मायने रखती है वह है प्रेम के द्वारा विश्वास का स्वयं को व्यक्त करना" (गलातियों 5:6)। "अब न तो (शारीरिक) खतना न होने और न ही खतना होने का कुछ भी अर्थ है; मायने रखता है एक नई सृष्टि होना" विश्वास से उचित ठहरकर और पवित्र आत्मा से नया जन्म प्राप्त करने के माध्यम से। सभी लोग जो इस नियम का पालन करते हैं, भले ही वे यहूदी हों या गैर-यहूदी, वास्तव में परमेश्वर के लोग हैं और उन्हें "परमेश्वर का इस्राएल" कहा जाता है (गलातियों 6:15-16; सीएफ. 2 कुरिन्थियों 6:16)! परन्तु सभी शारीरिक खतना प्राप्त यहूदियों को "शरीर के

अनुसार इस्राएल" कहा जाता है (1 कुरिन्थियों 10:18, सीएफ. रोमियों 9:6)!

चरण 4. लागू करना। अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौनसे सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 2:17-29 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 2:17-29 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

2:17. कभी भी अपनी यहूदी राष्ट्रीयता और इस तथ्य के विषय में डींग न मारें कि आप परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में व्यवस्था (तोराह या शरीयत) पर निर्भर हैं।

2:21. जब आप दूसरों को सिखाते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप पहले स्वयं को सिखाते हैं (लूका 6:41-42)!

2:22. कभी भी किसी ऐसी चीज का प्रचार न करें जो आप स्वयं नहीं करते (मत्ती 23:3)!

2:24. स्मरण रखें कि गैर-मसीही आपके आचरण द्वारा आपके परमेश्वर के प्रति विचार हैं (भजन 115:8)!

2:29. यह अच्छे से सुनिश्चित करें कि आप पवित्र आत्मा द्वारा अपने हृदय में खतना-प्राप्त हैं(सीएफ. 2 कुरिन्थियों 13:5)।

2:29. लोगों की प्रशंसा की ओर मत देखो, परन्तु परमेश्वर की अनुशंसा की खोज करो (सीएफ. 2 कुरिन्थियों 10:18)।

2. रोमियों 2:17-29 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं संपूर्ण सुसमाचार संदेश का प्रचार करना चाहता हूँ। इसका अर्थ यह है कि मुझे यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से उद्धार, साथ ही उन लोगों के लिए न्याय जो अविश्वासी रहते हैं (रोमियों 2:16), दोनों की घोषणा करनी चाहिए। मुझे सुसमाचार संदेश में अंतिम न्याय के दिन की घोषणा को शामिल करना चाहिए (सीएफ. यूहन्ना 3:18,36)।

मैं यह सिखाना चाहता हूँ कि प्रत्येक बाहरी धार्मिक संस्कार (चिन्ह) जैसे कि शारीरिक खतना, पानी के साथ बपतिस्मा या प्रभु भोज का कोई अर्थ नहीं है, यदि आंतरिक वास्तविकता अनुपस्थित है, जिसका वह संकेत है। मैं सभी लोगों को यह घोषणा करूँगा कि जब तक वे यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से अपने हृदय में खतना-प्राप्त नहीं होंगे (सीएफ. यूहन्ना 1:12-13) वे खोए रहेंगे।

चरण 5. प्रार्थना।	**प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 2:17-29 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी नकल करने को कहें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "गेहूँ के बीच जँगली पौधों के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन 1 **शमूएल 2, 3, 7 और 8** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **(2) रोमियों 2:5।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों को रोज दोहराएं।
5. शिक्षा देना। मरकुस 4:26-29 में निहित **"गुप्त रूप से उगने वाले बीज" के दृष्टांत,** लूका 13:20-21 में निहित **"खमीर" के दृष्टांत** और मरकुस 4:30-32 में निहित **"राई के दाने" के दृष्टान्त** की तैयारी करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 9

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज़ सुनने और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित इस अध्याय को प्रभु के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **1शमूएल 2,3,7 और 8**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (1शमूएल 2,3,7 और 8)से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(परमेश्वर का राज्य)* **(3) रोमियों 2:5**

दो-दो करके ***समीक्षा करें।***

(3) रोमियों 2:5। पर तू अपनी कठोरता और हठीले मन के कारण उसके क्रोध के दिन के लिये, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने लिये क्रोध कमा रहा है।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *(यीशु के दृष्टान्त)* **"चुपके से बोये गये बीज का दृष्टान्त और खमीर और राई के दाने का दृष्टान्त**

"चुपके से बोये गये बीज का दृष्टान्त" मरकुस 4:26-29 में,
"खमीर का दृष्टान्त" लूका 13:20-21 में
और "राई के दाने का दृष्टान्त" मरकुस 4:30-32 दृष्टान्त
परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी के बारे में है।

"दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ के साथ पृथ्वी की कहानी होता है। यह सत्यता में जीवन की कहानी के निकट होता है या जो आत्मिक सत्य को सिखाए एक ऐसा उदाहरण होता है। यीशु ने लोगों को उनके जीवन की परिस्थितियों की वास्तविकता और उनके नवीनीकरण की आवश्यकता को सहारा देने हेतू परमेश्वर के राज्य को समझाने के लिए सामान्य जगहों और प्रतिदिन की घटनाओं का प्रयोग किया।

हम इन दृष्टान्तों का अध्ययन दृष्टान्तों के अध्ययन के लिए प्रयोग की जाने वाली छः रुपरेखा को

प्रयोग करते हुए करेंगे (9वीं नियमावली , परिशिष्ट 1 को देखें)।

क. चुपके से बोये जाने वाले बीज का दृष्टान्त

पढ़ें मरकुस 4:26-29।

1. <u>दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझना।</u>

परिचय। दृष्टान्त को अलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ इस पर ही आधारित है। इसलिए सर्वप्रथम हम कहानी की प्रष्ठभूमि के शब्दों और संस्कृति और इतिहासिक तथ्यों तथ्यों का अध्यन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी के जीवन के लिए-सत्य तत्व क्या है?
ध्यान दें।

पौधें का बढ़ना एक रहस्य होता है। प्रकृति के क्षेत्र में, ''बढ़ोत्तरी'' हमेशा ही रहस्य रहा है! चहे यह पौधे, पेड़, या जानवर या लोग जो भी हो, कोई भी सही तौर पर नहीं बता सकता कैसे और किसा प्रकार बढ़ोत्तरी होती है! किसान अपने खेतों में बीज बिखेरता है, इस बात की पूर्ण जानकारी कि साथ कि वह इन बीजों के बढ़ने का कारण नहीं हो सकता। अंकुरित होने, अंकुरण, बढ़ोत्तरी, फल बनने और फल लगनें की प्रक्रिया पर उसका नियंत्रण नहीं होता। बहुत से दिन और रात ऐसे बीतते है जिनमें किसान बीज के साथ कुछ नहीं करता और तौभी, बढ़ोत्तरी होती है! परन्तु वह यह नहीं जानता कि यह *कैसे* हुआ! सभी किसान केवल एक काम कर सकते है कि वे यह विश्वास करें कि बीज बढ़ेगा और कटनी के समय तक धीरज के साथ प्रतिक्षा करें। पक्का होने के लिए, वह बीज को मट्टी से ढाकता है, उसकी निराई करता है, उसमें खाद डालता है, फिर उसमें पानी डालता है, और उसके सर्य की तपिश से बचाता है। यह सभी जरुरी बातें है परन्तु वे बढ़ोत्तरी का कारण नहीं होते!

पौधे के बीज में संभावित चमत्कार होता है। अपने आप में ही सब कुछ, बिना किसी दिखते कारण और मानवीय सहायता के, बीज भूमि में अंकुरित होता है, एक लम्बे तने के रुप में विकसित होता है, एक छोटे अंकुर के रुप में बढ़ता है और अन्त में एक अंकुर में एक पूर्ण बीज के रुप में विकसित हो जाता है। यह कुछ ऐसा है जैसा कि *परमेश्वर ने बढ़ोत्तरी के छिपे या गप्त रहस्य को एक छोट बीज में समाहित कर दिया हो,* इस लिए अब बीज को सही में मालूम होता है कि उसे क्या, कब, और कैसे करना है। परमेश्वर ने एक छोटे बीज में महान संभावित सामर्थ या योग्यता को भरा है।

बढ़ोत्तरी के स्तर। बढ़ोत्तरी के एक स्तर से दूसरे में परिवर्तन होना इतना सामान्य है कि इसका पता ही नहीं चलता। किसान उन महत्वपूर्ण क्षणों को दिखा नहीं सकता जब एक डंढल अंकुरण में बदल जाती है, या उस अंकुरण में बीजों की एक पूरी कतार उत्पन्न हो जाती है। परन्तु सामन्य परिस्थितियों में यह बढ़ोत्तरी अनिवार्य है। कुछ भी इस बढ़ोत्तरी की प्रक्रिया को रोक नहीं सकता।

कटनी सफलता या विजय की ओर संकेत करती है। मरकुस 4:29 सही में कहता है, ''परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है।'' कटनी का विवरण

थोड़ा नाट्किय हैः ''एक बार'', जब कटनी का समय आ जाता है तो किसान बिना किसी देरी के फसल काटता है!

2. तत्कालीन संदर्भ का निरिक्षण करना और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करना।

परिचय। दृष्टान्त की ''कहानी'' का संदर्भ दृष्टान्त की ''परिस्थिति'' और ''व्याख्यान या लागूकरण'' में समाहित होता है। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त के कहे जाने के मौके को बताती है, या दृष्टान्त के कहे जाने के समय की परिस्थितियों का व्याख्यान करती है। परिस्थिति अक्सर दृष्टान्त की कहानी के *पहले* पाई जाती है और व्याख्यां या लागूकरण दृष्टान्त की कहानी के बाद में पाया जाता है।
खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और व्याख्यान या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मरकुस 4:1-25 और 30-34 में मिलती है.

मरकुस 4:33-34 से, यह प्रगट होता है कि जब यीशु ने बोने वाले के दृष्टान्त को पद 3-9 में, गुप्त में बढ़ने वाले बीज का दृष्टान्त पद 26-29 और राई के दाने का दृष्टान्त पद 30-32 को सुनाया तो वह भीड़ से बातें कर रहा था। वह कहता है, ''बहुत से समान दृष्टान्तों में यीशु ने उनसे वचन के द्वारा जितना वे समझ सकते थे उतनी बातचीत की। बिना दृष्टान्त का प्रयोग किये उसने उन से कोई बात-चीत नहीं की। परन्तु ज बवह अपने चलों के साथ अकेला होता था, वह उन्हें सब कुछ समझाता था।''

(2) इस दृष्टान्त की कहानी मत्ती 13:33 और लूका 13:20-21 में मौजूद है।

(3) व्याख्यां या लागूकरण।

यीशु ने दृष्टान्त का व्याख्यान नहीं दिया। इसलिए दृष्टान्त को अवश्य ही उसकी कहानी और उसके संदर्भ से व्यख्यानित किया जाना चाहिए। (देखें ई)।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानना।

परिचय। किसी आत्मिक महत्व को दर्शाने के लिए यीशु ने प्रत्येक विवरण को कहानी में रखना नहीं चाह। दृष्टान्त की कहानी में प्रासंगिक विवरण वे हैं जो केन्द्रिय बिन्दु या मुख्य विषय या दृष्टान्त के पाठ पर बल देते है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के प्रत्येक विवरण को आत्मिक महत्व से स्वतन्त्र रुप से जोड़ना नहीं चाहिए।

खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन-से विवरण सही में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

बोने वाला या किसान। कुछ मसीह विश्वासी यह मानते है कि गुप्त में उगने वाले बीज कि दृष्टान्त में वह व्यक्ति या किसान यीशु मसीह को प्रस्तुत करता है, क्योंकि गेहूं के पौधों के मध्य जंगली घास में गेहूं बोने वाला यीशु मसीह है। परन्तु इसका अर्थ यह होगा कि यीशु मसीह यह नहीं जानता कि किस प्रकार बीज उगता, बढ़ता और फलवन्त होता है। यह बात उस विचार को प्रस्तुत करेगी जो कि दृष्टान्त के मुख्य संदेश से अलग होगी। इसलिए गुप्त में उगने वाले दृष्टान्त में, ''बोने वाला'' या किसान दृष्टान्त में महत्वपूर्ण या प्रासंगिक नहीं है। वह केवल कहानी को आगे बढ़ाने के लिए है।

ज़मीन पर बिखेरे गये बीज। यीशु ने इसका व्याख्यान नहीं किया है। कहानी में यह बढ़ने का पहला चरण है और ऐसा होने पर इसके लिए दृष्टान्त में प्रासंगिक विवरण मौजूद है। बीज को अवश्य ही परमेश्वर के राज्य से संबधित होना चाहिए, इसका अर्थ यह है कि लोगों के हृदय और जीवन में परमेश्वर के प्रभुत्व का राज्य होना चाहिए। यह परमेश्वर के वचन की ओर संकेत करता जो लोगों के हृदय में बोया गया हो और बहुतायत का फल लाये (मरकुस 4:14)। यह व्यक्तियों के हृदय में पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर की उदारता और संप्रभुता के कार्य की आरे संकेत करता है, पाप के संबन्ध में संसार को दोषी ठहराता है और उनको धार्मिकता और न्याय के लिए याद दिलाता है (यूहन्ना 16:8)। या परमेश्वर के वचन और सुसमाचार को एक स्थान से दूसरे और एक जाति से दूसरी जाति में घोषणा करते हुए यह परमेश्वर के व्यापक कार्य की ओर संकेत करता है (मत्ती 24:14)।

पौधे के अवस्थापरिवर्तनीय स्तर। एक स्तर से दूसरे स्तर में अवस्थापरिवर्तन नजर न आने योग्य है। पौधे के बदलने के विभिन्न स्तर जैसे कि अंकुरण, डंठल, सिरा और पूर्ण बीज के साथ सिरा, इसको व्याख्यानित नहीं किया गया या यीशु के द्वारा बताया नहीं गया है। यह बीज के परिपक्वता और पकने के इन सभी स्तरों में स्वयं बढ़ने की क्षमता के विचार को पुनःस्थापित करता है। इस लिए, पौधे की बढ़ोत्तरी के अवस्थापरिवर्तनीय स्तर को *अलग से* कोई अर्थ नहीं दिया जाना चाहिए। *यह व्यक्ति में आत्मिक उन्नति के पहचाननेयोग्य विशिष्ठ स्तरों या संसार के सुसमाचारिकरण के स्तरों को प्रस्तुत नहीं करते।*

कटनी। गेहूं के मध्य जंगली घास के दृष्टान्त के समान, ''कटनी'', जब यीशु मसीह वापस आयेंगे उस समय अन्तिम न्याय की याद दिलाती है। तौभी, यीशु ने इन विवरणों की व्याख्या या लागूकरण नहीं किया है। यह केवल उस विचार को बल देते है कि परमेश्वर का प्रभुत्व और न रुकने वाला काम मसीही लोगों के मनों और जीवनों में कुंठाग्रस्त नहीं हो सकता है। परमेश्वर का कार्य पूरा और फलवन्त होगा!

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदश या तो व्याख्यान या लागूकरण या स्वयं कहानी में पाया जाता है। जिस प्रकार यीशु स्वयं दृष्टान्त का व्याख्यान या लागूकरण करते है उस तरीके से, हम जानते है कि किस प्रकार हमें दृष्टान्त की व्याख्या करनी चाहिए। दृष्टान्त में सामान्य रुप से कहने के लिए एक मुख्य पाठ, एक मुख्य बिन्दु होता है। इसलिए हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में आत्मिक सत्य को खोजते नहीं रहना चाहिए, परन्तु इसके बदले एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मख्य पाठ क्या है?

ध्यान दें।

मरकुस 4:26-29 में गुप्त में बढ़ने वाले बीज का दृष्टान्त ''परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी'' के बारे में है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''मनुष्य नहीं केवल परमेश्वर ही आत्मिक बढ़ोत्तरी का कर्त्ता है। केवल परमेश्वर ही उसके राज्य की स्थापना और उन्नति का कर्त्ता है, वह यह कि, उसका राज्य लोगों के हृदय और जीवनों और पृथ्वी के हर कण है।''

परमेश्वर की संप्रभुत्व इच्छा बाइबल में परमेश्वर के वचन के लोगों के जीवनों और हृदयों में और साथ

ही साथ समान्य रुप से समाज में उसके बढ़ते हुए सामर्थी प्रभाव को बताती है। मसीहों के लिए यह तथ्य बड़ा तसल्ली देने और उत्साहित करने वाला है। मसीही लोगों को संयम के साथ कटनी के समय की प्रतिक्षा करनी चाहिए, क्योंकि जब यह आयेगी, यह सम्पूर्ण विजय के साथ आयेगी! उसके राज्य के लिए परमेश्वर की योजना अवश्य पूरी होगी और अवश्य ही पूरी होने जा रही है! परमेश्वर के राज्य का आगमन न रुकने योग्य है!

- परमेश्वर का राज्य <u>एक वर्तमान राज्य है</u> – यह मसीह के प्रथम आगमन पर ही आ गया है!
- परमेश्वर का राज्य <u>लगातार रुपान्तरित होने वाला राज्य है</u> – इसमें मसीहों के जीवनों और हृदय में लगातार रुपान्तरित होने का प्रभाव होता है, जिससे वह अधिक मसीह की समानता में हो जाएं और अधिक फलवंत हों।
- परमेश्वर का राज्य <u>लगातार फैलने वाला राज्य है</u> – यह पृथ्वी पर सभी लोगों के समूहों में और लागों की बढ़ती हुई संख्या के रुप में लगातार फैलता रहता है।
- परमेश्वर का राज्य <u>भविष्यात्मक राज्य है</u> – दूसरे आगमन के समय पर, परमेश्वर का राज्य एक पूर्ण और सिद्ध राज्य होगा। सभी जातियों, गात्रों, लोगों और भाषा में से बचाये गये लोगों की एक बड़ी भीड़ जिसे कोई भी गिन नहीं सकता यीशु मसीह के सिंहासन के समक्ष खड़ी होगी (प्रकाशितवाक्य 7:9) और यह उस समय की पृथ्वी पूर्ण रुप से नयी होगी (2पतरस 3:10–13)!

बीज अपने आप परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था के अनुसार बढ़ता है, जिसे बोने वाला (किसान) देख नहीं सकता। इसी प्रकार, परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर का अनुग्रहपूर्ण और संप्रभुत्व कार्य परमेश्वर की अनुग्रहपूर्ण और संप्रभुत्व इच्छा के अनुसार बढ़ता है!

परमेश्वर के प्रभुत्व को महसूस करना और आभार प्रगट करना (उसकी अनन्त योजनाएं, उसकी संप्रभुत्व इच्छाएं जो पूरी होंगी और उसकी सर्वसामर्थी शक्ति जो उसको सब कुछ पूरा करने के योग्य बनाती है) परमेश्वर के राज्य का सबसे प्रथम चरित्र है। परमेश्वर के राज्य के सही लोग परमेश्वर पर अपनी पूर्ण निर्भरता को प्रगट करते है। वे अपने छुटकारे के लिए आरंभ से लेकर अंत तक और जीवन के प्रत्येक भाग में अपनी आत्मिक उन्नति के लिए परमेश्वर पर निर्भर होते है। वे सभी जगहों पर अपनी कलीसियाओं के स्थापत्य के लिए और उस समाज में अपने प्रभाव को कायम रखने के लिए जिसमें वे रहते हैं परमेश्वर पर निर्भर होते है। और वे अन्तिम और सभी बातों की अनिवार्य पूर्णता और सिद्धता के लिए परमेश्वर पर निर्भर होते है!

---

5. <u>दृष्टान्त की तुलना बाइबल के समान और विरोधी पद्यांशों के साथ करें।</u>

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान है और आपस में तुलना किए जा सकते है। तथापि, सभी दृष्टान्तों में सत्य समानान्तर है या विरोधाभासी सत्य बाइबल के अन्य पद्यांशों में सिखाया गया है। उन अति महत्वपूर्ण अन्य संदर्भो को खोजने का प्रयास करें जो हमें दृष्टान्तों के व्याख्यान में सहायता करें। दृष्टान्तों के व्याख्यान को हमेशा बाइबल की सीधी स्पष्ट शिक्षा से जाँचे।

पढ़ें। यशायाह 55:10–11; 14:24,27; भ.सं. 138:8।

खोजें व चर्चा करें। किस प्रकार बाइबल के यह पद्यांश जो सिखाते है, उसकी तुलना दृष्टान्तों की शिक्षा से की जा सकती है?

ध्यान दें।

यशायाह 55:10-11 में लिखा है, "जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन् भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोने वाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, <u>उसी प्रकार से मेरा वचन भी व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिए मैंने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा।</u>" बाइबल में परमेश्वर का वचन परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता है और उस उद्देश्य को पूरा करता है जिसके लिए उसे भेजा गया है!

उसी प्रकार, परमेश्वर अपने बच्चों के लिए अपने उद्देश्य को पूरा करेगा और अपने हाथों के काम को कभी न त्यागेगा (भ.सं. 138:8)! जो उसने आरंभ किया है उसे वह पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6)। परमेश्वर के सभी उद्देश्य वास्तविकता बन जायेंगे और कोई भी उसे उसके उद्देश्य को पूरा करने से रोक नहीं सकता (यशायाह 14:24,27)!

---

6. <u>दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा को संक्षिप्त करें।</u>

विचार करें। दृष्टान्तों की प्रमुख शिक्षाएं और संदश क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें जानने या विश्वास करने के लिए क्या सिखाया है और उसने हमें होने या करने के लिए क्या सिखाया है?

ध्यान दें।

यह दृष्टान्त बहुत से मानवीय उत्साह, मानवीय विचारधारा और मानवीय उतावलापन के विरुद्ध परमेश्वर के काम के संबन्ध में चेतावनी हैं। लोग पूछते हैं, "क्यों परमेश्वर इस अंधकारमय और टूटे हुए संसार में अपने राज्य को जल्दी से स्थापित नहीं कर देते?" परिणाम हमेशा ही निरुत्साह, उदासीनता और लगन और दृढ़ता की कमी के रुप में आता है। यह दृष्टान्त हमारी उदासीनता को उत्साह और भरोसेमंद विचारों में बदलना चाहता है। जहां भी हम बोयेंगे, वहां पर एक दिन फसल तैयार होगी! यदि वहां पर बहुत भी है हम परमेश्वर की योजना और कार्य को नहीं समझ कि वह कभी भी असफल नहीं होगा!

यह तथ्य उस तथ्य को समाप्त नहीं करता कि मसीही लोग परमेश्वर के सहकर्मी के रुप में कार्य करते हैं (1कुरि. 3:6-9)। परन्तु गुप्त में उगने वाले बीज का दृष्टान्त लोगों के हृदय और जीवनों में परमेश्वर के प्रभुत्व के कार्य पर बल देता है। इस लिए परमेश्वर कहता है, "लौट आने और शान्त रहने में तुम्हारा उद्धार है; शान्त रहने और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है" (यशायाह 30:15)। जो परमेश्वर ने तुम्हें रौशनी में कहा हो उस पर अंधकार में संदेह न करें!

ख. खमीर का दृष्टान्त।

पढ़ें. मत्ती 13:33; लूका 13:20-21.

1. <u>दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी को समझें।</u>

चर्चा करें। कहानी में जीवन के लिए सत्य तत्व कौन से है?

ध्यान दें।

भोजन की मात्रा. बाइबल सही में कहती है कि स्त्री ने ''खमीर को लिया और तीन पसेरी आटे में मिला दिया और पूरा गूंथा हुआ आटा खमीरा हो गया।'' ''माप'' (आरामी और यूनानी में: पसेरी) को एपा का एक तिहाई अनुमान लगाया जाता है, जो कि लगभग 7.3 लीटर के बराबर होता है। यह एक भोजन की बड़ी मात्रा है, जो कुछ 22 लीटर भोजन के बराबर है (उत्पत्ति 18:6; न्यायियो 6:19; 1शामुएल 1:24)।

खमीर. खमीर एक ऐसा तत्व होता है जिसमे फफूंद होता है। यह कण शर्करा के साथ मिल का उगनी की प्रक्रिया के अर्न्तगत बढ़ते है और उफान (खमीर) को उत्पन्न करते हैं। खमीर का प्रयोग मदिरा बनाने और रोटी में खमीर उठाने के लिए किया जाता है।

---

2. तत्कालीन संदर्भ का निरिक्षण करना और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करना।

खोजें एवं चर्चा करें इस दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और व्याख्यान या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती 13:3-35 और लूका 13:18-21 में पाए जाने वाले दूसरे दृष्टान्तों के समान है।

यह दर्शाता है कि यीशु ने खमीर और राई के दाने के दृष्टान्त को बीज बोने वाले और गेहूं के बीच में जगली घास के दृष्टान्त के नजदीकी संबन्ध में लोगों को सुनाया।

(2) इस दृष्टान्त की कहानी को मत्ती 13:33 और लूका 13:20-21 में लिया गया है।

(3) व्याख्यां या लागूकरण।

यीशु ने दृष्टान्त का व्याख्यान नहीं किया है। इसलिए दृष्टान्त को अवश्य ही उसकी कहानी और उसके संदर्भ से ही व्याख्यानित करना होगा। (देखें ई)।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचाने।

सिखायें। जब भी यीशु ने कहा, ''परमेश्वर का राज्य *...समान* है'' वह सिखाना चाहता है कि परमेश्वर के राज्य में अभी पृथ्वी पर क्या होता है और यीशु मसीह के दूसरे आगमन के समय जब परमेश्वर का राज्य अपने अन्तिम रुप में प्रगट किया जायेगा तो सही में क्या होगा। अन्तिम न्याय के दिन, दृष्टान्त में विवर्णित घटनाएँ पक्के तौर पर घटेंगी। इसका अर्थ यह है कि वे लोग जो आज रह रहे है उन घटनाओं में शामिल है जिनका दृष्टान्त में वर्णन किया गया है! यीशु मसीह के प्रत्येक दृष्टान्त में आपके और मेरे लिए आज संदेश है!!!
चर्चा करें। इस दृष्टान्त में कौन सा विवरण सही में जरुरी या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

खमीर। खमीर एक प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि यीशु मसीह ने परमेश्वर के राज्य की तुल्ना इससे की है। तौभी, बहुत से विभिन्न मसीही लोगों के द्वारा इस विवरण को अलग तरीके से व्याख्यानित किया गया है। बाइबल में, विशिष्ठि प्रतिकों को या तो बुरे या भले महत्व के लिए उनके संदर्भ पर निर्भर करते हुए प्रयोग किया गया है। उदहारण के लिए, ''सांप'' का प्रतिक उत्पत्ति 3:13 में बुरे रुप में

प्रयोग किया गया, जहां पर वह शैतान को प्रस्तुत करता है, जिसने हव्वा को धोखा दिया, और पाप के लिए परिक्षा में डाला (यह भ.सं. 140:3; नीतिवचन 23:32; यशायाह 27:1; मत्ती 23:33; 2कुरि. 11:3 और प्र.वा. 12:9 में भी *बुरे* के रुप में प्रयोग किया गया)। यद्यपि, ''सांप'' का चिन्ह गिनति 21:8 में *अच्छे* के लिए प्रयोग किया गया, जहां पर वह चिन्हात्मक रुप में यीशु को क्रूस पर प्रगट करता है (यूहन्ना 3:14 में भी यह अच्छे के रुप में प्रयोग किया गया है)। इसी के समाना ''शेर'' शब्द 1पतरस 5:8 में शैतान को और प्र.वा. 5:5 में यीशु को प्रस्तुत करता है।

इसी प्रकार, ''खमीर'' के चिन्ह को मत्ती 16:6 में *बुरे* के लिए प्रयोग किया गया, जहां पर यीशु ने फरीसीयों और सदूकियों की शिक्षाओं और धर्म के विरुद्ध सावधान रहने के लिए कहा। उनकी शिक्षाओं में न्याय (उद्धार) को पाने के लिए मानवीय प्रयासों को समाहित किया गया और उनका धर्म मनुष्य के द्वारा बनाये गये बाहरी कार्यो को दर्शाता था। वे धार्मिकता और सत्य के प्रति सम्पूर्ण हृदय से समपर्ण को पसंद नहीं करते थे। यीशु ने उनकी शिक्षाओं को ''खमीर'' कह कर बुलाया, क्योंकि, यह तेजी से उनके और अन्य लोगों के जीवनों में प्रभावी सिद्धान्त के रुप में प्रवेश कर रहा था। 1कुरि. 5:6–8 में भी ''खमीर'' के चिन्ह को *बुरे* अर्थ में लिया गया है, जहां पर पौलुस आत्मिक वरदानों के लिए गलत प्रकार की महिमा की निन्दा करता है, जो कि उसी समय पर कलीसिया में आन्तरिक अलगाव और लैंगिक अनैतिकता को बर्दाशत कर रही थी। कुरिन्थियो की कलीसिया में प्रमुख आवाज आत्मिक धमण्ड था।

परन्तु खमीर के दृष्टान्त में ''खमीर'' का *भला* अर्थ है। यीशु ने स्पष्ट रुप से सिखाया कि यह ''परमेश्वर के राज्य या परमेश्वर के प्रभुत्व'' को प्रगट करता है, यह कि, ''परमेश्वर का राज्य जो, सम्पूर्ण हृदय से मसीही लोगों के दिलों और जीवनों में स्वीकार किया गया है''। खमीर मे खमीर उठाने का गुण होता है जब तक कि उसे पूरे आटे को ऐसा करने न दिया जाए। अतः, ''खमीर जीवनों में परमेश्वर के राज्य या परमेश्वर की प्रभुता के बदलाव के प्रभाव को प्रस्तुत करता है!

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 13:20–21 में खमीर का दृष्टान्त ''परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी'' के बारे में है। दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''जब एक बार परमेश्वर का राज्य मसीही व्यक्ति के हृदय में स्थापित हो जाता है, यह अपने प्रभाव की प्रक्रिया को जारी रखता है जब तक वह सब कुछ को बदल नहीं देता और नया नहीं कर देता!''

यह दृष्टान्त विशेष रुप परमेश्वर के राज्य की आन्तरिक बढ़ोत्तरी पर बल देता है (लगभग लूका 17:21)। मसीही लोगों के हृदय में परमेश्वर का राज्य उनके व्यक्तिगत जीवन के प्रत्येक भाग पर प्रभाव डालता है। यह उन्हें बचाता है सुरक्षित रखता है और उनके व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार, संबन्धों, कार्यों और सेवकाई के प्रत्येक भाग को पुनःरचित करता है।
परमेश्वर के प्रभुत्व के कार्य को महसूस और स्वीकार करते हुए परमेश्वर के राज्य की आन्तरिक बढ़ोत्तरी उसके राज्य की एक आधारभूत खूबी है। परमेश्वर के राज्य के असल लोग परमेश्वर की

सम्पूर्ण प्रभुसत्ता को सभी बातों में जो उसके राज्य की आन्तरिक बढ़ोत्तरी से संबन्धित है स्वीकार करते है। राज्य के अन्तिम स्तर में प्रत्येक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को अनुमति दी जाएगी जो नये स्वर्ग और नई पृथ्वी का एक भाग होगा। मसीही लोग पूर्ण रुप से मसीह के समान हो जायेंगे (2कुरि. 3:18; 1यूहन्ना 3:1-3)।

ग. राई के दाने का दृष्टान्त

पढ़ें। मत्ती 13:31-32; मरकुस 4:30-32; लूका 13:18-19.

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन के लिए सत्य तत्व कौन से है?
ध्यान दें।

राई का दाना। यह दाना मिस्री उत्पत्ति का है और यह सबसे छोटा बीज होता है जो बाग में बोया जाता है। कहावत में यह वस्तु की ओर संकेत करती है जो आरंभ में सबसे छोटा होता है। यद्यपि आरंभ में महत्वहीन होता है परन्तु राई का दाना इतना बढ़ता है कि पेड़ बन जाता है।

राई का पेड़। पलिस्तीन में राई का पेड़ खेत का सबसे बड़ा पौधा होता है और तीन से पाँच मीटर की ऊचाई तक पहुँच सकता है। पतझड़ के मौसम में, इसकी शाखाएं इतनी बड़ी हो जाती हैं कि पक्षी आ कर इसमें शरण पाते हैं। बाइबल कहती है, "वे उसकी शाखाओं में तूफान से बचने, घबराहट से आराम पाने और सूरज की गर्मी से बचने हेतु" अपना घर बनाने के लिए आते है। वे छोटे काले बीजों को बालियों में से निकाल कर खाने के लिए भी आते हैं, परन्तु यह बात दृष्टान्त में नहींकही गई है। अतः, सारी बातों में, राई के पेड़ का चित्रण कुछ ऐसा अच्छा स्थान है जिसे कोई अपना घर बना सकता है!

---

2. तत्कालीन संदर्भ का निरिक्षण करना और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करना।

खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और व्याख्यान या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती 13:3-35 और लूका 13:18-21 में पाए जाने वाले दूसरे दृष्टान्तों के समान है।

यह दर्शाता है कि यीशु ने खमीर और राई के दाने के दृष्टान्त को बीज बोने वाले और गेहूं के बीच में जगली घास के दृष्टान्त के नजदीकी संबन्ध में लोगों को सुनाया।

(2) इस दृष्टान्त की कहानी को मत्ती 13:31-32, मरकुस 4:30-32 और लूका 13:18-19 में लिया गया है।

(3) व्याख्यां या लागूकरण।

यीशु ने दृष्टान्त का व्याख्यान नहीं किया है। इसलिए दृष्टान्त को अवश्य ही उसकी कहानी और उसके

संदर्भ से ही व्याख्यानित करना होगा। (देखें ई)।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त में कौन सा विवरण सही में जरुरी या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

राई का दाना। यह एक प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि यीशु ने परमेश्वर के राज्य की इससे तुलना की है। क्योंकि खेत से सभी पौधों में से इसका बीज सबसे छोटा होता है, यह संसार में परमेश्वर के राज्य के बहुत छोटे महत्पूर्ण आरंभ को प्रस्तुत करता है।

राई का पेड़. यह भी एक प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि राई का दाना एक महत्वपूर्ण राई का पेड़ बन जाता है। राई का पेड़े जो क्यारी के पौधों में *सबसे बड़ा* पौधा होता है और स्वर्ग के पक्षियों को अपना घर बनाने के लिए स्थान देता है, संसार में परमेश्वर के राज्य के महत्वपूर्ण महान परिणाम को प्रस्तुत करता है।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचाने।

चर्चा करें। दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

मरकुस 4:30-32 में राई के दाने का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी" के बारे में है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "यद्यपि परमेश्वर के राज्य का आरंभ छोटा महत्वहीन है, परन्तु यह संसार में बहुत महत्वपूर्ण परिणाम में बढ़ जाता है।

यह दृष्टान्त परमेश्वर के राज्य की दृश्य और बहारी बढ़ोत्तरी पर बल देता है (उदाहरण के लिए मत्ती 24:14)। मसीही लोगों के जीवन और हृदय में परमेश्वर का राज्य अन्ततः संसार में जीवन के प्रत्येक भाग प्रभाव डालता है। यह संसार में बहुत से अन्य लोगों को बचायेगा, उन्हें सुरक्षित रखेगा और उनके परिवारिक जीवन, शिक्षा, स्वास्थय सेवा, सरकार, न्याय प्रणाली, उद्योग, वाणिज्य आदि को पुर्न-रचित करेंगा। यह संसार में सभी जगहों पर बहुत सी नयी कलीसियाओं की स्थापना करने में और बहुत से लोगों को प्रत्येक जाति, देश, और संस्कृति में से परिवर्तित करने में अगुवाई करेगा।

परमेश्वर के प्रभुत्व के कार्य को महसूस और स्वीकार करते हुए परमेश्वर के राज्य की आन्तरिक बढ़ोत्तरी उसके राज्य की एक आधारभूत खूबी है। परमेश्वर के राज्य के असल लोग परमेश्वर की सम्पूर्ण प्रभुसत्ता को सभी बातों में जो उसके राज्य की बहारी बढ़ोत्तरी से संबन्धित है स्वीकार करते है। राज्य अपने अन्तिम प्रगटीकरण में प्रत्येक उस बात को जो नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी का भाग होगा उसको ढाप लेगा। इस संसार में और पृथ्वी पर सभी बातें यीशु मसीह के अधिकार के अर्न्तगत आ जायेगी (1कुरि. 15:25; इफिसियों 1:10)। संसार में से सभी विभिन्न जातियों के मसीही लोग परमेश्वर के राज्य में वैभव, महिमा, और उनकी संस्कृतियों के लिए आदर लेकर आयेंगे (2कुरि.

10:3-6)। कुछ भी जो पाप का कारण हो या अपवित्र हो इसमें प्रवेश नहीं करेगा (मत्ती 13:41; प्र. वा. 21:27)।

घ. बढ़ोत्तरी के दृष्टान्तों की एक दूसरे के साथ तुलना

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार यह दृष्टान्त एक दूसरे के साथ तुलना करते हैं?
ध्यान दें।

(1) बोने वाले का दृष्टान्त.

पढ़ें. मरकुस 4:3-9. यह दृष्टान्त बीज, परमेश्वर का वचन, के रुप में मानवीय जिम्मेदारी पर बल देता है। बीज तब तक अंकुरण, अंकुर, डंढल और फलवंत नहीं हो सकता जब तक कि उसे अच्छी भूमि में न डाला जाये। इसका अर्थ यह है कि सुसमाचार या नये नियम का संदेश केवल तभी फलवंत होगा जब मनुष्य का हृदय उसके पक्ष में प्रतिउत्तर देगा। मनुष्य को हमेशा परमेश्वर के वचन के पक्ष में प्रतिउत्तर देने की जिम्मेदारी है। एक बार एक व्ययवस्थापक ने यीशु से पूछा, ''गुरु अनन्त जीवन में प्रवेश करने के लिए मैं क्या करुँ?'' यीशु ने उससे पूछा, ''बाइबल में क्या लिखा है? ''तू उसे कैसे पढ़ता है?'' व्यवस्था का ज्ञाता उत्तर देता है, ''कि लू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से आपने समान प्रेम रख।'' यीशु ने उसे आज्ञा और चुनौती भी दी, ''तूने सही उत्तर दिया है। *ऐसा ही कर* और तू जीवित रहेगा'' (लूका 10:25-28)। परमेश्वर के वचन के शिक्षक और प्रचारक को हमेशा परमेश्वर के वचन को समझाने वाला ही नहीं होना चाहिए, परन्तु सुनने वाले को अवश्य ही परमेश्वर के वचन के पक्ष में प्रतिउत्तर देने के लिए चुनौती देनी चाहिए!

(2) गुप्त में उगने वाले बीज का दृष्टान्त.

पढ़ें. मरकुस 4:26-29. यह दृष्टान्त उसकी आत्मा और उसके वचन के द्वारा उसके राज्य की स्थापना और बढ़ोत्तरी के संबन्ध में बीज के विषय में दिव्य संप्रभुता पर बल देता है। कोई भी नहीं केवल परमेश्वर ही भौतिक और आत्मिक बढ़ोत्तरी का कर्त्ताधरता है! केवल परमेश्वर ही आपने राज्य की स्थापत्य और उन्नति का कारण है। केवल परमेश्वर ही लोगों के हृदय, जीवनों और भागों में उसके राज्य के स्थापत्य और उन्नति का कारण है। यह उसकी सर्वसामर्थी इच्छा के करण है कि आत्मिक बीज, परमेश्वर का वचन, लोगों के हृदय पर उसके बढ़ते हुए सामर्थी प्रभाव के साथ और समान रुप से समाज में कहा जाता है।

(3) खमीर और राई के दाने का दृष्टान्त.

पढ़ें. मरकुस 4:30-32 और मत्ती 13:31-34. बीज बोने वाले का दृष्टान्त और गुप्त में उगने वाले बीज का दृष्टान्त, हमें क्या करना चाहिए और अपने वचन से संबन्धित आत्मिक उन्नति के क्षेत्र में और फलवंत होने के लिए परमेश्वर क्या करता है, इस बात पर बल देते हैं। खमीर और राई के दाने का दृष्टान्त, यद्यपि, जब मनुष्य परमेश्वर के साथ सहयोग देता है उस समय पर आत्मिक बढ़ोत्तरी की बहुतायत के परिणाम पर बल देते हैं।

फिलिप्पियों 2:12-13 कहता है, ''इसलिए, ...डरते और कांपते हुए अपने उद्धार के कार्य को पूरा करते जाओ, क्योंकि वह परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा के निमित्त तुम्हारे मन मे इच्छा और काम, दोनों बातों के करन का प्रभाव डाला है।'' इसलिए, जब तुम अपने उद्धार के लिए काम करते हो (बीज बोने वाले का दृष्टान्त), परमेश्वर तुम में काम करता है (गुप्त में उगने वाले बीज का

दृष्टान्त), तब बहुतायत की आन्तरिक बढ़ोत्तरी (खमीर का दृष्टान्त) और बहारी बढ़ोत्तरी (राई के दाने का दृष्टान्त) पक्कायत का परिणाम होगा! खमीर का दृष्टान्त इस आन्तरिक उन्नति पर बल देता है (रुपान्तरण), जो लोगों के हृदयों, जीवनों ओर स्थिति में परमेश्वर के राज्य का कारण होती है। राई के दाने का दृष्टान्त इस बहारी उन्नति (फैलाव) पर बल देता है, जिससे परमेश्वर का राज्य संसार के सभी देशों में फैलाव का कारण हो जाता है।

इ. परमेश्वर के राज्य में बढ़ोत्तरी के संबन्ध में दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षाओं को सारांश

खोजें व चर्चा करें। बढ़ोत्तरी के दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षाएँ और संदेश क्या है? यीशु ने हमें *जानने* या *विश्वास* करने के लिए क्या सिखाय है और *होने* या *करने* के लिए उसने हमें क्या सिखाया है?
ध्यान दें।

(1) मुख्य संदेश।

परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी के संबन्ध में इन दृष्टान्तों का मुख्य संदेश निम्नलिखित है।
"जब मनुष्य का परमेश्वर के वचन के पक्ष में प्रतिउत्तर उसके हृदय और जीवन में परमेश्वर के अथक कार्य के साथ सहयोग में होता है तब मनुष्य की भीतरी और बहारी जिन्दगी दोनो में और संसार में मानव समाज के प्रत्येक क्षेत्र में बहुतायत की बढ़ोत्तरी परिणाम स्वरुप होती है।"

फिलिप्पियों 2:12-13 कहता है, "इसलिए, ...डरते और कांपते हुए अपने उद्धार के कार्य को पूरा करते जाओ, क्योंकि वह परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा के निमित्त तुम्हारे मन मे इच्छा और काम, दोनों बातों के करन का प्रभाव डाला है।" जब मनुष्य अपनी इच्छा से परमेश्वर के प्रभुत्व के कार्य को अपने में होने देता है तब बहुतायत की बढ़ोत्तरी परिणाम स्वरुप होती है!

बीज बोने वाला दृष्टान्त परमेश्वर के वचन के पक्ष में प्रतिउत्तर देने के लिए मानवीय जिम्मेदारी पर बल देता है। गुप्त में उगने वाले बीज का दृष्टान्त परमेश्वर के वचन और संसार में और लोगों में आत्मा के कार्य के अथक प्रभुत्व पर बल देता है। खमीर का दृष्टान्त आन्तरिक बढ़ोत्तरी (परिवर्तन) बल देता है जो लोगों के व्यक्तिगत जीवनों में परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने का कारण होता है और राई के दाने का दृष्टान्त बहारी बढ़ोत्तरी (फैलाव) पर बल देता है जो संसार में सम्पूर्ण मानव समाज में परमेश्वर के राज्य का कारण होता।

(2) रहस्य में आत्मिक उन्नति।

मरकुस 4:26-27 बढ़ोत्तरी के गुप्त या रहस्य के बारे में बोलता है। कोई भी आत्मिक या भौतिक बढ़ोत्तरी के रहस्य को पूर्ण रुप से व्यख्यानित नहीं कर सकता। हम बढ़ोत्तरी और फलवंत होने को देख सकते है, परन्तु हम किसी भी व्यक्ति को उसकी बढ़ोत्तरी और फल लाने के लिए जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते। तथ्यात्मक रुप से, यूहन्ना 15:5 कहता है व्यक्ति स्वयं भी कुछ नहीं कर सकता (अनन्त मुल्यों के लिए)। एक व्यक्ति केवल उसी समय परमेश्वर पर सच्चे विश्वास में उसकी ओर मुड़ सकता है जब परमेश्वर उसको ऐसा करने के लिए अनुग्रह और सामर्थ प्रदान करें। वह तब तक परिवर्तित नहीं हो सकता जब तक कि सबसे पहले वह पुनर्जीवित नहीं हो जाता (यिर्मयाह 31:18; यूहन्ना 3:3-8; 1कुरि. 4:7; इफिसियों 2:8; फिलिप्पियों 1:29; 2:12-13; 4:13)।

यह केवल परमेश्वर की सर्वोपरि इच्छा के द्वारा होता है कि परमेश्वर का वचन लोगों के दिलों और जीवनों और संसार के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी बढती हुई सामर्थ के साथ प्रभाव छोड़ता है। मसीही लोग बहुत सुसमाचार प्रचार कर सकते हैं और बचे हुओं को चेला बना सकते है, परन्तु वे लोगों के नये जन्म, आत्मिकता में बढ़ने या फलवंत होने का कारण नहीं हो सकते। केवल परमेश्वर ही इस प्रकार की बढ़ोत्तरी का कारण हो सकता है (1कुरि. 3:5-9)! मसीही लोगों को परमेश्वर के कार्य को परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए और परमेश्वर के काम पर भरोसा करना चाहिए!

(3) परमेश्वर के वचन में महान संभावित सामर्थ होती है।

मरकुस 4:28 बीज की संभावित सामर्थ के बारे में बोलता है, जो परमेश्वर का वचन है। मनुष्य की सहायता से अलग, परमेश्वर का वचन जानता है क्या करना है, कब करना है, और कैसे करना है (यशायाह 55:10-11)! परमेश्वर का वचन अथक और सामर्थी रुप से लोगों के हृदय में कार्य करता है (यिर्मयाह 23:28-29; इब्रानीयों 4:12)। परमेश्वर का वचन एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में और एक देश से दूसरे देश में यात्रा करता है (प्रेरितों के काम 19:10,20)। परमेश्वर का वचन का प्रभाव बढ़ती हुई सामर्थ के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महसूस किया जा सकता है (1पतरस 1:22-2:3)। इसलिए मसीही लोग परमेश्वर के वचन को प्रचार करने के लिए प्रत्येक प्रयास को करते हैं और ध्यान रखते है कि परमेश्वर का वचन जाना जाए और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदर पाए, जैसा कि परिवार, कलीसिया, सरकार, शिक्षा, कृषि, उद्योग, वाणिज्य और जनप्रसार पाता है।

(4) दूसरे आगमन के समय पर कटनी अन्तिम विजय होगी।

मरकुस 4:29 कटनी के समय पर संसार के अन्त में अन्तिम विजय के विषय में बोलता है। परमेश्वर के राज्य की पूर्ण विजय सही रुप में पक्की है! सभी समयों पर कटनी निकट आ रही है। परमेश्वर के नियुक्त समय पर, यीशु मसीह वापस आयेगा, सभी विश्वासीयों को आकाश में (1थिसलुनिकियों 4:17) अपने सिंहासन के समाने इक्ट्ठा करेगा (मत्ती 25:31-33) जो कभी पृथ्वी पर रहे थे और उसके बाद उनके साथ नयी पृथ्वी पर वास करेगा (प्र.वा. 21:2-5)। तब परमेश्वर का राज्य उसके अन्तिम रुप में महसूस किया जाऐगा। परमेश्वर के राज्य से संबन्धित उसकी योजना और कार्यक्रम अवश्य ही पूरे होंगे और पक्के तौर पर पूरे होने जा रहे हैं!

(5) परमेश्वर का राज्य बिना बोने के द्वारा स्थापित होता है।

बोने वाले का दृष्टान्त, गेहूं में जंगली बीज, गुप्त में उगने वाले बीज, खमीर और राई के दाने का दृष्टान्त सभी यह सिखाते हैं कि जब यीशु मसीह उद्धारकर्त्ता और राजा के रुप में मनुष्य के हृदय में प्रवेश करता है तो वह रोपण बिना कुछ के होता है! कोई भी स्वयं को अपने आप नहीं धकेल सकता! जैसा कि कोई भी अपने आप सोच, बोल या परमेश्वर के राज्य में अपने तरीके से कार्य नहीं कर सकता है! कोई भी सीढ़ी पर चढ़कर (व्यवस्था की, धार्मिकता या अच्छे काम या धर्म की) परमेश्वर के पास नहीं पहुँच सकता। परमेश्वर स्वयं ही प्रभुत्व की पहल को करता है और लोगों को मसीह के पास ले कर आता है (यूहन्ना 6:44,37)। सुसामाचार के बीज को लोगों के हृदय में बोने के लिए वह स्वयं ही मसीह और अन्य लोगों को भेजने के लिए प्रभुत्व की पहल करता है। वे आप को सुसमाचार प्रचार करते हैं इससे पहले कि आप परिवर्तन और विश्वास के द्वारा प्रतिउत्तर देना आंरभ करें (प्रेरितों के काम 13:46-48; रोमियों 10:14-17; इफिसियों 2:8; फिलिप्पियों 1:29)। सुसमाचार के बीज को उगने देने, बढ़ने और फलवंत होने देने के लिए परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा अथक रुप से

कार्य करता है (यशायाह 55:10-11; 2थिसलुनिकियों 2:13-15)।

(6) परमेश्वर का राज्य बहारी रुप में भी कार्य करता है।

खमीर और राई के दाने का दृष्टान्त यह सिखाते है कि एक बार जब मसीह का राज्य वचन और पवित्र आत्मा के द्वारा व्यक्ति के मन स्थापित हो जाता है, तो यह बाहरी रुप में भी कार्य करना आरंभ कर देता है! मसीह के राज्य का प्रभाव जब तक परिवर्तन और सभी चीजों को नया नहीं कर देता तब तक लगातार जारी रहा है। ''तुम्हारे बीच में मसीह का राज्य'' (लूका 17:21) मसीहत के प्रत्येक भाग में प्रवेश करता है और उसके विचारों, उद्देश्यों, मनोभाव, चरित्र, उसकी बोलचाल, व्यवहार, संबन्धों और सेवकाई में बदलाव के परिणाम के रुप में आता है, खमीर के सामन पूरे गूथें हुए आटे को खमीरा कर देता है। और ''मसीह का राज्य बाहरी रुप में'' व्यक्ति के भले के लिए उसके व्यक्तिगत जीवन में, उसकी परिस्थितियों में, उसके परिवारिक जीवन में, और उसके सामाजिक जीवन में, राई के पेड़ के समान पक्षियों को अपना घर बनाने देने के रुप में अपने प्रभाव को डालता है।

मसीह का राज्य मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिकार करने की प्रक्रिया में रहता है। 2कुरि. 10:5 में, पौलुस अपने उद्देश्य को कहता है मसीह कार्यकर्त्ता के समान, ''सो हम कल्पनाओं (झूठ) को, और हर एक ऊँची बात (वादविवाद) को जो परमेश्वर की पहचान के विरोध (गैर मसीहों की घोषणाएँ) में उठती है खण्डन करते है; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।'' परमेश्वर का राज्य लोगों को परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबन्ध में ही नहीं लेकर आता, परन्तु इसका उद्देश्य है प्रत्येक विचार को उसके प्रति समर्पण में लाना और इस प्रकार मसीह के साथ एकता में लेकर आना। मसीह का राज्य बढ़ते हुए क्रम में और भी बहुत सी जुबानों को ले कर आता है जो यह स्वीकार करती हैं कि मसीह ही प्रभु है और बहुत से घुटनों को मसीह के सामने झुकने के लिए लाता है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

संसार में परमेश्वर के राज्य का महान परिणाम यह है कि मानवीय संस्कृति और प्रयास के प्रत्येक क्षेत्र में आशीष होना आरंभ हो जाती है। कलीसिया ही नहीं, परन्तु विज्ञान, कला, साहित्य, शिक्षा, खेती, व्यपार, उद्योग, वाणिज्य, सरकार, और मानवीय विचार के सभी विभाग और प्रयास समाज में मसीहों की गतिविधियों के द्वारा आशीषित होना आरंभ कर देते हैं। सम्पूर्ण मसीह दौर में, मसीही लोगों का अस्पताल और अपहिजो की देखभाल, दासत्व को समाप्त करने, स्त्रीयों के अधिकार को बनाये रखने, गरीबी को समाप्त करने और अनपढ़ों की शिक्षा पर विशेष प्रभाव रहा। उन लोगों के बीच में जो सरकार में होते है और व्यपार करते है और उन लोगों में जो युद्ध बन्दियों के साथ, स्त्रीयों, काम करने वाले लोग, और वंचितों के साथ व्यवहार करते है, ईमानदारी और शुद्धता के बढ़ावे में उनका बड़ा प्रभाव रहा। परमेश्वर का राज्य पृथ्वी के लोगों के मध्य सत्य, प्रेम, पवित्रता, वफादारी, गंभीरता, सहास और न्याय आदि को बढ़ावा देता है! बाइबल यह नहीं सिखाती कि यह आदर्श मसीह के दूसरे आगमन तक पहुँचेगा। केवल मसीह के दूसरे आगमन पर घटने वाली घटनाएँ परमेश्वर के राज्य को उसके सही और सिद्ध रुप में लाकर अन्तिम रुप को स्थापित करेंगी। परन्तु तब तक परमेश्वर के राज्य की बढ़ोहत्तरी सुसमाचार की घोषणा और परमेश्वर के वचन के प्रति मसीही लोगों की आज्ञाकारिता के द्वारा होती रहेगी।

(7) परमेश्वर के राज्य का बाहरी प्रगटिकरण क्रमिक है।

राई के दाने का दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर के राज्य का आरंभ महत्वहीन प्रतित होता है, परन्तु इस छोटे आरंभ से बड़े परिणाम निकल कर आते हैं। यह सत्य ''एक रहस्य'' या ''गुप्तबात'' है (मत्ती 13:11), जिसके लिए अग्रिम स्पष्टिकरण या पुर्नबल देने की आवश्यकता है।

मसीह के निष्ठावान अनुयायी बहुत बार उत्सुक होते थे। अपेक्षाकृत, यह समूह इतना छोटा और कमजोर था कि एक समय पर वे गायब हो गये। वे बहुत से क्रान्तिकारी बदलावो या आक्समिक घटनाओं के तुरन्त घटने की प्रतिक्षा में रहते थे (मत्ती 21:8-9; लूका 9:54; यूहन्ना 6:15; प्रेरितों के काम 1:6)। वे यह उमीद करते थे कि मसीह पूरे संसार को उलट-पुलट करके रख देगा, अपने लोगों को अपने राज्य में एकत्र करेगा और अपने शत्रुओं का नाश कर देगा (उदाहरण के लिए मत्ती 3:10-12)।

वे इस्राएल के उत्थान, सभी जातियों पर उसकी बढ़ोत्तरी और मसीहात्मक युग के दौरान इसके वैश्विक महत्व के लिए पुराने नियम की भविष्यवाणीयों पर ध्यान लगाते थे (उत्पत्ति 22:17-18; भ.सं. 72:8-11; उदा. यशायाह 54:2-3; यशायाह अध्याय 60-62; यिर्मयाह 31:31-40; 32:36-44; आमोस 9:11-15; मलाकी 2:12-13; मिक्का अध्याय 5; जकर्याह अध्याय 2; 8:18-23 आदि)। उदाहरण के लिए, ''बहुत से देशों के वर सामर्थी जातियों के लोग यरुशलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूंढने और यहोवा से विनती करने के लिए आएंगे.....उन दिनों में भांति भांति की भाषा बोलने वाली सब जातियों में से दस मनुष्य, एक यहूदी पुरुष के वस्त्र की छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे कि हम तुम्हारे संग चलेंगे, क्योंकि हम ने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है।'' (जकर्याह 8:22-23)। जब यहूदी और यीशु मसीह के अनुयायी पुराने नियम में इन पद्यांशों के बारे में सोचते थे तो वे अक्सर उन्हें उनके संदर्भ से बाहर समझ लिया करते थे और उन्हें इस्राएल के लिए नये नियम के प्रगटीकरण की रौशनी में पूर्ण रुप से व्याख्यानित किए बिना ले लिया करते थे।

वही समान पुराना नियम सिखाता है कि महान आत्मिक परिणाम सामान्य रुप से छोटे आरंभ से ही विकसित होते है (उदा यशायाह 1:8-9; 11:1; 53:2-3; यहेजकेल 17:22-24; दानियल 2:34-35,44; जकर्याह 4:10)। उदाहरण के लिए, ''फिर प्रभु यहोवा यों कहता है, मैं भी देवदार की ऊंची फुनगी में से कुछ लेकर लगाऊंगा, और उसकी सब से ऊपरवाली कनखाओ में से एक कोमल कनखा तोड़कर एक अति ऊंचे पर्वत पर लगाऊंगा। अर्थात् इस्राएल के ऊंचे पर्वत पर लगाऊंगा; सो वह डालियां फोड़कर बलवन्त और उत्तम देवदार बन जाएगा, अैर उसके नीचे अर्थात उसकी डालियों की छाया मे भांति भाति के सब पक्षी बसेरा करेंगे। तब मैदान के सब वृक्ष जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने ऊंचे वृक्ष को नीचा और नीचे वृक्ष को ऊंचा किया, हरे वृक्ष को सुखा दिया, और सूखे वृक्ष को फुलाया है। मुझ यहोवा ही ने यह कहा और वैसा ही कर भी दिया है।'' (यहेजकेल 17:22-24)

वह सत्य कि परमेश्वर का राज्य एक बहुत छोटे आरंभ से एक महान परिणाम में बढ़ जाता है नये नियम में पक्का हो जाता है। लूका 12:32 कहता है, ''हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।'' और 1कुरि. 1:26-31 में हम पढ़ते हैं, ''हे भाईयो, अपने बुलाए जाने को तो सोचो, कि न शरीर कि अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए। परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खो को चुन लिया है, कि ज्ञानवानों को लज्जित करे; और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे। और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन जो हैं भी नहीं उन को भी चुन लिया, कि उन्हें जो

हैं, व्यर्थ ठहराए। ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड ने करने पाए। परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा अर्थात धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा। ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करें।''

नये नियम में बढ़ोत्तरी के दृष्टान्त सिखाते है कि परमेश्वर के अनुग्रह का नियम, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह कितनी महत्वहीन और तुच्छ शुरुवात दिखाई देती है, परन्तु यह आगे बढ़ने के लिए नियुक्त है और अधिक से अधिक लोगों के हृदय, जीवनों और जीवन के हर क्षेत्र में लगातार विजयी होता जा रहा है। वे मसीह के अनुयायीयों को उत्साहित करते है कि धीरजवन्त हों, भरोसा रखें, लगातार प्रार्थना करते रहें और सुसमाचार की घोषणा करते रहे, क्योंकि परमेश्वर की योजनाएँ और कार्यक्रम असफल नहीं हो सकते और असफल नहीं होंगे! जब राज्य का सुसामाचार (यीशु का राज्य) पूरे संसार में सभी जातियों को गवाही के रुप में प्रचारित किया जाता है, तब अन्त अवश्य ही आएगा (मत्ती 24:14)!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ आपने सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में बारी बारी परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर ''गुप्त में बढ़ने वाले बीज का दृष्टान्त'' ''खमीर का दृष्टान्त'' और ''राई के दाने का दृष्टान्त'' का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **1शमूएल 15,16,17 और 18** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **(4) रोमियों 2:15।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 3:1-20।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 10

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश करने के विषय में इस पाठ को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **1शमूएल 15–18**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (1शमूएल 15,16,17 और 18) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख पद)*** **(4) रोमियों 2:15**

दो–दो करके ***समीक्षा करें।***

(1) रोमियों 2:15। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 3:1–20**

परिचय। **रोमियों 3:1–20** का एक साथ अध्यनन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 1:18–32 में, पौलुस दिखाता है कि अन्यजातियों को परमेश्वर के क्रोध का अनुभव हो रहा है और कि उन्हें परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है। रोमियों 2:1–29 में वह दिखाता है कि यहूदी भी अपने लिए परमेश्वर के क्रोध को इकट्ठा कर रहे हैं और कि उन्हें भी परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है। रोमियों 3:1–20 में, वह अपने तर्कों के विरुद्ध यहूदी आपत्तियों का खंडन करता है और अपने शिक्षण की पुष्टि करता है कि कोई भी अन्यजाति या यहूदी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं है। यह वह बाइबल से प्रमाणित करता है।

चरण 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइए एक साथ पढ़े रोमियों 3:1-20।

आइए हम बारी-बारी एक-एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम पढ़ना पूरा न कर लें।

चरण 2. खोज करें। **अवलोकन**

विचार करें। इस पद में आपके लिए कौन सा सत्य महत्वपूर्ण है?

या इस पद में से कौन-सा सत्य आपके दिमाग या दिल को छूता है?

अभिलेखित करें। एक या दो सत्यों की खोज करें जिन्हें आप समझते हैं। उनके विषय में सोचें और अपने विचारों को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट का समय मिल गया हो, तब साझा करने के लिए बारियाँ लें)।

आइए हम एक दूसरे के साथ साझा करने के लिए बारियाँ लें, जो कुछ भी हमने खोजा है।

(स्मरण रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

3:1-8

खोज 1. **पौलुस अपने तर्कों के विरुद्ध यहूदी आपत्तियों का खंडन करता है कि दोनों अन्यजाति और यहूदी परमेश्वर के सामने दोषी खड़े हैं।**

जहाँ भी मसीही सत्य की घोषणा करते हैं, मसीहियों के विरोधी आपत्तियों का उत्पादन करेंगे ताकि मसीहियों को गलत साबित किया जा सके। इस प्रकार, अविश्वासी यहूदियों ने पौलुस द्वारा सुसमाचार की घोषणा का विरोध किया और उसे दुनिया की दृष्टि में बदनाम करने का प्रयास किया। उन्होंने पौलुस का विरोध उसी प्रकार किया जैसे उन्होंने पुराने नियम के समय के भविष्यवक्ताओं और नए नियम के समय के दौरान यीशु मसीह का विरोध किया था।

यहूदियों का अपरिहार्य विचार यह था कि परमेश्वर ने यहूदियों को अब्राहम के समय से ही अपने लोगों के रूप में चुना है। उनका मानना था कि यदि यहूदी व्यवस्था और विशेष रूप से शारीरिक खतना करके परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को बनाए रखते हैं, तो वे कभी भी अन्यजातियों के समान दोषी नहीं ठहराए जाएँगे।" (मत्ती 3:9; यूहन्ना 8:33)! यहूदियों का मानना था कि परमेश्वर का अनन्त राज्य पूर्ण संसार में यहूदियों को ही दिया जाएगा। वे यह भी मानते थे कि परमेश्वर का राज्य उन्हें दिया जाए, चाहे वे परमेश्वर के प्रति कितने भी पापी और अवज्ञाकारी क्यों न रहे हों!

यीशु ने पहले से ही मत्ती 8:11-12 में यहूदियों के विचारों का खंडन किया, जहाँ उसने कहा था, "कई लोग पूर्व और पश्चिम से आएँगे और स्वर्ग के राज्य में अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ दावत में अपने स्थान लेंगे। परन्तु राज्य की प्रजा को बाहर अंधेरे में फेंक दिया जाएगा, जहाँ रोना और दाँतों का पीसना होगा" (मत्ती 8:11-12; तुलना 21:42-44)।

प्रेरित पौलुस ने रोमियों 2:5 में भी यहूदियों के इस विचार का खंडन किया, जहाँ उसने कहा, "पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिये, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित क्रोध कमा रहा है।"

यहूदियों ने रोमियों अध्याय 2 में पौलुस के तर्क पर सख्ती से आपत्ति जताई कि यहूदियों को अंतिम

न्याय के दिन अन्यजातियों के *साथ* दोषी ठहराया जाएगा (सर्वनाश) (मत्ती 25:31-46)। यहूदियों की दो मुख्य आपत्तियाँ थीं।

- उनकी <u>पहली आपत्ति</u> यह थी कि परमेश्वर ने यहूदियों को कुछ लाभ या विशेषाधिकार दिए थे, जो उसने अन्यजातियों को नहीं दिए थे। यहूदियों के अनुसार, इन लाभों या विशेषाधिकारों ने आश्वासन दिया कि यहूदी हमेशा वाचा (व्यवस्था) रखने के कर्तव्य के साथ परमेश्वर के लोग होंगे और परमेश्वर द्वारा कभी भी अस्वीकार नहीं किए जाएँगे।
- यहूदियों की <u>दूसरी आपत्ति</u> यह थी कि परमेश्वर का यह दायित्व था कि वे यहूदियों के प्रति अपनी वाचा के वादे में विश्वासयोग्य रहे, चाहे यहूदी कितने भी अविश्वासयोग्य हों।

परन्तु पवित्र आत्मा ने पौलुस को बुद्धि दी कि कैसे अविश्वासी यहूदियों की इन आपत्तियों का खंडन करे। यह जानना उत्साहजनक है कि उसके विरोधी उस बुद्धि या आत्मा के विरुद्ध नहीं खड़े हो सकते थे जिसके द्वारा उसने बोला था (मत्ती 10:17-20; प्रेरितों के काम 6:9-10)!

3:9-20

<u>खोज 2</u>. <u>पौलुस शिक्षा को पुराने नियम से साबित करता है कि अन्यजाति और यहूदी दोनों परमेश्वर के सामने दोषी ठहराए (सर्वनाश) खड़े हैं</u>।

यहूदियों के झूठे तर्कों का खंडन करने के पश्चात, पौलुस रोमियों 1:18 से 3:8 तक यह कहते हुए अपने तर्क को समाप्त करता है कि उचित ठहराए जाने के संबंध में, किसी भी यहूदी के पास अन्यजातियों की तुलना में कोई अधिक लाभ या विशेषाधिकार नहीं था। किसी भी इंसान के पास दूसरे इंसान की तुलना में कोई अधिक लाभ नहीं है। सभी लोग पाप की शक्ति, प्रदूषण और दोष के अधीन हैं, और इसलिए न्यायपूर्वक परमेश्वर द्वारा दोषी ठहराए जाने के सामने अरक्षित हैं (सर्वनाश) (3:9)।

रोमियों 3:10-18 में, बाइबल की गवाही द्वारा पौलुस पाप की सार्वभौमिकता की शिक्षा को साबित करता है। वह यहूदियों को यह साबित करने के लिए पुराने नियम से कई ज्ञात भागों को उद्धृत करता है कि उनके अपने पवित्र पद उनको दोषी ठहराते हैं। <u>यहूदियों की आपत्तियों को बाइबल में से परमेश्वर के आधिकारिक वचनों से चुप्प कर दिया गया है!</u>

पौलुस यह निष्कर्ष निकालता है कि बाइबल में परमेश्वर का विशिष्ट प्रकाशन उन सभी को संबोधित करता है जो उस प्रकाशन से परिचित हैं। यह उस प्रत्येक मुँह को चुप्प कर देता है जो उसकी पापमयता के विरुद्ध आपत्ति जताता है। अंतिम न्याय के दिन सभी लोग परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे और उनका उनके कार्यों के अनुसार न्याय किया जाएगा। परमेश्वर उन्हें उनके विचारों, उद्देश्यों, रवैयों, योजनाओं, संबंधों और कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराएगा। परमेश्वर किसी एक व्यक्ति को भी व्यवस्था के पालन के आधार पर धर्मी घोषित नहीं करेगा! <u>व्यवस्था मात्र एक व्यक्ति को भी उचित ठहरा या बचा नहीं सकती है!</u> इसके बजाय, व्यवस्था लोगों को जागरूक करती है कि वे पापी हैं और उन्हें परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है। व्यवस्था लोगों को जागरूक करती है कि उन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है!

चरण 3. प्रश्न। व्याख्या

विचार करें। इस पद में से किसी भी चीज के विषय में कौनसा प्रश्न आप इस समूह से पूछना पसंद करेंगे? आइए हम रोमियों 3:1-20 के सभी सत्यों को समझने का प्रयास करें और उन चीजों के विषय में प्रश्न पूछें जिन्हें हम अभी भी नहीं समझते हैं।

अभिलेखित करें। अपने प्रश्न को यथासंभव स्पष्ट रूप से तैयार करें। फिर अपनी स्मरण-पुस्तक में अपना प्रश्न लिखें।

साझा करें। (समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट मिलने के पश्चात, पहले प्रत्येक व्यक्ति को अपना प्रश्न साझा करने दें।)

चर्चा करें। (फिर, इनमें से कुछ प्रश्नों को चुनें और उन्हें अपने समूह में एक साथ चर्चा करके उत्तर देने का प्रयास करें।) (प्रश्नों के उदाहरण जो छात्र पूछ सकते हैं और प्रश्नों की चर्चा के विषय में कुछ नोट्स निम्नलिखित हैं।)

3:1-2

प्रश्न 1. **परमेश्वर के विशेषाधिकार जो उसने इस्राएल को दिए क्यों इसका आश्वासन नहीं हो सकते कि यहूदियों को उचित ठहराया जाएगा ?**

ध्यान दें।

रोमियों के अध्याय 2 में, पौलुस ने निष्कर्ष निकाला कि यहूदी, अन्यजातियों के समान, परमेश्वर के न्याय से बच नहीं पाएँगे। उनके विशेषाधिकारों के आधार पर उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाएगा, परन्तु उनके स्वयं के कार्यों के आधार पर और इसके कि परमेश्वर के प्रकाशन के विषय में उन्हें कितना पता है।

यहूदियों ने आपत्ति जताई कि पौलुस का निष्कर्ष इस्राएल (यहूदी राष्ट्र) के भौतिक या राष्ट्रीय राष्ट्र के स्वीकृत विशेषाधिकार या लाभों के साथ असंगत है। यहूदियों का विचार था कि परमेश्वर ने उन्हें जो भी लाभ दिए थे, वे इस बात का प्रमाण थे कि परमेश्वर ने उन्हें स्वीकार किया है और वह कभी उन्हें अस्वीकार नहीं करेगा।

पौलुस ने स्वीकार किया कि यहूदियों को बहुत लाभ मिले थे (रोमियों 9:4-5; इफिसियों 2:11-12)। उनके सबसे बड़े लाभों में से एक यह था कि उन्हें परमेश्वर के अति स्वयं के शब्द सौंपे गए थे (रोमियों 3:2)। परमेश्वर के इन शब्दों को बाद में व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक (अर्थात्, पुराना नियम। तुलना लूका 24:25-27,44-45; यूहन्ना 5:45-47) बनाने के लिए अभिलेखित किया गया था (रोमियों 3:21))।

हालांकि, पौलुस का कहना था कि यहूदियों के ये सभी लाभ उनके उचित ठहराए जाने या उद्धार का आश्वासन नहीं देते हैं! उदाहरण के लिए, व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की बहुत सी पुस्तकें यहूदियों सहित सभी लोगों को अधर्मी होने हेतु दोषी ठहराती हैं (रोमियों 3:10-18)! इसलिए, यहूदी भी अधर्मी हैं और अपने विशेषाधिकारों और लाभों से उचित नहीं ठहराए जाएँगे! अंतिम न्याय के दिन एक भी विशेषाधिकार उन्हें परमेश्वर के प्रकोप से नहीं बचाएगा।

बाद में, पौलुस ने घोषणा की कि सभी लोगों, यहूदी और अन्यजातियों को केवल यीशु मसीह में उनके विश्वास के द्वारा ही उचित ठहराया जा सकता है (रोमियों 3:22)!

3:3-4

प्रश्न 2. **परमेश्वर की विश्वासयोग्यता इसका आश्वासन क्यों नहीं दे सकती कि यहूदी उचित ठहराए जाएँगे ?**

ध्यान दें।

यहूदियों ने इस बात पर आपत्ति जताई कि पौलुस का निष्कर्ष इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा के वादे के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के साथ असंगत है। यहूदियों ने यह विचार बनाए रखा कि परमेश्वर अपने वादों के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा, *तब भी जब इस्राएली परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य हो जाएँगे*। वे झूठा विश्वास करते थे कि अपने वादों के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता उनके उचित ठहराए जाने का आश्वासन देती है, भले ही परमेश्वर के प्रति उनकी अविश्वासयोग्यता कितनी भी बड़ी क्यों न हो।

पौलुस का कहना था कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता अभेद्य है। इस्राएल के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और इस्राएल के प्रति उसके वादों को लेकर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता है!

हालाँकि, परमेश्वर के प्रति इस्राएल की अविश्वासयोग्यता (उनका अविश्वास और अवज्ञा) को लेकर प्रश्न उठाया जा सकता है! परमेश्वर की वाचा के वादे से जुड़ी शर्तों (विश्वास और आज्ञाकारिता से युक्त) (इब्रानियों 4:1-2,6) को पूरा नहीं करने में इस्राएल की अविश्वासयोग्यता स्पष्ट है। उदाहरण के लिए, व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की किताबों में यहूदी राष्ट्र के सबसे बड़े राजा, दाऊद ने स्वीकार किया था कि वह स्वयं पूर्ण रीति से अधर्मी था। उसने स्वयं को एक कुकर्मी के रूप में दोषी ठहराया, परन्तु फिर भी स्वीकार किया कि परमेश्वर पूर्ण रीति से धर्मी था (भजन संहिता 51:4-6)! पुराने नियम में यह उदाहरण साबित करता है कि परमेश्वर हमेशा धर्मी है, परन्तु यहूदी धर्मी नहीं हैं। इस्राएल के लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा के वादे की दो शर्तें थीं: उन्हें विश्वास करना था और आज्ञा माननी थी। परमेश्वर अपनी वाचा के वादे के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा, जब तक कि इस्राएल वाचा के वादे से जुड़ी शर्तों का पालन करता रहेगा। परन्तु जब यहूदियों ने वाचा के वादे से जुड़ी शर्तों को मानने में अपनी जिम्मेदारी की उपेक्षा की, तो परमेश्वर अपनी वाचा के वादे को निभाने के लिए बाध्य नहीं था।

3:5-8

प्रश्न 3. परमेश्वर की धार्मिकता इसका आश्वासन क्यों नहीं देती कि यहूदी उचित ठहराए जाएँगे ?

ध्यान दें।

यहूदियों ने झूठे तर्क के आधार पर अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर की धार्मिकता के न्याय से बचने की अपेक्षा की। उन्होंने तर्क दिया कि उनकी अपनी अधार्मिकता ने परमेश्वर की धार्मिकता को अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट किया (प्रकाश में लाई) है। उन्होंने तर्क दिया कि परमेश्वर की धार्मिकता और उनकी स्वयं की अधार्मिकता के बीच जितनी विपरीतता होगी, उतना उज्जवल परमेश्वर का धर्मी चरित्र चमकेगा और उतनी सरलता से लोग यह देख पाएँगे कि परमेश्वर की धार्मिकता कितनी महान थी! उनका सामान्य मानवीय तर्क यह था कि यदि यहूदियों के झूठ और अधार्मिकता ने परमेश्वर की सत्यता और धार्मिकता को बढ़ाया है और परमेश्वर के प्रति अधिक महिमा लाया है, तो परमेश्वर अन्यायपूर्ण होगा यदि वह यहूदियों को उनकी अधार्मिकता के लिए दोषी ठहराता है!

पौलुस का कहना है कि इस प्रकार का तर्क न केवल अति दुष्ट है, परन्तु पूर्ण रीति से असमर्थनीय भी है। इस प्रकार का तर्क अति दुष्ट है, क्योंकि यह परमेश्वर को अधर्मी यहूदियों के बराबर ही

अधर्मी बनाता है। यदि परमेश्वर यहूदियों की दुष्टता को दोषी नहीं ठहरता और दंड नहीं देता, तो वह अधर्मी होगा और यहूदियों का न्याय करने में असमर्थ होगा!

इसके अलावा, दुष्ट अन्यजाति इसी तर्क का उपयोग कर सकते हैं और परमेश्वर अन्यजातियों का न्याय नहीं कर सकेगा। इसके फलस्वरूप, परमेश्वर संसार में किसी का न्याय नहीं कर पाएगा! यहूदियों का यह तर्क अनैतिक शिक्षण को बढ़ावा देगा, अर्थात्, "लोग जितना अधिक बुरा करेंगे, उसमें से उतनी ही अच्छाई निकलेगी!" या "लोग जितना अधिक पाप करेंगे, उतना ही अधिक वे परमेश्वर की महिमा देंगे।" परमेश्वर तब भी पापियों का न्याय करने में कैसे सक्षम होगा?

पौलुस की शिक्षा कि लोगों को विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा बचाया जाता है और उनके व्यवस्था के कार्यों से नहीं का यह अर्थ नहीं है कि लोगों को इस तथ्य के बावजूद बचाया जाता है कि वे ईश्वरहीनता, दुष्टता और अराजकता में जारी रहते हैं। जो यहूदी तर्क देते हैं कि वे अपनी ईश्वरहीनता, दुष्टता और अराजकता के बावजूद बचे हुए हैं, वे परमेश्वर द्वारा पूर्ण रीति से दोषी ठहराए जाने (सर्वनाश) के योग्य हैं। "हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते" (यशायाह 5:20)। वे सभी मानवीय या धार्मिक शिक्षाएँ झूठी शिक्षाएँ हैं, जो अनैतिक व्यवहार की ओर ले जाती हैं!

3:9-18

प्रश्न 4. **पौलुस अपनी शिक्षा को कैसे साबित करता है कि परमेश्वर के सामने अन्यजाति और यहूदी दोनों दोषी खड़े हैं?**

ध्यान दें।

(1) बाइबल शिक्षा के लिए (जिसमें एक मसीही को विश्वास करना चाहिए) और जीवन के लिए (जैसा एक मसीही को व्यवहार करना चाहिए) अंतिम अधिकार है।

रोमियों 1:18 से 3:8 में पौलुस के तर्क ने यह आरोप लगाया कि यहूदी और अन्यजाति पाप के तहत एक जैसे हैं। *उचित ठहराए जाने के संबंध में*, किसी भी यहूदी के पास अन्यजातियों की तुलना में कोई अधिक लाभ या विशेषाधिकार नहीं था!

पौलुस बाइबल से कई भागों को उद्धरण करके इस शिक्षा को साबितकरता है। इससे पता चलता है कि यहूदियों का विचार (विश्वास या धारणा) उससे अधिक महत्वपूर्ण नहीं है जो बाइबल इस बात के विषय में बताती है! बाइबिल मसीही शिक्षा (जो मसीही मानते हैं) और मसीही जीवन (जैसे मसीही व्यवहार करते हैं) के लिए अंतिम अधिकार है! स्वयं परमेश्वर से कम कोई भी पाप की सार्वभौमिकता की घोषणा नहीं करता हैः सभी लोग बिना किसी प्रकार के भेद के पाप की शक्ति, प्रदूषण, अपराध और दोष (सर्वनाश) के अधीन हैं। पौलुस यहूदियों को साबित करने के लिए पुराने नियम से कई ज्ञात भागों को उद्धृत करता है कि उनके अपने पवित्र लेख उन्हें दोषी ठहराते हैं!

(2) बाइबल अधार्मिकता की सार्वभौमिकता को साबित करती है।

ये भजन संहिता 14:1-3 और भजन संहिता 53:1-3 के उद्धरण हैं। "एक व्यक्ति भी अपने आप में धर्मी नहीं है"। बाइबल में प्रकाशन के बिना "किसी को भी सही समझ नहीं है" परमेश्वर की सच्चाइयों की या अपनी स्वयं की अपमानजनक स्थिति की। "कोई भी परमेश्वर की खोज नहीं करता है", अर्थात्, कोई भी अपने स्वभाव, शक्ति या बुद्धि के द्वारा न तो परमेश्वर की आज्ञा मानता, न सेवा

या आराधना करता है। प्राकृतिक मनुष्य बाइबल के परमेश्वर से दूर हो जाता है और परमेश्वर की ओर जाने वाले सही मार्ग से बचता है। "सभी किसी काम के नहीं रहे हैं", अर्थात्, हर कोई नैतिक रूप से भ्रष्ट (दूषित) हो गया है। "संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो अच्छा करता है" इस अर्थ में कि परमेश्वर उसकी अच्छाई को स्वीकार करेगा (तुलना लूका 18:19)। किसी व्यक्ति के कथित अच्छे काम (यशायाह 64:6) उसके पाप के विरुद्ध परमेश्वर के धर्मी क्रोध को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। प्राकृतिक मनुष्य या "धार्मिक व्यक्ति" के सभी तथाकथित "धार्मिक कार्य" "गंदे चिथड़ों" के समान हैं (यशायाह 64:6); वे पाप के विरुद्ध परमेश्वर के धर्मी आक्रोश को दूर करने के लिए बिल्कुल अपर्याप्त हैं। अंतिम न्याय के दिन, धार्मिक आदमी के धार्मिक कार्य और प्राकृतिक आदमी के अच्छे काम उसके तराजू को अपने पक्ष में नहीं कर पाएँगे! इस प्रकार, बाइबल साबित करती है कि लोगों की आध्यात्मिक और नैतिक भ्रष्टता सार्वभौमिक है।

(3) बाइबल बोलने में दुष्टता को साबित करती है।

ये भजन संहिता 5:9, 10:7 और 140:3 के उद्धरण हैं। हमेशा कुछ लोग होते हैं जिन्हें आपत्ति होती है। वे इस बात को बनाए रखते हैं कि वे पापी नहीं हैं और न ही अनैतिक या भ्रष्ट हैं। उनका तर्क है कि, क्योंकि वे हत्या, व्यभिचार या चोरी नहीं करते हैं, इसलिए वे पापी नहीं हैं! तथापि, पौलुस प्रत्येक व्यक्ति की जीभ के पापों द्वारा उनकी पापमयता को दिखाता है। तथाकथित अच्छे और सभ्य लोगों सहित सभी लोग, अपनी जीभ से पाप करते हैं। लोगों के मुँह से निकलने वाले शब्द किसी कब्र से निकलने वाली घृणास्पद गंध या जहरीले साँप के काटने जैसे होते हैं। वे झूठ बोलते हैं और धोखा देते हैं, गपशप करते हैं, गालियाँ देते हैं, कड़वाहट व्यक्त करते हैं और शब्दों द्वारा लड़ते हैं। यह सब दिखाता है कि उनके हृदय में क्या छिपा है और उनकी नैतिक भ्रष्टता को साबित करता है (मत्ती 12:33-37; 15:18-19)!

हमेशा गैर-मसीहियों को आंकना पाप है (मत्ती 7:1-2; 1कुरिन्थियों 5:12-13)। स्पष्ट पाप के मामले के सिवाय, मसीहियों को आंकना (लूका 17:3-4; 1कुरिन्थियों 5:1-13; 1तीमुथियुस 5:20) भी पाप है!

(4) बाइबल कृत्यों (कर्मों) की दुष्टता को साबित करती है।

यह यशायाह 59:7-8 से लिए उद्धरण हैं। "उनके पैर हत्या करने को तत्पर रहते हैं" इसका अर्थ है कि लोग थोड़े से उकसावे पर हत्या कर देते हैं! पृथ्वी पर लोगों के "मार्गों में उजाड़ और विनाश है"। पृथ्वी पर लोग लगातार युद्ध करने के कारणों का आविष्कार करते हैं, यहाँ तक कि तथाकथित पवित्र युद्ध भी करते हैं, परन्तु उनके सभी युद्ध अन्यायपूर्ण कारणों के लिए हैं! सभी युद्धों का परिणाम संवेदनहीन विनाश और अकल्पनीय संकट है। प्रकृति या स्वयं के द्वारा, पृथ्वी पर लोग "शाँति का मार्ग नहीं जानते"। अर्थात्, वे शाँति का मार्ग नहीं "जाने हैं", क्योंकि हिंसा उनके बीच लगभग निरन्तर रहती है। इस प्रकार, विशेष रूप से राष्ट्रों और पृथ्वी पर विभिन्न गुटों के बीच हिंसा और युद्धों का प्रचलन साबित करता है कि पूर्ण मानव जाति आध्यात्मिक और नैतिक रूप से भ्रष्ट है!

(5) बाइबल ईश्वरविहीनता के प्रसार को साबित करती है।

यह भजन संहिता 36:1 का एक उद्धरण है। "उनकी दृष्टि में परमेश्वर का भय नहीं है"। "भय" शब्द का अर्थ श्रद्धा, भरोसा और डर है। स्वभाव के अनुसार पृथ्वी पर लोगों में परमेश्वर के सामने विस्मय (श्रद्धा) नहीं है और वे परमेश्वर पर भरोसा भी नहीं करते हैं। वे परमेश्वर के न्याय से नहीं डरते। वे ऐसे कार्य करते हैं जैसे कि कोई परमेश्वर नहीं है। वे ऐसे जीते हैं जैसे कि उन्हें कभी भी परमेश्वर

को इसका लेखा नहीं देना है कि वे कैसे जीते हैं। इस प्रकार, जीवित परमेश्वर के प्रति लोगों का अनादर यह साबित करता है कि आध्यात्मिक भ्रष्टता सार्वभौमिक है। पुराना और नया नियम दोनों ही मनुष्य की सार्वभौमिक भ्रष्टता के विषय में सिखाते हैं।

3:19-20

प्रश्न 5. **पौलुस के इस तर्क का अंतिम निष्कर्ष क्या है कि अन्यजाति और यहूदी दोनों परमेश्वर के सामने दोषी खड़े हैं?**

ध्यान दें।

(1) शब्द "व्यवस्था" के विभिन्न अर्थ।

पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर की धार्मिकता व्यवस्था के कामों के बिना स्थापित होती है, परन्तु व्यवस्था फिर भी इस धार्मिकता की गवाही देती है। यहाँ एक स्पष्ट उदाहरण है कि पौलुस व्यवस्था के एक अर्थ से व्यवस्था के दूसरे अर्थ में कितनी सरलता से बदल जाता है। रोमियों को लिखे पत्र में शब्द "व्यवस्था" के विभिन्न अर्थों के बीच स्पष्ट रूप से भेद किए बिना इस पत्र को नहीं समझा जा सकता है। एक अर्थ में, व्यवस्था परमेश्वर द्वारा उचित ठहराए जाने के विपरीत बोलती है, और दूसरे अर्थ में यह परमेश्वर द्वारा उचित ठहराए जाने की घोषणा करती है। संदर्भ शब्द "व्यवस्था" का सटीक अर्थ निर्धारित करता है।

"जो भी व्यवस्था (पहला अर्थः परमेश्वर की पवित्र पुस्तक, तोराह, पुराने नियम के लेख) (रोमियों 3:19क) कहती है, वह उन लोगों से कहती है जो (सचमुच) व्यवस्था (दूसरा अर्थः परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता) (रोमियों 3:19ख) "में शामिल हैं" (यूनानीः एन), ताकि प्रत्येक मुँह को शाँत किया जा सके और पूर्ण संसार परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हो।" पौलुस उन लोगों के विषय में बोलता है जो लोग व्यवस्था "में शामिल" हैं (यूनानीः एन) (रोमियों 3:12,19) (अर्थात्, जो कि परमेश्वर की माँग में शामिल हैं कि सभी लोगों को धर्मी होना चाहिए), और उन लोगों के विषय में नहीं जो व्यवस्था के "अधीन" (यूनानीः हूपो) हैं (तीसरा अर्थः लोग जो नैतिक, औपचारिक और नागरिक कानूनों और मानव निर्मित कानूनों को जो उन्होंने परमेश्वर के कानून में जोड़े हैं को मानने का प्रयास कर रहे हैं) (रोमियों 6:14) (अर्थात्, जो लोग नैतिक, औपचारिक और परमेश्वर के नागरिक कानूनों को मानने के द्वारा उचित ठहराए जाने का प्रयास करते हैं)।

(2) कोई भी परमेश्वर की व्यवस्था से बाहर नहीं है और इसलिए वह परमेश्वर के न्याय और दोषी ठहराए जाने से परे नहीं है।

तीन तर्कों के आधार परः

- अन्यजातियों की ईश्वरहीनता और दुष्टता (रोमियों 1:18-32 में वर्णित)
- यहूदियों की अराजकता, अविश्वासयोग्यता, अधार्मिकता और असत्य (रोमियों 2:21 से 3:8 में वर्णित)
- और बाइबल की गवाही (रोमियों 3:10-18 में उद्धृत)

पौलुस निम्नलिखित निष्कर्ष निकालता हैः "संसार के सभी लोग परमेश्वर की व्यवस्था में शामिल हैं" या धर्मी आवश्यकता (परमेश्वर की धर्मी या उचित माँग) अर्थात् सभी लोगों को परमेश्वर के सामने 100ः पवित्र और धर्मी होना चाहिए और लोगों के सभी पाप 100ः दोषी ठहराए और दंडित किए जाने चाहिए। इस अर्थ में परमेश्वर की "व्यवस्था" (भगवान की आवश्यकता) सभी लोगों को संसार के

हर राष्ट्र में, हर संस्कृति और पूरे मानव इतिहास में प्रभावित करती है।

परमेश्वर की "व्यवस्था" या धार्मिक आवश्यकता निम्नलिखित हैः परमेश्वर की आवश्यकता है कि लोगों के सभी (100:) पापों को दंडित किया जाना चाहिए, कि सभी (100:) लोगों को परमेश्वर को स्वीकार्य होने से पहले उचित ठहराया और पवित्र किया जाना चाहिए। परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए, लोगों के पास एक नई अवस्था होनी चाहिए (अर्थात्, परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी और पवित्र हों) और एक नई जीवन-शैली होनी चाहिए (अर्थात्, धार्मिकता से और पवित्र रहें)। लोगों को क्षमा किया जाना चाहिए और नए जीवन जीने में सक्षम होने चाहियें! लोगों को परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए, भले ही वे अन्यजाति हों जिनके पास केवल परमेश्वर का सामान्य प्रकाशन है (रोमियों 1:19-20; 2:14-15) या वे यहूदी हों जिनके पास परमेश्वर का विशेष प्रकाशन भी है (रोमियों 2:18)! जो लोग परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के *बाहर* हैं (मूल रूप से अन्यजाति) वे परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता के दायरे से *बाहर नहीं* हैं (रोमियों 1:19-20; रोमियों 2:14-15)। इसलिए वे भी न्याय और दोषी ठहराए जाने (सर्वनाश) से परे नहीं हैं, जिसके विषय में पुराना नियम बोलता है।

परमेश्वर के न्याय (और दंड) के लिए परमेश्वर की "व्यवस्था" या "धार्मिक आवश्यकता" एक ओर और दूसरी ओर परमेश्वर के उद्धार (उचित ठहराए जाने और शुद्धिकरण) के लिए बाइबल में परमेश्वर के निषेध और आज्ञाएँ शामिल हैं, उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएँ और अन्य नैतिक आज्ञाएँ (रोमियों 2:15; 3:20,21क)।

क्योंकि यह स्पष्ट है कि संसार में कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता है, यह भी स्पष्ट है कि सभी लोग परमेश्वर के धर्मी न्याय के तहत खड़े हैं! एक भी व्यक्ति न अपना मुँह खोल सकता और न इस तर्क के साथ आ सकता है कि क्यों परमेश्वर को उसे धर्मी घोषित करना चाहिए और उसे स्वर्गलोक (स्वर्ग) में स्वीकार करना चाहिए! एक भी व्यक्ति अपनी अधार्मिकता का बचाव नहीं कर सकता है!

(3) कोई भी व्यवस्था को पूर्ण रीति से नहीं मान सकता है और इसलिए व्यवस्था को मानने का प्रयास करने से कोई भी उचित नहीं ठहराया जा सकता है।

इस संसार के इतिहास में प्रत्येक मुँह को चुप कराया गया है, "क्योंकि" (नहीं "इसलिए ") "कोई भी (कोई शरीर नहीं) "व्यवस्था" (नैतिक, औपचारिक और नागरिक कानूनों) का पालन करने से परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी घोषित किया जाएगा (रोमियों 3:20कख)"! भविष्यकाल व्यक्त करता है कि यह तथ्य एक पूर्ण निश्चितता हैः संसार में हर किसी को बाइबल के परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्ध और अपने जीवन और कार्यों (कर्मों) का परमेश्वर को एक लेखा देना होगा। संसार में कोई भी अपने स्वयं के प्रयास या व्यवस्था के अपने कार्यों से उचित ठहराया या बचाया नहीं जाएगा। यहाँ तक कि यदि वह कुछ कानूनों को मानता है, वह सभी कानूनों को नहीं मानता है – और परमेश्वर को 100: पूर्णता से कम कुछ भी नहीं चाहिए (गलातियों 3:11)! व्यवस्था (बाइबल की शिक्षाएँ और नैतिक नियमों) को मानने द्वारा परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी घोषित किए जाने के लिए, व्यक्ति को कभी एक भी पाप या अपराध नहीं किया होना चाहिए (याकूब 2:10) और उसे परमेश्वर के सामने हमेशा एक पूर्ण सिद्ध जीवन जीया होना चाहिए (यशायाह 64:6)! इसलिए यह बहुत स्पष्ट है कि व्यवस्था के काम इस संसार के इतिहास में एक भी व्यक्ति को न उचित नहीं ठहरा सकते हैं और न ही ठहराएँगे!

रोमियों 3:19ख कहता है कि "व्यवस्था" इस अर्थ में <u>एक *न्यायाधीश* के समान</u> काम करती है। यह बाइबल के परमेश्वर और बाइबल में दिए गए उसके प्रकाशन के विरुद्ध प्रत्येक तर्क को चुप कर देता है और लोगों को बाइबल के परमेश्वर को एक लेखा देने के लिए जिम्मेदार बनाता है।

रोमियों 3:20ख कहता है कि "व्यवस्था" इस अर्थ में <u>एक *दर्पण* के समान</u> काम करती है। यह लोगों को दिखाता है कि परमेश्वर उन्हें कैसे देखता है। यह उन्हें दिखाता है कि वे वास्तव में कितने पापी हैं। और यह उन्हें सचेत करता है कि वे भ्रष्ट हैं।

और रोमियों 3:21क कहता है कि इस अर्थ में "व्यवस्था" <u>एक *उद्धारकर्ता* के समान काम नहीं करती है।</u> यह परमेश्वर की दृष्टि में लोगों को उचित ठहराने या बचाने का तरीका न प्रकट करता है और न कर सकता है। यह उद्धार (उचित ठहराए जाने और शुद्धिकरण) का एक तरीका न बताता है और न बता सकता है।

परमेश्वर की धार्मिकता जो मसीह में विश्वासियों को उचित *ठहरा सकती है* और *ठहराएगी* वह धार्मिकता है जो परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता को प्राप्त करने के प्रयास से पूर्ण रीति से अलग है जो बाइबल में नैतिक आज्ञाओं में व्यक्त की गई है।

पौलुस का निष्कर्ष है कि "व्यवस्था" का उद्देश्य लोगों को उचित ठहराना या बचाना कभी नहीं था। नैतिक कानून से पता चला कि परमेश्वर पवित्र और धर्मी है, उसी प्रकार लोगों को भी परमेश्वर के लोग बनने के लिए पवित्र और धर्मी होना चाहिए और सम्पूर्ण अपवित्रता और अधार्मिकता को दंडित किया जाएगा। औपचारिक कानून से पता चला कि कैसे लोगों को परमेश्वर के पास जाना चाहिए, आराधना करनी चाहिए और परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए। "व्यवस्था" एक व्यक्ति को इससे सचेत करती है कि पाप क्या है और कि वह एक पापी है, वह व्यक्ति जो परमेश्वर से अलग कर दिया गया है, आत्मनिर्भर होते हुए और परमेश्वर से स्वतंत्र होकर रहते हुए अपने जीवन के लिए परमेश्वर के लक्ष्य को खो रहा है! क्योंकि संसार में एक भी व्यक्ति परमेश्वर के "कानूनों" या आवश्यकताओं को पूर्ण रीति से सिद्धत्ता के साथ नहीं रख सकता है, ये "कानून" एक ओर तो लोगों को निराशा की ओर ले जाते हैं और फिर दूसरी ओर उन्हें यीशु मसीह के पास ले जाते हैं, जो केवल एकमात्र ऐसा है जो उचित ठहरा सकता है या उन्हें बचा सकता है (गलातियों 3:21-25)।

<u>चरण 4. लागू करना।</u> **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौनसे सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 3:1-20 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 3:1-20 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

3:1. मेरे लाभ मुझे परमेश्वर की दृष्टि में सही नहीं ठहरा सकते और मेरे अलाभ मुझे उद्धार के लिए अयोग्य नहीं ठहरा सकते। केवल परमेश्वर अनुग्रह और विश्वास के माध्यम से उचित ठहरा सकता है।

3:2. बाइबल पास में होना एक बड़ा लाभ है। उसे पढ़ें और अध्ययन करें!

3.3. परमेश्वर हमेशा विश्वासयोग्य रहेगा, भले ही मैं अविश्वासयोग्य हूँ (2 तीमुथियुस 2:13)। वह उद्धार के अपने वादे के प्रति विश्वासयोग्य रहता है *और वह अपनी न्याय की धमकी के प्रति विश्वासयोग्य रहता है!* जब मैं अविश्वासयोग्य होता हूँ, तो वह निश्चित रूप से अपने न्याय के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा और मेरी अविश्वासयोग्यता पर दोष लाएगा!

परमेश्वर के समान होने का निश्चय करो। विश्वासयोग्य रहो!

3:4. परमेश्वर हमेशा सच बोलता है (गिनती 23:19)। बाइबल में दिए परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करो।

3:5-8. झूठे तर्क से सावधान रहें।

3:9. यह कभी न सोचें कि आपकी अपनी जाति, संस्कृति, भाषा या इतिहास दूसरों की तुलना में बेहतर है (गलातियों 3:28)

3:10-12. गहराई से आश्वस्त हों कि परमेश्वर के मानकों के अनुसार प्राकृतिक मनुष्य आत्मिक और नैतिक रूप से भ्रष्ट है।

3:13-14. अपने मुँह से निकलने वाले शब्दों पर ध्यान दें (भजन संहिता 141:3; मत्ती 12:36; 15:18-20)।

3:15-17. आदमी के झगड़ों और युद्धों में कभी शामिल न हों (याकूब 4:1-2)।

3:18. हमेशा जीवित परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत और घनिष्ठ संबंध में वापस लौटें।

3:19. परमेश्वर की दृष्टि में स्वयं को सही ठहराने का प्रयास मत करो।

3:20. जैसे परमेश्वर आपको देखता है वैसे स्वयं को देखने के लिए आइने के रूप में बाइबल में दी गई शिक्षाओं और नैतिक कानूनों का उपयोग करें।

2. रोमियों 2:17-29 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

यह कहना, "आओ हम बुराई करें ताकि उसमें से अच्छाई निकल सके" (3:8) अनैतिक है और इसलिए एक गलत शिक्षा है। एक शिक्षक के रूप में, मैं ऐसी शिक्षा पढ़ाने हेतु अति सावधान रहना चाहता हूँ जो अपनी प्रवृत्ति में अनैतिक हो या बाइबल में दिए गए नैतिकता के सिद्धांतों के विरोध में हो। परमेश्वर के वचन के शिक्षक के रूप में, मैं परमेश्वर के वचन को सही ढंग से संभालना चाहता हूँ (2 तीमुथियुस 2:15)।

मैं लोगों को यह साबित करने के लिए बाइबल के भागों से उद्धरणों का उपयोग करना चाहता हूँ कि हर कोई स्वभाव से एक पापी है और अपने स्वभाव में भ्रष्ट है। यहाँ तक कि अन्य लोगों की दृष्टि में तथाकथित "अच्छे" लोगों को भी परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 3:1-20 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5 प्रार्थना (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)*

दूसरों के लिए प्रार्थना

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6 तैयारी (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)*

अगले अध्याय के लिए

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 2:17-29 का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **2 शमूएल 2, 5, 6 और 7** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **(5) रोमियों 3:28।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 13:44 में निहित **"छिपे हुए खजाने" का दृष्टांत** और मत्ती 13:45-46 में निहित **"बहुमूल्य मोती" के दृष्टान्त** की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या के लिए छह दिशानिर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 11

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज़ सुनने और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।***
अपने समूह और परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित इस अध्याय को प्रभु के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **2शमूएल 2,5,6 और 7**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (2शमूएल 2,5,6 और 7) से शान्त समय में क्या सीखा है।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(रोमियों में प्रमुख पद)* **(5) रोमियों 3:28**

दो-दो करके ***समीक्षा करें।***
(3) रोमियों 3:28। इसलिये हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *(यीशु के दृष्टान्त)* **छिपे हुए खजाने और अनमोल मोती का दृष्टान्त**

मत्ती 13:44 में "छिपे हुए खजाने का दृष्टांत छुपे"
और मत्ती 13:45-46 में "अनमोल मोती का दृष्टांत"
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की कीमत के विषय में हैं।

"दृष्टांत" एक पृथ्वी पर कि कहानी स्वर्गीय अर्थ के साथ होती है। यह एक सच्चे जीवन की कहानी या उदाहरण है जिसे आत्मिक शिक्षा देने के लिया तैयार किया जाता है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने के लिए और लोगों का उनकी वास्तविक स्थिति और नवीनीकरण की आवश्यकता से सामना कराने के लिए सामान्य और रोजमर्रा की घटनाओं को उपयोग किया। हम इस दृष्टांत का अध्ययन दृष्टांतों का अध्ययन करने के छः दिशानिर्देशों के द्वारा करेंगे। (देखें नियमावली 9, पूरक 1)।

क. छिपे हुए खजाने का दृष्टांत

पढ़ें मत्ती 13:44।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी समझें।

परिचय। दृष्टांत को अंलकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिये हम पहले कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। इस कहानी के जीवन के लिए वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

यह चित्र एक ऐसे व्यक्ति का है, जो खेत में खुदाई करते समय, *अचानक* जमीन में छिपे एक खजाने तक पहुँच गया। कहानी हमें यह नहीं बताती की वह खजाना वहाँ क्यों दबाया गया था या किसने वह खजाना वहाँ दबाया था। लेकिन चोरी और युद्ध के कारण अक्सर लोगों के पास अपनी कीमती चीजों को रखने के लिए जगह नहीं होती थी। तो किसी समय किसी ने अपनी कीमती संपत्ति का भाग एक संदूक में डाल कर उस खेत में कहीं दबा दिया। यह विशेष व्यक्ति किसी को इस खजाने के बारे में सूचित करने से पहले मर गया होगा।

अब किसी और के पास इस खेत का स्वामित्व है। खुदाई करने वालें को अचानक यह खजाना मिला। कहानी हमें यह नहीं बताती कि क्यों वह उस खेत में खुदाई कर रहा था जो उसका नहीं था। एक संभावना यह थी कि उसने बटाईदार के रूप में उस खेत को किराए पर लिया था। वह व्यक्ति उस खजाने को चोरी नहीं करना चाहता था। उसने महसूस किया कि खजाने के कानूनी स्वामित्व का दावा करने के लिए उसे पहले वह खेत खरीदना होगा। इसलिए उसने खजाने को फिर से ढंक दिया। उस खेत को खरीदने के लिए उसके पास जो कुछ भी उसने वह सब कुछ बेच दिया। उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि उसे खरीदने के लिए उसके पास जो कुछ भी था वह सब कुछ खर्च हो गया, वह उस खजाने को प्राप्त करने के लिए इतना खुश था।

---

2. करीब के संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय दें। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का समयोजन दृष्टांत को बताने के अवसर के विषय में बता सकता हैं, या दृष्टांत को बताने के समय की परिस्थिति के बारे में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से पहले पाय जाता है और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की कहानी के बाद पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 13:36-43 में निहित है।

गेहूँ के बीच जंगली बीज के दृष्टांत के स्पष्टीकरण के तुरंत बाद यीशु मसीह ने यह दृष्टांत कहा। इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह दृष्टांत भीड़ के लिए नहीं बल्कि केवल शिष्यों के लिए बोला गया था। इस दृष्टांत का उद्देश्य प्रकट करना था छिपाना नहीं (मत्ती 13:10-13)!

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 13:44 में निहित है।

(3) स्पष्टीकरण या लागूकरण।

यीशु दृष्टांत की व्याख्या नहीं करते थे। दृष्टांत की व्याख्या स्वयं कहनी और उसके संदर्भ से की जानी चाहिए। (भाग ग)।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने किसी विशेष आत्मिक महत्व को बताने के लिए दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण का इरादा नहीं किया था। दृष्टांत की कहानी में प्रासंगित विवरण वे हैं जो दृष्टांत के पाठ या मुख्य विषय या फिर केंद्रीय बिंदु को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वतंत्र आध्यात्मिक महत्व को श्रेय नहीं देना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत में कौन सा विवरण वास्तक में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

परमेश्वर का राज्य। सामान्य तौर पर परमेश्वर का राज्य अनंत काल से अनंत काल तक हर एक पर और सभी चीजों के ऊपर परमेश्वर का राज या शासन है (भजन 24:1; 145:13)। विशेषरूप से, परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का शासन है (मत्ती 28:18)। परमेश्वर का राज्य मसीह के छुटकारे के पूर्ण किए गए कार्य (प्रेरितों 2:36) और पवित्र आत्मा के द्वारा उस कार्य के लागूकरण (रोमियों 14:17) पर आधारित है। परमेश्वर का राज्य विश्वासियों के हृदयों में पहचाना जाता है (लूका 17:20-21) और उनके जीवन में क्रियाशील होता है। परमेश्वर का राज्य चार प्रत्यक्ष क्षेत्रों में प्रगट होता हैः शुरूआत से अंत तक विश्वासी के पूर्ण उद्धार में (मरकुस 10:25-26), पृथ्वी पर विश्वासियों का एक कलीसिया के रूप में गठन (मत्ती 16:18-19), मानव समाज के प्रत्येक पहलू में विश्वासियों के भले काम (मत्ती 25:34-40), और अंत में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर छुटकारा पाए हुए संसार या नए स्वर्ग और पृथ्वी में, (1कुरिन्थियों 15:24-26)।

इस प्रकार, परमेश्वर का राज्य प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है जब एक व्यक्ति उद्धार पाता है, मसीही मंडली का एक सक्रिय सदस्य बन जाता है (ग्रह कलीसिया या ग्रह संगति) और परमेश्वर के राज्य में कई सम्भावित सेवकाईयों में से एक सेवा करता है। जब भी यीशु मसीह ने कहा कि, ''परमेश्वर का राज्य *समान* है.....'' वह हमें सिखाना चाहते थे कि परमेश्वर के शासन काल में पृथ्वी पर इस समय क्या होता है और निश्चित रूप से तब क्या होगा जब यीशु मसीह के दूसरे आगमन के समय परमेश्वर का शासन अपने अंतिम चरण में प्रकट होगा। अंतिम न्याय के दिन दृष्टांतो में वर्णित घटनाएँ निश्चित रूप से पूरी होंगी। इसका अर्थ है कि वर्तमान समय में रहने वाले लोग दृष्टांतों में वर्णित घटनाओं में शामिल हैं! यीशु मसीह के प्रत्येक दृष्टांत में आज मेरे और आपके लिए एक संदेश है!!!

खज़ाना। इस दृष्टांत में खजाने का विशेष महत्व है क्योंकि यह *परमेश्वर के राज्य और उसके महत्वपूर्ण मूल्य* का प्रतिनिधित्व करता है।

खेत। कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि ''खेत'' बाइबल का प्रतिधित्व करता है, लेकिन ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि बाइबल पढ़ना परमेश्वर के राज्य की खोज करने का एक मात्र तरीका नहीं हो सकता! उदाहरण के लिए प्रेरित पौलुस ने जब परमेश्वर का राज्य पाया तब वह बाइबल नहीं पढ़ रहा था। जब परमेश्वर

किसी पापी की अगुवाई परमेश्वर का राज्य खोजने या उद्धार पाने के लिए करते हैं, तब वह हर प्रकार के तरीकों का प्रयोग करते हैं। इसलिए "खेत" कहानी का एक भाग मात्र है और यह विवरण इसका कोई अन्य विशेष महत्व नहीं बताता।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय संदेश) या तो स्पष्टीकरण या लागूकारण में से या फिर स्वयं कहानी ही से मिलता है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतो को समझाया या लागू किया, हम जानते कि हमें दृष्टातों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य विषय (संदेश), एक मुख्य पाठ, एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 13:44 में छिपे हुए खजाने का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कारने की कीमत" के बारे में एक दृष्टांत है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर का राज्य एक अनमोल खजाने के समान है कि जो व्यक्ति इसे प्राप्त करना चाहता है वह इसे प्राप्त करने के लिए वह सब कुछ छोडने को तैयार है जो इसे प्राप्त करने में बाधा डाल सकता है।"

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य हर प्रकार के बलिदान के लायक है। खेत में छिपा खजाना खेत के चुकाए गये मूल्य से कहीं अधिक कीमती है। "परमेश्वर का राज्य" एक विश्वासी के हृदय और जीवन में परमेश्वर का शासन है। "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश" करने का अर्थ मसीह में अनुग्रह के द्वारा विश्वास से उद्धार पाना है (मरकुस 10:24-26; प्रेरितों 16:31) और इस प्रकार किसी का अपने जीवन को परमेश्वर के शासन के प्रति सौंपना देना है। परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करना या परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना किसी भी अन्य वस्तु की तुलना में कहीं अधिक मूल्यवान है।

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना परमेश्वर के राज्य के विषय में यीशु मसीह की शिक्षाओं की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। यह उद्धार के लिए बहुत आवश्यक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के इच्छुक हैं, जो यीशु मसीह के लिए अपना और अपने सम्पूर्ण जीवन का समर्पण करना है।

---

5. इस दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो से करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, बाइबल के सभी दृष्टांतों का सत्य बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्यों के समानांतर या विपरीत है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ खोजने की कोशिश करें ताकि दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो सकें। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। कैसे यह लेखांश परमेश्वर के राज्य की खोज और उस में प्रवेश की व्याख्या

करते हैं ?
ध्यान दें।

यूहन्ना 1:45–51। नतनएल ने परमेश्वर के राज्य के खजाने की खोज तब कि जब फिलिप्पुस ने उसे बताया की हमें मसीहा मिल गया है। सबसे पहले नतनएल को संदेह हुआ और उसने यह नहीं सोचा था कि गलील से कोई अच्छी वस्तु भी निकल सकती है। फिलिप्पुस ने उससे कहा, ''चल कर देख ले''। जब यीशु ने नतनएल से कहा इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैंने तुझे देखा था, तब उसे एहसास हुआ कि यीशु मसीहा है। नतनएल ने यीशु मसीह का अनुयायी बनने के लिए *अपने संदेह और अविश्वास को छोड दिया।* उसके लिए यह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

यूहन्ना 4:1–40। सामरी स्त्री ने परमेश्वर के राज्य के खजाने की खोज तब कि जब यीशु उस स्त्री से कुएँ पर मिलें। पहले, उसने चर्चा के विषय को बदलकर अपने पापमय जीवन के बारे में सत्य को नजरअंदाज कर दिया। लेकिन जब यीशु ने उसे बताया कि वह मसीहा है, अब वह अपने वास्तविक पापी जीवन से भाग नहीं सकती थी। सामरी स्त्री ने यीशु समीह का अनुयायी होने के लिए *अपने पिछले पापमय जीवन के प्रगट होने के डर और शर्म को छोड़ दिया।* यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

यूहन्ना 9 अध्याय। जन्म के अंधे व्यक्ति ने परमेश्वर के राज्य के खजाने की खोज तब की जब यीशु ने उसके अंधेपन को ठीक किया। पहले, वह एक यहूदी और आराधनालय का सदस्य रहा था। यहूदी अनुमान लगा रहे थे कि वह अंधा था क्योंकि या तो उसने या उसके माता–पिता ने कुछ पाप किए थे। लेकिन जब यीशु ने कहा कि वह इसलिए अंधा है कि परमेश्वर का काम उसके जीवन में प्रगट हो, तब उसे एहसास हुआ कि यीशु जगत की ज्योति है। यीशु मसीह का अनुयायी होने के लिए *वह अंधा व्यक्ति उस देश के धार्मिक अगुवों के द्वारा अपमानित और आराधनालय से बाहर निकाले जाने के लिए भी इच्छुक था।* यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कारने का मूल्य था।

प्रेरितों 9:1–19; फिलिपियों 3:7–9।
प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर के राज्य के खजाने की खोज तब कि जब यीशु व्यक्तिगत रूप में उससे दमिश्क के मार्ग पर मिले। पहले, पौलुस ने मसीहियों को जेल में डालकर और उन्हें मृत्यु दंड देने के विषय मे अपना मत देकर उन्हें सताया। लेकिन जब उसका सामना यीशु मसीह से हुआ, तब उसे महसूस हुआ कि वह स्वयं एक बहुत बुरा पापी है और यीशु मसीह ही जगत का उद्धारकर्ता और मसीहा है। यीशु मसीह का अनुयायी बनने के लिए *प्रेरित पौलुस तुरन्त इस्त्राएल में फरीसी होने के अपने ऊँचे पद और संभवतः माहसभा का सदस्य होने के पद को त्यागने का इच्छुक था।* उसने अपना सताव बंद कर दिया और यीशु मसीह का पक्ष लिया और अपने लोगों और अन्य लोगों को सुसमाचार प्रचार किया। यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

प्रेरितों 16:25–34। फिलिप्पी में जेल खाने के दरोगा ने परमेश्वर के राज्य की खोज तब कि जब उसने देखा की एक भूकंप ने जेल के दरवारे खोल दिए है। पहले, वह स्वयं को मारना चाहता था, लेकिन जब उसे एहसास हुआ कि एक भी कैदी भागा नहीं था, तब वह जानना चाहता था कि वह उद्धार कैसे प्राप्त कर सकता है। यीशु मसीह का अनुयायी होने के लिए *वह दरोगा जो सही था वह*

करने के लिए और खुले तौर पर अपने कैदियों के घावों और उनकी जरूरतों की देखभाल करने के लिए इच्छुक था। यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की कीमत थी।

ख. अनमोल मोती का दृष्टांत

पढ़ें। मत्ती 13:45-46।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

यह चित्र एक व्यापारी का है जो अनमोल मोती की खोज में था। मोती बहुत कीमती होते हैं। केवल धनी व्यक्ति ही उन्हें खरीद सकते हैं। विशेषरूप से जो मोती फारस की खाड़ी या हिन्द महासागर से आते हैं वह बहुत महंगे होते है, और एक औसत व्यक्ति की खरीद से बहुत दूर होते हैं। एक व्यापारी था जो अब तक के खरीदे गए अपने मोतियों से संतुष्ट नहीं था। इसलिए उसने सबसे श्रेष्ठ मोती की हर जगह तलाश की। अंत में एक दिन उसकी तलाश सफल हुई। उसे एक बहुत अनमोल मोती मिला। व्यापरी इस मोती को प्राप्त करनर चाहता था। इसलिए उसने उस मोती को खरीद लिया। लेकिन ऐसा करने के लिए उसे अपन सब कुछ बेचना पड़ा।

---

2. करीब के संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 13:36-43 में पाया जाता है।

गेहूँ के बीच जंगली बीज के दृष्टांत के स्पष्टीकरण के तुरंत बाद यीशु मसीह ने यह दृष्टांत कहा। इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह दृष्टांत भीड़ के लिए नहीं बल्कि केवल शिष्यों के लिए बोला गया था। इस दृष्टांत का उद्देश्य प्रकट करना था छिपाना नहीं (मत्ती 13:10-13)!

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 13:4-46 में निहित है।

(3) स्पष्टीकरण या लागूकरण।

यीशु दृष्टांत की व्याख्या नहीं करते थे। दृष्टांत की व्याख्या स्वयं कहनी और उसके संदर्भ से की जानी चाहिए।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत में कौन सा विवरण वास्तक में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

मोती खोजने वाला व्यापारी। "व्यापारी" इस दृष्टांत में आवश्यक विवरण है, क्योंकि वह *परिश्रमपूर्वक* परमेश्वर के राज्य की *खोज करने वाले व्यक्ति* का प्रतिनिधित्व करता है। वह किसी भी ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने जीवन में स्वोत्तम प्राप्त करने के लिए परिश्रम करता है और जब वह

उसे मिल जाता है तो वह उसे प्राप्त करने के लिए आपना सब कुछ देने के लिए तैयार हो जाता है।

मोती। "मोती" *परमेश्वर के राज्य* और उसके मूल्य को दर्शाता है। यह एक प्रासंगिक विवरण है। अन्य बाइबल लेखांशो के अनुसार "मोती" कुछ मूल्यवान और पवित्र चीजों का प्रतिनिधित्व करते हैं, उदाहरण के लिए, मत्ती 7:6 में, यीशु ने अपने सुनने वालों को चेतावनी दी, "अपने मोती सुअरों के आगे मत डालों (ये वह लोग हैं जो मोती के मूल्य को नहीं समझते) ऐसा न हो कि वे उन्हें पाँवों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें।" यीशु ने लोगों को सिखाया की उन लोगों पर यीशु मसीह के राज्य के सुसमाचार की घोषणा को व्यर्थ न करें जो लोग लगातार उनके प्रचार को खारिज करते हैं (मत्ती 10:14-15,23)। और पौलुस ऐसे प्राचीन को नियुक्त करने विषय में चेतावनी देता है जो योग्य नहीं (1तीमुथियुस 3:1-7)।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 13:45-46 में अनमोल मोती का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के मूल्य" के विषय में एक दृष्टांत है।

दृष्टांत का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है। "परमेश्वर का राज्य इतना कीमती है कि एक व्यक्ति जो इसे प्राप्त करना चाहता है, वह इसे प्राप्त करने के लिए वह सब छोडने के लिए तैयार है जो इसके साथ असंगत हो सकता है।"

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश का मूल्य हर बलिदान के योग्य है। अनमोल मोती का मूल्य उससे कहीं अधिक है जो कुछ व्यापारी के पास है। परमेश्वर का राज्य इस बात की पहचान है कि जीवन और हृदय में परमेश्वर का शासन या स्वामित्व ही सर्वोच्च है। "मैंने परमेश्वर से कहा, 'तू ही मेरा प्रभु है, तेरे सिवा मेरी भलाई कहीं नहीं'।" (भजन 16:2)। "स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता।" (भजन 73:25)। "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश" करने का अर्थ मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार पाना और इस प्रकार परमेश्वर के प्रभुत्व के प्रति अपने जीवन को समर्पित करना है।

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना परमेश्वर के राज्य के विषय में यीशु मसीह की शिक्षाओं की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। यह उद्धार के लिए बहुत आवश्यक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के इच्छुक हैं, जो यीशु मसीह के लिए अपना और अपने सम्पूर्ण जीवन का समर्पण करना है। इस प्रकार वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं।

---

5. इस दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो से करें।

खोजें और चर्चा करें। कैसे यह लेखांश परमेश्वर के राज्य की खोज और उस में प्रवेश की व्याख्या करते हैं?

ध्यान दें।

मरकुस 10:17–27। धनवान युवक ने परमेश्वर की व्यवस्था को बनाए रखने की बहुत कोशिश की थी, फिर भी उसे पता नहीं था कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए उसे क्या करना चाहिए! जब यीशु ने उससे कहा कि अपनी सारी सम्पत्ति बेच कर कंगालों को दान कर दे और यीशु का अनुयायी बन जा, तो वह यीशु से फिर गया। *यह धनी व्यक्ति अपनी सम्पत्ति छोड़ने के लिए तैयार नहीं था जो उसके और उसके यीशु समीह का चेला बनने के बीच खड़ी थी।* इसलिए यीश ने कहा, ''धनवान का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है।"

प्रेरितों. 8:26–38। इथियोपिया के अधिकारी ने जीवित परमेश्वर की आराधना करने के लिए इथियोपिया से यरूशलेम तक की लंबी, कठिन और खतरनाक यात्रा की। उसने बाइबल में खोज करने के बाद परमेश्वर के राज्य के अनमोल मोती को खोज निकाला। वह यशायाह 53 पढ़ रहा था। जब फिलिपुस ने उसे सुमाचार सुनाने के लिए बाइबल के उसी भाग से शुआत की, तब उसने विश्वास किया। *बाइबल पढ़ने के कारण जिसके द्वारा वह यीशु मसीह का अनुयायी बन सका वह सरकारी अधिकरी अपने उच्च राजनैतिक पद को खतरे में डालने के लिए तैयार था।* यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

प्रेरितों. 10:1–5, 30–36। पलटन के सूबेदार कुरनेलियुस ने परमेश्वर के राज्य के अनमोल मोती को पुराने नियम के धर्म में प्रसन्नता से खोजते हुए पाया। वह प्रार्थना किया करता था और गरीबों को दान दिया करता था। जब पतरस ने उसे उसके घराने और मित्रों सहित सुसमाचार प्रचार किया, उसने यीशु मसीह पर विश्वास किया। *यीशु मसीह का अनुयायी होने के लिए इस सूबेदार ने अपने पलटन का सूबेदार होने के उच्च पद को बाइबल का संदेश स्वीकार करने के कारण खतरे में डाला।* यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

प्रेरितों. 16:14। बैंगनी कपड़ो की व्यापारी लुदिया ने परमेश्वर के राज्य के अनमोल मोती को पुराने नियम के धर्म में प्रसन्नता से खोजते हुए पाया। जब पौलुस और उसके साथी उससे और दूसरी स्त्रियों से बात करने लगे जो वहाँ थी तब वह नगर के बारह नदी के किनारें प्रार्थना स्थल पर बैठी थी। परमेश्वर ने पौलुस के संदेश के प्रति उसके हृदय को खोला। *यीशु मसीह का अनुयायी होने के लिए यह व्यापारी औरत अपने व्यापार और व्यवसाय को जोखिम में डालने के लिए तैयार थी।* यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मुल्य था।

प्रेरितों. 17:10–12। बिरीया में यहूदियों और यदूदी धर्म में परिवर्तित हुए अन्यजातियों ने परमेश्वर के राज्य के अनमोल मोती को तब पाया जब वे एक दूसरे के साथ नए नियम के संदेश की चर्चा उत्सुक्ता के साथ पुराने नियम में करते हैं। पौलुस ने उन्हें परमेश्वर का वचन प्रचार किया उसके बाद वे कई दिनो तक प्रतिदिन पवित्र शास्त्र में से वचनों को जांचते रहे यह जानने के लिए कि जो पौलुस ने कहा वह सत्य है। जब उन्होंने पाया कि वह सत्य है तो उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास किया। *यीशु मसीह के अनुयायी होने के लिए यहूदी आरधनालय के इन सभी सदस्यों, स्त्री और पुरूषों ने यहूदी धर्म के अगुवों और उनके साथी देशवासी द्वारा सताव का जोखिम उठाया।* यह उन यहूदी और परमेश्वर का भय मानने वाले अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

ग. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के बारे में दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं का सारांश

चर्चा करें। इन दृष्टातों के मुख्य संदेश और शिक्षाएँ क्या है? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *होना* और क्या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) **मुख्य संदेश।** इन दो दृष्टातों "छिपे खजानें" और "अनमोल मोती" का मुख्य संदेश निम्नलिखित हैः "परमेश्वर का राज्य इतना कीमती है कि एक व्यक्ति को परमेश्वर का राज्य प्राप्त करने के लिए सब कुछ देने के लिए तैयार रहना चाहिए (साथ ही जो भी उसे प्राप्त करने के बीच में आए)।" परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य जो भी इसे प्राप्त करने में हस्तक्षेप कर सकता है या जो इसके साथ असंगत हो सकता है उसे छोड़ देने के लिए तैयार रहना है। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के बीच में जो चीजें खड़ी हो सकती है वे हैं, किसी का घमंड, महत्वाकांक्षा, सम्पत्ति, रिश्ते या काम। यदि इनमें से कुछ भी बीच में खड़ा हो जाए तो उसे छोड़देना चाहिए (लूका 9:57-62; 14:25-33)! परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कोई आसान या हल्की बात नहीं है। लोगों के उद्धार की कीमत स्वयं परमेश्वर के एक मात्र पुत्र का जीवन है। इसलिए परमेश्वर के राज्य में मसीहियों का प्रवेश करना कोई हल्की बान नहीं हो सकती (मरकुस 8:31-38!)।

(2) **परमेश्वर के राज्य की खोज और उसमें प्रवेश करना ही मायने रखता है।** परमेश्वर के राज्य को खोजना ही मनुष्य की उच्चतम प्राथमिकता है (मत्ती 6:33)। "पहले उसके राज्य और धार्मिकता की खोज करों बाकि सारी वस्तुएँ तुम्हें आप ही मिल जाएंगी।"

फिर भी, इन दोनों दृष्टांतों के बीच अंतर है। "छिपे खजाने का दृष्टांत" *उन लोगों के लिए उद्धार की बहुमूल्यता पर* जोर देता है *जो इसे बिना खोजे पा लेते है और उसे प्राप्त कर लेते हैं!* और "अनमोल मोती का दृष्टांत" *उन लोगों के लिए उद्धार की बहुमूल्यता पर* जोर देता है *जो इसकी खोज में रहते हैं और इसे खोजने के बाद पा लेते हैं!* इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई परमेश्वर के राज्य या उद्धार को अकस्मात रूप से खोज लेता है या कोई इसकी तलाश में रह कर इसे प्राप्त करता है, महत्वपूर्ण बात है इसे स्वीकार करना!

यदि अब तक आप ने परमेश्वर के राज्य की खोज नहीं की तो अभी से उसकी खोज शुरू कर दें! यदि आप लंबे समय से परमेश्वर के राज्य की खोज कर रहे हैं तो उसमें अभी प्रवेश करें! "यीशु मसीह पर विश्वास करें, आप और आपका घराना उद्धार पाएगा।"! परमेश्वर का राज्य जो कुछ भी आप करते हैं या जो कुछ भी आपके पास है, उससे कहीं अधिक कीमती है। जिन लोगों को पता होता है कि खजाना कहाँ दबा है वे इसे सुरक्षित करने के लिए बाकि सब कुछ छोड़ देते हैं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ आपने सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में बारी बारी परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना***

करें।

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर **"छिपे खजाने का दृष्टांत" और "अनमोल मोती का दृष्टांत"** का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **2शमूएल 11,12,13 और 24** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **(4) रोमियों 2:15।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 3:21-31।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 12

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।***

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)***
	2शमूएल 11,12,13 और 24

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (2शमूएल 11,12,13 और 24) से शान्त समय में क्या सीखा है।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख पद)***
	रोमियों में प्रमुख पद का पुनरावलोकन करें

दो-दो करके ***समीक्षा करें।***

(1) रोमियों 1:16। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।

(2) रोमियों 1:17। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास स और विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।"

(3) रोमियों 2:5। पर तू अपनी कठोरता और हठीले मन के कारण उसके क्रोध के दिन के लिये, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने लिये क्रोध कमा रहा है।

(4) रोमियों 2:15। वे व्यवस्था की बातें अपने अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और उनके विवेक भी गवाह देते हैं, और उनके विचार परस्पर दोष लगाते या निर्दोष ठहराते हैं।

(5) रोमियों 3:28। इसलिये हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराता है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)***
	रोमियों 3:21-31

परिचय। रोमियों 3:1-20 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का उपयोग करें।

रोमियों 3:19-20 में पौलुस अपनी शिक्षा का निष्कर्ष निकालता है कि कोई भी अन्यजाती या यहूदी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं है और परमेश्वर के सामने सभी दोषी हैं। वह यह भी निष्कर्ष निकालता है कि व्यवस्था बनाए रखने से धार्मिकता प्राप्त नहीं होती। रोमियों 3:21-31 में पौलुस सिखाता है कि धार्मिकता कैसे प्राप्त की जा सकती हैं।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 3:21-31 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

"धर्मी ठहरना" पहले तो बाइबल के परमेश्वर के साथ सही संबंध में खड़े होना है (एक विश्वासी का स्तर या स्थिति) और दूसरा वह करना जो बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में उचित है (बढ़ने की प्रक्रिया या विश्वासि की जीवनशैली)।

"धर्मी ठहराया जाने" का अर्थ है कि बाइबल के परमेश्वर ने किसी को अपनी दृष्टि में पूर्ण रूप से सिद्ध और धर्मी *घोषित किया* और इसके परिणामस्वरूप उसके साथ हमेशा के लिए इस प्रकार *व्यवहार* करना है कि वह पूर्ण रूप से सिद्ध और धर्मी है (क्षमा किया गया, मेल मिलाप कराया गया)। धर्मी ठहरान समर्थी परमेश्वर का न्यायिक कार्य है।

पौलुस ने यह सिद्ध किया कि दुष्ट अन्यजातियों और यहाँ तक कि धार्मिक यहूदियों के लिए भी परमेश्वर की व्यवस्था पालन के उनके व्यक्तिगत कार्य के द्वारा धर्मी ठहरना असंभव है। हालाँकि सुसमाचार घोषणा करता है कि बाइबल परमेश्वर के अनुग्रह और यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा धर्मी (उद्धार) ठहरने की परमेश्वर की विधि को प्रगट करती है।

3:21-24क

खोज 1. **पौलुस धर्मी ठहरने की प्रकृति की व्याख्या करता है।**

परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता व्यवस्था को पूरा करने से नहीं आती। पहले से ही पुराने नियम में नबियों ने परमेश्वर की धार्मिकता के बारे में गवाही दी जो मसीहा, यीशु मसीह के माध्यम से (यशायाह 53:5-6) स्थापित की जाएगी। और अब परमेश्वर की धार्मिकता नए नियम में सामने आई है।

परमेश्वर की यह धार्मिकता यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा प्राप्त की गई है और यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध है (खाते में जमा की गई, आरोपण, जोड़ दी गई) जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है, भले ही वह एक यहूदी हो या एक अन्यजाति।
यहूदियों और अन्यजातियों के बीच कोई अंतर नहीं है, क्योंकि सभी लोग स्वभाव ही से पथ भ्रष्ट और खोए हुए हैं।

(वचन 22 और 23 एक ऐसा कोष्टक है जो दोनों के लिए, क्या पूर्ववर्ती है और क्या अनुसरण करना है, बहुत महत्वपूर्ण संबंध में खड़ा होता है। वचन 24 वचन 22 के विषय को फिर से शुरू करता है और इसका विस्तार करता है)।

यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से यह धार्मिकता लोगो को परमेश्वर के अनुग्रह से प्रदान की जाती है। यह पूर्ण रूप से निःशुल्क है।

3:24-25

खोज 2. **पौलुस धर्मी ठहरने के आधार को समझाता है।**

"छुटकारा" (यूनानीः अपोल्यूट्रोसिस) का अर्थ है गुलाम या बंदी को फिर से खरीदना, फिरौती देकर उसे स्वतंत्र कराना। फिरौती (यूनानीः लूट्रॉन) एक गुलाम को स्वतत्रं करने की कीमत निर्धारित करना है। खोए हुए लोगों को छुडाने की कीमत यीशु मसीह के जीवन से कम नहीं है जिसे उन्होंने बहुतो के "स्थान पर" या "लाभ के लिए" दिया (मरकुस 10:45; यूहन्ना 10:11; 2कुरिन्थियों 5:21)। उन्होंने स्वयं को प्रायश्चित के स्वैच्छिक बलिदान के रूप में दिया (यूहन्ना 3:18; 1पतरस1:18-19)। फिरौती चुकाई गयी, शैतान को नहीं लेकिन परमेश्वर पिता को। अपनी मृत्यु और मुर्दो में से अपने पुनरुत्थान के कारण यीशु मसीह स्वयं मसीहियों की धार्मिकता और पवित्रता और छुटकारा बन गए (1कुरिन्थियों 1:30; इफिसियों 2:4-7)।

परमेश्वर की परिपूर्ण पवित्रता और धार्मिकता ने मांग की कि संसार के इतिहास के सभी पापों (अपवित्रता और अधार्मिकता) को दंडित किया जाए और संसार के इतिहास के सभी लोग सिद्ध और धार्मिक और पवित्र जीवन जीएं। क्योंकि यीशु मसीह को छोड़ और कोई भी संसार में पूर्ण रूप से पवित्र और धर्मी (पाप रहित) जीवन नहीं जी पाया, केवल वह ही प्रायश्चित का पात्र होने के योग्य थे जो लोगों के लिए फिरौती दे सकते थे। प्रायश्चित का बलिदान (यूनानीः हिलेस्टिरीयन) (वह जो क्षतिपूर्ति या संतुष्ट करता है, निष्कासन का साधन) वह बलिदान है जो पाप के विरुद्ध परमेश्वर के पवित्र और

धर्मी क्रोध (आक्रोश) को शांत करता है और स्वयं पाप और उसके परिणाम को दूर करता है। अपने "लहू" के द्वारा जो, उनकी मृत्यु और मुर्दों में से उनका पुनरूत्थान है, यीशु समीह स्वयं ही वह बन गए जिसने परमेश्वर के क्रोध को एक तरफ कर दिया और हमारे पापों को दूर कर दिया (1पतरस 2:24)। इस प्रकार प्रायश्चित बलिदान एक प्रतिस्थापन्न बलिदान था, पापियों के स्थान पर बलिदान।

3:25-26

खोज 3. **पौलुस धर्मी ठहराने के उद्देश्य को समझाता है।**

पुराने नियम की अवधि (तैयारी की अवधि) के दौरान परमेश्वर अक्सर अपने लोगों के पापों को सहन करते थे। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे परमेश्वर अन्यायपूर्ण थे, क्योंकि उन्होने पाप करने वाले लोगों को दंडित नहीं किया।

लेकिन नए नियम की अवधि (पूरिपूर्णता की अवधि) के दौरान यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान के माध्यम से परमेश्वर ने दिखाया कि वे धर्मी और दयालु दोनों थे। परमेश्वर पूर्ण रूप से धर्मी हैं क्योंकि उन्होंने सभी विश्वासियों के *इतिहास* में पापों को यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा *एक बार में हमेशा* के लिए दंडित किया। परमेश्वर विश्वासियों का न्याय करने और स्वयं से उनका मेल मिलाप करने में पूर्ण रूप से दयावंत है (1पतरस 3:18)। परमेश्वर ने दिखाया की वह अपने चरित्र में सिद्ध है। एक ओर, परमेश्वर पूर्ण रूप से पवित्र और धर्मी रहते हैं क्योंकि उन्होंने पाप को दंडित किया। दूसरी ओर, परमेश्वर पूर्ण रूप से दयालु और प्रेमी है, क्योंकि वे पापियों को बचाते है। सम्पूर्ण मानव इतिहास में केवल यीशु मसीह का क्रूस ही परमेश्वर के सिद्ध प्रेम के साथ परमेश्वर की सिद्ध धार्मिकता का सामंजस्य स्थापित करने में संक्षम था।

3:27-31

खोज 4. **पौलुस धर्मी ठहरने के *परिणाम* को समझाता है।**

क्योंकि यीशु मसीह ने स्वयं में विश्वासियों के लिए सिद्ध धार्मिकता अर्जित की, व्यवस्था के कामों का घमण्ड (व्यवस्था बनाए रखना) दूर हुआ। जो कुछ भी यीशु मसीह ने पूरा किया, वह उसे दूर करता है जो लोग पूरा करने की कोशिश करते हैं। यीशु मसीह की उपलब्धि मनुष्यों की उपलब्धियों के सभी घमण्ड को दूर करती है। व्यवस्था के कामों के द्वारा *धर्मी ठरहने के सिंद्धात* (व्यवस्था) को (इस्त्राएल की नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखना) यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के काम पर विश्वास करने के द्वारा *धर्मी ठहरने के वास्तविक सिद्धांत* (व्यवस्था) ने दूर कर दिया।

इस प्रकार एक व्यक्ति नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने (613 मानाव निर्मित कानून जो यहूदियों ने परमेश्वर की व्यवस्था में जोड़ दिए) से अलग विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।

यह धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर को प्रस्तुत करता है और वह वास्तव में ऐसे ही हैंः कवेल एक विशेष समूह (यहूदियों) के परमेश्वर के रूप में नहीं, लेकिन *सभी लोगों* (यहूदियों और अन्यजातियों) *के परमेश्वर* के रूप में।

परमेश्वर यहूदियों और अन्यजातियों को एक ही समान धर्मी ठहराते हैंः अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करने के माध्यम से।

<u>परमेश्वर का नए नियम का प्रकाशन परमेश्वर के पुराने नियम के प्रकाशन को खारिज नहीं करता, लेकिन इसकी पुष्टि करता है!</u>

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये रोमियो 3:1-31 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें। (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)
चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

3:31

<u>प्रश्न 1.</u> **<u>रोमियों 3 अध्याय में "व्यवस्था" शब्द का क्या अर्थ है?</u>**

ध्यान दें।

"व्यवस्था" शब्द (यूनानीः नोमोस) के रोमियों के पत्र और बाइबल में कई अलग-अलग अर्थ हैं।

(1) "व्यवस्था" सभी लोगों के लिए परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता है (रोमियों 3:19)।

यह व्यवस्था विश्वासियों के लिए केवल यीशु मसीह के द्वारा पूरी की गई किसी अन्य मनुष्य के द्वारा नहीं।

परमेश्वर पवित्र और धर्मी परमेश्वर है। इसलिए एक ओर परमेश्वर की आवश्यकता है कि सभी पापों को दंडित किया जाए लेकिन दूसरी ओर परमेश्वर की आवश्यकता है कि सभी लोग पूर्ण रूप से धर्मी और पवित्र हों और पूर्ण रूप से धर्मी और पवित्र जीवन जीएं! परमेश्वर की इस आवश्यकता को परमेश्वर की 'व्यवस्था' कहा गया है (रोमियों 3:19ख)- परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता। देखें रोमियों 3:19-20।

(2) ''व्यवस्था" बाइबल में निहित आज्ञाएँ, निषेध और नियम हैं (रोमियों 3:10-18)।
औपचारिकता को पूरा किया गया, रद्द और निरस्त किया गया है।
नागरिक व्यवस्था को परमेश्वर के राज्य द्वारा बदल दिया गया।
लेकिन नैतिक कानून वैध रहता है।

पुराने नियम में तीन तरह की ''व्यवस्था" हैं, जिन्हें एक दूसरे से पूरी तरह से अलग नहीं किया जा सकता, लेकिन निम्नानुसार मोटे तौर पर विख्यात किया जा सकता हैः

पहला। नैतिक व्यवस्था। सभी लोगों के धर्मी ठहरने के लिए नैतिक व्यवस्था परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता है। यीशु मसीह को छोड़ और किसी ने इस आवश्यकता को पूरा नहीं किया। एक व्यक्ति के मसीही बनने के बाद, नैतिक व्यवस्था परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता है कि कैसे एक मसीही (मसीह में धर्मी ठहराए गए विश्वासी) को परमेश्वर का जन होने के नाते आपने जीवन को जीना चाहिए। नैतिक व्यवस्था दस आज्ञाओं और बाइबल में निषिद्ध अन्य आज्ञाओं में प्रकट है। नैतिक व्यवस्था को *कभी रद्द या निरस्त नहीं किया गया।* यह नए नियम की अवधि के दौरान उद्धार पाए हुए (धर्मी) मसीही जीवन जीने के नियम के रूप में वैध है। रोमियों 3:10-18 में भजन और यशायाह से लिए गए उद्धरण इस व्यवस्था के उदाहरण हैं।

जो कुछ भी यह ''व्यवस्था'' (अर्थातः पुराने नियम के वचन) (रोमियों 3:19) कहती है, यह संसार के सभी लोगों के लिए है, ससांर के सभी लोग ''इस व्यवस्था में शामिल हैं"[1] (अर्थातः परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता) (रोमियों 3:19)। इसलिए ''व्यवस्था" केवल पुराने नियम के एक हिस्से से ली गई केवल दस आज्ञाएँ नहीं है बल्कि परमेश्वर की सभी आज्ञाएँ, आवश्यकताएँ और सम्पूर्ण पुराने नियम में पाए जाने वाले निर्णय है। यह व्यवस्था मृत नहीं है, लेकिन ''बोलती'' है। परमेश्वर के आत्मा का एक महत्वपूर्ण कार्य लोगों को पाप, धार्मिकता और न्याय के प्रति कायल करना है (यूहन्ना 16:8)। आत्मा बाइबल के वचनों को ''जीवित" बनाती है ताकि वह लोगों के हृदयों, मन और विवेक से बातें कर सकें (इब्रानियों 4:12; 2तीमुथियुस 3:16-17)।
रोमियों 3:19ख कहता है कि संसार के सभी लोग परमेश्वर की व्यवस्था में शामिल (अधीन नहीं) हैं (अर्थातः परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता जैसा कि विशेष रूप से बाइबल में निहित नैतिक और निषिद्ध आज्ञाओं में प्रकट किया गया है)।

- रोमियों 3:19ख कहता है कि ''व्यवस्था" (अर्थातः परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता जो नैतिक व्यवस्था में प्रकट है) *एक न्यायी के रूप में कार्य करती है।* यह बाइबल के परमेश्वर और बाइबल में उनके प्रकाशन के विरूद्ध हर एक तर्क को शांत करती है और लोगों को बाइबल के परमेश्वर को लेखा देने के लिए जिम्मेदार ठहराती है।
- रोमियों 3:20ख कहता है कि ''व्यवस्था" एक *दर्पण* के समान काम करती है। यह लोगों को

[1]रोमियों 3:19 ''व्यवस्था के अधीन नहीं" लेकिन, ''व्यवस्था में शामिल""

दिखाती है कि वे वास्तव में कैसे है, परमेश्वर उन्हें कैसे देखते है और वास्तव में वे कितने पापमय है। यह उन्हें जगरूक और दर्दनाक रूप से अवगत करती है कि वे पूर्ण रूप से पथ भ्रष्ट हैं।

- और रोमियों 3:21क कहता है कि ''व्यवस्था'' एक *उद्धारकर्ता* के समान काम नहीं कर सकती। यह धर्मी ठहरने का मार्ग प्रगट नहीं कर सकती या लोगों को परमेश्वर की दृष्टि में उद्धार नहीं दिला सकती। यह उद्धार के मार्ग को प्रगट नहीं कर सकती (धर्मी ठहरना और शुद्धिकरण किया जाना)।

दूसरा। औपचारिक व्यवस्था। औपचारिक या अनुष्ठान संबंधि व्यवस्था परमेश्वर की आवश्यकता है कि लोगों को प्रार्थना या आराधना में परमेश्वर के पास किस प्रकार जाना है।

- पुराने नियम की अवधि में इन्हें विभिन्न औपचारिक व्यवस्था के रूप में व्यक्त किया गया था, जिनमें निम्न शामिल थेः
  - मंदिर के विषय में व्यवस्था
  - याजकों के विषय में व्यवस्था
  - सब्त और धार्मिक त्योहारों के विषय में व्यवस्था
  - भेंट और बलिदान के विषय में व्यवस्था

<u>यीशु मसीह के प्रथम आगमन के साथ इन औपचारिक ''व्यवस्थाओं'' में आवश्यक परिवर्तन हुआ</u> (इब्रानियों 7:12)।

- नए नियम में यीशु मसीह ने
  - औपचारिक व्यवस्था को *पूरा किया* (मत्ती 5:17)
  - उसे *रद्द* किया (कुलुस्सियों 2:14)
  - और इसे *निरस्त किया* (समाप्त) (इफिसियों 2:15)।

<u>औपचारिक व्यवस्था अब नए नियम में वैध नहीं है और इन्हें नए नियम की कलीसिया में फिर से पेश नहीं किया जा सकता</u> (देखें गलातियों 4:8-10; 5:1-7)! पुराने नियम के धार्मिकत त्योहारों को मनाना निरस्त कर दिया गया है! नए नियम की अवधि में परमेश्वर ऐसे लोगों की तलाश करते हैं जो उनकी आराधना अनुष्ठानों, औपचारिक व्यवस्था या धार्मिक त्योहारों से नहीं बल्कि आत्मा और सच्चाई से करते हैं (यूहन्ना 4:23-24)।

तीसरा। नागरिक व्यवस्था। नागरिक व्यवस्था परमेश्वर के लोगों के समाज (मंडली) के लिए परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता है।

- पुराने नियम की अवधि के समय परमेश्वर की आवश्यकता के अनुसार इस्त्राएल को राष्ट्रीय और राजनैतिक स्तर पर किस प्रकार काम करना चाहिए उसमे संपत्ति, कर, युद्ध, बीमारियों से निपटने और यौन उल्लंघनों के बारे में नियम शामिल हैं।

- नए नियम में परमेश्वर के लोगों, इस्त्राएल में विश्वासियों को, एक उच्च स्तर पर *जारी* रखा गया है और इसे *बढ़ाने* के लिए अन्य सभी देशों के विश्वासियों को भी शामिल किया गया है। इसलिए पुराने नियम की नागरिक व्यवस्था को नए नियम में परमेश्वर के राज्य के विषय में यीशु मसीह की शिक्षाओं द्वारा *प्रतिस्थापित या सिद्ध* कर दिया गया।

(3) "व्यवस्था" पुराना नियम या इसका भाग है (रोमियों 3:19क, 21ख)।
यह व्यवस्था बाइबल के पुराने नियम का भाग है।

नैतिक व्यवस्था (दोषी ठहराने और उद्धार के लिए परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता), औपचारिक व्यवस्था (पुराने नियम की अवधि में परमेश्वर के पास आना और उनकी आराधना करने के लिए परमेश्वर की आवश्यकता) और नागरिक व्यवस्था (पुराने नियम की अवधि में इस्त्राएल के समाज को नियंत्रित करने की परमेश्वर की आवश्यकता) को आज्ञाओं निषेधाज्ञा और नियमों के रूप में व्यक्त किया गया है जो कि पुराने नियम के वचनों में लिखे हैं। यही कारण है कि पुराने नियम शास्त्र को अक्सर "व्यवस्था (इब्रानिः थोरा) और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें" कहा जाता है (मत्ती 5:17)।

लेकिन पुराने नियम के वचनों में नैतिक व्यवस्था, औपचारिक व्यवस्था और नागरिक व्यवस्था से कहीं अधिक और भी कुछ शामिल है। इसमें उद्धार का इतिहास, धार्मिक कविताएँ और भविष्यवाणियाँ शामिल हैं। रोमियों 3:21 कहता है कि, "व्यवस्था" (अर्थातः पुराने नियम के वचन) "लोगों को धर्मी ठहराने या व्यवस्था से अलग लोगों को उद्धार प्राप्त करने के मार्ग को प्रगट करती है" (इस संबंध में कि बहुत से लोग नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने का प्रयास करते हैं)।
पुराने नियम और नए नियम के वचनों से पता चलता है किः

- "धार्मिकता" परमेश्वर का गुण है मनुष्य का नहीं
- बाइबल के पवित्र और धर्मी परमेश्वर के द्वारा सभी लोगों से इस धार्मिकता की मांग की जाती है
- यह धार्मिकता मनुष्य के द्वारा केवल उसके अनुग्रह के वरदान के रूप में विश्वास के माध्याम से प्राप्त की जा सकती है (उत्पत्ति 15:6; गलातियों 3:6-9)। परमेश्वर की धार्मिकता को कभी भी मनुष्य के द्वारा "व्यवस्था बनाए रखने की कोशिश" से प्राप्त नहीं किया जा सकता (मनुष्य के द्वारा नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था के कामों को करने के द्वारा)!

(4) "व्यवस्था" एक सिद्धांत या प्रणाली या पद्धति या चीजों का क्रम हो सकती है (रोमियों 3:27)।

3:21-24क

प्रश्न 2. **उद्धार या धर्मी ठहरने का आधार, माध्यम और प्रकृति क्या है?**

ध्यान दें।

धर्मी ठरहने की *प्रकृति* यह है कि यह परमेश्वर की धार्मिकता है मनुष्य की धार्मिकता नहीं।
धर्मी ठहरने का *आधार* यह है कि परमेश्वर धार्मिकता अनुग्रह से सेंत मेंत देता है।
धर्मी ठहरने का *माध्यम* यह है कि मनुष्य परमेश्वर की धार्मिकता (मसीह) को विश्वास से प्राप्त करता है।
"मसीह यीशु हमारी धार्मिकता है" (1कुरिन्थियों 1:30)।

(1) धर्मी ठहरने की *प्रकृति* परमेश्वर की धार्मिकता है, मनुष्य की धार्मिकता नहीं (रोमियों 3:21,23)।

कुछ लोग परमेश्वर की धार्मिकता को *परमेश्वर से प्राप्त* होने वाली धार्मिकता मानते हैं *(परमेश्वर के द्वारा दी गई है)।* दूसरे लोग परमेश्वर की धार्मिकता को परमेश्वर के द्वारा *अनुमोदित* धार्मिकता मानते है। और अन्य लोग परमेश्वर की धार्मिकता को उस धार्मिकता (विश्वासी की) के रूप में मानते है जिस *परमेश्वर के साथ प्राप्त* किया जाता है और इसलिए विश्वास करने वाले को धर्मी ठहरा सकती है। हालाँकि संदर्भ यहाँ बहुत स्पष्ट रूप से बताता है कि परमेश्वर की धार्मिकता *परमेश्वर के स्वभाव और अधिकार* से कुछ भी कम नहीं है! केवल परमेश्वर धर्मी है और केवल परमेश्वर के पास ही धार्मिकता का अधिकार है! यह कभी भी मनुष्य की धार्मिकता नहीं है।

परमेश्वर की धार्मिकता सभी लोगों की धार्मिकता के विपरीत है। यह धार्मिकता ''व्यवस्था से अलग" है, यह मनुष्य के द्वारा धार्मिकता प्राप्त करने के लिए नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने के सर्वोत्तम प्रयासों से अलग है (रोमियों 3:21क)। यहाँ तक कि व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश के द्वारा उत्पन्न सबसे उत्तम मानवीय धार्मिकता (यशायाह 64:6) भी मानव पापों द्वारा बनाई गई स्थिति के खिलाफ परमेश्वर के धर्मी क्रोध को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं है, ना ही मानव आचरण के लिए परमेश्वर के पूर्ण मानको को पूरा करने में पर्याप्त है।

''सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसके पास ''परमेश्वर की महिमा" हो, जो कि परमेश्वर की पवित्रता या धार्मिकता या विश्वासयोग्यता या प्रेम है। सभी मनुष्यों ने

- पाप में गिरने के कारण अपनी पूर्णता की स्थिति को खो दिया
- परमेश्वर के महिमामय चरित्रगुणों को खो दिया
- परिणामस्वरूप परमेश्वर की स्वीकृति को खो दिया।

इसलिए, <u>परमेश्वर की धार्मिकता मनुष्य की धार्मिकता और मनुष्य की अधार्मिकता दोनों के पूर्ण विपरीत है।</u> परमेश्वर की धार्मिकता कभी भी मनुष्य के द्वारा उत्पादित या स्थापित नहीं की जा सकती। धार्मिकता केवल परमेश्वर की विशेषता है और इस पर केवल परमेश्वर का अधिकार है। परमेश्वर धार्मिकता के <u>एकमात्र लेखक</u> है, धार्मिकता के <u>एकमात्र अधिकारी</u> है और धार्मिकता के <u>एकमात्र दाता</u>

हैं! इसलिए, यह एकमात्र धार्मिकता है जिसे परमेश्वर ने स्वीकृति दी है और एकमात्र धार्मिकता जो परमेश्चर के साथ मेल खाती है (जो उन्हें कायल करती है)।

(2) धर्मी ठहरने का *माध्यम* वह धार्मिकता है जो केवल विश्वास से प्राप्त की जाती है (रोमियों 3:22)।

परमेश्वर की धार्मिकता मनुष्य की धार्मिकता नहीं है, इसलिए इसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य को इसे परमेश्वर से *प्राप्त* करना होगा, परमेश्वर के अनुग्रह से (परमेश्वर दाता है) और विश्वास के द्वारा इसे प्राप्त करना होगा (प्राप्त करने वाले का विश्वास)। मनुष्य इसे परमेश्वर से कमा नहीं कर सकता, अर्जित नहीं कर सकता और खरीद नहीं सकता! वह केवल इसे परमेश्वर से स्वीकार कर सकता है! वह इसे यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा प्राप्त करता है।

विश्वासी परमेश्वर की धार्मिकता को ''विश्वास के कारण नहीं'' (यूनानीः डिआ पिस्टिन), बल्कि ''विश्वास के माध्यम'' (यूनानीः डिआ पिस्तिऑस) से प्राप्त करता है। विश्वास किसी प्रकार का भला काम *नहीं* है जिसके *आधार* पर परमेश्वर किसी विश्वासी को धर्मी ठहराए। विश्वास एक *साधन या माध्यम* से अधिक (खाली हाथ) कुछ भी नहीं जिसके द्वारा यीशु मसीह में विश्वासी परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त करता है। विश्वास जो धर्मी ठहराता है वह किसी भी प्रकार का सामान्य धार्मिक विश्वास नहीं है[2], लेकिन *विशेष विश्वास है यीशु मसीह में* और उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान में।

परमेश्वर की धार्मिकता उन सभी को दी जाती है जो बिना किसी जाति, संस्कृति या किसी भी भेद भाव या विश्वास की डिग्री के बिना यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं। यीशु मसीह के प्रथम आगमन से ही यहूदियों और अन्यजातियों में कोई अंतर नहीं हैः

- उद्धार के मार्ग के रूप में। उद्धार का मार्ग सभी के लिए एक समान है (रोमियों 10:12)।
- आत्मिक और नैतिक स्थिति के रूप मेंः ''सभी ने पाप किया है'' (रोमियों 3:23)।
- उद्धार प्राप्त करने के साधन के रूप मेंः ''व्यवस्था से अलग विश्वास के द्वारा'' (रोमियों 3:28)।

(3) धर्मी ठहरने का *आधार* वह धार्मिकता है जो अनुग्रह के द्वारा सेंत मेंत दी जाती है (रोमियों 3:24)।

''वे उस छुटकारे के द्वारा जो यीशु मसीह द्वारा आता है उनके अनुग्रह से सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं'' (रोमियों 3:24)। यह धर्मी ठहरने के विषय में पौलुस की शिक्षाओं का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। मनुष्यों में ऐसा कुछ भी नहीं न ही मनुष्यों द्वारा ऐसा कुछ किया गया है जो परमेश्वर को कार्य करने के लिए या मनुष्यों को धर्मी ठहराने के लिए विवश करे। वास्तव में तो जो कुछ भी मनुष्य करते हैं वह धर्मी परमेश्वर को विवश करता है कि उनका न्याय करे और उन पर दोष लगाए।

[2]यह झूठी शिक्षा है कि सब अपने स्वयं के विश्वास के आधार पर उद्धार पाते है (उदाहरण के लिए , हिन्दू धर्म)।

सुसमाचार का अद्‌भुत संदेश यह है कि परमेश्वर द्वारा पापियों का न्याय पूर्ण रूप से इस पर आधारित है कि परमेश्वर स्वयं कौन है और वह स्वयं अपने सेंत मेंत और सामर्थी अनुग्रह को कार्य में लाने के लिए क्या करते हैं।

हालाँकि, परमेश्वर के सेंत मेंत और सामर्थी अनुग्रह पर जोर उस माध्यम को अनदेखा नहीं करता जिस माध्यम के द्वारा यह अनुग्रह काम में लाया जाता है। परमेश्वर के अनुग्रह का माध्यम यीशु मसीह और उनके द्वारा अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा पूरा किया गया उद्धार का काम है। धर्मी ठहरने या उद्धार का आधार केवल परमेश्वर का आत्म–बलिदान प्रेम और परमेश्वर का कीमती अनुग्रह है जो क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु द्वारा व्यक्त किया गया। लोगों को सेंत मेंत बांटा गया परमेश्वर का अनुग्रह सस्ता अनुग्रह नहीं है। परमेश्वर का अनुग्रह *कीमती अनुग्रह है,* जिसे लोगों तक पहुँचाने में *बहुत अधिक कीमत* चुकाई गई है अर्थात परमेश्वर के अपने पुत्र यीशु मसीह का जीवन। इस प्रकार परमेश्वर के अनुग्रह से धर्मी ठहरने का अर्थ है कि मनुष्य के लिए धर्मी ठहरना सेंत मेंत है– मनुष्य को इसकी कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ती और इसे कमाया या अर्जित नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत, मसीह के उद्धार कार्य द्वारा धर्मी ठहराना अर्थात परमेश्वर के लिए धर्मी ठहराना बहुत महंगा था– इसके लिए परमेश्वर को सबसे अधिक कीमत चुकानी पड़ीः अपने पुत्र का जीवन!

क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु विशेष रूप से परमेश्वर के न्यायपूर्ण कार्य के अनुग्रहपूर्ण चरित्र को बढ़ाती है। परमेश्वर की दया और अनुग्रह (उनका प्रेम) परमेश्वर की धार्मिकता या पवित्र को खत्म या रद्द नहीं करता, लेकिन परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता की मांगो को पूरा करता है। क्योंकि उन्होंने स्वयं कीमती चुकाई है, इसलिए वे अपवित्र और अधर्मी लोगों के प्रति बिना अपनी पवित्रता और धार्मिकता को अलग किए अपनी दया और अनुग्रह (उनका प्रेम) का अभ्यास करने में सक्षम हैं!

3:24ख–25क

***प्रश्न 3.* धर्मी ठहरने (उद्धार) का क्या प्रभाव है?**

ध्यान दें।

मसीह के द्वारा लायी गई धर्मिकता के प्रभाव हैः

- वह अधर्मी लोगों को छुटकारा देता है
- परमेश्वर के धर्मी (न्यायी) क्रोध को शांत करता है (इस प्रकार शांति लाता है)[3]
- और खोए हुए लोगों का परमेश्वर से मेल मिलाप करता है।[4]

(1) धर्मी ठहरने का प्रभाव

अधर्मी लोगों को छुटकारा देता है (रोमियों 3:24ख)।

[3] पापों के लिए प्रायश्चित बलिदान करता है।

[4] पापियों का मेलमिलाप करता है।

छुटकारा केवल यीशु मसीह के द्वारा मिलता है। ''छुटकारा'' (यूनानीः अपोल्यूट्रोसिस) का अर्थ है गुलाम या बंदी को फिर से खरीदना, फिरौती देकर उसे स्वतंत्र कराना। फिरौती (यूनानीः लूट्रॉन) एक गुलाम को स्वतत्रं करने की कीमत निर्धारित करना है। खोए हुए लोगों को छुडाने की कीमत यीशु मसीह के जीवन से कम नहीं है जिसे उन्होंने बहुतो के ''स्थान पर'' या ''लाभ के लिए'' दिया (मरकुस 10:45; यूहन्ना 10:11; 2कुरिन्थियों 5:21)। उन्होंने स्वयं को प्रायश्चित के स्वैच्छिक बलिदान के रूप में दिया (यूहन्ना 3:18; 1पतरस1:18–19)। फिरौती चुकाई गयी, शैतान को नहीं लेकिन परमेश्वर पिता को (रोमियों 3:24–26)। अपनी मृत्यु और मुर्दो में से अपने पुनरूत्थान के कारण यीशु मसीह स्वयं ''मसीहियों की धार्मिकता और पवित्रता और छुटकारा बन गए (वापस खरीद)'' (1कुरिन्थियों 1:30; इफिसियों 2:4–7)।

परमेश्वर के अनुग्रह ने यीशु मसीह को पापियों के छुटकारें के रूप में दिया। मसीह ने फिरौती चुकाई, यानी विश्वासियों को पाप के दासत्व या बंधनों से क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा कीमत चुका कर छुटकारा दिया। मसीह केवल वह नहीं है जिसने छुटकारे को खरीद लिया बल्कि स्वयं छुटकारा हैः उन्होंने फिरौती में पैसा नहीं दिया, लेकिन अपने जीवन को जीवित बलिदान के रूप में देने के द्वारा स्वयं फिरौती बन गए! उनका शरीर पश्च्याताप बलिदान बन गया। जो मसीह ने किया वह उनके व्यक्तित्व से अलग नहीं किया जा सकता। पाप के द्वारा दास बनाए गए लोगों के छुटकारे को छुटकारा देने वाले से अलग नहीं किया जा सकता, उससे जिसने स्वयं उन्हें छुड़ाने के लिए फिरौती की कीमत चुकाई। इसलिए <u>बिना छुटकारा देने वाले के लोगों को छुडाना असंभव</u> है (यशायाह 43:10–11)! यीशु मसीह छुटकारा दाता है, छुटकारे का माध्यम। जब भी कोई व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास करता है, उसे प्रभावशाली रूप से छुड़ाया जाता है, अर्थात, पाप के दासत्व के बधंनों से स्वतत्रं किया जाता है।[5]

(2) धर्मी ठहरने का प्रभाव

पाप के विरूद्ध परमेश्वर के पवित्र और न्यायी क्रोध को शांत करता है (रोमियों 3:25क)। परमेश्वर के अनुग्रह ने खुले तौर पर यीशु मसीह को (यूनानीः प्रोटिथेमी ''उनके लहू के द्वारा'' (क्रूस पर उनकी प्रतिस्थापन मृत्यु के द्वारा) ''प्रायश्चित बलिदान के रूप में'' (यूनानीः हिलैस्टिरियन) प्रस्तुत किया। संतुष्टिकरण अर्थातः

- पाप के विरूद्ध परमेश्वर के पवित्र और धर्मी क्रोध (आक्रोश) को शांत (सतुंष्ट, तृप्त) किया गया।
- परमेश्वर के क्रोध और दंड को दूर कर दिया गया।
- पाप दूर कर दिए गए।

<u>पश्चयाताप (पापों के) परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता का मेल परमेश्वर की दया और अनुग्रह से कराता है।</u>

---

[5] पाप की सामर्थ, अशुद्धता, दोष, और उपस्थिति।

यह शब्द ''उसके लहू के द्वारा'' यह नहीं सिखाता की लहू में कोई जादुई शक्ति है। ''लहू'' ''जीवन'' का प्रतीक है (लैव्यव्यवस्था 17:11), जिसे उन्होंने स्वेच्छा से क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा बहाया। इसलिए ''लहू का बहाया जाना'' प्रश्चयाताप बलिदान का प्रतीक है जिसके द्वारा विश्वासियों के सभी पाप क्षमा किए जाते हैं (इब्रानियों 9:22) और वे पूर्ण रूप से शुद्ध किए जाते हैं (1यूहन्ना 1:17)।

एक प्रायश्चित बलिदान (यूनानीः हिलैस्टिरियन) जो परमेश्वर की पाप को दोषी ठहराने और दंडित करने की मांग को पूरा कर सके वह लाया जाना आवश्यक था। प्रायश्चित बलिदान की आवश्यकताएँ निम्नानुसार होनी चाहिएः

- <u>प्रायश्चित बलिदान कोई पाप रहित मनुष्य होना चाहिए</u>, क्योंकि जानवरों का लहू पापों के लिए प्रायश्चित नहीं कर सकता (इब्रानियों 10:3-4)।
- <u>प्रायश्चित बलिदान कोई पाप रहित मनुष्य होना चाहिए</u>, क्योंकि पापी व्यक्ति को स्वयं के लिए ही बलिदान चाढ़ाने की आवश्यकता है (2कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15; 7:26-27)।
- <u>प्रायश्चित बलिदान मरने के लिए इच्छुक होना चाहिए,</u> अन्यथा वह एक पिड़ित होगा (यूहन्ना 10:17-18; मत्ती 16:35)।
- <u>प्रायश्चित बलिदान परमेश्वर द्वारा चुना हुआ होना चाहिए</u>, अन्यथा यह परमेश्वर का काम नहीं होता (प्रेरितों 2:23; 1पतरस 1:20), लेकिन मनुष्य मात्र का काम होता। प्रायश्चित बलिदान वह बलिदान है जो पाप के प्रति परमेश्वर के पवित्र और धर्मी क्रोध (आक्रोश) को संतुष्ट करता है और स्वयं पाप को दूर करता है। अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा यीशु मसीह स्वयं वह बन गए जिन्होंने परमेश्वर के क्रोध को दूर किया और विश्वासियों के पापों को उनसे दूर कर दिया।

इस शब्द अर्थ ''परमेश्वर पिता ने खुले तौर पर'' (यूननीः प्रोटिथेमी) मसीह को प्रायश्चित के माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया, यह हो सकता हैः

- *आदि से ही* परमेश्वर ने योजना बनाई और मसीह को प्रायश्चित बलिदान के द्वारा छुटकारा दाता (उद्धारकर्ता) के रूप में तैयार किया (इफिसियों 1:9,11; 1पतरस 1:18-20)। ''यह व्यक्ति (यीशु) परमेश्वर के उद्देश्य और पूर्वज्ञान के अनुसार आपको सौंपा गया है'' (प्रेरितों 2:23)।
- *या इस संसार के इतिहास में* परमेश्वर पिता ने सार्वजनिक रूप से मसीह को स्वयं के लिए प्रायश्चित बलिदान के रूप में प्रदर्शित किया (प्रेरितों 2:23) ''जिसे तुम ने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला'' (प्रेरितों 2:23)।

अभिप्राय वही है, जिसका अर्थ है <u>परमेश्वर पिता ही स्वयं वह हैं जिन्होंने छुटकारा प्रदान किया, आदि से उसकी योजना बनायी और इतिहास में उसे पूरा किया।</u> यह कहना सत्य की विकृति होगी कि

परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा जीते, क्योंकि परमेश्वर पिता ने आदि ही से उद्देश्य के साथ यह योजना बनाई कि इतिहास में मसीह उनके लिए प्रायश्चित बलिदान होंगे। परमेश्वर को मनाने के लिए और कुछ अच्छा करने (दया दिखाना) के लिए कुछ बुरा करने की आवश्यकता नहीं थी (पापों को दंडित नहीं करना)। वह पापी के प्रति दया दिखाते हैं क्योंकि वह पाप को पहले ही दंडित कर चुके हैं। परमेश्वर की धार्मिकता (न्याय) और परमेश्वर की दया दोनों एक दूसरे के साथ पूर्ण रूप से क्रूस पर मेल खाती है! क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धर्मी हैं, वह पाप को दंडित करते है। और क्योंकि वे दयावंत और प्रेमी हैं, इसलिए उन्होंने स्वयं पापों को दंडित करने और मनुष्यों को बचाने का माध्यम प्रदान किया।

इसलिए, रोमियों 3:25 का सर्वोत्त अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता हैः ''लहू बहाने के द्वारा परमेश्वर ने यीशु मसीह को प्रायश्चित बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया जो विश्वास के द्वारा प्रभावी होता है''। परमेश्वर ने आदि में योजना (उद्देश्य, रचना की) बनाई कि मसीह प्रायश्चित बलिदान हो (उनके पाप के प्रति धर्मी और पवित्र क्रोध को शांत करने का माध्यम) और क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा यह प्रायश्चित मानव इतिहास में यह तब ही प्रभावी होता है जब लोग यीशु मसीह पर विश्वास करना शुरू करते हैं।

3:25-26

प्रश्न 4. **धर्मी ठहराने (उद्धार) का उद्देश्य क्या है?**

ध्यान दें।

धर्मी ठहराने का उद्देश्य परमेश्वर की पूर्ण धार्मिकता को प्रगट करना है। यह परमेश्वर का सिद्ध चरित्र दिखाना है। वचन 26 में परमेश्वर की धार्मिकता अर्थ परमेश्वर की स्वभाविक धार्मिकता है जिसे किसी भी प्रकार से दूषित नहीं किया जा सकता और यह पापियों के न्याय से प्रमाणित और अनुरक्षित है।

(1) धर्मी ठहरने का उद्देश्य परमेश्वर की सिद्ध धार्मिकता को यीशु मसीह की मृत्यु से पहले प्रगट करना है।

पुराने नियम की अवधि के समय लोगों का तर्क हो सकता है कि परमेश्वर ''अन्यायी'' (अधार्मिक) थे, क्योंकि उन्होंने सभी राष्ट्रों को उनके अपने तरीके से चलने दिया (प्रेरितों 17:30)। पुराने नियम के समय परमेश्वर ने अपने संयम (धीरज) को उन पापों के प्रति धीरजवंत रहने के द्वारा दिखाया जो किए गए थे। उन्होंने लोगों को तुरन्त और उनकी बुराई और अज्ञानता के अनुसार दंड नहीं दिया। और वे विश्वासियों का न्याय अब्राहम और दाऊद के समान उनके पापों का दंड न देकर करते हैं (उत्पत्ति 15:6; भजन 32:1-2)।

हालाँकि, पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर के धैर्य को पाप के प्रति उदासीनता के रूप में नहीं समझा जा सकता। उनके दंड के निलंबन को पाप की क्षमा के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता! ''बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं है'' (इब्रानियों 9:22)!

(2) धर्मी ठहरने का उद्देश्य यीशु मसीह की मृत्यु के बाद परमेश्वर की सिद्ध धार्मिकता को प्रगट करना है।

यीशु मसीह के प्रथम अगमन में वह क्रूस पर मरे और अपना लहू बहाया। उन्होंने अपना जीवन बहुतों की फिरौती के रूप में दिया (मरकुस 10:45)। उन्होंने अपना जीवन ''अपनी भेड़ों के लिए'' दिया (यूहन्ना 10:11)। उनकी मृत्यु उनके लोगें के पापों का दंड थी।

यीशु मसीह में फिरौती और प्रायश्चित बलिदान देकरः

- परमेश्वर ने उन सभी लोगों के पापों को दंडित किया जो *पुराने नियम की अवधि में* आने वाले मसीहा पर विश्वास करते थे। इस प्रकार वे धर्मी ठहराए गए।
- परमेश्वर ने उन सभी लोगों को धर्मी ठहराया जो मसीह पर विश्वास करते हैं जो नए नियम की अवधि में पहले से आ चुके थे। इस प्रकार वे भी धर्मी ठहराए गए!

<u>इस प्रकार क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु का प्रभाव न केवल भविष्य की ओर (नए नियम की अवधि) पड़ा, लेकिन भूतकाल (पुराने नियम की अवधि) की ओर भी पड़ा!</u>

क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के बाद कोई भी यह नहीं कह सकता कि परमेश्वर ''अन्यायी (अधर्मी)''! क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के बाद, शैतान अब विश्वासियों पर यह अरोप नहीं लगा सकता कि उनके पापों का प्रायश्चित नहीं किया गया (प्रकाशितवाक्य 12:10-11)! क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु पुराने नियम और नए नियम दोनों में विश्वासियों के लिए धर्मी ठहरने का आधार या कारण है!

यीशु मसीह की मृत्यु यह साबित करती है कि परमेश्वर पूर्ण रूप से ''न्यायी (धर्मी) थे जब उन्होंने उन पापों को दंडित किए बिना छोड़ दिया जो विश्वासियों द्वारा यीशु मसीह के प्रथम आगमन से *पहले* किए गए थे। इससे यह भी साबित होता कि परमेश्वर अभी भी पूर्ण रूप से ''धर्मी (न्यायी)'' है जब वे उन पापों को दंडित किए बिना छोड़ देते हैं जो *वर्तमान समय में* विश्वासियों द्वारा किए जाते हैं! फिरौती की कीमत या प्रायश्चित बलिदान की खुबियाँ *पिछले* सभी युगों तक, मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर यीशु मसीह के दूसरे आगमन के युग तक पहुँचती हैं! यीशु मसीह का पुनरूत्थान यह सिद्ध करता है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान को स्वीकार किया! यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान इस संसार के इतिहास में मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहार का केन्द्र है! इसी कारण नए नियम में सुसमाचार का केंद्र ''यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान है'' (यूहन्ना 1:29; 10:17-18; 11:51-52; 12:31-32; प्रेरितों. 2:23-24,36; 3:13-15,18; 4:10-12; 5:30-31; 7:52,55; 8:32; 10:39-43; 13:27-35; 26:22-23; 1कुरिन्थियों 1:23-24; प्रकाशितवाक्य 12:11)।

जब परमेश्वर विश्वासियों को धर्मी ठहराते हैं, तो वे अपने (सुंदर) चरित्र या अच्छे (धार्मिक) कामों के द्वारा धर्मी नहीं ठहरते। वे परमेश्वर ने यीशु मसीह में और यीशु मसीह के द्वारा इतिहास में एक बार

में हमेशा के लिए जो किया उसके कारण धर्मी ठहरते है! वे परमेश्वर एक कार्य द्वारा भी धर्मी नहीं ठहरत जिसमे वह व्यवस्था कि माँगों को एक ओर रखते हैं जैसा की पृथ्वी पर कुछ सामर्थी शासक कर कसते हैं। वे उनके स्थान पर यीशु मसीह के द्वारा पूरा किए गए उद्धार के कार्य के कारण धर्मी ठहरते है, जिसमे विश्वासियों के उद्धार (न्याय और शुद्धिकरण) और पापों के दोष (दंड) की परमेश्वर की सारी धार्मिक आवश्यकता (व्यवस्था) पूर्ण रूप से पूरी की गई है! केवल यीशु मसीह का क्रूस ही प्रत्यक्ष प्रगटिकरण है जहाँ पापी के लिए परमेश्वर की दया और अनुग्रह (प्रेम) परमेश्वर की धार्मिकता (न्याय) और पवित्रता के साथ पूरी तरह मेल खाती है।

3:27-31

प्रश्न 5. **धर्मी ठहरने (उद्धार) के क्या परिणाम हैं?**

ध्यान दें।

(1) धर्मी ठहरने (उद्धार) का परिणाम

विश्वासियों को नम्र बनाए रखता है (रोमियों 3:27-28)।

"विश्वास कि व्यवस्था" सभी मानव घमण्ड को दूर करती है। यहाँ "व्यवस्था" शब्द का अर्थ है "सिद्धांत, प्रणाली, तरीका या चीजों का क्रम"। नैतिक लोगों का उनके अच्छे कामों के प्रति सभी घमण्ड और धार्मिक लोगों का उनके धार्मिक कामों के प्रति सभी घमण्ड (नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश)[6] दूर कर दिया गया। व्यवस्था (सिंद्धात) पर आधारित घमण्ड, व्यवस्था के कामों को बनाए रखने के द्वारा धर्मी होने का दिखावा करना (नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश) है, लेकिन यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य में विश्वास के द्वारा सच्ची धार्मिकता की व्यवस्था (सिद्धांत) नें घमण्ड को दूर कर दिया।

दो चीजें विपरीत है, प्रत्येक दूसरी को दूर करती है। वह प्रणाली (यहूदियों की) जिसमें व्यवस्था (नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था और मानव निर्मित व्यवस्था भी जोड़ दी गई) धर्मी ठहरने का तरीका है वह उस प्रणाली (बाइबल की) को दूर करता है जिसमें विश्वास धर्मी ठहरने का तरीका है। कामों के द्वारा धर्मी ठहरना इस पर आधारित है कि एक व्यक्ति क्या है और क्या करता है जबकि विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरना इस पर आधारित है कि परमेश्वर कौन हैं और क्या करते है! व्यवस्था के काम (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, नागरिक और मनुष्यों द्वारा जोड़ी गई व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश) स्वयं का अभिनदंन करते है जबकि यीशु मसीह में विश्वास स्वयं का त्याग करता है। व्यवस्था के काम (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, नागरिक और मनुष्यों द्वारा जोड़ी गई व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश) स्वयं की उपलब्धियों पर घमडं करते हैं जबकि विश्वास यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य की महिमा करता है। इसलिए विश्वास की व्यवस्था (सिद्धांत) कामों की व्यवस्था

[6]उदाहरण के लिए, (1) अंगीकार करना कि केवल एक ही परमेश्वर है, (2) दिन में कई बार प्रार्थना करना, (3) कई बार उपवास करना, (4) बहुत सा पैसा देना, (5) बहुत सी तीर्थ यात्राएँ करना, (6) खतना करवाना, (7) धार्मिक कपड़े पहनना (किपा, सिर पर बाँधने का रूमाल, बुर्खा), (8) "स्वच्छ धार्मिक" भोजन खान (कोषेर, हलाल सुअर नहीं)।

(सिद्धांत) को धर्मी ठहरने के माध्यम के रूप में पूर्ण रूप से दूर करती है! इसलिए वचन 28 का निष्कर्ष इस प्रकार हैः ''हम पाते है कि एक व्यक्ति व्यवस्था (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, नागरिक और मनुष्यों द्वारा जोड़ी गई व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश)[7] से अलग, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है''। एक व्यक्ति केवल यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य में विश्वास करने के द्वारा ही धर्मी ठहरता है!

''विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरना'' अर्थातः परमेश्वर अनुग्रहपूर्ण तरीके से यीशु मसीह की धार्मिकता को अयोग्य विश्वासी के के खाते में डालते (दिना, गिनना, जोड़ना) हैं। इसका अर्थ हैः परमेश्वर एक विश्वासी को यीशु मसीह में पूर्ण रूप से धर्मी *घोषित* करते हैं और अपनी दृष्टि में उससे *ऐसे व्यवहार* करते है जैसे कि वह पूर्ण रूप से धर्मी है।

(2) धर्मी ठहरने का परिणाम यह सिद्ध करता है कि केवल परमेश्वर के पास ही लोगों के उद्धार का एक मात्र तरीका है (लोगों को धर्मी ठहरने का मार्ग) (रोमियों 3:29:30)।

व्यवस्थाविवरण 6:4 यह साबित करता है कि यहूदी यह विश्वास करते थे कि एक ही परमेश्वर है। यदि एक ही परमेश्वर है तो उसे यहूदियों और गैर-यहूदियों (अन्यजातियों) दोनों को परमेश्वर होना चाहिए! और यदि वह सब लोगों का परमेश्वर है तो, केवल एक ही तरीका हो सकता है जिसके द्वारा वह लोगों को धर्मी ठहराता है। वह तरीका व्यवस्था के वह काम नहीं है, जिन्हें लोग करते हैं, बल्कि उस पर विश्वास करना है जो परमेश्वर पहले ही कर चुके हैं!

वह यहूदियों को ''विश्वास के द्वारा'' धर्मी ठहराएगें (यूनानीः एक पिस्टिऑस) (रोमियों 1:17; 14:16) और अन्यजातियों को ''विश्वास से'' (यूनानीः डिआ पिस्टिऑस) (रोमियों 3:22, 25)। इन दोनों शब्दों में कोई अंतर नहीं है, क्योंकि पौलुस इस दोनों का प्रयोग एक ही बात को कहने के लिए करता है। सभी लोग, अपने वास्तविक धर्म या धर्मनिरपेक्षता के बिना, केवल उस विश्वास के माध्यम से धर्मी ठहराए जाएंगे जो बाइबल के परमेश्वर ने कहा और यीशु मसीह के द्वारा किया! भविष्यकाल अंतिम न्याय को संदर्भित नहीं करता, बल्कि विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरने को व्यक्त करता है जो अभी से धर्मी ठहरने का निश्चित माध्यम है।

(3) धर्मी ठहरने का परिणाम व्यवस्था की पुष्टि करना है (रोमियों 3:31)।

कुछ लोगा रोमियों 3:31 को अध्याय 4 के परिचय के रूप में देखते हैं तब ''व्यवस्था'' शब्द पूरे पुराने नियम को संदर्भित करता है। हालाँकि रोमियों 3:31 स्वभाविक रूप से अध्याय 3 से संबंधित है और ''व्यवस्था'' शब्द परमेश्वर की आज्ञा मानने की व्यवस्था को संदर्भित करता है जो सभी लोगों से आज्ञापालन की मांग करता है (जैसा की पौलुस का पत्र रोमियों 7:7-13 और 13:8-10 में सिखाता है) (नैतिक व्यवस्था)।

[7] यहूदियों में थोरा, कुछ विशेष मसीहियों में कर्मकांडवाद, और मुस्लमानों में शरिया।

रोमियों 3:20 में पौलुस ने कहा, ''कोई भी व्यक्ति व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहरता (नैतिक, औपचारिक, और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश के द्वारा)''। रोमियों 3:21 में उसने कहा, ''परमेश्वर की धार्मिकता व्यवस्था से अलग प्रगट हुई (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखना)''। रोमियों 3:27 में वह कहता है, ''सुसमाचार की व्यवस्था (अर्थातः सिद्धांत या तरीका) विश्वास है, व्यवस्था के काम नहीं (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखना)।'' और रोमियों 3:28 में उसने कहा, ''मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखना) विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।''

अनूठा सवाल तो यह है कि अभी भी ''व्यवस्था का क्या अर्थ है (जो नैतिक व्यवस्था है क्योंकि औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को पूरा कर दिया गया और रद्द कर दिया गया)? क्या व्यवस्था (अर्थातः नैतिक व्यवस्था) ने परमेश्वर की आज्ञाओं को जो सभी लागों से आज्ञापालन की माँग करती है, बेकार कर दिया?''

पौलुस का स्पष्ट उत्तर है ''नही!'' पौलुस ने इस प्रश्न का अनुमान लगाया और बिना विस्तार के इसका उत्तर दिया। विश्वासी ''व्यवस्था'' (अर्थातः नैतिक व्यवस्था) को यीशु मसीह में अपने विश्वास के द्वारा रद्द नहीं करते। बल्कि वे व्यवस्था (अर्थातः नैतिक व्यवस्था) को बनाए रखते हैं। व्यवस्था (अर्थातः नैतिक व्यवस्था) के विषय में पौलुस का तर्क बाद में रोमियों 7:7-13 और 13:8-10 में जारी रहाता है। विश्वासी ''व्यवस्था'' को परमेश्वर की धार्मिक और पवित्र आवश्यकता के संदर्भ में और परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराए गए (उद्धार पाए) लोगों द्वारा प्रदर्शित दस आज्ञाओं के संदर्भ में प्रदर्शित करते हैं।

चरण 4. लागू करना। अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 2:1-16 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1 रोमियों 3:1-31 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

3:21 खोजें कि कैसे पुराने नियम का संदेश भी ''विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से धर्मी ठहराना है''।

3:22 खोजें की क्यों नया नियम यह सिखाता है कि यहूदियों और अन्यजातियों में कोई अंतर नहीं।

3:23 उन सभी क्षेत्रों के बारे में सोचें जहाँ स्वभाविक मनुष्य परमेश्वर के पूर्ण आदर्श मानकों से रहित है।

3:27 विचार करें कि आप मसीह और उनके उद्धार के पूर्ण कार्य पर किस प्रकार घमण्ड कर सकते हैं।

3:28 जाँचे कि क्या आप अभी भी परमेश्वर की स्वीकृति पाने के लिए कुछ विशेष व्यवस्थाओं को बनाए रखते हैं।[8]

3:29 यदि बाइबल का परमेश्वर ही सब का परमेश्वर है तो आप उन्हें अपने आस पास के लोगों के सामने किस प्रकार पेश कर सकते हैं।

3:31 विश्वास और नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाएं) के कार्य के बीच बहुत स्पष्ट रूप से भेद करें।

2. रोमियों 3:1-31 के व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

रोमियों 3:24 कहता है कि हम परमेश्वर के अनुग्रह से सेंत मेंत धर्मी ठहराए गए हैं। मैं याद रखना चाहता हूँ कि एक तरफ तो मैं बिना किसी कीमत के जो चुका सकता था, सेंत मेंत में धर्मी ठहराया गया हूँ लेकिन दूसरी ओर मैं बहुत अधिक कीमत चुकाने के द्वारा धर्मी ठहरा हूँ जिस परमेश्वर ने चुकाया। उन्होंने मेरे स्थान पर फिरौती की कीमत और प्रायश्चित बलिदान के रूप में अपने एक मात्र पुत्र को दिया है। परमेश्वर का अनुग्रह सस्ता नहीं है, लेकिन बहुत मंहगा है!

रोमियों 3:27 कहता है कि मसीह में विश्वास की विधि मनुष्य के द्वारा कामों की विधि को दूर कर देती है इसलिए कोई भी किसी भी प्रकार से अपनी उपलब्धियें पर घमण्ड नहीं कर सकता। 1कुरिन्थियों 1:30-31 कहता है कि मैं घमण्ड कर सकता हूँ, लेकिन केवल मसीह में, जो मेरी धार्मिकता, पवित्रता और उद्धार (छुटकारा) बना! मैं केवल यीशु मसीह और उनके द्वारा मेरे लिए पूरा किए गए उद्धार के कार्य पर घमण्ड करना चाहता हूँ।

चरण 4. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 3:21-31 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें।
स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

[8] उदाहरण के लिए क्या आपको निश्चित कपड़े (एक सूट, एक टोपी, एक बुर्खा, एक सिर पर बांधने वाला रूमान) पहनने चाहिए? क्या आपको कुछ निश्चित भोजन (सुअर) नहीं खाना चाहिए? क्या आपको कुछ निश्चित पेय (कॉफी) नहीं पीने चाहिए? क्या आपको विशेष समय (विश्राम) रखना चाहिए? क्या आपको कुछ औपचारिक अनुष्ठानों में कपड़ो की धुलाई या किसी निश्चित रूप से बपत्तिस्मा (डूबना) लेना चाहिए? क्या आपको कुछ विशेष त्यौंहार (फसह) मनाने चाहिए? क्या आपको पैसे का कुछ निश्चित भाग (दशमांश) देना चाहिए? क्या आपको नाचने और अपने पुर्वजों का सम्मान करने से दूर रहना चाहिए या फिर अपने जीवन में निश्चित मार्ग संस्कारों से बनचा चाहिए; आदि।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए समर्पित हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 3:21-31 का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **1राजाओं 3,11,17 और 18** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **(4) रोमियों 2:15।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा। मत्ती 22:1-14 में वर्णित "विवाह-भोज का दृष्टांत" और लूका 14:15-24 में वर्णित "बड़े भोज का दृष्टांत" को तैयार करें।
   दृष्टांतों की व्याख्या के लिए छः दिशानिर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य परिशिष्ट 1

(यीशु के दृष्टान्त)
बाइबल के दृष्टान्तों का अर्थ निकालना

परिचय दें। राज्य का प्रचार श्रृखंला में, आपको यह सीखने का अवसर मिलेगा कि यीशु मसीह के दृष्टान्तों को सही तरीके से कैसे सिखाएँ, पढ़ाएँ और कैसे उनका अर्थ निकालें। दृष्टान्तों को परमेश्वर के राज्य में अलग-अलग विषयों से जुड़े समूहों में रखा गया है (नियमावली की सूची 9 से 12 को देखें)।

यह परिशिष्ट, दृष्टान्तों पर शिक्षा प्रदान करता है। निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें: दृष्टान्त क्या है? दृष्टान्त को बोलने का उद्देश्य क्या है? दृष्टान्त की क्या विशेषताएं हैं? दृष्टान्त का अर्थ बताने या समझाने के दिशा निर्देश क्या हैं?

क. दृष्टान्त

पढ़ें। मत्ती 13:31-32, यूहन्ना 15:1-6, यहेजकेल 4:1-8।

सिखाएं। 'दृष्टान्त' स्वर्गीय अर्थ के साथ में एक सांसारिक कहानी है। ये दृष्टान्त जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित हैं। इसकी संरचना आत्मिक सत्य को सिखाने या प्रश्न का उत्तर देने के लिए की गयी है। यीशु दृष्टान्तों को बताने में माहिर थे। उन्होंने *सांसारिक कहानियों* के माध्यम से अपने श्रोताओं का ध्यान *स्वर्गीय बातों* की ओर खींचा। उसने साधारण स्थल और दैनिक घटनाओं को लेकर परमेश्वर के राज्य की बातों को स्पष्ट किया और उसने लोगों की जटिल परिस्थितियों का सामना सत्य किया कि उन्हें नवीनीकरण की आवश्यकता के बारे में बताया।

दृष्टान्त किसी ऐतिहासिक घटना का अभिलेख नहीं है, परन्तु दृष्टान्त में बतायी गयी कहानी *जीवन की सत्यता* से मेल खाना जरूरी है। यह उन चीजों के बारें में बताता है जो इतिहास में *घटा होता है।* ये अपने को सत्य चीजों तक सीमित रखता है (वास्तविक सत्य)। यह कभी वास्तविक सम्भावनाओं से कभी आगे नहीं जाते (मत्ती 13:31-52)। दूसरों की तुलना में यह आँकड़े अलग हैं, जैसे कि रूपक (यूहन्ना 15:1-6) और भविष्यद्वाणी के प्रतीकवाद (यहेजकेल 4:1-8), जो जीवन में सत्य हो भी सकते हैं और नहीं भी।

ख. दृष्टान्तों का उद्देश्य

पढ़ें। मत्ती 7:6,10:14-15,23,26-27; मरकुस 4:10-12; लूका 8:10।

खोजें और चर्चा करें। क्यों यीशु दृष्टान्तों को बताते थे?

ध्यान दें।

दृष्टान्तों को बताने का उद्देश्य *सांसारिक कहानियों के माध्यम से स्वर्गीय सच्चाईयों को प्रगट करना है।*

यीशु **बीज बोने वाले** के दृष्टान्त में क्यों कहते हैं कि "परमेश्वर के राज्य के रहस्यों का ज्ञान" चेलों को दिया गया न कि अन्य लोगों को (लूका 8:10)? क्या यीशु ने जानबूझकर साधारण लोगों को परमेश्वर के राज्य के बारें में अन्धेरें में रखा? नहीं, यह यीशु का इरादा नहीं रहा होगा, क्योंकि यीशु की शिक्षाएँ और दृष्टान्तों की घोषणा संसार के लोगों के सामने सार्वजनिक रूप से की गयी थी। उसका इरादा दृष्टान्तों के साथ सिर्फ चेलों के छोटे से झुण्ड तक नहीं था। क्योंकि उसने अपने चेलों को आज्ञा दी की वे परमेश्वर के राज्य की सच्चाई को छतों पर जाकर घोषित करें (मत्ती 10:27) और सारे संसार की सारी जातियों में उसके नाम के गवाह बनें (मत्ती 24:14)!

लेकिन सार्वजनिक रूप से सत्य की घोषणा करने का यह नहीं है कि सभी लोग उसे सुनना चाहते या सुनी हुई बातों को समझना चाहते हैं! *सुनने वाला स्वभाव* होना बहुत आवश्यक है। दृष्टान्त बताने के द्वारा यीशु उन सभी लोगों को सरल तरीके से सत्य बताना चाहते हैं जिन लोगों का स्वभाव अच्छा है और वे उत्तरदायी है और साथ ही साथ वे उन सभी लोगों से सत्य को छुपाने चाहते हैं, जिनका स्वभाव बुरा है वे गैर जिम्मेदार हैं। वह "कुत्तों" को पवित्र वस्तुएँ नहीं देता कहीं ऐसा न हो कि वे उसे फाड़ डालें न ही "सूअरों" के आगे अपने मोती फेकता है कि वे उसे कुचल डालें (मत्ती 7:6)। सुनने वाले का स्चभाव निर्धारित करता है कि उन्हें परमेश्वर के राज्य के पवित्र भेद समझ आएगें या नहीं।

यीशु ने अपने चेलों को ये भी निर्देश दिये कि अन्त तक उनको सुसमाचार मत सुनाते रहना जो इसका अपमान करते हैं। चेलों को धीरज धरने के लिए कहा गया, परन्तु इसकी एक सीमा भी थी। वह क्षण आता है जब निरन्तर सुसमाचार के अनुग्रह के नियन्त्रण और यीशु की शिक्षाओं का प्रतिरोध करने पर सन्देश वाहक उन्हें छोड़कर चला जाएगा। इसलिए यीशु ने अपने चेलों को निर्देश दिये कि वे उस स्थान में ज्यादा दिनों तक न रहें जहाँ सुसमाचार का विरोध होता है (मत्ती 10:14)। **फल रहित अंजीर के पेड़** का दृष्टान्त परमेश्वर के धीरज को दिखाता है, हालांकि लम्बे समय धीरज धरने का अर्थ तक अन्तहीन नहीं है (लूका 13:1-9)। साथ ही पौलुस प्रेरित और उसके सहकर्मियों ने भी ये सिखाया कि ऐसे लोगों के बीच ज़्यादा समय तक रहना अच्छा नहीं जो मसीहत का उपहास करते हैं जबकि बहुत से ऐसे लोग हैं जो सेवा पाने के लिए इन्तजार कर रहें हैं(प्रेरितों. 13:45-46; 18:5-6; रोमियों 16:17-18; तीतुस 3:10)। याद रखें, पके खेत तो बहुत हैं पर मज़दूर थोड़े हैं (मत्ती 9:37)।

ग. दृष्टान्त की विशेषताएँ

1. एक दृष्टान्त के सम्भावित तत्व।

पढ़ें। मत्ती 13:31-32, मत्ती 13:3-9, 18-23; लूका 10:25-37।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टान्त के सम्भावित तत्व क्या है?

ध्यान दें।

दृष्टान्त में 3 सम्भावित तत्व हैं। वे कहानी की संरचना, व्याख्या या अनुप्रयोग हैं,। हालांकि, बाइबल के दृष्टान्त में एक या दो तत्व हो सकते हैं। उदाहरण के लियेः

- **सरसों के बीज का दृष्टान्त** इसमें केवल कहानी है।

- **बीज बोने वाले का दृष्टान्त** इसमें कहानी और व्याख्या दोनों हैं।
- **भले सामरी का दृष्टान्त इसमें** संरचना, कहानी और व्याख्या दोनों हैं।

2. दृष्टान्त के तीन तत्व।

(1) एक दृष्टान्त की संरचना।

"दृष्टान्त की संरचना" वह अवसर या परिस्थिति होती है जिससे आपको दृष्टान्त बताने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

खोजें और चर्चा करें। इन दृष्टान्तों की संरचना क्या है?

ध्यान दें।

भले सामरी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 10:25-29। **भले सामरी** के दृष्टान्त की संरचना निम्नलिखित है। यहूदी व्यवस्थापक ने यीशु से इस उद्देश्य के साथ प्रश्न पूछा कि वह उसे अपने शब्दों के जाल में फंसा सके। उसने यीशु से पूछा कि अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए लोगों को क्या करना चाहिए। यह यहूदी व्यवस्थापक स्वयं विश्वास करता था कि लोगों को पुराने नियम की आज्ञा का पालन करना चाहिए (उन 613 मनुष्य के बनाए हुए नियमों को भी जो यहूदियों ने परमेश्वर की व्यवस्था के साथ जोड़ दिये थे) ताकि वे अनन्त जीवन को प्राप्त कर सकें। यदि यीशु यह जवाब देते कि मनुष्य को सारी व्यवस्था को मानना चाहिए तो वह व्यवस्थापक इस बात को केन्द्रित करता कि यीशु और उसके चेले व्यवस्था का पालन नहीं करते जिस प्रकार यहूदी व्यवस्था में बताया गया है।

परन्तु इसके बावजूद, यीशु ने प्रश्न का उत्तर दूसरे प्रश्न से दिया "व्यवस्था में क्या लिखा है? आप इसे कैसे पढ़ते हैं? अब उस व्यवस्थापक पर जोर पड़ रहा है कि वे अपने विश्वास को सार्वजनिक रूप से बताए और उसने कहा अपने "प्रभु और अपने पड़ोसी से प्रेम कर" यीशु ने उस व्यक्ति से कहा, "तुमने सही उत्तर दिया, ऐसा ही कर और तू जीवित रहेगा।"

यह व्यक्ति जानता था कि वह अपने सभी पड़ोसियों से प्रेम नहीं करता है। इसके बजाय उसने भीड़ के सामने स्वयं को सही ठहराने के लिए, जो उसकी बातें सुन रही थी, उसने पूछा "मेरा पड़ोसी कौन है?" इस प्रश्न के जवाब में यीशु ने भले सामरी का दृष्टान्त दिया। भले सामरी का दृष्टान्त, यीशु से पूछे गये प्रश्न का उत्तर, "मेरा पड़ोसी कौन है?" इस प्रकार, इस दृष्टान्त की संरचना "मेरा पडौसी कौन है? प्रश्न पर आधारित है।

खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 15:3-7, मत्ती 18:12-14 **खोई हुई भेड़** के दृष्टान्त की संरचना लूका रचित सुसमाचार और मत्ती रचित सुसमाचार में एक जैसी नहीं है। इसका अर्थ यह है कि यीशु ने इस दृष्टान्त को एक से अधिक बार बोला होगा, परन्तु उन्हें दोनों बार अलग-2 हालात में बोला या होगा, कहीं पर उन्होंने किसी के प्रश्न का उत्तर दिया होगा और कहीं पर किसी को कोई आत्मिक सच्चाई बतायी होगी। दोनों ही सुसमाचारों में दृष्टान्त की संरचना, दृष्टान्त को समझने में मदद करेगी।

लूका रचित सुसमाचार में इस खोई हुई भेड़ के दृष्टान्त का सम्बन्ध परमेश्वर के खोए हुए लोगों के प्रति उसके ख्याल या परवाह से है, उदाहरण के लिए चुंगी लेने वाला और सामान्य पापी लोग। **मत्ती रचित सुसमाचार में इस खोई हुई भेड़** के दृष्टान्त की परमेश्वर की संतान की देखभाल को दर्शाने के

लिए की गयी है। दोनों ही दृष्टान्त हमें ये सिखाते हैं कि यीशु लोगों का अपने राज्य में स्वागत करते है। जबकि लूका इस बात पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर तुच्छ व पापी मनुष्यों से प्रेम करते हैं। वहीं मत्ती इस बात पर ज़ोर देता कि परमेश्वर का लगाव महत्वहीन बच्चों से हैं।

(2) दृष्टान्त की कहानी।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टान्तों की कहानी की विशेषताएं क्या होती है?
ध्यान दें।

भले सामरी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 10:30-35। कहानी को आत्मिक सत्य सिखाने या किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार किया गया है। दृष्टान्त की कहानी सर्वदा "जीवन की सत्य घटना" होती है। ये दृष्टान्त अपने वास्तविक तथ्यों और घटी हुई घटनाओं तक ही सीमित रहते हैं, ये वास्तविक सम्भावना की सीमाओं से आगे नहीं जाते। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति यरुशलेम से यरीहो की ओर जा रहा था, उसे डाकुओं ने लूटा और अन्ततः एक भले सामरी द्वारा उसकी मदद की गई ये जीवन की सच्चाई की कहानी है और किसी समय में वास्तविक रूप से यह घटना घटी है।

पढ़ें यूहन्ना 10:1-18; जर्कयाह 5:1-4। एक दृष्टान्त तुलना करने पर दूसरे दृष्टान्तों से अलग, जैसे कि रूपक (यूहन्ना 10:1-18) या भविष्यसूचक प्रतीक (जर्कयाह 5:1-4) हो सकता है जो शायद जीवन के सत्य से मेल खाए या न खाए। दृष्टान्त की कहानी कोई कल्पना नहीं है और इसमें भविष्यसूचक प्रतीकों का इस्तेमाल नहीं किया जाता, जैसे "उड़ता हुआ सूची पत्र"।

(3) दृष्टान्त का व्याख्या और अनुप्रयोग।

खोजें और चर्चा करें। इन दृष्टान्तों की व्याख्या और अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

एक मूल्यवान मोती का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 13:44। ध्यान दें कि यीशु दृष्टान्त ने कहानी के हर विवरण का कोई अलग अर्थ नहीं बताया था। उसने "घर", "चट्टान" या "रेत" या "वर्षा", "आंधी" या "तूफान" का कोई की कोई व्याख्या नहीं की।

घर बनाने वाले बुद्धिमान और मूर्ख मनुष्य का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 7:24,26। इस दृष्टान्त का लागुयिकरण सिर्फ यीशु के वचनों को मात्र सुनने में ही नहीं है, परन्तु उनको अभ्यास में लाने के लिए भी है, ध्यान रखें यीशु कहानी के विवरण को एक अलग अर्थ नहीं देते, वह "घर", "चट्टान" और "रेत" की व्याख्यां नहीं करते या "बारिश" और "हवा" का अर्थ नहीं बताते।

गेहूं के साथ जंगली बीज का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 13:36-43। इस दृष्टान्त की व्याख्या यह है कि परमेश्वर का राज्य वर्तमान में है जिसमें भले और बुरे रहते हैं। कुछ लोग मसीह के हैं और उसकी सेवा करते हैं जबकि बाकी शैतान के हैं और उसकी सेवा करते हैं। यह हमारी ज़िम्मेदारी नहीं है कि हम उनका न्याय करें (वे सही मसीही हैं कि नहीं)। यह भी हमारी ज़िम्मेदारी नहीं है कि हम सच्चे विश्वासियों को दूसरे लोगों के बीच से अलग करें। यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर, वह अपने स्वर्गदूतों का इस्तेमाल करेगा कि वह उन सच्चे विश्वासियों को लोगों से अलग करे।

ध्यान दें, कि यद्यपि यीशु ने इस दृष्टान्त में एक से अधिक चीजों का अर्थ बताया लेकिन, उन्होंने दृष्टान्त में एक से अधिक मुख्य शिक्षा नहीं दी। वह "दो बीज बोने वालों" की, "गेहूं और

जंगली बीज" की, "फसल तथा फसल काटने वालों" की और जो "जलाने की जगह और खलिहान" की व्याख्या नहीं करता। परन्तु ये सब बातें दृष्टान्त के मुख्य विषय की व्याख्या करने में सहयोग प्रदान करती हैं। यानी जंगली बीज को गेहूं के साथ बोया गया था (जिसका अर्थ है कि सच्चे विश्वासियों के बीच हमेशा गैर-विश्वासी उपस्थित रहेंगे)!

घ. दृष्टान्त की व्याख्या करने के लिए कुछ बुनियादी दिशा निर्देश।

परिचय। जब कोई व्यक्ति कार चलाता है, तो उसे *सड़क के नियमों* का पालन करना चाहिए नहीं तो उसके साथ कोई दुर्घटना हो सकती है। कुछ नियम हमें बताते हैं कि हमें सड़क की किस तरफ गाड़ी चलानी चाहिए, कितनी अधिकतम गति होनी चाहिए, चालक को कैसे संकेत देने चाहिए है जब हम गाड़ी को रोकते या मोड़ते हैं, यदि चालक सड़क के नियम मानने में असफल हो जाता है तो वह बहुत नुकसान पहुंचा सकता है और अपनी जान भी गवां सकता है।

उसी प्रकार, जब मसीही लोग बाइबल का व्याख्या करते हैं तो उन्हें *बाइबल की व्याख्या करने के नियमों* को मानना चाहिए *(व्याख्यात्मक)* यदि वे इस व्याख्या करने के नियम को भूल जाते हैं तो वे गलत शिक्षा देगें और प्रभु के लोगों को इससे बहुत नुकसान पहुंचेगा।

बाइबल के अन्दर, बहुत सारी संहिता पायी जाती हैं।

- ऐतिहासिक कथाएं (मत्ती 1:18-25), वशांवली की सूची (मत्ती 1:1-17), पत्रीयाँ (फिलेमोन)।
- शिक्षाएं (यूहन्ना 14:6), आज्ञाएं (यूहन्ना 13:34-35) और किसी बात के लिए मनाही (मत्ती 5:39; 6:1,5,16,19,25; 7:1,6)।
- कई प्रकार की आलंकारिक भाषा, उदाहरणतः उपमा (यशायाह 53:6), रूपक (भजन संहिता 23:1), अन्य प्रकार (इब्रानियों 10:8-10; 1कुरिन्थियों 5:7-8) और प्रतीक (भजन संहिता 119:105; यिर्मयाह 23:29)।
- कविताएं (अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन)।
- यीशु के दृष्टान्त।
- भविष्यद्वाणियों (यशायाह और यिर्मयाह)
- अलौकिक साहित्य (दानिय्येल, प्रकाशितवाक्य)।

इसमें से हर एक साहित्य की व्याख्या करने का अपना तरीका है। इस अध्ययन में, हम दृष्टान्त की व्याख्या के नियम पर विचार करेंगे।

दृष्टान्त की व्याख्या के लिए छः निम्नलिखित नियम हैः

नियम 1. दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझें।

सबसे पहली जिम्मेदारी है कि दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझा जाए। दृष्टान्त को प्रतिकात्मक शैली में बोला गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ उसी के ऊपर आधारित होता है। इसलिए, उसके शब्दों और उसकी संस्कृति को और कहानी के पीछे छुपे ऐतिहासिक तत्वों का अध्ययन करें।

खोजें और चर्चा करें। कहानी में कौन-सी चीजें और घटनाओं को बताया गया है और यह घटनाएं एवं चीजें साधारण जीवन और समय पर क्या प्रभाव डालती हैं?

विवाह के भोज का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 22:1-14। **विवाह के भोज** के दृष्टान्त में, निम्नलिखित हिस्से जीवन की कहानी के लिए सत्य हैंः विवाह के भोज के लिए एक से अधिक बार निमन्त्रण भेजा जाना एक सामान्य बात थी। इन निमन्त्रणों के प्रतिउत्तर में विविधता भी स्वीभावित थी। एक पूर्वी राजा अकसर उन लोगों को कड़ी सजा देता था जो उसके प्रीतिभोज के निमन्त्रण को अस्वीकार कर देते थे। विवाह का भवन का भरा होना आम बात थी। यह एक चलन था कि उत्सवों एवं विवाह के समय में लोग विशेष पोशाक पहनते थे।

क्योंकि उस जमाने में लोगों के पास कैलेंडर और डायरी नहीं हुआ करती थी, इसलिए यहूदियों के बीच एक सामान्य निमन्त्रण भेजना और बाद में उन्हें उस उपलक्ष्य की पुनः याद दिलाना असामान्य नहीं माना जाता था । जैसा कि अकसर एक साधारण जीवन में होता है कि न तो सभी लोग आ सकते हैं और न ही सब लोग आना चाहते हैं। इस कारण वे अनुपस्थित होने के लिए माफी मांगते या फिर बहाने बनाते हैं। पुराने समय में, राजा के निमन्त्रण का इन्कार कर को अस्विकार कर देना ये बहुत असभ्य और असम्भव माना जाता था। और जो लोग राजा के इस निमन्त्रण का तिरस्कार करते थे उनको अकसर बन्धी बनाकर मार दिया जाता था। अधिकतर लोगों ने निमन्त्रण को स्वीकार किया और विवाह के उत्सव में आ गये।

कुछ ऐसे ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि पूर्व के नज़दीकी क्षेत्र में यदि कोई व्यक्ति चाहता था कि वह राजा की उपस्थिति में जाए तो उसे पहले वह पोशाक पहननी होती थी जो उसे राजा द्वारा भेजी गयी थी। क्योंकि अधिकांश गरीब हुआ करते थे और उनके के पास अच्छी पोशाक नहीं हुआ करती थी। ऐसा लगता है कि उनको विवाह स्थल में प्रवेश करने से पहले की पोशाक दे दी जाती थी।

नियम 2. निकटतम सन्दर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

दूसरी ज़िम्मेदारी यह है कि वे दृष्टान्त के सन्दर्भ की जाँच करें। दृष्टान्त की कहानी के "सन्दर्भ" में "संरचना" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" निहित हो सकता है। दृष्टान्त की संरचना दृष्टान्त के बोले जाने के *अवसर* या दृष्टान्त के बोले जाने के समय की *परिस्थिति* को स्पष्ट को स्पष्ट कर सकती है। दृष्टान्त की संरचना साधारणतः दृष्टान्त की कहानी के *पहले* पायी जाती है। और व्याख्या और अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में मिलते हैं।

खोजें और चर्चा करें। निम्नलिखित दृष्टान्तों में से प्रत्येक का विशिष्ट सन्दर्भ क्या है?

भले सामरी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 10:29। **भले सामरी** के दृष्टान्त में, दृष्टान्त की कहानी में संरचना और अनुप्रयोग दोनो ही मिलते हैं। संरचना एक प्रश्न होता है, जिसे भीड़ में से किसी के द्वारा पूछा गया था। यहूदी व्यवस्थापकों ने यीशु से प्रश्न पूछा "मेरा पड़ोसी कौन है?" यीशु ने भले सामरी का दृष्टान्त कहा। यीशु द्वारा प्रस्तुत अनुप्रयोग दर्शाता है कि इस दृष्टान्त को बताने का उद्देश्य यह शिक्षा देना था कि "मैं किसका पड़ोसी हूँ?" बजाय "मेरा पड़ोसी कौन है?"

खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 15:1-2। **खोई हुई भेड़** के दृष्टान्त में, दृष्टान्त की कहानी में संरचना और अनुप्रयोग दोनो ही मिलते हैं। संरचना, यीशु द्वारा अवलोकन करना है। यीशु ने दूसरे लोगों के प्रति फरीसी को स्वभाव को देखा। लूका लिखता है, "अब चुंगी लेने वाले और पापी उसके

पास आया करते थे कि उसकी सुनें और फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ाकर कहने लगे कि यह तो पापियों से मिलता है, और उसके साथ खाता–पीता है।" यीशु ने खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त कहा कि लोगों को सिखाए कि चुंगी लेने वालों और पापियों के प्रति परमेश्वर का स्वभाव कैसा है। साथ ही यीशु द्वारा की गयी व्याख्या बताती है कि जब कोई एक पापी पश्चाताप करता है तो परमेश्वर कितना आनन्दित होते हैं।

प्रयत्नशील विधवा का दृष्टान्त। पढ़ें लूका 18:1 कभी–कभी दृष्टान्त बताने का उद्देश्य बताने वाले की भावनाओं को प्रगट करता है, जैसा कि प्रयत्नशील **विधवा** के दृष्टान्त में भी हुआ। लूका लिखता है, "फिर यीशु ने अपने चेलों को इसके विषय में यह दृष्टान्त कहा कि उन्हें निरन्तर प्रार्थना करना और हियाव नहीं छोडना चाहिए।" यीशु ने प्रयत्नशील विधवा का दृष्टान्त अपने चेलों को यह सिखाने के लिए कहा कि वे निरन्तर प्रार्थना करते रहें और हियाव न छोड़ें।

दाख की बारी में मजदूरों का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 20:1–16। दाख की बारी में मजदूरों का दृष्टान्त "इस कारण " शब्द से आरम्भ होता है और दिखाता है कि दृष्टान्त पिछले अध्याय में पाये जाने वाले जवान धनी युवक की परिस्थिति से जुड़ा हुआ है (मत्ती 19:16–30)। इसके अलावा, यीशु का दृष्टान्त के प्रति अनुप्रयोग ठीक वैसा ही है जैसे कि उसने पतरस द्वारा पूछे गये प्रश्न, उसे अपना सबकुछ छोड़कर यीशु के पीछे चलने से क्या लाभ होगा, के अनुप्रयोग में कहा था (मत्ती 20:16 और 19:27,30)। पहले और बाद में मज़दूरी पर रखें गये मजदूरों का स्वभाव (मत्ती 20:9–10) और धनी जवान शासक का व्यवहार और प्रेरित पतरस का स्वभाव (मत्ती 19:21,27,29) उन चीजों के सम्बन्ध में "जो उनके पास है" और "जो वे प्राप्त करना चाहते हैं", दोनों अनुच्छेदों के बीच में सम्बन्ध को दर्शाता है। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश या केन्द्रिय बिन्दु किसी भी व्यक्ति के लिये एक गम्भीर चेतावनी है (जैसे पतरस) जो इस बात के प्रति बहुत उत्सुक रहता है कि यीशु मसीह से उसे पुरुस्कार स्वरुप क्या प्राप्त होगा।

नियम 3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

तीसरी ज़िम्मेदारी ये है कि दृष्टान्त की कहानी में जो शिक्षा देने का लक्ष्य साधा गया है वह प्रांसगिक है या अप्रांसगिक है। दृष्टान्त की कहानियों के सभी विवरणों के लिये अलग आध्यात्मिक महत्व का उल्लेख नहीं करने के लिये बहुत सावधानी बरती जानी चाहिए। प्रांसगिक विवरणों में सबसे पहले दृष्टान्त के केन्द्रीय सत्य या का मुख्य सन्देश निर्धारण करें। फिर निर्धारित करें कि उस मुख्य सन्देश को मजबूत करने के लिये दृष्टान्त में कौन से अन्य विवरण आवश्यक है।

(1) यह निर्धारित करता है कि खण्ड एक ऐतिहासिक घटना है या एक रूपक या एक दृष्टान्त है।

प्रासंगिक विवरणों की पहचान करने के लिये इसके महत्वपूर्ण परिणाम है।

ऐतिहासिक घटना या एक दृष्टान्त?

दिखावा करने वाले धनी और भिखारी लाजर का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 16:19–31। **दिखावा करने वाले धनी और भिखारी लाजर** का दृष्टान्त का वर्णन एक ऐतिहासिक घटना है या दृष्टान्त?

– यदि यह एक *ऐतिहासिक घटना* का लेखा है, जिसका इस्तेमाल किसी विशेष सत्य का वर्णन करने के लिये उपयोग किया गया है, तब हर चीज का अर्थ है। तब नरक में दुःख झेलते समय धनी व्यक्ति का अब्राहम से बातचीत कर पाना हमें नरक में लोगों कर वास्तविक हालात को प्रगट करता है। लेकिन फिर धनी व्यक्ति नरक में घायल था और भिखारी स्वर्ग में, यह एक गम्भीर मामला होने पर भी, हो सकता है इसका आत्मिक या धार्मिक कोई अनुप्रयोग न हो।

–यदि, यह भले ही एक *दृष्टान्त* है, फिर भी यह तथ्य कि धनी व्यक्ति नरक में घायल था और भिखारी स्वर्ग में यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है। यह दृष्टान्त का केन्द्रित बिन्दु और मुख्य सन्देश है।

इसकी संरचना बताती है कि यह एक दृष्टान्त है न कि कोई ऐतिहासिक घटना। इसकी संरचना भी पिछले दृष्टान्त **चालाक प्रबन्धक** के जैसे ही हैः यीशु ने फरीसियों के धन से प्रेम का सामना किया (लूका 16:1,19)। उदाहरण के लिए यह विवरण कि धनी व्यक्ति हर रोज अपनी आरामदायक जिन्दगी जीता है और भिखारी उस धनी व्यक्ति की मेज़ से गिरे खाने से अपने पेट भरने की लालसा करता है ये महत्वपूर्ण विवरण हैं, ये विचार–विमर्श करने के बिन्दु पर जोर डालता है, और यह हमें बताता है कि हमें अपनी सम्पत्ति को अपने भविष्य की तैयारी के लिए इस्तेमाल करना चाहिए। दृष्टान्त का केन्द्रिय बिन्दु या मुख्य सन्देश यह शिक्षा देना है कि "मरने से पहले धनी व्यक्ति की जीवन शैली इस वर्तमान संसार में उसकी मृत्यु के बाद अनुत्क्रमणीय है।"

<u>प्रतीक या दृष्टान्त ?</u>

पढ़ें यूहन्ना 15:1–17 और मत्ती 13:3–23।

दाखलता और डालियां। "प्रतीक" *एक विस्तारित तुलना* है, जिसमें अलग–अलग तत्व के रूपक बार–बार सत्य को पुनः प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 15:1–17 में प्रतीक शामिल हैं। माली परमेश्वर, पिता को दर्शाता है, दाखलता यीशु को दर्शाती है, फल लाने वाली डालियां सच्चे मसीहीयों को प्रस्तुत करती हैं, फल रहित डालियां उन्हें दर्शाती हैं जो कभी भी सच्चे मसीही नहीं बने, इत्यादि। यह प्रतीक वास्तविक रूप से यह नहीं बताता की यीशु वह दाखलता नहीं है जिसमें अंगूर लगे हैं। यह दर्शाता है कि यीशु और उसके लोगों के बीच सम्बन्ध की तुलना दाखलता और उसकी डालियों के साथ की गई है।

हालांकि, हमें हर एक प्रतीकों की विशेषताओं का विवरण देने के लिये कोशिश नहीं करनी चाहिए। "जो डालियां फल लाती है" वे सच्चे मसीहियों को दर्शाती हैं। तौभी "जो डालियां फल नहीं लाती है" वे इस बात को भी नहीं दर्शाती कि वे कभी फल लायी होगीं, <u>वे नया जीवन पाये हुए मसीहियों को प्रस्तुत नहीं करते हैं जो बाद में अपने विश्वास से पीछे हट गये थे।</u> इस प्रकार का निष्कर्ष यूहन्ना 10:28 (और पौलुस ने फिलिप्पियों 1:6) में यीशु की स्पष्ट शिक्षा का विरोधाभास करता है! प्रतीक स्पष्ट तौर पर सिखाता है, कि " जो डालियां काटी जाती और आग में डाल दी जाती हैं" ये उनको दर्शाती है जो कभी भी फल नहीं लाये, क्योंकि वे कभी भी मसीह के नज़दीकी सहभागिता में नहीं गये। <u>"वे कभी भी सच्चे विश्वासी नहीं बनें और उनका तथा कथित मसीही रिश्ता उन्हें परम्परागत तौर पर मिला और उन्हें उनकी संस्कृति से प्राप्त हुआ है, लेकिन वह केवल बाहरी रिश्ता ही बनकर रह गया है।</u>

निष्कर्ष यह है कि प्रतीक यह नहीं सिखाता कि नया जन्म पाये हुए मसीही फिर से अपना उद्धार खो सकते हैं। यह सिखाता है कि नाम के मसीही फलहीन बनें रहेंगे और नये जन्म पाये हुए मसीही और फल लाएंगे। इस प्रकार, जबकि तुलनात्मक प्रतीक बहुत से होते हैं, लेकिन दृष्टान्त में सिर्फ एक केन्द्र बिन्दु और एक ही मुख्य सन्देश होता है।

बीज बोने वाले का दृष्टान्त। "दृष्टान्त" जीवन से जुड़ी सच्ची कहानी है, जबकि प्रतीक को ऐसा होने की आवश्यकता नहीं है। हो सकता है कि दोनों केन्द्रीय विषय हों, दृष्टान्त को केन्द्रिय सिद्धान्त के लिए बनाया जाता है, जबकि प्रतीक से सम्बन्धित और गैर–सम्बन्धित सत्यों को सिखाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। **बीज बोने वाला** एक प्रतीक नजर आता है, क्योंकि चार प्रकार की भूमि की व्याख्या में वह काल्पनिक कहानी के हर एक बिन्दु का आत्मिक अनुपालन करते हैं। "बीज" बाइबल के सन्देश को प्रस्तुत करता है; "पक्षी" शैतान को प्रस्तुत करता है, "पथरीली भूमी" कठोर हृदय को दर्शाती है, इत्यादी। फिर भी, यह कहानी प्रतीकात्मक नहीं वरन लेकिन दृष्टान्त है, क्योंकि सन्दर्भ (व्याख्या) निम्नलिखित तरीके से स्पष्टता के साथ एक ही विषय को दर्शाता है, अर्थात "किसी के जीवन का परिणाम,परमेश्वर के वचन के प्रति उसके प्रतिउत्तर पर निर्भर करता है। और परमेश्वर के वचन के प्रति किसी भी व्यक्ति का प्रतिउत्तर उसके हृदय परिस्थिति व स्वभाव पर निर्भर करता है। यीशु ने जानबूझकर बीज बोने वाले के दृष्टान्त को विस्तृत रूप से तैयार किया कि केन्द्रीय सन्देश सुदृढ़ हो।

(2) दृष्टान्तों को प्रतीकात्मक रूप में मानना।

क्या मसीहियों को दृष्टान्तों को रूपक के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए, अर्थात् दृष्टान्तों को रूपक के रूप में मानना चाहिए, और दृष्टान्तों में प्रत्येक अंश या हिस्से का एक अलग आत्मिक अर्थ निकालना चाहिए? क्योंकि आरम्भिक मसीही नहीं जानते थे कि दृष्टान्तों का अर्थ कैसे निकाल जाता हैं, उनमें से कुछ ने दृष्टान्तों को रूपक मानकर दृष्टान्त के हर पहलू का अद्भभुत अर्थ विस्तृत रूप में पाया है।

भले सामरी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 10:25–37। निम्नलिखित उदाहरण में भले सामरी के दृष्टान्त के अर्थ को समझाया गया हैः "एक व्यक्ति यरुशलेम से यरीहो की तरफ नीचे जा रहा है" जो कि आदम को या अनाज्ञाकारिता की वजह से मनुष्य के पतन के सिद्धान्त को प्रस्तुत करता है । "यरुशलेम" स्वर्गलोक को प्रस्तुत करता है। और "यरीहो" संसार को दर्शाता है। "डाकू" एक बहुत ताकतवर विरोधी या दुष्टात्माओं को दर्शाता है, और उन झूठे भविष्यद्वक्ताओं को दर्शाता है जो मसीह के आने से पहले संसार में रहते थे। जब आदम को सृजा गया, तब वह शैतान और उसके दूतों के आक्रमण की वजह से पाप में गिर गया। "घाव" अनाज्ञाकारिता और पाप को दर्शाता है। "व्यक्ति ने अपने वस्त्र उतार दिये" यह उसके अनश्वरता और अमरतरा को उनके लाभ व अवसर सहित उतार देने को प्रस्तुत करता है। वह "आधा मृतक" है, क्योंकि उसका प्राण अनश्वर या अमर होने के बावजूद उसका मानवीय स्वभाव मृतक हो गया है। "याजक और लेवी" वे पुराने नियम की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को दर्शाते हैं। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता पतित मानवजाति को नहीं बचा पाये। "भला सामरी" निःसन्देह, यीशु मसीह को दर्शाता है। वह पतित मानवजाति को बचाने के लिए इस धती पर आये।"दाखरस" उलाहना देने वाले वाले वचन को और "तेल" प्रेम,दया और करूणा के सिद्धान्त को प्रस्तुत करता है। "गधा" मसीह की देह को प्रस्तुत करता है, जो मनुष्य को कलीसिया में ले जाता है। "सराय" कलीसिया को प्रस्तुत करता है और "सराय का मालिक" प्रेरित और उनके उत्तराधिकारियों को प्रस्तुत

करता है, उदाहरण के लिए बिशप और कलीसिया के दूसरे पदाधिकारी। "दो चाँदी के सिक्के" पिता और पुत्र और बाइबल के दो नियम (पुराना और नया नियम) और परमेश्वर और पड़ोसी के प्रेम के बारें में विश्वास को दर्शाते हैं। यीशु अपनी देह को मरने के लिए क्रूस पर दे देने और कलीसिया की स्थापना करने के द्वारा, अपने पुनः आगमन तक पतित विश्वासियों की रखवाली करते और मानवजाति को बचा लेते हैं। "भले सामरी का वापस आने का वायदा करना तथा आकर बीमार पर खर्च की गयी लागत की पूर्ति करना" यीशु के दूसरे आगमन को प्रस्तुत करता है।

यह अर्थ कलीसिया के फ़ादर ओरिजन द्वारा निकाला गया था (ई0 सन् 185–254)। उन्होंने सोचा कि कहानी के हर एक विवरण का एक विशेष अर्थ है। हालांकि *यीशु ने खुद* दृष्टान्त का स्पष्टिकरण दिया है, लेकिन *ओरिजन ने अपनी व्यक्तिगत व्याखया प्रस्तुत की ।* इसका स्पष्ट है कि ओरिजन अपने सारे साज सज्जा करने वाले विचारों के बाद भी दृष्टान्त को बिल्कुल भी समझ नहीं पाये। यदि ओरिजन ने इस दृष्टान्त को उसकी संरचना और व्याख्या और अनुप्रयोग के आधार पर अध्ययन किया होता तो वह इसका यह अर्थ कभी नहीं निकालते।

निष्कर्षः <u>मसीहियों को दृष्टान्त को प्रतिकात्मक रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, अर्थात दृष्टान्त के हर एक खण्ड का अलग अर्थ नहीं निकालना चाहिए है।</u>

(3) पहचाने कि कौन–सा विवरण प्रासंगिक है।

प्रासंगिक विवरण वे बातें या नियम हैं जो मुख्य विषय और केन्द्रिय सन्देश को मज़बूती प्रदान करते हैं। उन सत्यों का अर्थ बताया जा सकता है और उन्हें लागू किया जा सकता है।

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 15:11–32। "सत्य यह है कि पिता घर पर ही रहता है और पुत्र को ढूंढनें नहीं जाता" जो एक असंगत विवरण है, क्योंकि प्रभु यीशु यह शिक्षा नहीं दे रहे थे कि स्वर्गीय पिता खोये हुए पापियों को नहीं ढूंढता, परन्तु उसने पहले ही इन दो दृष्टान्तों में स्पष्ट कर दिया है तौभी "पिता बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था और दौड़कर अपने पुत्र से मिलने गया, उसने आनन्द और स्वीकारिता से उसका प्रतिउत्तर दिया", ये संगत पूर्ण और महत्वपूर्ण विवरण है क्योंकि वह केन्द्रिय बिन्दु को सुदृढ़ करता है, जो परमेश्वर पिता का स्वभाव खोए हुए पुत्र के प्रति है।

(4) पहचानें कौन–सा विवरण असंगत है।

<u>हालांकि दृष्टान्त का हर विवरण दृष्टान्त की *कहानी के लिए महत्वपूर्ण* है, लेकिन दृष्टान्त में समावेशित हर चीज का कोई *महत्वपूर्ण अभिप्राय* नहीं है। यीशु का कभी ऐसा इरादा नहीं था कि दृष्टान्त के ही विवरण में आत्मिक अभिप्राय हो।</u> वे दृष्टान्त जिनके विवरण दृष्टान्त के सन्देश के लिए प्रासंगिक नहीं उन्हें दृष्टान्त में अलग से चिह्नित या उनका अलग अर्थ निकालना चाहिए।

निकम्मे दास का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 17:7–10। क्या दासत्व को स्वीकृति देना मसीह की इच्छा है? क्या वह मज़दूर–प्रबन्धक रिश्ते के सिद्धान्तों को मंजूरी प्रदान करते हैं? या क्या वह हमें उदार, अनुग्रहकारी और विनम्र व्यवहार करना सिखाते हैं? इस दृष्टान्त की संरचना (लूका 17:3–4) में, भाई को डांटने और फिर पश्चाताप करने पर उसे क्षमा करने की शिक्षा निहित है। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश और केन्द्रिय बिन्दु यह है कि भलाई करने के बावजूद मसीही को उन कामों का श्रेय लेने के हकदार नहीं है। दूसरा विवरण इस कहानी के इस केन्द्रिय उद्देश्य और संदेश अंसगत है इस कारण इसका कोई अन्य अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिए।

नियम 4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहचाने।

चौथी जिम्मेदारी दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहचानना है। दृष्टान्त का "मुख्य सन्देश" स्वयं कहानी की व्याख्या या अनुप्रयोग में ही मिल जाता है।

जिस तरीके से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग किया है, हम उससे सीख सकते हैं कि दृष्टान्त का अर्थ कैसे निकालना चाहिए। दृष्टान्त में सामान्य रूप से एक ही मुख्य विषय, एक महत्वपूर्ण सन्देश या एक केन्द्रिय शिक्षा होती है। इसलिए, हमें कहानी के हर विवरण में आत्मिक सत्य को नहीं खोजना चाहिए, परन्तु हमें पाठ की मुख्य शिक्षा की ओर देखना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इन सारे दृष्टान्तों में कौन-सा मुख्य सन्देश है?

ध्यान दें।

भले समारी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 10:25-29। **भले सामरी** के दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है? क्या मसीहियों को इस दृष्टान्त का उपहास करना चाहिए? क्या मसीहियों को इस दृष्टान्त की तुलना करनी चाहिए, अर्थात, क्या हमें दृष्टान्त के हर पहलू का आत्मिक अर्थ निकालना चाहिए? ऐसा करने से यह प्रतीत होगा कि यह दृष्टान्त बजाय किसी मुख्य शिक्षा को प्रगट करने के, उद्धार के इतिहास का प्रतिकात्मक रूप में प्रस्तुत कर रहा है। नहीं, मसीहियों को दृष्टान्त की तुलना नहीं करनी चाहिए। भले सामरी का दृष्टान्त का उपहास नहीं करना चाहिए। भले सामरी के दृष्टान्त के ऐतिहासिक सन्दर्भ यह दिखाया है कि, इसका मुख्य सन्देश यीशु द्वारा प्रश्न का उत्तर देना है कि, "मेरा पड़ोसी कौन है?" और अच्छी तरह से कहें तो "मैं किसका पड़ोसी हूँ?" या "मैं कब किसी का पड़ोसी होता हूँ?"

बीज बोने वाले का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 13:3-9। **बीज बोने वाले** का मुख्य सन्देश क्या है? यह दृष्टान्त बीज बोने वाले की ज़िम्मेदारी का दृष्टान्त नहीं है (प्रचारक) - कहाँ और कैसे उसे परमेश्वर के वचन को बोना चाहिए? दृष्टान्त में कहीं पर भी यह संकेत नहीं है कि संसार के सिर्फ 25 प्रतिशत लोग ही सुसमाचार के प्रचार का प्रतिउत्तर देंगे और उद्धार पायेंगे। इस प्रकार का असंगत अनुवाद उससे बहुत आगे चला जाता है जिसका वर्णन यीशु ने स्वयं किया था। यीशु का स्पष्टीकरण यह दिखाता है कि यह *दृष्टान्त परमेश्वर के वचन बोने वाले की ज़िम्मेदारी को नहीं है, परन्तु परमेश्वर के वचन को प्राप्त करने वाले की ज़िम्मेदारी को बताता* है। यह दृष्टान्त हृदय की परिस्थिती का दृष्टान्त है या ग्रहण करने वाले के हृदय के स्वभाव का दृष्टान्त है। यीशु सिखाते हैं कि यह परमेश्वर के वचन को सुनने वाले की ज़िम्मेदारी है कि वह परमेश्वर के वचन के प्रचार का कैसे प्रतिउत्तर(प्रतिक्रिया) देता है। मुख्य सन्देश यह है कि, "किसी के जीवन का परिणाम, इस बात पर निर्भर करता है कि वह परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी प्रतिक्रियाओं कैसे देता है। और किसी की प्रतिक्रिया उस के हृदय की मनोदशा तथा उसके स्वभाव पर निर्भर करत है।" इसलिए मसीही प्रचारक अपने सुसमाचार प्रचार और बाइबल की शिक्षाओं को प्रति विविध प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा कर सकते हैं।

चतुर भण्डारी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 16:1-13। **चतुर भण्डारी** के दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है? क्या यीशु यह सिखा रहे हैं कि मसीहियों को इस बेईमान (अधर्मी) भण्डारी के समान होना चाहिए? क्या वह अपने चेलों को यह सिखा रहे हैं कि दूसरों को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करें? नहीं। कहानी का केन्द्रिय बिन्दु 8वें पद में मिलता है, और उसके अनुप्रयोग के लिए कहानी के 9वें पद में

केन्द्रिय बिन्दु का सीधा सम्पर्क मिलता है। यीशु मसीह ने भण्डारी के लिए बेईमान रवैये को नहीं सराहा बल्कि उसको दूरदर्शिता को सराहा। इस भण्डारी के समान, चेलों को वर्तमान स्त्रोतों का इस्तेमाल करके भविष्य की योजना बनानी चाहिए! दृष्टान्त का मुख्य सन्देश यह है कि "व्रीव, समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति अपनी सांसारिक वस्तुओं का इस्तेमाल स्वर्ग में अपनी अनन्त आशिषों को प्राप्त करने के लिए तैयारी करेगा"।

नियम 5. बाइबल में सामान्तर और विपरीत बाइबल खण्डों के साथ दृष्टान्त की तुलना करें।

पाँचवी ज़िम्मेदारी, दृष्टान्त को समझने में सहायक सामान्तर पदों को खोजना है।

हर एक दृष्टान्त में सामान्तर या विपरीत सत्य पाये जाते है जिनकी शिक्षा बाइबल के दूसरे खण्ड़ों में सिखाया गयी है। इसलिए, हमेशा दृष्टान्त का अर्थ को बाइबल की शिक्षा के साथ सीधे जाँचें।

(1) कुछ दृष्टान्त दूसरे दृष्टान्त के समान होते हैं और उनकी तुलना आसानी से की जा सकती है।

दस मुहरों का दृष्टान्त (लूका 19:11-27)। एक भले व्यक्ति ने अपने दस दासों को *एक समान नगद रकम* दी, परन्तु जब वापस आकर उसे पता चला कि कुछ ने तो उसने उन्हें *अलग-अलग प्रतिफल* दिये, जब इसका पता चला कि कुछ ने दूसरों से ज्यादा कमाई की है।

तोड़ों का दृष्टान्त (मत्ती 25:14-30)। एक व्यक्ति जो यात्रा पर जा रहा है उसने अपने तीनों दासों को *अलग-अलग नगद रकम* दी, परन्तु जब वह वापस आया तो उसने अपने विश्वासयोग्य दासों को *एक ही समान प्रतिफल* दिया।

दाख की बारी में काम करने वाले मजदूरों का दृष्टान्त (मत्ती 20:1-16)। जमीन के मालिक ने मजदूरों को दिन के *अलग-अलग समय पर* काम करने के लिए बुलाया परन्तु उसने दिन के अन्त में सबको एक जैसी मजूदरी दी।

इन सारे दृष्टान्तों का मुख्य विषय है कि हमें यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि हर एक व्यक्ति को उन कामों को हिसाब देना होगा जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए सौंपे थे।

(2) हालांकि, प्रत्येक दृष्टान्त अलग शिक्षा प्रदान करता है।

दस मुहरों का दृष्टान्त सिखाता है कि जो दास, ज्यादा विश्वासयोग्य है, उनको भविष्य में ज्यादा बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी जाएगी। *अलग-अलग स्तर की विश्वासयोग्यता और लगन के लिए अलग-अलग श्रेणी के प्रतिफल* प्रदान किये जाएंगे।

तोड़ों का दृष्टान्त। सिखाता है कि दासों को दिया जाने वाला प्रतिफल उनकी अलग श्रेणी की *सफलता पर आधारित नहीं होता, क्योंकि उन सभी को अलग अलग प्रकार के अवसर प्रदान किये जाते* हैं।

दाख की बारी में काम करने वाले मज़दूरों को दृष्टान्त सिखाता है कि प्रभु इस बात की परवाह किये बगैर कि वह प्रभु को कब से जानते हैं और कितने समय से सेवा कर रहे हैं, वह हर एक उस व्यक्ति को प्रतिफल देगें जो उसके समीप आता है। अनन्त जीवन का प्रतिफल इस पर निर्भर नहीं करता कि आप कितने लम्बे समय से प्रभु में हैं।

नियम 6. मसीही बुनियादी शिक्षाओं को केवल बाइबल के स्पष्ट खण्डों पर आधारित करें।

छठी जिम्मेदारी यह है कि मसीही शिक्षा और सिद्धान्त की बुनियाद बाइबल के स्पष्ट खण्डों पर आधारित हों, अर्थात, बाइबल की आज्ञाओं, उसकी निषेधाज्ञाओं और बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित हो। दृष्टान्तों की संरचना मसीही सिद्धान्तो की बुनियाद तथा प्राथमिक संसाधनों पर आधारित नहीं होनी चाहिए। दृष्टान्त द्वारा पहले से पाये जाने वाले मसीही सिद्धान्तों की समझाया जा सकता या उसकी पुष्टि की जा सकती हैं। हालांकि, इस बात की अनुमति नहीं है कि दृष्टान्तों का इस्तेमाल करके नये मसीही सिद्धान्त को तैयार किया जाए। वचन के अर्थ समझाने के क्रम की पहिचान हमेशा शाब्दिक से प्रतीकात्मकता की ओर और स्पष्टता से अधिक अस्पष्टता की ओर बढ़ती है। इसलिए, दृष्टान्तों के अर्थ को सीधे बाइबल की शिक्षा के द्वारा जाँचा जाना चाहिए।

गेहूं के बीच जंगली बीज का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 13:24-30, 36-43। जब यीशु दृष्टान्त का स्पष्टीकरण देते हैं, तो स्पष्टीकरण को दूसरे स्पष्ट शिक्षाओं के समान मसीही सिद्धान्त की शिक्षा को स्थापित करने के लिए इस्तेमाल किया सकता है। उदाहरण के लिए, **गेहूं के बीच जंगली बीज** का दृष्टान्त का स्पष्टीकरण मत्ती 13:36-43 में दिया गया है और इस स्पष्टीकरण को मसीही सिद्धान्त स्थापित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

हालांकि, सामान्य तौर पर, दृष्टान्त की आलंकारिक भाषा मसीही सिद्धान्त स्थापित करने के लिए अच्छी सामग्री नहीं है। उदाहरण के लिए, जंगली बीज का दृष्टान्त यह सिखाता है कि परमेश्वर के राज्य में (या मसीही कलीसिया) लोग मिश्रित है। इस धरती पर पाये जाने वाले परमेश्वर के राज्य में नया जन्म पाये हुए मसीही और नाममात्र (परम्परागत मसीही) मसीही दोनों ही मौजूद (कलीसिया)हैं।

परन्तु दृष्टान्त से तीन निम्नलिखित निष्कर्षों को **नहीं** निकाला जा सकताः

- हर एक ("परमेश्वर के राज्य का पुत्र" और "बुराई का पुत्र") को बिना किसी भेदभाव के पानी के द्वारा बपतिस्मा दिया जाना चाहिए (क्योंकि वे पहले से कलीसिया में हैं)।
- सदस्यता के लिए आवेदक से ज्यादा पूछताछ या उस पर टिप्पणी करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।
- किसी भी सदस्य को अनुशासित नहीं किया जाना चाहिए, चाहे उसने कितना ही संगीन पाप क्यों न किया हो।

कौन सदस्य बन सकता है, किसका बपतिस्मा होना चाहिए और जिस सदस्य ने पाप किया है उसे कैसे अनुशासित किया जाए, जैसे सभी मसीही सिद्धान्त बाइबल की दूसरी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित होने चाहिए (मत्ती 28:19; 18:15-18)।

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 15:11-32। दूसरा उदाहरण, यह दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर पश्चाताप करने वाले पापी का स्वागत करते हैं। परन्तु यह दृष्टान्त यह **नहीं** सिखाता कि पापी को केवल अपने अपराधों के लिए पश्चाताप करने की जरूरत है, वरन उसे यीशु मसीह के बलिदान के प्रायश्चित को स्वीकार करने की आवश्यकता है। प्रायश्चित और उद्धार से जुड़े मसीही सिद्धान्त बाइबल की दूसरी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित होने चाहिए (रोमियों 3:21-26)।

इसलिए, सामान्य तौर पर, हम दृष्टान्त का इस्तेमाल शिक्षाओं और सिद्धांतों को स्थापित करने के लिए इस्तेमाल नहीं करते परन्तु विचार करते हैं कि जो भी सत्य कहीं भी बाइबल में सिखाया गया है उसे मजबूत करें।

इ. गृह कार्य

(1) दृष्टान्तों का की व्याख्या करने के लिए बुनियादी 6 दिशानिर्देशों को *याद करें।*

(2) निम्नलिखित दृष्टान्तों में संरचना की व्याख्या और अनुप्रयोग को *निर्धारित करें।*

उत्तर कोष्ठक में दिये गये हैं।

- मत्ती 13:47-48 (मत्ती 13:49-50)
- मत्ती 25:14-30 (मत्ती 25:13)
- लूका 11:5-8 (लूका 11:9-10)
- लूका 12:13-20 (लूका 12:21)
- लूका 15:3-32 (लूका 15:1-2)
- लूका 16:19-31 (लूका 16:14)
- लूका 19:12-27 (लूका 19:11)

परिशिष्ट 2

(यीशु के दृष्टान्त)
यीशु के सारे दृष्टान्तों की सूची

इस निरीक्षण में 56 दृष्टान्त पाये जाते हैं। म. = मत्ती, मर. = मरकुस, लू. = लूका	L = 9-12 नियमावली में गिनती सबक के साथ S = 9-12 नियमावली में गिनती के साथ परिशिष्ट।

राज्य की नियमावली 9 (9x)

दृष्टान्तों का परिचय

1. **दृष्टान्त का अनुवाद करना** (S1)
परिभाषा, उद्देश्य और दृष्टान्त की विशेषताएं।
दृष्टान्त की व्याख्या करने का तरीका।

परमेश्वर के राज्य के स्वभाव के बारे में दृष्टान्त

2. **परमेश्वर के राज्य की स्थापना**
सामर्थी व्यक्ति को बन्दी बना लेना (L1)
म. 12:22-37, मर. 3:22-30,
लू. 11:14-23

3. **परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर का वचन**
बीज बोने वाला (L3)
म. 13:3-23, मर. 4:3-20,
लू. 8:4-15

4. **परमेश्वर के में राज्य परमेश्वर का संदेशवाहक**
दुष्ट किसान (L5)
म. 21:33-41, मर. 12:1-9,
लू. 20:9-16

5. **परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोग**
गेहूं के बीच जंगली बीज (L7)
म. 13:24-30; 36-43

6. **परमेश्वर के राज्य की उन्नत्ति**
गुप्त में बीज बढ़ रहे हैं (L9)
मर. 4:26-29
ख़मीर (L9)
म. 13:33, लू. 13:20
सरसों का बीज (L9)
म. 13:31-32, मर. 4:30-32
लू. 13:18-19

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश का दृष्टान्त

7. **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य**
छुपा हुआ ख़ज़ाना (L11)
म. 21:28-32

राज्य की नियमावली 10 (19x)

8. **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्तें**
सकरा मार्ग (S4)
म. 7:13-14
विवाह का स्थल (L15)
म. 22:1-14
महान जेवनार (S4)
लू. 14:15-24

9. **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की ज़िम्मेदारी**
बच्चें बाज़ारों में बैठे हुए हैं (S5)
म. 11:16-19, लू. 7:31-35
मौसम का संकेत (S5)
म. 16:1-4, लू. 12:54-56
दो पुत्र (L15)
म. 21:28-32
फलरहित अंजीर का वृक्ष (L15)
लू. 13:1-9
महाजाल (L15)
म. 13:47-50

10. **परमेश्वर का स्वभाव उन लोगों के परमेश्वर के प्रति जो राज्य मे खोऐ हैं।**
खोई हुई भेड़ (S6)
म. 18:12-14
खोई हुई भेड़ (L17)
लू. 15:1-7
खोया हुआ सिक्का (S6)
लू. 15:8-10
खोया हुआ बेटा (L17)
लू. 15:11-32

परमेश्वर के राज्य में जीवित रहने के बारे में दृष्टान्त

11. **परमेश्वर के राज्य में प्रत्येक्ष प्रेम।**
अशुद्ध आत्मा का लौट जाना (S7)
म. 12:43-45, लू. 11:24-26
दो कर्ज़दार (S7)
लू. 7:40-50
भला सामरी (L9)
लू. 10:29-37

12. **परमेश्वर के राज्य में नम्रता**
आरक्षित स्थान (L21)
लू. 14:7-14
फरीसी और चुंगी लेनेवाले (L21)
लू. 18:9-14

13. **परमेश्वर के राज्य में क्षमा**
प्रतिवादी (S8)
म. 5:25-26
निर्दयी सेवक (L23)
म. 18:23-35

राज्य की नियमावली 11 (18x)

14. **परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता।**
अन्धा अन्धे की अगुवाई कर रहा है (L25)
म. 15:1-20, लू. 6:39-42
बुद्धिमान और मुर्ख घर बनाने वाला (L25)
म. 7:24-27, लू. 6:47-49

15. **परमेश्वर के राज्य में उपवास।**
दूल्हा, पैवंद और मशक (L27)
म. 9:14-17, मर. 2:18-22,
लू. 5:33-39

16. **परमेश्वर के राज्य में निरन्तर प्रार्थना।**
माँगने वाला पुत्र (S9)
म. 7:7-11, लू 11:9-13
मध्यस्थता करने वाला मित्र (L29)
लू. 11:5-10
निरन्तरता की विधवा (L29)
लू. 18:1-8

17. **परमेश्वर के राज्य में गवाही देना**
वैद्य और बीमार (L31)
म. 9:9-13, मर. 2:13-17, लू. 5:27-32
पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति (L31)
म. 5:13-16

गृहस्वामी (S10)
म. 13:51-52
मज़दूर और कटनी (S10)
म. 9:35-38

18. परमेश्वर के राज्य में चेला बनना
उतावली में बनानेवाला (L33)
लू. 14:28-30
लापरवाह राजा (L33)
लू. 14:31-33
हल के ऊपर हाथ रखने वाला (S11)
लू. 9:61-62

19. परमेश्वर के राज्य में संसारिक सम्पत्ति
धनी मूर्ख (L35)
लू. 12:13-21
अमीर का दिखावा और भिखारी लाज़र (L35)
लू. 16:19-31

परमेश्वर के राज्य में सेवा करने के बारे में दृष्टान्त

राज्य की नियमावली 12 (10x)

20. परमेश्वर के राज्य में भण्डारीपन
चलाक प्रबन्धक (L37)
लू. 16:1-13

21. परमेश्वर के राज्य में सेवा
अयोग्य दास (L39)
लू. 17:7-10
विश्वासयोग्य दास और दृष्ट दास (S14)
म. 24:45-51, लू. 12:42-46

22. परमेश्वर के राज्य में प्रतिफल
दाख की बारी में काम करने वाले (L41)
म. 20:1-16

तोड़े (L43)
म. 25:14-30
दस मुहरें (S15)
लू. 19:11-27

23. परमेश्वर के राज्य में सावधानी
फलरहित अंजीर का पेड़ (S16)
म. 24:32-35
दस कुँवारियाँ (L45)
म. 25:1-13
सावधान सेवक (S16)
लू. 12:35-40

24. परमेश्वर के राज्य में न्याय
भेड़ें और बकरियां (L47)
म. 25:31-46

राज्य परिशिष्ट 3

(रोमियों के नाम पत्री)
रोमियों की पत्री का परिचय

परिचय।

हम पत्री के आरम्भ को देखेंगेः रोमियों की पत्री को किसने लिखा? कब और कहाँ लिखी गई? कैसे यह पत्री हिस्सों में बँटी हुई है? पत्री का सन्दर्भ क्या है? पत्री के मुख्य विषय क्या है? कैसे हम पत्री के कठिन खण्डों का अनुवाद कर सकते हैं?

क. रोमियों की पत्री के लेखक

लेखक यहूदी है (रोमियों 9:3-4), जो पुराने नियम के इब्रानी और यूनानी दोनों भाषा से परिचित थे, यहूदी विचारों और पूर्वाग्रहों और यूनानी संसार के साथ है। रोमियों की पत्री के लेखक की प्रमाणिकता उसी प्रकार निश्चित है जैसे बाइबल की दूसरी किताबों के लेखक की। यहां तक की प्राचीन दुनिया में भी। पत्री में, पौलुस स्वयं को रोमियों की पत्री के लेखक के रूप में परिचित कराता है (रोमियों 1:1) और कई बार व्यक्तिगत या सीधे तौर पर बात करता है। आरम्भिक कलीसिया के सभी पासबानों ने कहा कि रोमियों की पत्री का लेखक पौलुस है।

ख. रोमियों की पत्री के प्राप्तकर्ता

रोम के अन्दर मण्डली का आरम्भ कैसे हुआ?

1. कई देशों में यहूदियों का तितर बितर होना।

यहूदी के बिखरने का आरम्भ(8वीं शताब्दी ई0 पू0) में अश्शूर और बेबीलोन में (7 से 6वीं शताब्दी) बन्धुआई में जानें से हुआ। तितर बितर होने के कारण यहूदी लोग बेबीलोन(वर्तमान इराक) फारस(वर्तमान ईरान) रोम, सूडान, सीरिया, एशिया द्वीप(वर्तमान तुर्की) ग्रीस और इटली जैसे अलग देशों में ही निरन्तर रहने लगे। परमेश्वर की योजना में इस "बिखराव" के कारण ही पूरे रोमी साम्राज्य में सुसमाचार बहुत तेजी से फैल गया। रोमी साम्राज्य में यहूदियों को हर जगह यह अनुमति मिली थी कि वे अपने धर्म का अभ्यास अपने रीति-रिवाजों के अनुसार कर सकते हैं। उन्होंने गैर यहूदी राष्ट्रों में हर जगह पर आराधनालय (मिलने का स्थान) बनवाये। बहुत से गैर यहूदी आराधनालयों में आने लगे, वे पूर्ण शुद्धता की तरफ (एकमात्र परमेश्वर की आराधना करना) आकर्षित हुए और उन्होंने यहूदी मत को अपना लिया।

जिन गैर-यहूदियों ने खतना करवाया और वह पुराने नियम की पूर्ण व्यवस्था को मानने लगे और उन्हें यहूदी धर्म को अपनाने वाले अर्थात "proselytes" (यूनानीः परोजलूटोई)(वे लोग जो एक धर्म से दूसरे धर्म में आ गये वे यहूदियों में परिवर्तित हो गये) कहा गया (प्रेरितों. 2:10, 13:43)।

गैर-यहूदी जिन्होनें अद्भुत परमेश्वर पर विश्वास किया और दस आज्ञाओं को स्वीकार किया (निर्गमन 20:1-17), परन्तु जिनका खतना नहीं हुआ था और जिन्होनें बाकि संस्कारों पालन कभी नहीं किया

था उन्हें "परमेश्वर के आराधक" कहा जाता था (यूनानीः सेबोमेनाई)(प्रेरितों. 16:14)। प्रेरितों. 13:42-43 में लोगों ने (संभवतः पुराने अन्यजाति) पौलुस और बरनाबास से विनती की कि वे आराधनालय में आकर प्रचार करें। जब उन्होनें ऐसे किया, बहुत से यहूदी, यहूदी धर्म अपनाने वालों और परमेश्वर के आराधकों ने जो अन्यजातियों में से आये थे उनका अनुसरण करने लगे। पौलुस और बरनबास ने उनसे निवेदन किया कि वे परमेश्वर के अनुग्रह में बनें रहें (जिसका अर्थ है कि, वे मसीह सन्देश में बनें रहें)।

प्रेरितों के यहूदी होने के कारण, वे कभी भी आराधनालय में जा सकते थे, जहाँ वे सुसमाचार का प्रचार कर सकते और वे अधिकारियों के सन्देह किये बिना लोगों से मिल सकते थे। इन यहूदी धर्म अपनाने वाले और परमेश्वर के आराधकों को अच्छी तरह से तैयार किया गया था जिससे सुसमाचार ग्रहण किया जाए और अन्यजातियों के बीच नई मण्डलियों की स्थापना की बुनियाद रखी जा सके (प्रेरितों. 13:43-49)।

2. रोम में यहूदी।

वहाँ बहुत से यहूदी थे जो रोम में यहूदी धर्म में परिवर्तित हो गये, जो रोमी साम्राज्य की राजधानी है। मौलिक रूप से वे कैदी बन कर आए थे,परन्तु उनकी आज़ादी के बाद यहूदी समुदाय तिबर नदी के एक बड़े रोम के हिस्से में बस गये। उनका रोमी लोगों के ऊपर महत्वपूर्ण प्रभाव था। रोमियों के लेखक ने आराधनालयों के बारे में कहा जो मिलने के लिए लोकप्रिय स्थान था, उपहास करने वाले रोमी यहूदी बन गये और उन्होने रोम में यहूदी धर्म अपनाने वालों के बारे में लिखा कि उन्होनें यरूशलेम को अपने उपहार भेजे (प्रेरितों. 11:28-30)।

3. रोम में मण्डली का आरम्भ होना।

यह ज्ञात नहीं है कि रोम में पहली बार सुसमाचार कैसे पहुचां था।

(1) यीशु की सेवकाई।

रोम में आरम्भिक सेवकाई स्वयं यीशु द्वारा ही की गयी थी। यीशु ने गैर-यहूदी में सेवकाई की (मत्ती 8:5-11, यूहन्ना 4:7, 12:20-21) उदाहरण के लिए, मत्ती 8:5-12 में यीशु ने रोमी सरदार के दास को चंगा किया।

(2) पतरस की सेवकाई।

पिन्तेकुस के पहले दिन (मई ई0 सन् 30) बहुत से यहूदी जो रोम से पर्व को मनाने के लिए उपस्थित थे वे यहूदी मत में आ गये (प्रेरितों. 2:10-11) उनमें से कुछ इस तीन हजार की भीड़ में थे जिन्होनें पतरस के प्रचार के बाद मसीहियत को ग्रहण कर लिया था और जब वे रोम वापिस गये तो अवश्य उन लोगों ने प्रचार किया होगा।

यह धारणा कि रोम में पहली मण्डली प्रेरित पतरस ने स्थापित की थी,सम्भव सत्य थी और यह कुरिन्थ वासी डायोनिसियस के कथन के अनुसार ई.प. दूसरी शताब्दी के दूसरे हिस्से में हुआ था। यह घटना प्रेरितों के काम 1 से 12 अध्यायों के बीच ई0 सन् 36 और ई0 सन् 44 में हुई। यह सम्भव है कि इन वर्षों के दौरान, प्रेरित पतरस ने एक या उससे अधिक बार रोम की यात्रा की होगी ताकि वह रोम में वहां पहले से बसे मसीहीयों के बीच में मण्डली स्थापित कर सके। ई.प. सन 36

में, पतरस, नवदीक्षित पौलुस से मिलने के लिए यरूशलेम में गया था (प्रेरितों. 9:26-28, गलातियों 1:18)। ई.प. सन् 40 में, पतरस ने पहली बार कैसरिया में अन्यजातियों के बीच प्रचार किया (प्रेरितों. 10:1-48)। यह कैसर क्लाउदियुस (प्रेरितों. 11:28) और राजा हेरोदेस (प्रेरितों. 12:1)के राज्य के शुरू होने से पहले था, जिसने क्लाउदियुस से यहूदियों पर अधिकार लिया था। 41ई.प. से यरूशलेम में यहूदियों का रवैया प्रेरितों के विरोध में बुरी तरह से बदल गया था। 44 ई.प. में पतरस फिर से यरूशलेम में आया जब हेरोदेस के द्वारा पतरस को बंदी बनाया गया और जेल में डाल दिया गया और मण्डली ने उसके लिए मरकुस की माँ के घर में प्रार्थना की और आलौकिक हस्तक्षेप के बाद जब उसे रिहा कर दिया गया, तब पतरस दूसरी जगह के लिए चला गया (प्रेरितों. 12:1-17)। क्योंकि बहुत से मसीही उनके घर में इकट्ठे हुए थे, ऐसा लगता है कि मरकुस की जान पहचान दूसरे प्रेरितों और यीशु मसीह के आरम्भिक चेलों के साथ भी थी।

(3) मरकुस की सेवकाई।

आरम्भिक कलीसिया के फ़ादरों की गवाहियों के अनुसार, मरकुस ने पतरस के साथ रोम में सेवा की। यह लगभग ई0 सन् 44 में हुआ होगा जब प्रेरित पतरस यरूशलेम को छोड़कर दूसरे स्थान के लिए चला गया था।

ई0 सन् 300 में फ़ादर ईयुसबियस ने लिखा, "पतरस के चेले और अनुवादक मरकुस ने उन्हें खुद लिखित रूप में वे दस्तावेज दिये थे (मरकुस का सुसमाचार) जिन्हें पतरस द्वारा प्रचार किया गया था।" सन् 190 में अलेक्जेंड्रिया के फ़ादर क्लेमेंट ने लिखा कि "मरकुस रचित सुसमाचार को लिखने का अवसर निम्नलिखित थाः पतरस ने सार्वजनिक रूप से रोम में प्रचार किया.... मरकुस लम्बे समय तक उसके साथ साथ रहा और जो कुछ उसने सुना था उसे याद रखा, जो कुछ पतरस ने कहा था, वहाँ उपस्थित बहुत से लोगों ने उससे आग्रह किया कि वह उन बातों को लिखे जो बातें उसने पतरस से सुनी हैं। उसने वैसा ही किया और उसने सुनने की इच्छा रखने वाले लोगों को वह सुसमाचार सुना दिया। जब पतरस को यह पता चला तब उसने इसके विषय में न तो मना किया और न तो उसने इस बात को बढ़ावा दिया।"

कलीसिया के फादर पापीया, जो प्रेरित यूहन्ना के चेले थे, उन्होंने सन् 115 में लिखा, "मरकुस पतरस का अनुवादक बना और उसने उन सारी बातों को सही रूप से लिखा... जो उसने प्रभु से सुनी और जो कुछ उसे याद रहीं... मरकुस ने सावधानी के साथ ध्यान देकर सुना और लिखा ताकि कुछ भी छूट न जाए और कुछ अतिरिक्त न जुड़ जाए।" प्राचीन इतिहासकारों गवाहियों और कही बातों का इनकार करने का कोई कारण नहीं है कि मरकुस ने इस सुसमाचार को लिखा है और यह रोम में पतरस की शिक्षाओं और प्रचार पर पूर्णतः आधारित है। मरकुस ने इस सुमासमाचार को लगभग सन् 44-46 में रोम में रोमी लोगों के लिए लिखा।

(4) दूसरे मसीहियों की सेवकाई।

लोगों ने रोमी साम्राज्य के सभी हिस्सों में सड़को और कार्गो जहाजों के नेटवर्क के माध्यम से बड़े पैमाने पर यात्रा की जो हर वर्ष मार्च में होती और नवम्बर मध्य तक चलती थी। नया नियम बहुत-सी यात्राओं को दिखाता हैः प्रिस्किल्ला और अक्विला ने अपने जीवन के अलग-अलग समय में पोन्टस से (एशिया द्वीप) रोम की यात्रा की, रोम से कुरिन्थ (प्रेरितों. 18:2) कुरिन्थ से इफिसुस (प्रेरितों 18:18-19; 1कुरिन्थियों 16:19) रोम से इफिसुस (2तीमुथियुस 4:19) की ।

और लूका तीमुथियुस तीतुस और स्वयं पौलुस ने भी बड़े पैमाने पर यात्राएं की (2कुरिन्थियों 11:25-26)। रोम और उसके सभी प्रांतों के बीच निरन्तर यातायात मौजूद था और लोगों ने वहां बहुत यात्राएं की। मिशन विचारा धारा रखने वाली कलीसिया जो अन्ताकिया (सीरिया) में थी उनके पास रोम से यात्रा करने वाले लोग निश्चित रूप से आते-जाते रहते होंगे जो सन्देश को फैला सकते और इस तरह रोम में मौजूदा कलीसिया को मज़बूत कर सकते थे। इसी प्रकार से फिलिप्पी की कलीसिया, कुरिन्थ और इफिसुस की कलीसिया ने भी अच्छी तरह से सहयोग किया होगा, क्योंकि इन महान शहरों और रोम के बीच संचार व्यवस्था निरन्तर बनी हुई थी।

पौलुस ने रोमियों 1:8 में लिखा कि रोम के विश्वासियों के विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही थी। इसलिए रोम की कलीसिया काफी समय तक बनी रही होगी। रोमी लेखक, सुतोनियस (विटा क्लोडि में 15:4, सन् 75-160) ने लिखा, जबकि "चरेस्टुस" को भड़काने के द्वारा यहूदी लोग निरन्तर गड़बड़ी फैला रहे थे, इसलिए क्लोउडियस ने उन्हें रोम से बाहर निकाल दिया।" वह उन यहूदियों के बीच झगड़े का जिक्र कर रहे थे जो यहूदी मसीही बन गये थे और यहूदी जो नये विश्वास का विरोध करते थे। यह सन् 49 में हुआ, इस तरह से सम्भावना है कि अक्विला और प्रिस्किल्ला भी सन् 49 में रोम से कुरिन्थ में आने से पहले मसीही बनें होंगे। निष्कर्ष यह है कि रोम में मण्डली सम्भवतः मुख्य रूप से सामान्य मसीहियों की गवाही के कारण अपने अस्तित्व में आई थी।

(5) पौलुस की सेवकाई।

सन् 47 से 57 के बीच में पौलुस द्वारा की गयी पहली तीन मिशनरी यात्राओं के दौरान, पौलुस ने रोम की मण्डली के विश्वासियों के साथ जान पहिचान बना ली थी (रोमियों 16:3-15)। तौभी, वह खुद सन् 60 में पहली बार एक कैदी के रूप में रोम आया था जब उसने रोम के कैसर से इस मामले में सुनवाई करने की अपील की थी (रोमियों 25:1-12)। फिर भी रोम में पौलुस कैद से ही प्रभावशाली ढंग सुसमाचार की घोषणा कर रहा था इस वजह से पूरे महल के सुरक्षा कर्मियों को यह पता चल गया था कि पौलुस अपराध के लिए नहीं बल्कि मसीही होने के कारण कैद किया गया था (प्रेरितों. 28 और फिलिप्पियों 1:12-14) रोम की कैद से पौलुस ने कुलुस्सियों, फिलेमोन, इफिसियों और फिलिप्पियों को सन् 60-61 में पत्रियाँ लिखीं। अन्ततः रोम में दूसरी बार जेल में डाले जाने के समय पौलुस ने तीमुथियुस की दूसरी पत्री लिखी जो उसकी सन् 64/65 में आखरी पत्री थी। पतरस उस समय रोम में नहीं था जब पौलुस रोम में था तो अन्यथा वह पतरस के बारें में जरूर लिखता।

(6) रोम में प्रेरितों की सेवकाई के बारें में मसीही धारणा ।

जिस समय में प्रेरित पौलुस ने रोम में सन् 61 से 64 के बीच अपने दो बार कारावास के दौरान यात्रा की, उसी बीच प्रेरित पतरस और मरकुस भी रोम में थे (1पतरस 5:13)। पतरस ने अपनी पत्री सन् 62-63 में रोम से और उसकी दूसरी पत्री भी लगभग सन् 64 में रोम से ही लिखी। चौथी शताब्दी में लैटिन फादर, एम्ब्रोसियास्टर ने रोम पर अपने व्याख्यात्मक विवरण में लिखा कि रोम में पायी जाने वाली कलीसिया प्रेरितों के द्वारा स्थापित नहीं की गई थी, लेकिन कुछ यहूदी मसीहियों द्वारा स्थापित की गयी थी जिन्होंने मण्डली पर अपने "यहूदी मत के रूप" को थोप दिया था (इस कथन की तुलना प्रेरितों के काम 15:1 और 21:24 से करें)। रोम में मण्डली के ऊपर सन् 42 से 67 के बीच 25 वर्ष की अवधि में पतरस प्रेरित को बिशप के रूप में ठहराये जाने का दावा बहुत संदिग्ध है।

क्योंकि अगर ऐसा होता तो प्रेरित पौलुस ने रोमियों की पत्री में और लूका ने भी अपनी पुस्तक प्रेरितों के काम में इतने महत्वपूर्ण तथ्य को छोड़ा नहीं होता![1] इसके, अलावा बिशप केवल दूसरी शताब्दी के दौरान अस्तित्व में आए।

4. रोम में कलीसिया की स्थिति।

रोम की कलीसिया में अधिकांश गैर यहूदी धर्मान्तरित लोग शामिल थे और अधिकांश यहूदी धर्मान्तरित लोग शामिल थे (रोमियों 1:5-6,13, 11:13, 15:9-18)। इस कारण कलीसिया के भीतर तनाव पैदा हो गया।

(1) प्रेरित पौलुस ने आमतौर पर यहूदियों और यहूदी धर्म के धर्मान्तरित लोगों द्वारा आयोजित कुछ विचारों का सामना किया।

यहूदी लोग विश्वास करते थे कि अब्राहम के शारीरिक वशंज होना, खतना कराना और व्यवस्था को मानना ही परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है। व्यवस्था के यहूदी धार्मिक शिक्षकों ने सिखाया कि "परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी कि वह उसके वंशजों को अब्राहम धार्मिकता के आधार पर बचाएगा फिर चाहे वे कितने भी ईश्वर रहित और पापी क्यों न हों।" उन्होंने यह भी सिखाया की "जिसका खतना हुआ है वह व्यक्ति कभी नरक नहीं जाएगा" और "सारे इस्राएली अनन्त जीवन के भागी होंगे।" यहूदियों का विश्वास है कि मसीह के राज्य की आशीषें यहूदियों और जो यहूदी धर्म को स्वीकार करता है उन्हीं तक सीमित रहेंगी।

हांलाकि, इस राज्य में एक अन्तर होगा। इस राज्य में यहूदी लोग गैर-यहूदी से उच्च होंगे। जो धर्मशासित परमेश्वर का राज्य है उसकी सारी आशीषों के साथ सिर्फ इस्राएल का होगा (इस प्रकार, "प्रथम श्रेणी के यहूदी")! अन्यजाति (गैर-यहूदी) केवल यहूदी बनकर इस राज्य में एक अधीनस्थ स्थान प्राप्त कर सकते हैं (इस प्रकार, "यहूदी धर्म अपनाने वाले द्वितीय श्रेणी के यहूदी")।

यहूदियों का विश्वास था कि यहूदी होने के नाते वे अन्यजातियों की सरकारों के अधिकार के लिए हर कर्तव्य से आज़ाद हैं। उन्हें इन गैर यहूदी सरकारों को कर का भुगतान करने पर भी सन्देह था और वे अन्यजातियों को तुच्छ जाना करते थे! इसके कारण निरन्तर यहूदी वर्ग के अन्दर विद्रोह उत्पन्न हुआ और परिणामस्वरुप रोम से यहूदियों का सफाया हो गया और अन्त में 70ईस्वी में यरुशलेम और मन्दिर का विनाश हो गया।

(2) पौलुस प्रेरित ने अन्यजाति मसीहियों को यहूदी मसीहियों के पछतावे को न मानने के लिए फटकार लगाई।

"कमज़ोर मसीही " यहूदियों और यहूदी धर्म अपनाने वालों के बीच में से आये लोग थे। वे अभी भी व्यवस्था को मानते थे (ख़तना करना, सब्त के दिन के नियम, यहूदी त्यौहार के और यहूदी भोजन के नियमों को मानना)। मज़बूत विश्वासी आमतौर पर अन्यजातियों (रोमियों) में से निकले हुए विश्वासी थे जो यहूदियों की औपचारिक विधियों और व्यवस्थाओं से परिचित नहीं थे। पौलुस ने मज़बूत विश्वासियों से "कमज़ोर विश्वासियों" को अपने विचारों के द्वारा *(तुच्छ न समझें) नीचा न दिखाने* की आज्ञा दी (आमतौर पर यहूदियों से मसीह पर विश्वास करने वाले मसीही)। उसने कमज़ोर विश्वासियों

को भी आज्ञा दी कि वे विश्वास में दृढ़ मसीहियों का न्याय उनकी व्याख्या के अनुसार न करें (रोमियों 14:1 से 15:13)।

(3) प्रेरित पौलुस ने यह सिखाया कि गैर-यहूदियों और यहूदियों दोनों के उद्धार के लिए एक ही सुसमाचार है।

गैर यहूदियों और यहूदी दोनों ने पाप किया है और परमेश्वर की धार्मिकता के सिद्ध मानक (स्तर) और उनके जीवन के लिए परमेश्वर के लक्ष्य से रहित हो गये हैं (अर्थात् परमेश्वर की महिमामय चरित्र की विशेषताओं का अधिकारी होना)(रोमियों 3:23)। पुराने और नये नियम में अन्यजाति और यहूदियों को एक तरह से धर्मी (बचाया, उद्धार) ठहराये गये हैं, अर्थात् व्यवस्था के बिना यीशु मसीह पर और उसके सम्पूर्ण उद्धार के किए हुए कार्य पर विश्वास करने द्वारा (रोमियों 3:24-25,28)। जितने गैर यहूदी और यहूदी यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे "सच में अब्राहम की सन्तान हैं" (रोमियों 4:11-12)। संक्षेप में, "अन्यजातियों और यहूदियों में कोई भिन्नता नहीं है।[2] हर एक व्यक्ति जो प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पायेगा" (रोमियों 10:12-13)।

(4) पुराने नियम और नये नियम में कलीसिया को एक ही नाम से पुकारा जाता था।

- परमेश्वर का पहलौठा (निर्गमन 4:22, यिर्मयाह 31:9, इब्रानियों 12:23)
- परमेश्वर के पुत्र एवं पुत्रियाँ (यशायाह 43:6-7, 2कुरिन्थियों 6:18)
- यरूशलेम शहर को (परमेश्वर के लोगों का प्रतीक) स्त्री, दुल्हिन, पत्नी कहा गया है (यशायाह 54:1,5-6, प्रकाशितवाक्य 21:9-10)
- बारह गोत्र (उत्पत्ति 49:28, याकूब 1:1, प्रकाशितवाक्य 7:4, 21:12)
- याजकों का राज्य (निर्गमन 19:6, 1पतरस 2:9, प्रकाशितवाक्य 1:6)
- पवित्र लोग (निर्गमन 19:6, 1पतरस 2:9)
- चुने हुए लोग (व्यवस्थाविवरण 7:6, 1पतरस 2:9, तीतुस 2:14)(चुने हुए, विशेष लोग)
- परमेश्वर का निज धन (निर्गमन 19:5, व्यवस्थाविरण 7:6), "ऐसे लोग जो हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के स्वयं के लोग हैं" (तीतुस 2:14)। "परमेश्वर के निज लोग"(1पतरस 2:9)
- परमेश्वर की वाचा के लोग (लैव्यव्यवस्था 26:12, 2कुरिन्थियों 6:16)
- एक बिखरा हुआ राष्ट्र, भटकते हुए लोग, फैलाव में बिखर गये, अजनबी (व्यवस्थाविवरण 30:1, भजन. 105:10-13, यहेजकेल 12:15, एस्तेर 3:8, 1पतरस 1:1)
- परमेश्वर की कटनी का पहला फल (यिर्मयाह 2:3, याकूब 1:18)।
- भेड़ (एक झुण्ड) इस्राएल के भेड़ का भेड़शाला और दूसरे राष्ट्रों की भेड़ों के लिए भी भेड़शाला (यहेजकेल 34, यूहन्ना 10:16)
- इस्राएल (1शमूएल 7:23, गलातियों 6:14-16)
- यहूदी (जकर्याह 8:22-23, रोमियों 2:28-29)
- सिय्योन (परमेश्वर के लोगों का प्रतीक भी है)(यशायाह 51:16, यशायाह 52:7, इब्रानियों 12:22-24)

- वर्तमान यरूशलेम (यह व्यवस्था की गुलामी से नीचे था) और स्वर्गीय यरूशलेम जो ऊपर (गलातियों 4:25-26), जो स्वर्गीय यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:2), नया यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:2), पवित्र यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:10)
- परमेश्वर का मन्दिर (जो परमेश्वर के लोगों का प्रतीक भी है)(2कुरिन्थियों 6:16)
- यहूदी और गैर-यहूदी विश्वासी जो एक साथ वारिस है (परमेश्वर के लोग), वे एक देह के एक साथ सदस्य हैं, और मसीह यीशु में जो वायदा है उसे एक साथ साझा करते हैं (इफिसियों 3:6, 2कुरिन्थियों 1:20)
- मसीह (अभिषिक्त लोग) (इब्रानी:मशीची; यूनानी:क्रिस्टोई) (भजन. 105:15) (प्रेरितों.1:26)(क्रिस्टिआनोस) जो संसार में गैर-मसीही के बीच में रहते हैं।

यहूदी और गैर-यहूदी जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे एक साथ एक देह का निर्माण करते हैं जो परमेश्वर के लोगों की है, यह निम्नलिखित प्रतीकों द्वारा दर्शाया गया है:

- एक झुण्ड (यूहन्ना 10:16)
- परमेश्वर की संतानों के साथ एक परिवार (गलातियों 3:26-29)
- एक नया मनुष्य, परमेश्वर का घर, आत्मा में परमेश्वर का निवास (इफिसियों 2:11-22)
- एक देह (1कुरिन्थियों 12:13, इफिसियों 3:6)
- एक अंजीर का पेड़ (यिर्मयाह 11:16-17, रोमियों 11:17-24)
- परमेश्वर के चुने हुए और पवित्र लोग (1पतरस 2:9-10)।
- एक नया यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:9-14, इब्रानियों 12:22-24) यहूदी और अन्यजातियों के लिए (गलातियों 4:21-31)

इसलिए

- परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों को (इस्राएल) *अन्त या प्रतिस्थापित नहीं किया गया* था।
- लेकिन उच्च स्तर पर *जारी रखा* गया जिसमें "छाया" "वास्तविकता" बन गई (कुलुस्सियों 2:17, इब्रानियों 9:7-10)
- और संसार के सभी राष्ट्रों को मसीह में विश्वासियों के साथ शामिल करने के लिए *बढ़ाया (विस्तारित)* किया गया था।
- दोनों यहूदी और गैर-यहूदी मिलकर परमेश्वर के लोगों को पूर्ण समान शर्तों पर बनाते हैं। (1कुरिन्थियों 12:13, इफिसियों 2:11-22, 3:2-6)।

ग. रोमियों की पत्री को लिखने की तारीख और स्थान

1. रोमियों की पत्री को लिखने की तारीख और स्थान।

उसके तीसरी मिशनरी यात्रा के अन्त में पौलुस ने मकिदुनिया से कुरिन्थ कि यात्रा की (प्रेरितों के काम 20:2-3)। यह पौलुस की कुरिन्थ में तीसरी यात्रा थी। वह ई.56 की सदी से पहले कुरिन्थ में आ गया था और तीन महीने कुरिन्थ में ही रहा। सारी बातें मिलकर कुरिन्थ की ओर इंगित करती हैं

कि पौलुस ने रोम के लोगों के लिए यहीं से रोमियों की पत्री को लिखा था। पौलुस को यरूशलेम के गरीब मसीहियों के लिए इक्ट्ठा किया गया चन्दा भी मकिदुनिया और अखाया से प्राप्त हुआ था और यह दर्शाता है कि वह उस क्षेत्र में रहा होगा (रोमियों 15:25-26)। वह गयुस का इरास्तुस को अपना अभिवादन भेजता है (रोमियों 16:23) जो कुरिन्थ में थे (1कुरिन्थियों 4:20) पौलुस अपने अभिवादन में किंख्रिया का भी उल्लेख करता है (रोमियों 16:1) जो कुरिन्थ का पूर्वी भाग था।

2. रोमियों की पत्री को लिखने की तिथि।

क्योंकि पौलुस यरूशलेम में पिन्तेकुस्त से पहले पहुंचना चाहता था (प्रेरितों. 20:16), इसलिए उसने रोमियों की पत्री को कुरिन्थ से सर्दी के नज़दीक आने या 57ई. में वसंत की शुरूआत में लिखी होगी। यह आम तौर पर माना जाता है कि फीबे ने पौलुस की इस पत्री को कुरिन्थ से रोम तक पहुंचाया (रोमियों 16:1-2)। उसका उद्देश्य यह सिखाना था कि, "धार्मिकता अनुग्रह के द्वारा विश्वास से आती है"। रोमियों 15:23-24 में, पौलुस ने कहा कि रोमी साम्राज्य के पूर्वी हिस्से में उनका मिशनरी कार्य पूरा होने के करीब था और वह रोमी साम्राज्य के पश्चिमी भाग में मिशनरी कार्य शुरू करने की योजना बना रहा था, विशेष रूप से स्वयं स्पेन और रोम में । पौलुस ने महसूस किया कि *अब वह समय आ गया है* (रोमियों 1:10)।

इसलिए पौलुस ने अपनी रोमियों की पत्री को 57 ई.प. अपनी तीसरी मिश्नरी यात्रा के अन्त में लिखा।

3. पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के सम्बन्ध में तारीखें।

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के समय का अनुमान फेलिक्स और फेस्टस के शासनकाल के द्वारा निर्धारित किया जा सकता है, जो यहूदिया के गर्वनर थे। फेलिक्स 52-29 ई. के बीच यहूदियों का शासक था और फेस्टस 59-61 ई. तक का शासक था। शासक बनने से पहले ही पौलुस 2 वर्ष के लिए बन्दी बनाया गया था (प्रेरितों. 24:27) । हालाँकि, पौलुस 57-59 ईस्वी तक कैसरिया में बन्दी था इसलिए तीसरी मिशनरी यात्रा का समय सन् 53-57 ई. के बीच का रहा होगा।

घ. रोमियों की पत्री का उद्देश्य।

1. पौलुस की इच्छा है कि वह व्यक्तिगत रूप से रोम में सेवा करें।

रोमियों 15:23 के अनुसार पौलुस रोमी साम्राज्य के पूर्वी भाग में अपनी सेवकाई को पूरा करते के करीब था, और रोमी साम्राज्य के पश्चिमी भाग में अपनी सेवकाई का आरम्भ करना चाहता था विशेषकर रोम और स्पेन में। पौलुस के मन में रोम में सेवकाई को लेकर विनम्र विचार थे और उसने कहा कि वह न केवल रोमी लोगों के बीच कटनी काटना चाहता है, परन्तु उनके विश्वास से व्यक्तिगत प्रोत्साहन भी प्राप्त करना चाहता है। फिर भी, वह रोम में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उत्सुक था (रोमियों 1:8-15)। वह निश्चित नहीं था कि वह रोम की यात्रा कर पायेगा कि नहीं, क्योंकि उसे सुसमाचार सुनाने के लिए पहले भी रोका गया था, और वह विशेष रूप से यरूशलेम में यहूदियों के विरोध के बारें में बहुत अच्छे से जानता था (प्रेरितों के काम 20:3,22-23)।

2. पौलुस ने रोम में मसीहियों को यहूदियों के हमलों से खुद की रक्षा करने में मदद की।

इस बात का अहसा कि सम्भवतः वह अपने भाईयों को रोम में कभी नहीं देख पाये, इसीलिए उसने प्रकार की पत्री को लिखा। इस पत्री की शैली इस बात कि भी याद दिलाती है कि पौलुस ने अपनी मिशनरी यात्राओं के दौरान यहूदी अविश्वासियों के साथ तर्क वितर्क भी किये थे (रोमियों 4:1, 6:1, 7:7, 8:31, 9:14,30)। पौलुस जानता था कि रोम की कलीसिया अन्यजाति लोगों के एक बहुसंख्यकों के बीच रहती है और वह ऐसे विरोधियों के खिलाफ मसीह विश्वास की रक्षा करने में मदद करना चाहता था और साथ ही साथ वह उन्हें मसीह के लिए जीतने में कलीसिया की मदद करना चाहता था।

रोमियों की पत्री वास्तव में मसीह सिद्धान्त की एक पूर्ण तस्वीर नहीं है। लेकिन पौलुस जानता था कि रोम में कलीसिया को क्या चाहिए। पवित्र आत्मा की अगुवाई में, उसने लिखाः

- रोमियों अध्याय 1–8 किस तरह से पापियों को बचाया जाता है। संसार में सभी मसीहियों को इस मसीही सन्देश की अर्थात इस मौलिक शिक्षा की आवश्यकता है।
- रोमियों अध्याय 9 से 11 यीशु मसीह की पहली आनन्द के बारें में इस्राएलियों (यहूदियों) के बारे में।
- रोमियों अध्याय 12–16 व्यावहारिक मसीह जीवन के बारे में, और अध्याय 14 में विशेष रूप से व्यवस्था के कुछ पहलुओं के बारे में।[3]

- **3. पौलुस ने रोम के मसीहियों को प्रेरित किया कि वे मसीह की तरह कैसे व्यवहार करें।**

रोम, रोमी साम्राज्य की राजधानी था और एक बड़ा शहर था जहां रहने वाले कई राष्ट्रों के नागरिक थे। पौलुस ने मसीहियों को प्रेरित किया कि वह स्वयं एक–दूसरे के साथ, अपने शत्रुओं और रोमी सरकार के साथ कैसा व्यवहार रखें। उन्होंने यह भी सिखाया कि कैसे मज़बूत और कमज़ोर मसीहियों को एक–दूसरे से सम्बन्ध रखना चाहिए।

4. पौलुस ने स्पेन में अपनी मिशनरी यात्रा के लिए रोम के मसीहियों के सहयोग की इच्छा की थी।

रोमियों 15:24 में, उन्होंने लिखा कि उन्हें उम्मीद थी कि रोम की मण्डली उन्हें स्पेन की मिशनरी यात्रा में मदद करेगी।

क्योंकि पौलुस के पास रोमियों की पत्री को लिखने के कई उद्देश्य थे इसलिए कुरिन्थियों 9:22 और 10:31 के अनुसार कोई भी उनके उद्देश्य को अपने शब्दों साराशिंत कर सकता है, “मैं सब मनुष्यों के लिये सबकुछ बना दूँ कि किसी न किसी रीति से कई का उद्धार कराऊं और जो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो सबकुछ परमेश्वर की महीमा के लिए करो। ”

---

[3] व्यवस्था को इब्रानी भाषा में “तोरह” और अरबी में “शरीया” कहा जाता है।

ङ. रोम का विभाजन

रोमियों की पत्री को शीर्षक दिया जा सकता हैः

"रोमियों – परमेश्वर की धार्मिकता के बारे में सुसमाचार"

पत्री यीशु मसीह को चित्रित करती है जो परमेश्वर के सामने मसीहियों की धार्मिकता है।

रोमियों की पत्री का प्रसंग रोमियों 1:16-17 में लिखा गया है, "इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये परमेश्वर की सामर्थ है कि 'विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा'।"

1. सैद्धान्तिक भागः परमेश्वर की धार्मिकता पर विश्वास करें (रोमियों 1-11 अध्याय)।

इस भाग को चार खण्डों में विभाजित किया जा सकता हैः

(1) पहला खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता।

यह रोमियों अध्याय 1:1 से 3:20 तक लिखा गया है।

- रोमियों अध्याय 1 में, अन्यजाति के सम्पूर्ण पापों की तरफ ईशारा करना, पौलुस दिखाता है कि अन्यजाति को वास्तव में परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।
- रोमियों अध्याय 2 में, यहूदियों के पापों की तरफ ईशारा करता है पौलुस दिखाता है कि यहूदियों को भी वास्तव में परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।
- रोमियों अध्याय 3:1-20 में, वह निष्कर्ष निकालता है कि पाप और पाप की निंदा सार्वभौमिक है। पवित्र मानव धार्मिकता (चाहे व्यवस्था के धार्मिक कार्यों से अर्जित की गई हो या चाहे मनुष्य के अच्छे कार्यों से) संसार में मौजूद नहीं है!

(2) दूसरा खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता का तरीका।

यह रोमियों अध्याय 3:21 से 4:25 तक लिखा गया है।

- रोमियों अध्याय 3:21-31 में। पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर ने क्रूस पर यीशु मसीह द्वारा किए गए प्रायश्चित के बलिदान में अपनी धार्मिकता प्रकट की है। कोई भी यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त कर सकता है।
- रोमियों अध्याय 4 में। पौलुस यह साबित करता है कि विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता पुराने नियम के समय भी उद्धार का मार्ग था।

(3) तीसरा खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता के प्रभाव।

यह रोमियों 5 से 8 अध्याय में लिखा हुआ है।

- रोमियों 5 अध्याय में। परमेश्वर की धार्मिकता शान्ति और पूर्ण उद्धार के आशवासन जैसे फूल को पैदा करती है।
- रोमियों 6 अध्याय में। परमेश्वर की धार्मिकता पक्के तौर पर स्वेच्छा से पवित्र जीवन जीने से जुड़ी है।

- रोमियों 7 अध्याय में। मसीहियों को "यहूदी धर्म गुरुओं के द्वारा अनुवादित" व्यवस्था से मुक्त रखा गया है (रोमियों 7:1-6) कि हर एक पापी परमेश्वर के नैतिक व्यवस्था के कार्यो का अनुभव करता रहता है (रोमियों 7:7-13) और यह कि प्रत्येक मसीही अभी भी अपने वर्तमान शरीर में पाप की व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष का अनुभव कर रहा है (रोमियों 7:14-25)।
- रोमियों 8 अध्याय में। मसीही व्यक्ति पवित्र आत्मा के कार्य का अनुभव करता है। (रोमियों 8:1-27) और वह सभी में (पृथ्वी पर होने वाली सभी घटनाएं) एक विजेता से अधिक है उसके माध्यम से जो उससे प्रेम करता है (रोमियों 8:28-39)।

(4) चौथा खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता का देनेवाला।

यह रोमियों 9 से 11 अध्याय में लिखा हुआ हैः

- रोमियों अध्याय 9 में इस्राएल के अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के बावजूद, पौलुस परमेश्वर की धार्मिकता और विश्वासयोग्यता का संकेत देता है। परमेश्वर के द्वारा इस्राएल के अविश्वास और उसके परिणाम स्वरुप परमेश्वर द्वारा किये जा रहे तिरस्कार अन्तिम नहीं थाः हमेशा सच्चे और विश्वासयोग्य विश्वासियों का अवशेष बाकी है। (बाइबल के परमेश्वर और उसके मसीहा (मसीह में)(भजन संहिता 2:2)।
- रोमियों अध्याय 10 में पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर की धार्मिकता (केवल) यीशु मसीह में उपलब्ध है और (केवल) उन सभी को भी प्राप्त होती है जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं। भले ही वह यहूदी हो या गैर-यहूदी (अन्यजाति)। इस्राएल का अविश्वास, अनाज्ञाकारिता, परमेश्वर द्वारा अस्वीकृति मनमानी नहीं थाः परमेश्वर का निमन्त्रण (धर्मी ठहरना) संसार के सभी देशों के लिए दे दिया गया है। यह आज भी यहूदियों के लिए इतना ही विस्तृत है।
- रोमियों अध्याय 11 में बड़ी संख्या में गैर-यहूदियों (अन्यजातियों) को बचाने के लिये परमेश्वर ने इस्राएल को *आंशिक* रूप से सख्त किया और वह बड़ी संख्या में यहूदियों को बचाने के लिए अन्यजातियों के उद्धार का उपयोग करता है (जो कि इस्राएल है)(रोमियों 11:11-24)। इस्राएल का अविश्वास और उसके परिणाम स्वरुप अस्वीकृति अंतिम नहीं थीः परमेश्वर न केवल अन्यजातियों में से पूर्णता (चुने हुओं की पूर्ण संख्या) को भी बचाएंगे, बल्कि यहूदियों के बीच पूर्णता (चुने हुओं की पूर्ण संख्या) को भी बचाएंगे इसका मतलब यह है कि वे सभी लोग जिन्हें परमेश्वर ने *संसार की उत्पत्ति के पहले* से चुना हुआ है (रोमियों 8:29; इफिसियों 1:4; 2थिस्सलुनीकियों 2:13; 2तीमुथियुस 2:9ख) *वह अपने संसार के इतिहास के दौरान* निश्चित रूप से यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे (रोमियों 8:30; 11:25-32; 2थिस्सलुनीकियों 2:14; 2तीमुथियुस 2:9क,10)।

2. व्यावहारिक भागः परमेश्वर की धार्मिकता अभ्यास करें (रोमियों अध्याय 12-16)।

यह हिस्सा दो खण्डों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) पहला खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता का दृश्य प्रदर्शन।

यह रोमियों अध्याय 12:1 से 15:13 में लिखा हुआ है।

- रोमियों अध्याय 12 सिखाता है कि परमेश्वर के आदर के साथ मसीह व्यवहार, अन्य मसीही और विरोधियों के साथ कैसा होना चाहिए।
- रोमियों अध्याय 13 सरकार पड़ोसी और मसीह के सम्बन्ध में मसीह के व्यवहार को सिखाता है।
- रोमियों अध्याय 14:1 से 15:13 तक एक दूसरे के प्रति मज़बूत और कमज़ोर विश्वासियों के व्यवहार को सिखाता है।

(2) दूसरा खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता के सहकर्मी।

यह रोमियों अध्याय 15:14 से 16:27 में लिखा हुआ है।

- रोमियों अध्याय 15:14-33 पौलुस की अन्यजाति सेवकाई, नीति और योजनाओं का वर्णन करता है।
- रोमियों अध्याय 16 परमेश्वर की धार्मिकता में अन्य सहकर्मी का वर्णन करता है।

च. रोमियों की पत्री के मुख्य सन्देश जो रोमियों के लिए हैं

1. परमेश्वर अपने इतिहास को सभी लोगों पर प्रकट करता है।

परमेश्वर स्वयं को सृष्टि के द्वारा प्रकट करता है। वह अपने अस्तित्व या वास्तविकता और अपनी शक्ति को प्रकट करता है जो सृष्टि में देखी जा सकती है (रोमियों 1:19-20)। वह प्रत्येक मनुष्य के हृदय और विवेक में अपने नैतिक व्यवस्था को प्रकट करता है (रोमियों 2:14-15)। परमेश्वर ने लोगों के पापों के बारें में अपने न्याय को प्रकट किया है (उत्पत्ति 6:5,11-13), लोगों की उनकी सम्भावित देखभाल के माध्यम से (प्रेरितों के काम 14:17 और 17:24-28) और सुसमाचार का प्रचार करने के द्वारा (मत्ती 24:14)। क्योंकि परमेश्वर ने अपने अस्तित्व का खुलासा किया है और सब लोगों के लिए हैं। परमेश्वर को ना चाहने का एक भी व्यक्ति कोई बहाना नहीं बना सकेगा (रोमियों 3:11,19)।

2. इतिहास में सभी लोगों ने पाप किया है और उन्हें परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।

"इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। "पाप करने का अर्थ है परमेश्वर के आदर्श से परिपूर्ण होना और अपने जीवन के लिए परमेश्वर के लक्ष्य से चूक जाना जो परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति और विशेषताओं को व्यक्त करने के लिए है। इसलिए रोमियों 3:10-11 के अनुसार, एक राष्ट्र और दूसरे राष्ट्र के बीच कोई अन्तर नहीं।

हालांकि, कुछ लोग *अपनी नज़र में धर्मी* हो सकते हैं *और सोचते हैं कि स्वर्ग जाएंगे* क्योंकि वे धार्मिक व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं,[4] बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि के स्वभाव से एक भी मनुष्य धर्मी नहीं है। हालांकि लोग समझते हैं कि संसार में समस्याएँ हैं ऐसा कोई भी नहीं है जो वास्तव में परमेश्वर की दृष्टि में अपनी खेदजनक स्थिती को समझता हो। यद्यपि लोग वैज्ञानिक और दार्शनिक ज्ञान और उत्तर चाहते हैं, कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अपनी सामर्थ से बाइबल के परमेश्वर की खोज करता हो, जो समझ का और उद्धार का स्रोत है।

क्योंकि इतिहास में सभी लोगों ने पाप किया, इतिहास में सभी लोगों को उद्धार की आवश्यकता है। इसका अर्थ यह है कि वे उस धार्मिकता से वंचित रह गये जिसकी बाइबल के परमेश्वर को धर्मी ठहराये (उद्धार देने लिए) जाने के लिए आवश्यकता पड़ती है।

यीशु द्वारा कही बातों की तुलना करें, जो कोई उस पर विश्वास नहीं करता, *वह दोषी ठहर चुका,* इसलिए कि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 3:18)। "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु *परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है"* (यूहन्ना 3:36)। "यदि तुम नहीं विश्वास करते की मैं हूँ (मैं वही हूँ जो मैं होने का दावा करता हूँ) (वह है "मैं जो हूँ सो हूँ)(निर्गमन 3:14) तो तुम *अपने पापों में मरोगे* (यूहन्ना 8:24)।

3. लोग केवल विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहरेंगे।

मूसा ने लैव्यव्यवस्था 18:5 में कहा कि जो मनुष्य परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करेगा, वह "उसके द्वारा जीवित रहेगा" यहूदियों ने सोचा कि इसका मतलब यह है कि जिसने भी व्यवस्था[5] को उत्तम से उत्तमता से मानने की कोशिश की वह धर्मी ठहरेगा और वह स्वर्ग का उत्तराधिकारी बन जायेगा।[6] इसलिए यहूदियों ने परमेश्वर की पूर्ण व्यवस्था का पालन करने का प्रयास किया ताकि अपनी धार्मिकता को स्थापित कर सकें।

सोच गलत थी! वे भूल गए कि परमेश्वर ने जो माँग की थी वह सिर्फ व्यवस्था को मानने की *कोशिश करना ही* नहीं था बल्कि बाइबल के परमेश्वर की *व्यवस्था की सिद्ध आज्ञाकारिता को पूर्ण करना था!* मानव जाति के इतिहास में कोई भी पूरी तरह से और सिद्धता से परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने में सक्षम नहीं है! हर एक परमेश्वर के सिद्ध स्तर से रहित है! रोमियों 3:19-20 कहता है "हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के अधीन है, इसलिए कि हर एक मुंह बन्द किया जाए और सारा संसार परमेश्चर के दण्ड के योग्य ठहरे क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।" याकूब ने कहा, "क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहर चुका है" (याकूब 2:10)। और पौलुस कहता है कि "इसलिए जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के अधीन है क्योंकि लिखा है कि जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता वह शापित है" (गलातियों 3:10)।

कोई भी व्यवस्था का पालन करने से धर्मी नहीं ठहराया जाएगा क्योंकि संसार के इतिहास मे कोई भी ऐसा वहीं है जिसने व्यवस्था का पूरी तरह से या सिद्धता से पालन किया है केवल प्रभु यीशु मसीह को छोड़कर (इब्रानियों 4:13)।

---

[4] धार्मिक नियम निम्न हैः (1) विश्वास करें कि परमेश्वर एक है(2)प्रतिदिन तीन बार प्रार्थना करें,(3)विशेष अवसरों पर उपवास करें (4) अपनी कमाई का दशमांस दें (5) हर वर्ष तीन बार तीर्थ यात्रा करो।

[5] "व्यवस्था" में (1) दस आज्ञाओं में दिये गये नैतिक नियम है (निर्गमन 20:1-17), (2) खतना, सबत, पवित्र स्नान और बलिदान चढ़ाना, भोजन संबंधी, दशमांस देने जैसे आनुष्ठानिक नियम शामिल हैं (3) पवित्र युद्ध, वस्त्र चढ़ाना, विवाह और तलाक, बलात्कार और चोरी आदि दण्ड संहिता से जुड़े नियम शामिल हैं। इस्राएल में धार्मिक अगुवों ने इस तरह के 613नियमों को तैयार किया और उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था में जोड़ दिया। व्यवस्था को इब्रानी भाषा में 'तोरह' और अरबी भाषा में 'शरिया' कहा जाता है।

[6] "स्वर्गलोक के वासी" होने का अथ हैः अनन्त जीवन के वारिस होना ; उद्धार पाना (रोमियों 10:2-5 को देखें)

यीशु मसीह व्यवस्था का अन्त है" (रोमियों 10:4) ताकि लोग व्यवस्था का पालन करने की कोशिश न करके, बल्कि यीशु मसीह पर विश्वास करके परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त कर सकें। वह पाप रहित था और उसने परमेश्वर की व्यवस्था की सभी मांगों को पूरा किया, जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास करता है, उसे वह मुफ्त में उपहार के रूप में *यीशु मसीह की पूर्ण सिद्ध धार्मिकता* को प्राप्त करता है।

कोई भी परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर या अच्छे काम करके *अपनी धार्मिकता* को प्राप्त नहीं कर सकता है। इसलिए रोमियों 3:8 कहता है कि "मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।"

रोमियों 4:1-5 से पता चलता है कि पुराने नियम में यह नहीं सिखाया गया कि लोग व्यवस्था के पालन करने के द्वारा धर्मी ठहराया जा सकते हैं। उत्पत्ति 15:6 कहता है "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके *लेखे* में धार्मिकता गिना गया।" दो शब्दों से बेहतर "जमा करना" है "गणना करना","मढ़ना" या "कारण बताना" हाँलाकि धार्मिक लोग व्यवस्था के कामों के बारें में दूसरे लोगों के सामने डींग मार सकते हैं, लेकिन वे कभी नहीं कर सकते। वे परमेश्वर के सामने घमण्ड नहीं कर सकते! परमेश्वर ऐसे लोगों को धर्मी नहीं ठहराता है जो स्वयं को धर्मी ठहराते हैं बल्कि केवल उन लोगों को जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं।

यीशु इस बारे में क्या कहते हैं, इसकी तुलना करें:
"मैं मार्ग हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता" (यूहन्ना 14:6, मत्ती 11:27-29)।
"अचम्भा न कर, कि मैनें तुझसे क्या कहा कि 'तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है'" (यूहन्ना 3:7)।

4. जो लोग विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये गये हैं उनका अब परमेश्वर के साथ रिश्ता कायम हो गया है।

जो व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास करता है उसका अब परमेश्वर के साथ अब पुनः रिश्ता कायम हो गया है।

- "शान्ति" शब्द का पहला अर्थ है कि आप इस बात को बहुत निश्चित है कि अतीत में आपके सभी पापों को माफ दिया गया है कि तुम परमेश्वर की दृष्टि में पूरी तरह से धर्मी हो और परमेश्वर के साथ मेल मिलाप में रहो (रोमियों 5:1-2,10)।
- "शान्ति" शब्द का दूसरा अर्थ यह है कि वर्तमान समय में सभी बुराइयों को आपकी भलाईयों के लिए परमेश्वर द्वारा अधिकृत किया जा रहा है। आपके द्वारा सहन किये गये सभी कष्ट दृढ़ता, चरित्र और आशा को उत्पन्न करते हैं (रोमियों 5:3-5, 8:28)।
- "शान्ति" शब्द का तीसरा अर्थ यह है कि संसार में भविष्य की घटनाएं कभी भी मसीहियों को परमेश्वर से अलग नहीं कर सकती है। वह पाप के खिलाफ परमेश्वर के भविष्य के क्रोध से बचा हुआ है, और कोई भी और कुछ उसे उसके लिए परमेश्वर के प्यार से अलग नहीं कर सकता है (रोमियों 5:9,21,8:37-39 तुलना यूहन्ना 10:28)।

5. हालांकि पुराने नियम की व्यवस्था किसी भी व्यक्ति को धर्मी नहीं ठहरा सकत है, लेकिन इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है।

व्यवस्था का पालन करने से किसी को भी धर्मी (उद्धार) नहीं ठहराया जा सकता (रोमियों 3:28)।

- व्यवस्था "एक दर्पण" के रूप में कार्य करती है जिसमें लोग अपने पापों को पहचानना सीखते हैं (रोमियों3:20)।
- व्यवस्था "एक आवर्धक काँच" के रूप में कार्य करती है जिससे लोग अपने विशालता और कुरूपता को देखते हैं (रोमियों 5:20)।
- व्यवस्था "एक न्यायधीश" के रूप में कार्य करती है जो सभी लोगों को *दोषी* ठहराने का कार्य करती है और उन दोषियों को परमेश्वर के प्रति जवाबदेह कर देता है (रोमियों 3:19)।
- व्यवस्था "एक स्कूल शिक्षक" के रूप में कार्य करती है जो लोगों को मसीह और मसीह की धार्मिकता कि आवश्यकता को दिखाता है (गलातियों 3:24)।
- व्यवस्था "एक मार्गदर्शक" के रूप में कार्य करती है जो लोगों को दिखाता है कि उन्हें मसीह जीवन कैसे जीना चाहिए (रोमियों 13:8-10)।
- और व्यवस्था "एक लगाम" के रूप में काम करती है जो लोगों के बीच हर तरह की दुष्टता को रोकती है (1तीमुथियुस 1:9-11)।
- लेकिन व्यवस्था "धर्मी ठहराये जाने" (उद्धार) के साधन के रूप में कभी कार्य नहीं कर सकती है।

6. धर्मी ठहराया जाना पूर्ण स्थिर रूप से पवित्रीकरण से जुड़ा हुआ है।

"धर्मी ठहराया जाने" का अर्थ है कि परमेश्वर एक विश्वासी को धर्मी *घोषित* कर देता है और उसके बाद वह उसे यीशु द्वारा किये गये क्रूस पर प्रायश्चित के आधार पर धर्मी मानकर ही व्यवहार करता है जो धार्मिकता विश्वासी को खाली हाथों से विश्वास के कारण प्राप्त होती है।

रोमियों 6 अध्याय में पवित्रीकरण शब्द की अर्थ धर्मी ठहराये जाने की प्रक्रिया से नहीं, वरन सभी के लिये एक बार में ही धर्मी ठहराये जाने की स्थिति से है। पवित्र का अर्थः बुराई से *अलग* होकर केवल परमेश्वर की दृष्टि में अच्छे काम को करने के लिए *समर्पित* होना है। मसीहीयों का रिश्ता एक बार पाप के कारण टूट गया था और उसने एक ही बार अपने आप को धार्मिकता के लिए सौंप दिया है। रोमियों 6:5-7 सिखाता है कि हर कोई जो विश्वास के द्वारा मसीह के साथ एकजुट हो गया है वह मृत्यु में एक हुआ है और निश्चित रूप से मसीह के साथ उसका पुनरुत्थान भी होगा। यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा उनके पुराने मनुष्यत्व को मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है। ताकि उसकी शारीरिक देह अब उसके पापी स्वभाव से प्रतिबंधित और नियन्त्रण में न रहे। पाप करने के लिए अनैच्छिक अनिवार्य दासता निश्चित रूप से टूट गई है। पौलुस सिखाता है कि मसीहियत का वास्तविक स्वरुप और बनावट (लक्ष्य और रूप) जीवन के नए पन का उत्पादन करना है। पौलुस सिखाता है कि मसीह के साथ इस प्रकार की संगति का स्वभाव है। यह कि किसी भी व्यक्ति के लिए मसीह की मृत्यु के लाभों में साझा करना असम्भव है उसके पुनरुत्थान के लाभों में साझा किए बिना! मसीह के पुनरुत्थान के लाभों को साझा करने का मुख्य रूप से अर्थ है पृथ्वी पर पवित्र जीवन में मसीह के अनुरुप होना और मृत्यु के बाद आत्मा और शरीर की महिमामय अमरता के जीवन में

मसीह का दूसरा अनुरुप है (रोमियों 8:11)। दोनों नए जीवन में शामिल है जो मसीह के द्वारा हमारे पास आते हैं।

एक तरफ पौलुस सिखाता है कि किसी व्यक्ति के लिए मसीह की मृत्यु में स्थायी होना असम्भव है। बिना उसके पुनरुत्थान और जीवन के अनुरुप नहीं है। मसीह की शाब्दिक मृत्यु और आत्मिक मृत्यु और मसीहियों का पुनरुत्थान दूसरी ओर है इन दोनों के बीच एक आकस्मिक सम्बन्ध भी है। जिस प्रकार मसीह का पुनरुत्थान उसकी मृत्यु का निश्चित परिणाम था, इसलिए एक मसीही का पवित्र जीवन (अर्थात्, मसीह के साथ उसका पुनरुत्थान) उसके धर्मी ठहराये जाने का निश्चित परिणाम है (अर्थात्, मसीह के साथ उसका मरना) मसीह का पुनरुत्थान मसीहियों के पवित्रीकरण का निश्चित करता है। मसीही लोग मसीह के जीवन को साझा करते है क्योंकि वह अपनी मृत्यु में भी उन्हें साझा करता है। दूसरी ओर, पौलुस सिखाता है कि मसीही लोगों के लिए मसीह के जीवन के अनुरुप होना असम्भव है मसीह की मृत्यु की पुष्टि किए बिना।

एक मसीही को धर्मी ठहराने से पहले पवित्र किया जाए, जिस प्रकार मसीह की मृत्यु उसके पुनरुत्थान से पहले हुई थी, उसी प्रकार एक मसीही व्यक्ति का धर्मी ठहरना उसके पवित्र होने से पहले होना चाहिए एक मसीही व्यक्ति मसीह की मृत्यु में साझा करता है ताकि वह मसीह के जीवन में साझा कर सके। इस प्रकार रोमियों की पत्री सिखाती है कि धर्मी ठहराये जाने की स्थिति (हालात) अविछेव्दनीय है। यीशु मसीह कि पुनरुत्थान में मृत्यु मसीही व्यक्ति के धर्मी ठहराये जाने पवित्रता को एकदम विशेष है। यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा मसीही व्यक्ति यहाँ अभी, दो हजार साल पहले यरुशलेम में यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में साझा करता गया है।

7. मसीहियों को पवित्र आत्मा के द्वारा जीवन व्यतीत करना चाहिए।

“आत्मा में जीना” एक रहस्यमय अनुभव नहीं है, बल्कि एक दैनिक मज़बूत ज़िम्मेदारी है। इसका अर्थ पवित्र आत्मा के कामों पर अपना ध्यान लगाना (यीशु मसीह की आत्मा) इसका अर्थ बाइबल की शिक्षाओं पर मन लगाना होता है (रोमियों 8:5, तुलना यूहन्ना 14:26, 16:13-14, इफिसियों 6:17)। इसका अर्थ है, शरीर के कुकर्मों को मारना है(हर तरह के पाप जो मानव शरीर में व्यक्त होते हैं)(रोमियों 8:13)।

यही कारण है कि रोमियों 6:13 और 19 निवेदन करता है कि मसीही अब अपने शरीर के हिस्सों को दुष्ट कामों को करने के लिए उपकरणों के रूप में पेश न करें वरन उन्हें परमेश्वर की पवित्रता[7] की अगुवाई में उसे पसन्द आने वाले कामों को करने के उपकरण की तरह प्रस्तुत करें।

8. परमेश्वर सब बातों में सर्वश्रेष्ठ (सर्वशक्तिमान) शासक हैं।

परमेश्वर की संप्रभुता का अर्थ है कि परमेश्वर सम्पूर्ण जगत के राजा हैं, और कोई भी उसे इस संसार और हर मसीही के लिए उसकी योजना को आगे ले जाने से रोक नहीं सकता है।

---

[7]धार्मिकता ¾ वही कार्य करना जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक हों। यह पवित्रता की ओर हमारी अगुवाई करते हैं= वह जीवन जो पाप से फिर कर मसीह की समानता में परिवर्तित होने के लिए तैयार है।

संसार में जो कुछ भी होता है उसका उपयोग परमेश्वर द्वारा मसीहियों की भलाई के लिए किया जाता है (रोमियों 8:28) इस प्रकार, परमेश्वर अपनी संप्रभुता अपनी भलाई में सर्वोच्च है।

- वे सभी लोग जिन्हें परमेश्वर ने चुना है, वे उद्धार प्राप्त करेंगे (रोमियों 8:29-30)। इस प्रकार परमेश्वर सर्वोच्च है जिसमें वह बचाता है।
- संसार में ऐसा कुछ भी नहीं घट सकता जो एक मसीही व्यक्ति को परमेश्वर से या उसके लिये परमेश्वर के प्रेम को अलग कर सकें। (रोमियों 8:35-39) इस प्रकार, परमेश्वर अपने प्रेम में सर्वोच्च है।

9. परमेश्वर ने जो प्राप्त किया है उसके आधार पर लोग परमेश्वर की संतान बन जाते हैं।

- लोग परमेश्वर की संतान बन जाते हैं अपने मानव वंश से नहीं लेकिन *परमेश्वर के सर्वोच्च वायदे* के आधार पर (रोमियों 9:6-9)।
- लोग परमेश्वर की संतान बन जाते हैं, उनके कामों से नहीं लेकिन *परमेश्वर के सर्वोच्च चुनाव और बुलाहट के आधार* पर (रोमियों 9:10-13 तुलना 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14)।
- लोग परमेश्वर की संतान बन जाते हैं, मानवीय इच्छा, स्वतंत्र इच्छा या मानव चुनाव से नहीं बनें लेकिन केवल परमेश्वर की सर्वोच्चता के आधार पर (रोमियों 9:14-16 तुलना रोमियों 9:18)।

यही बात यीशु मसीह सिखाते हैं जब वह कहते हैं "कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले" "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा" (यूहन्ना 6:37,44,65)।

10. परमेश्वर की योजना यहूदी और गैर-यहूदी(अन्यजाति) दोनों को उद्धार (धर्मी ठहराना) देने की योजना है।

- यहूदियों (इस्राएल) के अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के तिरस्कार ने विश्वास करने वाले अन्यजातियों के गड़बड़ी की स्वीकृति के कारण हुआ है (तुलना प्रेरितों के काम 13:44-58, रोमियों 11:11)।
- और विश्वास करने वाले अन्यजातियों के ग्रहण करने से यहूदियों पर विश्वास करने वाले लोगों से सामूहिक स्वीकारिता बड़ गई। एक बहुत बड़ी भीड़ हर देश से जिसे कोई गिन नहीं सकता उद्धार (इस्राएल सहित) प्राप्त करेगी। (तुलना प्रकाशितवाक्य 5:9-10, प्रकाशितवाक्य 9:9-10)।
- यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर (निर्वाचित) की "पूर्ण संख्या" के साथ-साथ इस्राएल भी वहा पहुंच जाएगा।(रोमियों 11:26-27)।

इस प्रकार, इतिहास मे हर पीढ़ी मे जिन लोगों को परमेश्वर ने अन्यजातियों और यहूदियों में से चुना है, उन्हें धर्मी (उद्धार प्राप्त) और महिमामान कहा जाएगा (रोमियों 8:29-30,33)।

लेकिन अविश्वासी अन्यजातियों और अविश्वासी यहूदियों को जैतून के पेड़ की जड़ से तोड़ा और काट दिया जाएगा (रोमियों 11:20-22) और परमेश्वर के राज्य के बाहर फेंक दिया गया (मत्ती 3:10,12, मत्ती 8:11-12, प्रकाशितवाक्य 21:8) जो कुछ भी पाप और जो बुरा करता है उसे छाँट कर परमेश्वर के राज्य से बाहर निकाल दिया जाएगा (मत्ती 13:41)। और स्वर्गदूत आऐंगे और दुष्टों को धर्मियों के मध्य से अलग करके उन्हें ददकते आग के भट्टी में फेंक देंगे (मत्ती 13:49-50)। परमेश्वर का राज्य उनसे ले लिया जाएगा और वे टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे, और कुचले जाऐंगे (मत्ती 21:43-44)।

11. परमेश्वर चाहते हैं कि मसीही रूपान्तरित हो जाए।

सभी मसीहियों को लगातार अधिक से अधिक मसीह समानता में बदलना चाहिए (रोमियों 12:1-3 और 13:14)।

रोमियों की पत्री सिखाती हैः

- यद्यपि परमेश्वर उद्धार (धर्मी ठहराया जाना) और जीवन के सम्बन्ध मे पहल करता है, प्रत्येक मसीही परमेश्वर की पहल का जवाब देने के लिए जिम्मेदार है रोमियों की पत्री सिखाती है कि मानवीय जिम्मेदारी के बिना कोई परमेश्वरीय चुनाव नहीं है।
- मानवीय जिम्मेदारी के बिना कोई परमेश्वरीय चुनाव नहीं है। चुनाव का सिद्धान्त मनुष्यों की जिम्मेदारी के सिद्धान्त से कभी भी अलग नहीं हो सकता है।
- पवित्रता की स्थिति में और पवित्रता की प्रक्रिया के बिना धर्मी ठहराए जाने की कोई स्थिति नहीं है। धर्मी ठहराए जाने का सिद्धान्त पवित्रता के सिद्धान्त से मानव मन या रोज के जीवन से अलग नहीं हो सकता है।
- एक मसीही को केवल उद्धार का आश्वासन तभी मिल सकता है जब वह भरोसा और आज्ञाकारिता में रहना जारी रखेगा।
- **12. परमेश्वर चाहता है कि मसीही लोग परमेश्वर द्वारा दिये गये सभी अधिकारियों कि अधीनता में रहें।**

सभी मसीहियों को उन अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए जिन्हें परमेश्वर ने उनके ऊपर ठहराया है (रोमियों 13:1-7)।
बाइबल में परमेश्वर के सात आधिकारी हैंः-

- सारे और सबसे ऊपर परमेश्वर का अधिकार है (प्रकाशितवाक्य 1:5, 19:6, 1कुरिन्थियों 15:24-28)।
- रची हुई पृथ्वी के ऊपर मनुष्य का अधिकार (उत्पत्ति 1:28)।
- विवाह और कलीसिया में महिला के ऊपर पुरुष का अधिकार (इफिसियों 5:22-25, 1तीमुथियुस 2:11-12)।
- अपने नाबालिग बच्चों पर माता-पिता का अधिकार (इफिसियों 6:1-4)
- अपने कर्मचारियों पर नियोक्ताओं का अधिकार (इफिसियों 6:5-9)

- उसके नागरिकों पर सरकार का अधिकार (रोमियों 13:1-7, 1पतरस 2:13-18)।
- कलीसिया के सदस्यों पर प्राचीनों के परिषद् का अधिकार (प्रेरितों. 20:17,28, इब्रानियों 13:17)।

जब तक सरकार सर्वोच्च प्राधिकरण (परमेश्वर) के साथ टकराव न करें सभी नागरिकों को उनके ऊपर सिविल अधिकारियों के आधीनता में रहना पड़ेगा (प्रेरितों. 4:19-20, 5:29)। सभी मानवीय अधिकारियों का उचित तरीकों से विरोध किया जाना चाहिए जो परमेश्वर के अधिकार के विरोधी हैं। ध्यान दें "समुद्र से बाहर पशु" जो संसार के सभी मसीही विरोधियों, राजनीतिक संसार में में अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करता है (प्रकाशितवाक्य 13:1-10)।

13. परमेश्वर चाहता है कि मसीही लोग अपने मतभेदों के साथ एक-दूसरे को स्वीकार करें।

मसीही को आत्मा के विभिन्न वरदान मिले हैं। और इस प्रकार मसीह के देह में विभिन्न कार्य(काम) है। हर एक सदस्य के रूप में प्रत्येक मसीही अन्य सभी मसीहियों से सम्बन्धित है (रोमियों 12:3-8)।

मज़बूत मसीहियों को कमज़ोर मसीहियों के संदेह को स्वीकार करना चाहिए, लेकिन केवल उस हद तक जहाँ तक कि वह बाइबल की सच्चाई से नहीं टकराती हो। और कमज़ोर मसीहियों को मज़बूत मसीहियों के विश्वासियों के निश्चय का खण्डन नहीं करना चाहिए लेकिन केवल इस हद तक लेकिन केवल वहां तक जहां तक उनके विचार बाइबल की सच्चाई के साथ टकराये नहीं (रोमियों 14:1-15:13)।